संवर्ग-1 : अनुवाद : स्वरूप एवं इकाई

इकाई-1 : अनुवाद : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं सीमाएं

संरचना

1.0 प्रस्तावना
1.1 उद्देश्य
1.2 अनुवाद : अर्थ एवं परिभाषा
  1.2.1 अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति
  1.2.2 अनुवाद का अर्थ
  1.2.3 अनुवाद की परिभाषा
  1.2.4 अनुवाद का विस्तार
1.3 अनुवाद का स्वरूप
  1.3.1 अनुवाद का व्यापक स्वरूप
  1.3.2 अनुवाद का सीमित स्वरूप
  1.3.3 कथ्य का प्रतीकांतरण
1.4 अनुवाद व्यापक संदर्भ में
  1.4.1 अंत: भाषिक अनुवाद
  1.4.2 अंतरभाषिक अनुवाद
  1.4.3 अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद
1.5 अनुवाद सीमित संदर्भ में
  1.5.1 पाठ धर्मी आयाम
  1.5.1 प्रभाव धर्मी आयाम
1.6 सारांश
1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 प्रस्तावना

'अनुवाद' शब्द आज हम लोगों के लिए बहुत ही परिचित हो गया है। एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है। अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है।

भाषा एक प्रतीकात्मक व्यवस्था है जिसका उद्देश्य है संप्रेषण या विचारों का आदान-प्रदान। अनुवाद में अनुवादक को दो प्रतीक व्यवस्थाओं से जूझना पड़ता है। वह एक प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त अर्थ को दूसरी प्रतीक व्यवस्था में अंतरिक करता है। अत: हमें अनुवाद के स्वरूप को समझने के लिए एक ओर प्रतीक की संकल्पना को समझना होता है क्योंकि एक स्तर पर अनुवाद अर्थ का प्रतीकात्मक भी होता है तथा दूसरी ओर भाषा-सिद्धांतों को भी समझना होता है क्योंकि अनुवाद दो भाषाओं के मध्य होने वाला भाषान्तरण भी है।

1.1 उद्देश्य

आप स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के अनुवाद की पहली इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़कर आप:-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

- अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति कैसे हुई समझ सकेंगे,
- अनुवाद से क्या तात्पर्य है यह बता सकेंगे,
- अनुवाद का महत्त्व पहचान सकेंगे,
- अनुवाद की परिभाषाएं बता सकेंगे ,
- अनुवाद के स्वरूप का उल्लेख कर सकंगे।

1.2 अनुवाद : अर्थ एवं परिभाषा

1.2.1 अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति

अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है–अनु+वाद=अनुवाद। 'अनु' उपसर्ग का अर्थ होता है पीछे या अनुगमन करना तथा 'वाद' शब्द का संबंध है वाद् धातु से, जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना। इस प्रकार अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ तो होगा (किसी के) कहने या बोलने के बाद बोलना।

आज अनुवाद शब्द को हम जिस अर्थ में ग्रहण करते हैं वह संस्कृत में प्रयुक्त अनुवाद के अर्थ से थोड़ा भिन्न है। आज अनुवाद शब्द को अंग्रेजी के Translation शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाता है। अग्रंजी का ट्रांसलेशन शब्द भी लैटिन के दो शब्दों Trans तथा lation के संयोग से बना है जिसका अर्थ होता है–पार ले जाना। वस्तुत: अनुवाद में एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में ले जाया जाता है। अत: एक भाषा के पार (दूसरी भाषा में) ले जाने की प्रक्रिया के लिए ही ट्रांसलेशन शब्द अंग्रेजी में प्रचलित हो गया।

इस प्रकार संस्कृत तथा अंग्रेजी के शब्दों की व्युत्पत्ति के आधार पर हम कह सकते हैं कि–

- अनुवाद शब्द का अर्थ है–एक बार कही गई बात को दोहराना या पुनर्कथन।
- यहां शब्द तथा शब्द रूपों की बजाए अर्थ के दोहराए जाने की बात की ओर संकेत किया जा सकता है।
- ट्रांसलेशन शब्द से भी लगभग यही अर्थ निकलता है कि अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक भाषा के पाठ में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा में ले जाया जाता है।

इस प्रकार दोनों दृष्टियों में कोई मौलिक भेद नहीं है। एक में अर्थ को दोहराने की बात कही गई है दूसरी में अर्थ को एक भाषा से उठाकर दूसरी भाषा में ले जाने की बात कही गई है।

1.2.2 अनुवाद का अर्थ : अनुवाद एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करते हैं। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहते है। उदाहरणार्थ, स्रोतभाषा बंगला में लिखी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानी 'काबुलीवाला' का अनुवाद 'लक्ष्यभाषा' हिन्दी में किया जाता है। एक स्रोतभाषा की रचना अनेक लक्ष्यभाषाओं में समय–समय पर अनुदित हो सकती है। अनुवाद की प्रक्रिया को अत्यंत सरल रूप में समझना हो तो यों कह सकते हैं कि बंगला की कहानी पढ़कर उसे हिन्दी में प्रस्तुत करना अनुवाद है।

1.2.3 अनुवाद की परिभाषा : हम चर्चा कर चुके हैं कि अनुवाद दो भाषाओं के बीच एक सेतु का काम करता है। अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम एक भाषा में व्यक्त–विचारों को दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। अब हम अनुवाद की परिभाषा देने का प्रयास करेंगे। विद्वानों ने अनुवाद की थोड़े बहुत अंतर के साथ अलग–अलग परिभाषाएं दी हैं। अनुवाद के स्वरूप को समझने में ये परिभाषाएं हमारी काफी मदद कर सकती हैं। आइए पहले विद्वानों द्वारा दी गई इन परिभाषाओं पर दृष्टिपात करें–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

नाइडा (1969) ''अनुवाद का तात्पर्य है स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।''

Translating consists in producing in the receptors language the closet natural equivalent to the message of the source language first in meaning and secondly in style.

इस प्रकार नाइडा अनुवाद में अर्थ अर्थात् कथ्य पक्ष तथा शैली अर्थात् शिल्प दोनों को ही महत्त्व देकर चलते हैं। उनके अनुसार सफल अनुवादक वही हो सकता है जो लक्ष्य भाषा में अर्थ और शैली की समतुल्यता की सृष्टि कर पाने में समर्थ होता है।

कैटफोर्ड (1965) ''एक भाषा की पाठ्य-सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री में प्रतिस्थापित करना ही अनुवाद है।''

The replacement of material in one language by equivalent textual material in another language.

इस तरह कैटफोर्ड अनुवाद को पाठ्य सामग्री के प्रतिस्थापन के रूप में परिभाषित करते हैं। उनके अनुसार यह प्रतिस्थापन भाषा के विभिन्न स्तरों-स्वन, स्वनिम, लेखिम, भाषा की वर्ण संबंधी इकाइयों-लिपि, वर्णमाला आदि शब्द तथा संरचना सभी स्तरों पर होना चाहिए।

नाइडा ने अनुवाद में मूल पाठ के शिल्प की तुलना में अर्थ पक्ष के अनुवाद को अधिक महत्त्व दिया था, वहां कैटफोर्ड अर्थ की तुलना में शिल्प संबंधी तत्त्वों को अधिक महत्त्व देते हैं।

न्यूमार्क ''अनुवाद एक ऐसा शिल्प है जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश की प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।''

उपर्युक्त तीनों ही परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक भाषा के पाठ में व्यक्त संदेश को दूसरी भाषा के पाठ के माध्यम से व्यक्त किया जाता है या इसे इस तरह भी समझ सकते हैं कि अनुवाद एक भाषाई पाठ में व्यक्त संदेश को दूसरी भाषा के पाठ में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया का परिणाम है। अत: अनुवाद एक प्रक्रिया भी है और उसका परिणाम भी।

हैलिडे अनुवाद को प्रक्रिया या उसके परिणाम के रूप में न देखकर उसे दो भाषाई पाठों के बीच में संबंध के रूप में देखते हैं क्योंकि उनके अनुसार ये पाठ एक जैसी स्थितियों में एक जैसा प्रकार्य ही करते हैं-

हैलिडे (1964) ''अनुवाद एक संबंध है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य संपादित करते हैं।''

अर्थात् हैलिडे ने अनुवाद को ऐसे संबंध के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया है जो दो भाषाओं के पाठों के मध्य होता है। शर्त यही है कि ये दोनों पाठ समान अर्थ को व्यक्त करने वाले होने चाहिए। उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि एक भाषा में प्रस्तुत कथ्य को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना अनुवाद है। अनुवाद की सभी परिभाषाएं वस्तुत: अनुवाद की प्रवृत्ति को स्पष्ट करने का कार्य करती है। निष्कर्ष रूप में हम अनुवाद के निम्नलिखित प्रमुख लक्षण बता सकते हैं-

- अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच होने वाली एक भाषिक प्रक्रिया है।
- जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा तथा उसके पाठ को स्रोत भाषा पाठ या मूल पाठ तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा एवं उसके पाठ को लक्ष्य भाषा पाठ कहा जाता है।
- लक्ष्य भाषा पाठ को ही अनूदित-पाठ भी कहा जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

- स्रोत भाषा पाठ या मूल पाठ के जिस अर्थ का अनूदित पाठ में अंतरण या प्रतिस्थापन किया जाता है वह अर्थ ही अनुवाद का संदेश कहलाता है।
- स्रोत भाषा पाठ तथा अनुदित पाठ दोनों के बीच एक संबंध स्थापित हो जाता है और इस संबंध का मुख्य आधार यह संदेश ही होता है। अर्थात् दोनों ही पाठ उसी संदेश या अर्थ को व्यक्त करने के कारण समानार्थी होते हैं।
- अनुवाद मूल भाषा पाठ के जिस अर्थ को लक्ष्य भाषा में अंतरित करता है उस का क्षेत्र व्यापक होता है। यह अर्थ केवल संरचना के अर्थ तक ही सीमित नहीं होता। इस के क्षेत्र में संरचनार्थ संदर्भार्थ तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों से संबंधित सभी अर्थ आ जाते हैं।
- अनुवादक का मुख्य ध्येय यही है कि वह मूल पाठ के भाव को संप्रेषित करने का पूरा ध्यान रखें।

1.2.4 अनुवाद का विस्तार : आज सारे विश्व में अनुवाद की आवश्यकता का अनुभव किसी न किसी रूप में अवश्य किया जाता है। विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच संप्रेषण प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण घटक बन कर अनुवाद हमारे सामने आता है। आज संसार के किसी भी देश में कोई नई खोज होती है, कोई नया विचार सामने आता है तो हर व्यक्ति यही चाहता है कि उसकी सूचना जल्दी से जल्दी वह अपनी भाषा के माध्यम से अपने देशवासियों को दे सके। जिस प्रकार प्रत्येक भाषा संरचना अपने में विशिष्ट होती है उसी तरह से उस भाषा का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ भी विशिष्ट होता है। अनुवाद दो भाषाओं को ही निकट लाने का कार्य नहीं करता बल्कि दो भिन्न संस्कृतियों को भी परस्पर निकट ले आता है।

अनुवाद के माध्यम से हम विश्व साहित्य का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए पंचतंत्र की कहानियों का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हुआ। इन कहानियों ने आगे चलकर एशिया तथा यूरोप के कथा साहित्य को प्रभावित किया। कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक से वहां के अनेक नाटककार अपने-अपने ढंग से प्रभावित हुए हैं। इसी प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध के आस-पास हिन्दी के एक प्रसिद्ध रूसी विद्वान् वारन्निकोव ने ''रामचरिमानस'' का अनुवाद रूसी भाषा में करके एक अद्भुत कार्य ही नहीं किया बल्कि उस अनुवाद ने साहित्य, संस्कार, धर्म, दर्शन आदि के अध्ययन के प्रति रूचि पैदा कर दी।

इस शताब्दी में आकर तो अनुवाद हमारी अनिवार्यता ही बन गया है। विभिन्न राष्ट्रों के बीच नित्य नए-नए तरह के राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संबंध स्थापित हो रहे हैं और नित्य विभिन्न प्रकार के दस्तावेज संबंध-पत्र दोनों देशों की भाषाओं में तैयार किए जाते हैं। यह सब कार्य अनुवाद के ही माध्यम से सुलभ हो पाता है। यू. एन. ओ. में जो भी वक्तव्य पढ़ा जाता है उसका अनुवाद तुरंत ही विश्व की अनेक भाषाओं में उपलब्ध कराया जाता है। कहने का तात्पर्य यही है कि आज विश्व मंच पर अनुवाद की कितनी महत्ता है हम स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

भारत तो बहुभाषा-भाषी देश है। यहां अनेक भाषाएँ बोली जाती है। इन विभिन्न भाषा-भाषी भारतीयों के बीच भावात्मक एकता बनाए रखने के लिए तो अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है ही, साथ ही शिक्षा, कानून, प्रशासन, चिकित्सा, वाणिज्य एवं व्यवसाय, कृषि, पर्यटन, दूरसंचार आदि के क्षेत्र में भी सभी भारतीयों को एक सूत्र में बाँधे रखने के कार्य में अनुवाद की बहुत बड़ी भूमिका रही है। गोपीनाथन (1975:15) के शब्दों में हम कह सकते है कि अनुवाद एक ऐसा सेतु बंधन का कार्य है जिसके बिना विश्व संस्कृति का विकास संभव नहीं है। अनुवाद के द्वारा हम मानव के इस विश्व कुटुम्ब में सपूर्ण एकता एवं समझदारी की भावना विकसित कर सकते हैं, मैत्री एवं भाईचारे को विकसित कर सकते है और गुटबंदी, संकुचित प्रान्तीयतावाद आदि से मुक्त होकर मानवीय एकता के मूल बिंदु तक पहुँच सकते हैं।

चूँकि अनुवादक दो अलग-अलग भाषा समाज के लागों के बीच मध्यस्थता का कार्य करता है अत: अनुवाद का महत्त्व स्वत: ही सिद्ध हो जाता है। आज संप्रेषण-व्यापार के विभिन्न संदर्भों के बीच अनुवाद एक महत्त्वपूर्ण घटक बनकर हमारे सामने आ गया है। संसार का हर छोटा बड़ा देश दूसरे देश से जुड़ना चाहता है और इस जुड़ाव में अनुवाद की विशिष्ट भूमिका दिखाई देती है। इसीलिए यह कहा जा सकता है कि अनुवाद अपने प्रयोजन में बहुआयमी बन चुका है। (श्रीवास्तव 1985)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पुराने समय में लोग प्राय: धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद करते थे और प्राय: वैयक्तिक रूचि ही अनुवाद का आधार होती थी। लेकिन आज अनुवाद मात्र वैयक्तिक रूचि तक ही सीमित नहीं रह गया है। आज अनुवाद व्यावसायिक सामाजिक आवश्यकता बन गया है। और उसका स्वरूप संगठित व्यवसाय के रूप में उभर कर सामने आया है। आधुनिक युग में तो अनुवाद की आवश्यकता वैयक्तिक रूचि पर आधारित न होकर सामाजिक-राजनैतिक-आर्थिक आवश्यकताओं पर आधारित है। इन्हीं आवश्यकताओं के कारण अब अनुवाद व्यक्ति परिधि से निकल कर समष्टि की परिधि में आ गया है। आज के समाज में अनुवाद भी संगठित रूप में किया जाने लगा है अत: निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि अनुवाद का कार्य भी आज अन्य व्यवसायों की ही भांति एक व्यवसाय बन गया है।

बोध प्रश्न -

1. निम्नलिखित कथनों पर सही अथवा गलत का निशान लगाए:-
    1. ''अनुवाद '' का शाब्दिक अर्थ है.....किसी के कहने या बोलने के पहले बोलना।
    2. ''अनुवाद'' का द्विभाषिक होना अनिवार्य है।
    3. प्रत्येक भाषा की संरचना विशिष्ट होती है।
    4. अनुवाद में समतुल्य अभिव्यक्तियां खोजने में कोई कठिनाई नहीं होती।
    5. कैटफोर्ड अनुवाद में केवल कथ्य पक्ष के अनुवाद की ही बात होती है।
    6. हैलिडे ने अनुवाद को दो भाषाई पाठों के बीच 'संबंध' के रूप में देखा है।
    7. आज की आवश्यकताओं ने अनुवाद को एक व्यवसाय बना दिया है।
2. दो-तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए-
    1. अनुवाद शब्द से आप क्या समझते हैं ?
    2. अनुवाद की विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर अनुवाद की किन्हीं तीन प्रमुख विशेषताओं को उल्लेख कीजिए-

       क .....

       ख .....

       ग .....
    3. अनुवाद का आज हमारे लिए महत्त्व क्यों है ?इस के विषय में कोई तीन आधार प्रस्तुत कीजिए-

       .....

       .....

       .....

       .....

       .....
    4. स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा से आप क्या समझते हैं ?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

.....

.....

.....

.....

.....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. ..... की कहानियों का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में किया गया है।
2. ट्रांसलेशन शब्द का अर्थ है .....
3. जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे ..... कहते हैं।
4. प्रत्येक भाषा की ..... अपने में विशिष्ट होती है।
5. अनुवाद के लिए अनुवादक का ..... होना अनिवार्य शर्त है।
6. नाइडा ने अनुवाद में मूल पाठ के ..... की तुलना में अर्थ पक्ष के अनुवाद को अधिक महत्त्व दिया।
7. हैलिडे के अनुसार अनुवाद एक ..... है जो दो पाठों के बीच होता है।
8. लक्ष्य भाषा के पाठ को ही ..... भी कहते हैं।
9. अनुवाद का मुख्य ध्येय है ..... मूल पाठ के ..... को संप्रेषित करना।

1.3 अनुवाद का स्वरूप

अनुवाद के स्वरूप को समझने के लिए अनुवाद को प्राय: दो संदर्भों में लिया जाता है–1. व्यापक संदर्भ में तथा 2. सीमित संदर्भ में।

1.3.1 अनुवाद का व्यापक स्वरूप : अनुवाद की परिभाषा तथा अर्थ को स्पष्ट करते समय यह बताया गया था कि अनुवाद में अर्थ को एक भाषा पाठ से दूसरी भाषा के पाठ में अंतरित किया जाता है। परन्तु यह अनुवाद का सीमित संदर्भ है। व्यापक संदर्भ में यह माना जाता है कि दो भिन्न ''प्रतीक व्यवस्था'' के बीच होने वाला अर्थ का अन्तरण ही अनुवाद है। इसका अर्थ यही है कि अनुवाद के अन्तर्गत एक प्रतीक व्यवस्था में कही गई बात को बिना अर्थ परिवर्तन किए दूसरी प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त किया जाता है। इस दृष्टि से यहां यह माना जाता है कि अनुवाद अर्थ या कथ्य का प्रतीकान्तरण दो प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच होने वाला अन्तरण व्यापार है।

जब अनुवाद को प्रतीकान्तरण के रूप में लिया जाता है तो अनुवाद का स्वरूप समझने के लिए प्रतीक सिद्धान्तों, प्रतीक की संकल्पना आदि सभी को समझना पड़ता है। अर्थात् यहां अनुवाद को प्रतीक विज्ञान के सिद्धान्तों के संदर्भ में लिया जाता है।

1.3.2 अनुवाद का सीमित स्वरूप : अनुवाद को सीमित संदर्भों में देखने वाली दृष्टि यह मानकर चलती है कि अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच होने वाला यह व्यापार है जिसमें एक भाषा से दूसरी भाषा में अर्थ या कथ्य का अंतरण किया जाता है। इसका अर्थ यही हुआ कि सीमित संदर्भों में अनुवाद को ''भाषान्तरण'' एक भाषा से दूसरी भाषा में अर्थ का अन्तरण के रूप में ग्रहण किया जाता है।

जब अनुवाद को भाषान्तरण के रूप में लिया जाता है तब यह मान कर चला जाता है कि अनुवाद पर भाषा विज्ञान के सिद्धान्त लागू होते हैं। अत: अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए भाषा विज्ञान के सिद्धान्तों को आधार बनाकर चलना होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इस प्रकार अनुवाद को किसी भी संदर्भ में ले अनुवाद या तो प्रतीक सिद्धान्तों का अनुप्रयोगात्मक रूप है अथवा भाषा-सिद्धान्तों का । अत: अनुवाद के स्परुप को स्पष्ट करने के लिए हमें प्रतीक विज्ञान तथा भाषा विज्ञान दोनों के ही आधारभूत सिद्धान्तों को समझना जरूरी होता है।

1.3.3 कथ्य का प्रतीकान्तरण : अभी हमने चर्चा की थी कि अनुवाद का स्वरूप यह संकल्पना लेकर चलता है कि अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसमें अर्थ का अन्तरण दो प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच किया जाता है। इसीलिए इसे ''प्रतीकान्तरण'' की संज्ञा प्रदान दी जाती है और इसके स्वरूप को समझने के लिए हमें प्रतीक विज्ञान के सिद्धान्तों का सहारा लेना होता है। इस प्रकार अनुवाद को किसी भी संदर्भ में ले अनुवाद या तो प्रतीक सिद्धान्तों का अनुप्रयोगात्मक रूप है अथवा भाषा सिद्धान्तों का।

अत: अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए हमें प्रतीक विज्ञान तथा भाषा विज्ञान दोनों के ही आधारभूत सिद्धान्तों को समझना जरूरी होता है।

प्रतीक विज्ञान तथा प्रतीक की संकल्पना

प्रतीक विज्ञान वह विज्ञान है जिसके अंतर्गत हम प्रतीकों का अध्ययन करते हैं। प्रतीक क्या है, कैसे बनते हैं आदि का अध्ययन प्रतीक विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।

तब प्रश्न उठता है कि ''प्रतीक'' क्या है ? आपने लोगों को ''लाला बती'' पर रूकते हुए और ''हरी बत्ती'' पर चलते हुए देखा होगा। अक्सर यह भी सुना होगा कि ''लाल बती '' रूकने का प्रतीक है और ''हरी बत्ती'' चलने का प्रतीक। वस्तुत: लाल बत्ती या हरी बत्ती का अपने के कोई ऐसा अर्थ नहीं है जो रूकने या चलने से संबंधित हो। वह तो हमने रूकने तथा चलने के लिए लाल या हरी बत्ती के संकेतों को प्रतीक चिह्न बना लिया है।

मंदिर में लोग शिव लिंग पर जल चढ़ाते हैं, भगवान शिव का प्रतीक मान कर उसकी पूजा करते हैं। ''शिव लिंग'' स्वयं में भगवान शिव तो हैं नहीं। वह तो एक पत्थर का टुकड़ा है। लेकिन भक्तों ने उसे भगवान शिव का प्रतीक मान लिया हैं। जो लोग नास्तिक हैं उनके लिए तो हमेशा ही पत्थर का टुकड़ा है। प्रतीक को समझने के लिए एक अन्य उदाहरण और ले सकते है। चित्र में बना हुआ घोड़ा वास्तव में घोड़ा जानवर नहीं है बल्कि उसका चित्रात्मक प्रतीक हैं।

इसी तरह से भाषा में भी जितने भी शब्द प्रयुक्त होते हैं वे सब प्रतीकात्मक होते हैं या प्रतीक होते हैं। उदाहरण के लिए कुर्सी, मेज, कलम, दवात, आम, अमरूद, मकान, छत आदि सभी शब्द किसी न किसी वस्तु को व्यक्त कर रहे हैं। कलम शब्द लिखने की वस्तु का प्रतीक है तथा कुर्सी शब्द बैठने की वस्तु का। परन्तु यहाँ लाल तथा हरी बत्ती रंग प्रतीक का उदाहरण है, शिवलिंग भगवान शिव के प्रतीक का तथा घोड़े का चित्र चित्रात्मक प्रतीक है, वहां कुर्सी, कलम, दवात आदि शब्द ऐसे भाविक प्रतीक है जो विभिन्न ध्वनियों (स्वर तथा व्यंजन) के संयोग से बनते हैं। ऐसे प्रतीकों को ''ध्वन्यात्मक प्रतीक'' कहा जाता है। इसीलिए भाषा को ''ध्वनि प्रतीक'' कहा जाता है।

वास्तव में प्रतीक अक्सर किसी न किसी वस्तु के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं तथा प्रतीकों का महत्त्व तथा उनका अर्थ किन्हीं निश्चित प्रयोक्ताओं के लिए ही होता है जैसे 'शिवलिंग' केवल शिवभक्तों के लिए ही भगवान शिव का प्रतीक है। कुर्सी, मेज शब्द हिन्दी भाषियों के लिए ही वस्तु कुर्सी-मेज के लिए ''ध्वनि-प्रतीक'' हैं। अंग्रेजी भाषा-भाषी के लिए तो चेयर-टेबल शब्द ही इन वस्तुओं के लिए प्रतीक होंगे।

प्रतीक शास्त्री पीयर्स ने प्रतीक की परिभाषा देते हुए कहा कि प्रतीक वह वस्तु है जो किसी प्रयोक्ता के लिए किसी वस्तु दूसरी वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है। A sing.....is something that stands to somebody for something else in some respect or capacity (Pierce C. S. 1940)

प्रत्येक प्रतीक की संकल्पना तीन इकाइयों के आधार पर बनती हैं। ये तीन इकाइयां हैं-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

1. वस्तु या सांकेतिक वस्तु (referent)
2. अर्थ या संकेतार्थ (referena) तथा
3. प्रतीक (Sing)

''वस्तु'' का संबंध तो भौतिक जगत से होता है जैसे कुर्सी, मेज, कलम, दवात आदि भौतिक वस्तुएं नित्य हमारे सामने आती हैं। ये सभी वस्तुएं हमारी इन्द्रियों का गोचर बनती है और हमारे मन में इनका एक बिम्ब खड़ा होता है। जैसे मेज, कुर्सी को हम आंख से देखते हैं, गंध को नाक से सूंघते हैं, खट्टा-मीठा, कड़वा आदि का बोध हमारे स्वाद (जिह्वा) से होता है, ठंडे-गर्म आदि का अनुभव हमें स्पर्श से होता है। अर्थात् भौतिक जगत की वस्तुओं के बिम्ब हमारे मानस पटल पर विभिन्न इन्द्रियों के माध्यम से बनते हैं। भौतिक वस्तुओं का यह मानसिक बोध या बिम्ब ही उस वस्तु का अर्थ या संकेतार्थ कहलाता है।

''वस्तु'' तथा उसका 'अर्थ' संसार में सब के लिए समान होता है। ''कमल'' वस्तु तथा उनका अर्थ तो हिन्दी भाषी, संस्कृत भाषी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल भाषी, अंग्रेजी भाषी, जापानी, रूसी भाषी सभी के लिए समान होते हैं। हां अंतर आता है केवल उनकी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति में। कोई उसे 'कमल' कहता है (हिन्दी भाषी), कोई उसे जलज कहता है (संस्कृत भाषी) तो कोई उसे 'लोटस' कहता है। (अंग्रेजी भाषा-भाषी)।

इस प्रकार प्रतीक की संकल्पना को हम 'वस्तु' अर्थ तथा 'प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति' के त्रिकोणीय संबंधों में ही समझ सकते है।

यहां यह बात ध्यान रखनी चाहिए के ''प्रतीक'' का वस्तु के साथ सीधा संबंध नहीं होता। प्रत्येक प्रतीक से पहले हम उसके अर्थ पर पहुंचते हैं और फिर अर्थ से उसकी वस्तु तक। साथ ही भाषा में यह प्रतीक ही अभिव्यक्ति है और अर्थ उसका कथ्य है अत: यह कहा जा सकता है कि भाषा कथ्य और अभिव्यक्ति की समन्वित इकाई है।

इसके साथ-साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वस्तु का जो अर्थ होता है उसके निर्माण में केवल भौतिक वस्तुओं का ही योग नहीं रहता बल्कि प्रयोग कर्त्ता की अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं का भी योग रहता है। उदाहरण के लिए 'उल्लू' शब्द का अर्थ हिन्दी भाषा-भाषी समाज के प्रयोक्ता के लिए मूर्ख है तो जापानी भाषा-भाषी प्रयोक्ता के लिए आउल विद्वान। इसी तरह गाय शब्द यदि किसी स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है तो हिन्दी भाषी सभी प्रयोगकर्त्ता उसका अर्थ सीधी एवं सरल महिला के अर्थ में ग्रहण करता है तो अंग्रेजी भाषा भाषी प्रयोक्ता काउ शब्द को मूर्ख महिला के अर्थ में ग्रहण करता है। परन्तु जहां तक सामान्य ''संकेतित अर्थ'' का सवाल है हिन्दी और अंग्रेजी में गाय तथा काउ शब्द एक ही वस्तु की ओर संकेत कर रहे हैं।

कहने का तात्पर्य इतना ही है कि हर भाषा किसी एक वस्तु को भिन्न-भिन्न प्रतीकों से व्यक्त कर सकती है या किसी एक अर्थ या कथ्य को दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है।

अनुवाद में भी यही प्रक्रिया अपनाई जाती है। अनुवादक वस्तुत: एक भाषिक प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषिक प्रतीक व्यवस्था के माध्यम से व्यक्त करने का कार्य करता है। इस दृष्टि से जब हम अनुवाद को व्याख्यायित करने का कार्य करते हैं तो यह मानकर चलते हैं कि अनुवाद वह व्यापार है जो दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के मध्य घटित होता है तथा जिसके माध्यम से अर्थ या कथ्य को एक प्रतीक व्यवस्था से दूसरी प्रतीक व्यवस्था में अंतरित किया जाता है। इसीलिए व्यापक संदर्भ में अनुवाद को ''अर्थ का प्रतीकात्मक'' कहा जाता है।

1.4 अनुवाद व्यापक संदर्भ में

1. अन्तभाषिक अनुवाद
2. अन्तर भाषिक अनुवाद तथा
3. अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1.4.1 अन्त: भाषिक अनुवाद : ''अन्त: भाषिक'' शब्द का अर्थ है अनुवाद की वह प्रक्रिया जो एक ही भाषा के अंतर्गत घटित होती है। यहां प्रतीक 1 तथा प्रतीक 2 एक ही भाषा के प्रतीक होते हैं। दोनों ही प्रतीकों का संबंध किसी एक भाषा की दो भिन्न व्यवस्थाओं से होता है। अर्थात् यहां अनुवादक एक ही बात को उसी भाषा में कुछ दूसरी तरह से व्यक्त कर देता है। उदाहरण के लिए यदि कोई हिन्दी कविता का अनुवाद हिन्दी गद्य में या हिन्दी गद्य का अनुवाद पद्य में करता है तो यह अन्त: भाषिक अनुवाद का उदाहरण माना जाएगा। इस प्रकार जब एक ही भाषा की एक शैली से उसी भाषा की किसी दूसरी शैली में अनुवाद किया जाता है तो वह अन्त: भाषिक अनुवाद का उदाहरण होता है।

यह तो आप जानते ही है कि हिन्दी तथा उर्दू दो भिन्न भाषाएं नहीं हैं बल्कि एक ही भाषा से जन्मी दो शैलियां हैं जिनकी लिपि अलग-अलग है। हिन्दी शैली में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक होता है तो उर्दू शैली में अरबी-फारसी के शब्दों का अधिक प्रयोग। हां यह बात अलग है कि हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है तो उर्दू फारसी लिपि में। लेकिन लिपि भिन्न हो जाने से भाषाएं भिन्न-भिन्न नहीं हो जाती। हम किसी भी भाषा को किसी भी लिपि में लिख सकते हैं। (मोहन घर जाता है) वाक्य रोमन लिपि में लिख देने से वह अंग्रेजी भाषा का वाक्य नहीं बन गया। वह वास्तव में हिन्दी भाषा का ही वाक्य है जो रोमन लिपि में लिखा गया है। इसी तरह लिपियां समान हो जाने पर भी भाषाएं परस्पर भिन्न हो सकती है। संस्कृत, मराठी, हिन्दी, नेपाली सभी भिन्न-भिन्न भाषाएं हैं पर लिखी देवनागरी लिपि में ही जाती है। अब यदि कोई व्यक्ति हिन्दी शैली (प्रतीक) से उर्दू शैली प्रतीक 2 में अनुवाद करता है तो वह अन्त भाषिक अनुवाद कहा जा सकता है।

मुंशी प्रेमचन्द ऐसे ही कहानीकार हैं जिन्होंने अपनी अनेक कहानियां पहले हिन्दी या उर्दू में लिखी और फिर उनका अन्त: भाषिक अनुवाद दूसरी शैली में किया। श्रीवास्तव तथा गोस्वामी ने अपनी पुस्तक में 'शतरंज के खिलाडी' का हिन्दी रूप 1924 में पहले ''माधुरी'' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। बाद में इसका अन्त: भाषिक अनुवाद उन्होंने उर्दू शैली में किया और यह अनुवाद ''शतरंज की बाजी'' के नाम से दिसंबर 1924 की ''जमाना'' पत्रिका में छपा। श्रीवास्तव के ही शब्दों में इस अन्वयांतर (अन्त: भाषिक अनुवाद) को मात्र लिपि परिवर्तन नहीं कहा जा सकता क्योंकि इस अनुवाद में न केवल शब्द और वाक्य के चयन में भेद दिखाई देता है वरन् रचना के वातावरण के घनत्व और संवेदना की विवृत्ति में भी अन्तर दिखाई देता है। इस तथ्य के प्रमाण में कहानी से निम्नलिखित अंश प्रस्तुत किया गया है-

हिन्दी शैली (''माधुरी'' में प्रकाशित)

''अंधेरा हो चला था। बाजी बिछी हुई थी। दोनों बादशाह अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे हुए मानों उन दोनों वीरों की मृत्यु पर रो रहे थे।''

उर्दू शैली ('जनाना' में प्रकाशित)

''अंधेरा हो गया था। बाजी बिछी हुई थी। दोनों बादशाह अपने-अपने तखत पर रौनक अफरोज थे। उन पर हसरत छाई हुई थी, गोया मक्तूलीन की मौत का मातम कर रहे थे।''

1.4.2 अन्तरभाषिक अनुवाद : दो भिन्न-भिन्न भाषाओं की भिन्न-भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच जो अनुवाद किया जाता है वह अन्तरभाषिक अनुवाद कहलाता है। इसे भाषान्तर भी कहते हैं। यहां प्रतीक 1 तथा प्रतीक 2 दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के होते हैं। यह अनुवाद का वह रूप है जिसका प्रयोग हम प्रतिदिन अपने कार्य कलापों में करते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी, रूसी, चीनी या जापानी भाषा में यदि अनुवाद किया जाता है तो वह अनुवाद ''अन्तरभाषिक अनुवाद'' कहलाएगा।

जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं। यहां अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसका दोनों ही भाषाओं पर समान अधिकार हो न केवल वह स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की संरचना संबंधी विशेषताओं एवं जटिलताओं से बखूबी परिचित हो बल्कि दोनों भाषाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक परंपराओं, मान्यताओं, ऐतिहासिक तथ्यों, धार्मिक विश्वासों आदि सभी का ज्ञान होना चाहिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1.4.3 अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद : अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद में अनुवाद किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेत्तर प्रतीक व्यवस्था में अनुवाद किया जाता है। अर्थात् उपर्युक्त प्रथम दो प्रकार के अनुवादों में प्रतीक 2 का संबंध किसी भाषा व्यवस्था से था जबकि यहां प्रतीक 2 का संबंध भाषिक व्यवस्था से नहीं होता। उदाहरण के लिए किसी कहानी या नाटक को फिल्म के रूप में अंतरित करना वस्तुत: अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद के अंतर्गत आता है।

आप जानते हैं कि 'गोदान', 'गबन', 'साहब बीबी और गुलाम', 'तीसरी कसम' आदि अनेक उपन्यासों को लेकर जो फिल्में बनी हैं वे अन्तर प्रतीकात्मक का उदाहरण है।

इस तरह अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद में प्रतीक। तो भाषा से संबंधित ही रहता है। परन्तु प्रतीक 2 का संबंध किसी अन्य माध्यम से हो जाता है। ''कामयाबी'' में जो कथ्य प्रसादजी ने कविता के माध्यम से व्यक्त किया है उसी कथ्य को चित्रात्मक अभिव्यक्ति देकर जगदीश गुप्त ने प्रस्तुत किया है। यह भी अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद या प्रतीकान्तर का उदाहरण है। किसी कविता को संगीत के सुरों में ढालना भी ऐसा ही अनुवाद है।

1.5 अनुवाद सीमित संदर्भ में

व्यापक संदर्भ में अनुवाद के क्षेत्र में न केवल दो भाषाओं के बीच होने वाले अनुवाद को ही सम्मिलित किया गया था बल्कि एक ही भाषा की दो बोलियों या शैलियों के बीच होने वाले अनुवाद तथा भाषिक प्रतीक व्यवस्था तथा भाषिकेतर प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच होने वाले अनुवाद को भी शामिल किया गया था। अनुवाद का एक बड़ा ही व्यापक स्वरूप है। लेकिन सीमित संदर्भों में दो भाषाओं के बीच घटित होने वाले अनुवाद व्यापार को लिया जाता है अर्थात् जिसे हमने ''अन्तर भाषिक अनुवाद''की संज्ञा प्रदान की थी केवल वही अनुवाद सीमित संदर्भ में आता है। इसीलिए इसमें दो भाषाओं के बीच अनुवाद को ही वास्तविक अनुवाद माना जाता है।

इस प्रकार के अनुवाद अंतर भाषिक अनुवाद को भी दो आयामों में समझना होता है–

1. पाठ धर्मी आयाम

2. प्रभाव धर्मी आयाम

1.5.1 पाठधर्मी आयाम : पाठधर्मी आयाम के अंतर्गत अनुवाद करते समय स्रोत भाषा के पाठ या मूल पाठ को केन्द्र में रखा जाता है। यहां यह माना जाता है कि मूल भाषा पाठ स्वयं में एक स्वायत्त रचना होती है अत: अनुवादक मूल पाठ की संरचना तथा बुनवट को ध्यान में रखकर ही अनुवाद करे तथा अनुदित पाठ की संरचना तथा बुनावट यथासंभव मूल पाठ के अनुरूप ही हो। अनुवादक को यहां यह अनुमति नहीं है कि वह मूल भाषा पाठ के अभिलक्षणों से भिन्न कुछ भी अपनी ओर से अनूदित पाठ में जोड़ने घटाने का कार्य करे। यहां तो अनुवादक से यही अपेक्षा की जाती है कि अनूदित पाठ की संरचना और बुनावट मूलभाषा पाठ के अनुरूप ही हो।

पाठधर्मी अनुवाद वस्तुत: भाषा के सापेक्षतावादी सिद्धांत पर आधारित है। यह सिद्धांत यह मानकर चलता है कि सांसारिक भौतिक सत्य तथा तथ्य तो संसार में सब के लिए समान ही होते हैं पर उनको देखने की दृष्टि हर भाषा–भाषी समाज की अपनी विशिष्ट होती है। संसार का हर भाषा–भाषी भौतिक सत्य को समान रूप में ग्रहण करेगा यह आवश्यक नहीं है। यही कारण है कि एक ही भौतिक सत्य अलग–अलग भाषाओं में अलग–अलग ढंग से व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए विभिन्न भाषाओं में रिश्ते–नाते की शब्दावली को विभिन्न ढंग से व्यक्त किया जाता है। हिन्दी में हमें विभिन्न रिश्ते–नाते के लिए जैसे चाचा, मामा, फूफा, ताऊ, मौसी, मामी, चाची, ताई, बुआ आदि शब्द मिलते हैं। लेकिन अंग्रेजी भाषा में हम इन सभी रिश्ते–नातों के लिए दो शब्दों ''अंकल'' तथा ''आंटी'' से काम चला लिया जाता है। उनके यहां चाचा, ताऊ, मामा, मौसा आदि के लिए अलग–अलग शब्द नहीं है। अलग शब्द न होने का यह अर्थ नहीं है कि अंग्रेजी भाषा–भाषी समाज के लोग इन संबंधों में अंतर करके नहीं चलते। भौतिक सत्ता या भौतिक संबंधों के धरातल पर तो ये लोग इन नाते–रिश्तों में अंतर करके चलते हैं। जैसे मामा के लिए Mother's brother, Maternal uncle

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

तथा चाचा के लिए Father's brother, Paternal uncle आदि परन्तु भाषिक अभिव्यक्ति के स्तर पर उनके यहां अलग-अलग शब्द नहीं है।

इस प्रकार यदि हम यह तथ्य स्वीकार कर लेते हैं कि भौतिक जगत को देखने की हर भाषा की अपनी अलग दृष्टि होती है तो अनुवाद करते समय एक सवाल खड़ा हो जाता है। अनुवाद के संदर्भ में एक बात बराबर कही जाती रही है कि अनुवाद में स्रोत भाषा के पाठ में व्यक्त अर्थ को लक्ष्य भाषा पाठ में अंतरित किया जाता है और यदि हम यह मान कर चलते हैं कि भौतिक तथ्यों को देखने की दृष्टि हर भाषा की अलग होती है तो यह मानना होगा कि एक भाषा में व्यक्त अर्थ यथावत रूप में दूसरी भाषा में अंतरित हो ही नहीं सकता। जब भी अनुवादक एक भाषा के अर्थ को दूसरी भाषा में अंतरित करने का प्रयास करेगा, उसमें तथ्य भाषा की दृष्टि के अनुरूप कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य आ जाएगा या दूसरे शब्दों में अर्थ का रूपान्तरण हो जाएगा।

परन्तु अनुवाद तो 'समतुल्यता' के सिद्धांत को लेकर चलता है। वहाँ अर्थ के रूपान्तरण की बात स्वीकार नहीं की जा सकती। अत: विद्वान यह मानने लगे हैं कि अनुवाद में अर्थ का अंतरण नहीं होता बल्कि अर्थ का प्रतिस्थापन [substitution] किया जाता है।

अत: भाषा का सापेक्षतावादी सिद्धांत यही मानकर चलता है कि "अनुवाद प्रक्रिया में श्रोत भाषा के पाठ के भाषिक अभिलक्षणों का लक्ष्य भाषा के पाठ में अंतरण नहीं किया जाता वरन् प्रयोजन और प्रकार्य के आधार श्रोत भाषा के अभिलक्षणों को लक्ष्य भाषा के अभिलक्षणों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। इसीलिए मुहावरे, लोकोक्तियों सांस्कृतिक शब्दों एवं सामाजिक अभिव्यक्तियों आदि के अनुवाद में अंतरण-प्रक्रिया की अपेक्षा प्रतिस्थापन प्रक्रिया अधिक कारगर सिद्ध होती।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुवाद का पाठ धर्मी आयाम अनुवाद के रूप स्वरूप को प्रतिष्ठित करता है जहाँ अनुवादक ऐसा अनुदित पाठ प्रस्तुत करे जिसकी प्रकृति स्रोत भाषा के पाठ की प्रकृति से मेल खाती हो। जिस तरह की संरचनाएँ मूल पाठ से आई है वैसी ही संरचनाएँ अनुवाद में भी प्रस्तुत की जाएँ।

प्रभाव धर्मी आयाम

जहाँ तक तकनीकी तथा सूचना प्रधान साहित्यिक पाठों के अनुवाद का प्रश्न है, पाठ धर्मी अनुवाद वहाँ कारगर हो जाता है परन्तु जब बात सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की आती है तब केवल पाठ धर्मी अनुवाद से काम नहीं चल पाता। उदाहरण के लिए कविता के अनुवाद में अनुवादक से यह अपेक्षा करना कि वह अनूदित पाठ में वैसी ही संरचनाएँ, छन्द, लय आदि ले आए यह उचित नहीं है। रामचरितमानस की चौपाइयों का किसी अन्य भाषा में चौपाई जैसे छन्द में अनुवाद करें यह संभव नहीं होता। अत: अनुवाद का प्रभाव धर्मी आयाम इस मान्यता को लेकर चलता है (विशेष कर सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में) कि अनुवादक मूल भाषा पाठ की संरचना तथा बुनावट की अपेक्षा उस प्रभाव को पकड़ने की कोशिश करे जो स्रोत भाषा के पाठकों पर पड़ा है। फिर अपने अनूदित पाठ के माध्यम से लक्ष्य भाषा के पाठकों के मन में भी वही प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास करे।

उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति प्रेमचन्द की किसी कहानी या उपन्यास का अनुवाद किसी विदेशी भाषा में करता है तो अनुवाद में यह ध्यान देने की अधिक आवश्यकता नहीं है कि वह प्रेमचन्द की कहानी की संरचना तथा बनावट को ध्यान में रखकर अनुवाद करे। बल्कि अनुवादक को यह देखना होता है कि प्रेमचन्द की उस कहानी का हिन्दी भाषा-भाषी पाठकों के मन पर क्या प्रभाव पड़ा है? उसका अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि उस विदेशी भाषा के पाठकों के मन में भी अनुदित कृति के माध्यम से वही प्रभाव पड़े जो हिन्दी के पाठक वर्ग के मन पर पड़ा है।

अत: अन्य सर्जनात्मक साहित्यिक विधाओं में भी विशेष रूप से कविता के अनुवाद में तो प्रभाव धर्मी अनुवाद का ही आश्रय लेना होता है। यहाँ यह मानकर चला जाता है कि पाठ तो पाठक तथा लेखक के बीच संबंध स्थापित करने वाला एक ऐसा उपकरण है जिसके आधार पर यह पता लगाया जाता है कि पाठक के मन पर क्या प्रभाव पड़ा है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

बोध प्रश्न-2

1. निम्नलिखित के विषय में चार-चार पंक्तियाँ लिखिए-

(1) प्रतीक

उ, ...

.....

.....

.....

(2) अन्त:भाषिक अनुवाद

उ, ...

.....

.....

.....

(3) अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद

उ, ...

.....

.....

.....

(4) पाठ धर्मी अनुवाद

उ, ...

.....

.....

.....

(5) प्रभाव धर्मी अनुवाद

उ, ...

.....

.....

.....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. निम्नलिखित कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए–

1. भाषा के सभी शब्द प्रतीकात्मक होते हैं।
2. प्रतीक वह वस्तु है जो किसी प्रयोक्ता के लिए किसी दूसरी वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है।
3. प्रतीक में संकेतित वस्तु तथा प्रतीक का सीधा संबंध होता है।
4. संसार में वस्तु तथा उसका अर्थ सभी के लिए समान होता है।
5. अन्त: भाषिक अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच घटित होने वाला व्यापार है।
6. अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद में प्रतीक 1 का संबंध भाषा से होता है।
7. हिन्दी और उर्दू एक ही भाषा की दो शैलियां नहीं मानी जा सकती।
8. प्रभावधर्मी अनुवाद तकनीकी साहित्य के अनुवाद के लिए बहुत उपयोगी है।
9. भाषा का सापेक्षवादी सिद्धांत यह मानकर चलता है कि प्रत्येक भाषा सांसारिक सत्यों को अपने–अपने ढंग से ग्रहण करती है।
10. अनुवाद में अर्थ का प्रतिस्थापन नहीं अन्तरण होता है।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. शिवलिंग ..... के लिए भगवान शिव का प्रतीक है।
2. प्रतीक की संकल्पना त्रिवर्गीय संबंधों–संकेतित वस्तु ..... तथा प्रतीक पर आधारित है।
3. वस्तु तथा उसका ..... संसार में सबके लिए समान होता है।
4. किसी भाषा की कविता का उसी भाषा के गद्य में किया गया अनुवाद ..... अनुवाद का उदाहरण है।
5. ..... अनुवाद में प्रतीक 1 तथा प्रतीक 2 दो भिन्न भाषाओं से संबंध रखते हैं।
6. शतरंज के खिलाड़ी का हिन्दी रूप पहले ..... पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।
7. जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे ..... कहते हैं।
8. ..... अनुवाद में अनुवादक का ध्यान मूल भाषा पाठ की संरचना तथा बुनावट पर केन्द्रित रहता है।
9. जिस अनुवाद में मूल भाषा के पाठक के मन पर पड़े प्रभाव को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाता है तथा अनुवाद में वही प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाता है उसे ..... कहते हैं।

4. 'अ' और 'ब' का मिलान कीजिए–

अ	ब
1. अनुवाद का व्यापक संदर्भ	1. भाषा
2. ध्वन्यात्मक प्रतीक	2. ट्रांसलेशन
3. द्विभाषिक	3. हैलिडे

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

4.	एक भाषा की दो शैलियां	4.	स्रोत भाषा पाठ
5.	मूल पाठ	5.	हिन्दी, उर्दू
6.	प्रतीक 1 भाषा तथा प्रतीक 2 दृश्य	6.	अनुवाद का सीमित संदर्भ
7.	अनुवाद दो पाठों के बीच संबंध	7.	अन्तरप्रतीकात्मक अनुवाद
8.	ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था	8.	अनुवादक
9.	भाषान्तरण	9.	शब्द
10.	पार ले जाना	10.	प्रतीकान्तरण

सारांश

इस इकाई के अंतर्गत आपको अनुवाद क्या है, अनुवाद की कौन-कौन सी परिभाषाएं विद्वानों ने दी है, अनुवाद के प्रमुख अभिलक्षण कौन से हो सकते हैं तथा अनुवाद का स्वरूप क्या है आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। आपने सीखा कि 'अनुवाद' शब्द तथा 'ट्रांसलेशन' शब्द परस्पर कितने निकट है तथा उनकी व्युत्पत्तियां किस प्रकार हुई हैं। अनुवाद की परिभाषाओं के आधार पर आपको बताया गया है कि अनुवाद दो भाषाओं के बीच घटित होने वाला ऐसा क्रिया व्यापार है जिसमें एक भाषा के पाठ में व्यक्त संदेश को दूसरी भाषा के पाठ में प्रतिस्थापित किया जाता है।

अनुवाद के स्वरूप का अध्ययन करते समय आपने यह देखा कि अनुवाद केवल दो भिन्न भाषाओं के बीच घटित होने वाला व्यापार ही नहीं है। दो भाषाओं के बीच घटित होने वाला अनुवाद जिसे 'अन्तर भाषिक अनुवाद' या 'भाषिक अनुवाद' कहा जाता है। वस्तुत: अनुवाद का सीमित संदर्भ है। व्यापार संदर्भ में हम भाषिक अनुवाद को तो शामिल करते ही हैं इसके अलावा एक ही भाषा की दो शैलियों, बोलियों, साहित्यिक विद्याओं जैसे कविता से कहानी में या कहानी से कविता में आदि के अनुवाद को भी ले लेते हैं।

इसी को हमने अन्त: भाषिक अनुवाद की संज्ञा प्रदान की थी। इसके अलावा व्यापक संदर्भ में दो भिन्न माध्यमों या प्रतीक व्यवस्थाओं (एक भाषिक माध्यम तथा दूसरा दृश्य, चित्र आदि का माध्यम) के बीच घटित होने वाले अनुवाद को भी व्यापक संदर्भों में अनुवाद का ही क्षेत्र मान लेते हैं। हां व्यावहारिक धरातल पर अन्तर भाषिक अनुवाद या भाषिक अनुवाद को ही अनुवाद का वास्तविक क्षेत्र माना जाता है।

अनुवाद का व्यापक संदर्भ चूंकि प्रतीक विज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर खड़ा हुआ है अत: आपको प्रतीक की संकल्पना तथा प्रतीक विज्ञान की आधार मूल मान्यताओं से भी परिचित कराया गया। दूसरी ओर सीमित संदर्भ में भाषा के सापेक्षतावादी सिद्धांत के विषय में आपको परिचय देते हुए यह बताया गया कि सीमित संदर्भों में अनुवाद के दो आयाम पाठ धर्मी तथा प्रभाव धर्मी सामने आते हैं। वस्तुत: पाठ धर्मी अनुवाद सूचना प्रधान तथा तकनीकी साहित्य के अनुवाद में उपयोगी है जबकि सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद प्रभाव धर्मी आयाम के क्षेत्र का विषय है। पाठ धर्मी अनुवाद में मूल पाठ की संरचना तथा बुनावट को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाता है तथा अनूदित पाठ को मूल भाषा के अभिलक्ष्यों, संरचना, बुनावट आदि के अनुरूप प्रस्तुत किया जाता है जबकि प्रभाव धर्मी अनुवाद यह मानकर चलता है कि अनुवाद के माध्यम से लक्ष्य भाषा के पाठकों के मन पर वही प्रभाव पैदा किया जाए तो प्रभाव मूल लेखक ने स्रोत भाषा के पाठकों के मन पर छोड़ा है।

बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. (1) × (2) √ (3) √ (4) × (5) ×
   (6) √ (7) √

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. (1) देखें भाग 1.2 (2) देखें भाग 1.2.3 (3) देखें 1.2.4 (4) देखें भाग 1.9

3. (1) प्रेमचन्द (2) पार ले जाना (3) लक्ष्य भाषा (4) संरचना (5) द्विभाषिक
(6) शिल्प पक्ष (7) संबंध (8) अनूदित पाठ (9) संदेश/कथ्य

बोध प्रश्न-2

1. (1) देखें भाग 1.3 (2) देखें भाग 1.4.1 (3) देखें भाग 1.4.3 (4) देखें भाग 1.5.1
(5) देखें भाग 1.5.2

2. (1) √ (2) √ (3) × (4) √ (5) ×
(6) √ (7) × (8) × (9) √ (10) √×

3. (1) शिव भक्तों (2) ध्वन्यात्मक (3) संकेतार्थ (4) अर्थ (5) अन्त: भाषिक
(6) अन्तर भाषिक (7) माधुरी (8) लक्ष्य भाषा (9) पाठधर्मी (10) प्रभावधर्मी

4.

वर्ग क	वर्ग ख
1	10
2	9
3	8
4	5
5	4
6	7
7	3
8	1
9	6
10	2

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 2 अनुवाद विज्ञान है अथवा कला अथवा शिल्प

इकाई की रूपरेखा

2.0 प्रस्तावना

2.1 उद्देश्य

2.2 विज्ञान, कला अथवा शिल्प की दृष्टि से अनुवाद-कार्य पर विचार करने की सार्थकता

2.3 अनुवाद का व्यवहारपरक रूप

2.4 विज्ञान, कला तथा शिल्प का स्वरूप

2.5 क्या अनुवाद विज्ञान है ?

2.6 क्या अनुवाद कला है ?

2.7 क्या अनुवाद शिल्प है ?

2.8 अनुवाद में विज्ञान, कला और शिल्प तीनों के तत्त्व

2.9 सारांश

2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.० प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइ में आप अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना के विविध पहलुओं के विषय में पढ़ चुके हैं। अनुवाद कार्य के व्यावहारिक स्वरूप से आप अच्छी तरह से परिचित हो गए हैं। प्रस्तुत इकाई अनुवाद कर्म के इस व्यवहारमूलक स्वरूप को विश्लेषित करती है।

व्यवहारमूलक कार्यकलाप के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं- विज्ञान, कला और शिल्प। इस इकाई में आप पढ़ेंगे कि अनुवाद कार्य को विज्ञान, कला अथवा शिल्प में से किस श्रेणी में रखा जा सकता है। इन तीनों क्षेत्रों के विशिष्ट स्वरूप पर विचार करते हुए इस इकाई में यह देखने का प्रयास किया गया है कि अनुवाद को किस अर्थ में विज्ञान अथवा कला अथवा शिल्प कहा जा सकता है।

2.१ उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप बता सकेंगे कि:

- अनुवाद की प्रकृति या स्वरूप क्या है ?
- अनुवाद को विज्ञान, कला या शिल्प में से किस वर्ग में रख सकते हैं और क्यों ?
- क्या अनुवाद केवल विज्ञान है या केवल कला है या केवल शिल्प है या इन तीनों में से किन्हीं दो का मिश्रण है अथवा इन तीनों का ?
- इन सब प्रश्नों का उत्तर खोजने की सार्थकता क्या है ?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2.2 विज्ञान, कला अथवा शिल्प की दृष्टि से अनुवाद-कार्य पर विचार करने की सार्थकता

अनुवाद कार्य पर विज्ञान, कला अथवा शिल्प की दृष्टि से विचार करने की सार्थकता इस बात में है कि अनुवाद के यथार्थ स्वरूप का निश्चय किया जा सके, उसके संबंध में प्रचलित भ्रांतियों को दूर किया जा सकें तथा उसकी ठीक-ठीक प्रक्रिया को निश्चित किया जा सके। जब अनुवाद पर सैद्धांतिक चर्चा की जाती है तब अनेक विवाद उठ खड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई पूछे कि अनुवाद क्या है तो हमें इसके अनेक उत्तर मिलेंगे, अनुवाद की अनेक परिभाषएँ मिलेंगी। डॉ. जॉनसन के अनुसार ''तात्पर्य को सुरक्षित रखते हुए अन्य भाषा में पाठ-परिवर्तन अनुवाद है।'' इस परिभाषा को लेकर प्रश्न उठता है कि ''पाठ'' से तात्पर्य क्या है- शाब्दिक अर्थ, व्यंजित अर्थ, लेखक का मूल मन्तव्य अथवा पाठक द्वारा परिवर्तन क्या एक पात्र में रखे पदार्थ को दूसरे पात्र में रखने जैसी कोई क्रिया है अथवा एक व्यक्ति के मूल वस्त्रों को उतार कर उसे नए वस्त्र पहना देना है? अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद के सिद्धांत और व्यवहार पक्ष के संबंधों की चर्चा प्राय: की जाती है। कुछ विद्वानों का मत है कि ''अर्थान्तरण'' या ''शाब्दिक प्रतिस्थापन'' अनुवाद है, क्योंकि अनुवाद स्रोत भाषा के पाठ के कथ्य का लक्ष्य भाषा के पाठ में अन्तरण करता है या उस पाठ की भाषिक इकाइयों को दूसरी भाषा की भाषिक इकाइयों द्वारा प्रतिस्थापन कर पाठ का पुनर्गठन करता है। ''इस स्थापना को सामने रखने वाले अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के इन विद्वानों का कहना है कि अनुवाद की यह वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसकी पुष्टि वे भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों से करते हैं। लेकिन यहाँ भी अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं क्या कोई भाषा इतनी स्थिर और एकरूप होती है कि उसे दूसरी भाषा में प्रतिस्थापित किया जा सके? क्या कोई भाषा इतनी यांत्रिक और निर्जीव होती है कि दूसरी भाषा में प्रस्तुत कथ्य को ज्यों-का-त्यों ग्रहण कर लें? क्या भाषा अनुवादक के लिए ऐसा लचीला साधन नहीं है, जिसका उपयोग वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार करता है? क्या वह अनुवाद करते समय अनुवाद्य सामग्री में अपनी ओर से कुछ जोड़ता घटाता नहीं है? ऐसे और बहुत, से प्रश्न हमारे सामने, उपस्थित होते हैं। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए हम अनुवाद की मौलिक प्रकृति को जानना चाहते हैं। हमारी जिज्ञासा की सार्थकता इसी बात में है।''

2.3 अनुवाद का व्यवहारपरक रूप

अनुवाद की सैद्धांतिक चर्चा का उपयोग तो मार्ग-दर्शन मात्र है। मार्ग-दर्शन की सार्थकता तभी है जब मार्ग पर चला जाए। असली समस्याएँ तो मार्ग पर चलने वाले के सामने आती हैं। जब तक व्यावहारिक स्तर पर अनुवाद न किया जाए तब तक सिद्धांत-चर्चा व्यर्थ है।

व्यावहारिक स्तर पर अनुवाद को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। एक वर्ग उन रचनाओं के अनुवाद का हो सकता है, जिनमें तथ्य प्रस्तुत किये जाते हैं और सूचनाएँ दी जाती हैं। ऐसी रचनाओं के अंतर्गत भौतिक विज्ञानों, समाजविज्ञानों, दैनन्दिन व्यवहार, कार्यालयी, पत्रकारिता आदि से संबंधित अनुवाद को रखा जा सकता है। इस वर्ग के अनुवाद की प्रकृति और प्रवृत्ति दूसरे प्रकार के अनुवाद से अलग होती है। ऐसे अनुवाद के पीछे शुद्ध उपयोगितावाद प्रेरक होता है। भौतिकी अथवा अर्थशास्त्र की पुस्तक का अनुवाद, अनुवाद के द्वारा प्राप्त होने वाले सुख मात्र के लिए शायद ही कोई व्यक्ति करे। इसके विपरीत ऐसे अनेक अनुवादक मिल जाएँगे, जो किसी साहित्यिक कृति का अनुवाद इसलिए करते हैं कि उसके अनुवाद से उन्हें एक प्रकार का मानसिक सुख मिलता है। ऐसा अनुवाद अनेक बार रोचक परिश्रम होता है। इस प्रकार के अनुवाद को हम व्यावहारिक स्तर पर अनुवाद का दूसरा वर्ग मान सकते हैं। पहले प्रकार के लिए पाठधर्मी अनुवाद अनिवार्य है। पहले वर्ग में आने वाले अनुवाद के लिए यह आवश्यक है कि अनुवादक तटस्थ रहकर अनुवाद करे और पाठ के प्रति निष्ठावान रहे। वह पाठ में साथ छूट नहीं ले सकता पाठ को घटाने, बढ़ाने या उसमें परिवर्तन करने की छूट उसे नहीं है। दूसरे वर्ग की रचनाओं का अनुवाद पाठधर्मी भी हो सकता है और प्रभावधर्मी भी। साहित्यिक कृतियों के ऐसे तमाम उदाहरण हमें मिलते हैं जिनमें अनुवादक ने मूल रचना में अपनी ओर से बहुत कुछ जोड़ दिया है या घटा दिया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ''किरातार्जुनीयम्''

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

का अनुवाद करते समय पाठ का विस्तार भी किया है। उन्होंने भूमिका में इस संबंध में लिखा है- ''हमें प्राय: अर्थ विस्तार भी करना पड़ा है, पर इसकी परवाह न करके मूल का मतलब अच्छी तरह से समझने के लिए, हमने अधिक वाक्यों के व्यय में कमी नहीं की। प्रसंग का मेल मिलाने के लिए कहीं-कहीं तो हमने अपनी तरफ से भी कुछ नहीं दिया है।'' ''लाइट ऑफ एशिया'' का ''बुद्धचरित'' के नाम से अनुवाद करते समय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी यही किया है। द्विवेदी जी की तरह शुक्ल जी ने भी भूमिका में अपना मन्तव्य स्पष्टत: व्यक्त कर दिया है- यह ''बुद्धचरित'' अंग्रेजी के..... (लाइट ऑफ एशिया) का हिंदी काव्य के रूप में अवतरण है। यद्यपि ढंग इसका ऐसा रखा गया है कि एक स्वतंत्र हिंदी काव्य के रूप में इसका ग्रहण हो, पर साथ ही मूल पुस्तक के भावों को स्पष्ट करने का भी पूर्ण प्रयत्न किया गया है। दृश्य वर्णन जहाँ अपर्याप्त प्रतीत हुए वहां बहुत कुछ फेरबदल करना या बढ़ाना भी पड़ा है। अंग्रेजी अलंकार, जो हिंदी में आने वाले नहीं थे, वे खोल दिये गये हैं। जैसे मूल में यह वाक्य था-

..... where the Teacher spake
..... wisdom and sower .....

इसमें Hendiadys नामक अलंकार था, जिसमें किसी संज्ञा का गुणवाचक शब्द उसके आगे एक संयोजक शब्द डालकर संज्ञा बनाकर रख लिया जाता है- जैसे, ज्ञान और ओज- ओजपूर्ण ज्ञान। उक्त वाक्य हिंदी में इस प्रकार किया गया है- ''ओजपूर्ण अपूर्व भाख्यो ज्ञान श्रीभगवान।'' ''तात्पर्य यह कि मूल के भावों का भी पूरा ध्यान रखा गया है।''

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी ''विद्यासुन्दर'', ''रत्नावली'', ''मुद्राराक्षस'', ''सत्यहरिश्चन्द्र'' नाटकों के अनुवाद में इसी पद्धति को अपनाया। शुक्ल जी की आकांक्षा थी कि उनके अनुवाद ''बुद्धचरित'' को मौलिक रचना के रूप में अपनाया जाये। उनकी आकांक्षा पूरी नहीं हुई, लेकिन भारतेन्दु के ''सत्य हरिश्चन्द्र'' को मौलक रचना का सम्मान मिला था। उन्होंने शेक्सपियर के नाटक - ''द मर्चेन्ट ऑव् वेनिस'' का अनुवाद करते समय इतनी छूट लीं कि पात्रों, स्थानों आदि के नाम बदल कर उनका भारतीयकरण कर दिया। उन्होंने वेनिस को वंशपुर बना दिया, एण्टोनियो को अनन्त, सोलानियों को सलोने और सैलोरियो को सरल बना दिया। प्रश्न उठता है कि क्या अनुवादक को पाठ के साथ ऐसी छूट लेनी चाहिए? सिद्धांत रूप में इसका उत्तर नकारात्मक होगा अर्थात अनुवादक को अनुवादक ही रहना चाहिए। उसे किसी दूसरे की रचना के आधार पर मौलिक रचनाकार बनने की महत्त्वाकांक्षा नहीं पालनी चाहिए। लेकिन व्यवहार में हम अनेक अनुवादकों को इससे भी आगे बढ़कर पुन:सर्जक बनते हुए देखते हैं। अज्ञेय ने ''अरी ओ करूणा प्रभामय'' के ''एक चीड़ का खाका'' खण्ड में अनेक बार ऐसी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं जो एकाधिक कवियों की कविताओं पर आधारित है। जेसे, ''क्वाँर का भोर'' शीर्षक कविता-

क्वाँर का भोर
अनमनी कतार में खड़ी
डार सरसों की।
बड़ा करूण
अरूणोदय।

पादटिप्पणी से हमें पता चलता है कि इसका प्रथम छन्द काकेइ, और दूसरा छंद बाशो द्वारा रचित है। यहाँ फिर वही प्रश्न उठता है कि क्या अनुवादक का ऐसा करना उचित है? इसका उत्तर भी वही होगा, जो ऊपर दिया जा चुका है अर्थात् सिद्धान्त रूप में नहीं लेकिन व्यवहार में सर्जनात्मक साहित्यकार अक्सर ऐसी छूट लेते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद का व्यवहारगत रूप उपयोगिता और कलात्मकता दोनों से प्रेरित और दोनों पर आधारित होता है। सूचनात्मक साहित्य का अनुवाद प्राय: अनुवाद ही रहता है जबकि रचनात्मक साहित्य का अनुवाद पुन:

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सृजन तक बन जाता है। अत: अनुवाद का व्यवहारगत रूप बड़ा वैविध्यपूर्ण होता है।

बोध प्रश्न – 1

लगभग छह-सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए-

1. अनुवाद का विज्ञान, कला अथवा शिल्प की दृष्टि से विचार करने की क्या सार्थकता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2. अनुवाद का व्यवहारपरक स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 विज्ञान, कला तथा शिल्प का स्वरूप

अनुवाद के व्यावहारिक रूप की विविधता ही हमारे सामने यह प्रश्न उठाती है कि अनुवाद विज्ञान है, या कला है या शिल्प है अथवा इनमें से एकाधिक की विशेषताओं से युक्त कोई और ही चीज ? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए पहले हमें विज्ञान, कला और शिल्प का स्वरूप जानना होगा।

विज्ञान – पहले विज्ञान को लें। विज्ञान का सामान्य अर्थ होता है किसी भी चीज का विशिष्ट ज्ञान, लेकिन आधुनिक काल में विज्ञान शब्द अपने विशिष्ट अर्थ में भौतिक विज्ञानों-भौतिकी, रासायनिकी, जैविकी, गणित इत्यादि- तक सीमित हो गया है। इसलिए जो भौतिक विज्ञान नहीं हैं, वे भी भौतिक विज्ञानों के आधुनिक वर्चस्व के कारण उन्हीं की पद्धति को अपनाकर ''विज्ञान'' बनने की होड़ में लगे हुए हैं। जो पहले ''शास्त्र'' कहलाते थे, जैसे राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, भाषाशास्त्र इत्यादि, वे भी अब राजनीतिविज्ञान, अर्थविज्ञान, भाषाविज्ञान इत्यादि कहलाना पसन्द करते हैं।

भौतिक विज्ञान की पद्धति क्या है ? भौतिक विज्ञानों की पद्धति यह है कि वे पहले प्राप्त तथ्यों अथवा अपर्याप्त तथ्यों को खोजकर उनका विश्लेषण करते हैं, उन्हें एक तर्कसम्मत क्रम में संजोते हैं, उनका वर्गीकरण करते हैं और इस प्रक्रिया से गुजर कर ऐसे सिद्धांतों और नियमों की खोज करते हैं जो निरपवाद, सार्वभौमिक और सार्वकालिक होते हैं। भौतिक विज्ञानों के सिद्धांत और नियम निर्विकल्प, सुस्पष्ट, सुनिश्चित और सुपरिभाषित होते हैं। चूँकि भौतिक विज्ञानों का संबंध भौतिक जगत से होता है, इसलिए उनमें यांत्रिक प्रक्रिया, वैज्ञानिक की निर्वैयक्तिक तटस्थता, सार्वभौमक और सार्वकालिक निर्विकल्प नियमों और सिद्धांतों की खोज संभव है, लेकिन सामाजिक जीवन से संबंद्ध पद्धतियों, सांख्यिकीय विधियों, साक्षात्कारों, प्रश्नावलियों, संगणना करने

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

वाले यंत्रों आदि की सहायता लेकर समाजविज्ञानों, भाषाविज्ञानों इत्यादि के क्षेत्र में अध्ययन विश्लेषण, वर्गीकरण, निष्कर्षण आदि को अपनाकर एक सीमा तक वैज्ञानिकता सिद्ध की जाती है।

कला : कला का स्वभाव विज्ञान के बिल्कुल विपरीत है। कला के अंतर्गत मनुष्य की वे क्रियाएँ और कृतियाँ आती हैं जिनके सृजन और आस्वादन दोनों में उसे मानसिक आह्लाद मिलता है और उसकी सौन्दर्यवृत्ति की तृप्ति होती है। कला के माध्यम से मनुष्य लालित्य की सृष्टि करता है और उससे स्वयं आनन्दित होता है और दूसरों को आनन्दित करता है। कला की वस्तु के रूप में मनुष्य के अनुभव, भावनाएं और इन्द्रिय बोध सामने आते हैं जो सार्वभौमिक और सार्वकालिक होते हुए भी वैशिष्टय के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। इसीलिए प्रत्येक कलाकृति निजी वैशिष्ट्य और व्यक्तित्व से संपन्न होती है। कला में कलाकार की वैयक्तिक विशिष्टता, वैयक्तिक प्रतिभा और सर्जनशीलता का विशेष महत्त्व होता है। कलाकृति के रूप में मनुष्य के जो अनुभव, भाव और इन्द्रियबोध विशिष्ट, निजी व्यक्तित्व संपन्न अभिव्यक्ति पाते हैं, आस्वादक भी जब उन्हें ग्रहण करता है तब-यानी जब हम कविता को सुनते या पढ़ते हैं तब- हम पर उसका जो प्रभाव पड़ता है, हम उसे जिस रूप में ग्रहण करते हैं, वह बिल्कुल वही अनुभव, भाव या इन्द्रियबोध नहीं होता, जो कवि का था या जिसे कवि ने संप्रेषित करना चाहा था। जब प्रसाद जी ''कामायनी'' में मनु से कहलवाते हैं।

कब तक और अकेले कह दो,
हे मेरे जीवन बोलो ?
किसे सुनाऊं कथा कहो मत,
अपनी निधि न व्यर्थ खोलो।

तब उनके इस कथन में अकेलेपन की जिस तड़प ने अभिव्यक्ति पायी है, क्या उसे ''कामायनी'' का हर पाठक ग्रहण कर पाता है ?संभवत: नहीं। जबकि सत्य यह है कि अकेलेपन की यह तड़प प्रसादजी ने स्वयं बड़े तीखेपन के साथ अनुभव की थी। यह उनके जीवन का यथार्थ था। महादेवी वर्मा ने उनके संबंध में लिखा है ''प्रसाद का व्यक्तिगत जीवन अकेलेपन की जैसी अनुभूति देता है, वैसी हमें किसी अन्य समसामयिक साहित्यकार के जीवन के अध्ययन से नहीं प्राप्त होती है।''

शिल्प : कला का उच्च अर्थ वही होता है, जो ऊपर बताया गया है लेकिन सामान्य रूप में उस अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है जिस अर्थ में शिल्प को किया जाता है। शिल्प के पर्यायवाची के रूप में हुनर, कारीगरी, दक्षता, हस्तकर्म इत्यादि का प्रयोग किया जाता है और माना जाता है कि प्रशिक्षण, अभ्यास और शारीरिक श्रम के द्वारा किसी उपयोगी वस्तु के निर्माण में दक्षता प्राप्त कर लेना शिल्पगत दक्षता है। इसमें सर्जनशीलता की अभिव्यक्ति नगण्य होती है। इसलिए कला की अपेक्षा को हीनतर माना जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि कला का संबंध लालित्य से जोड़ा जाता है और शिल्प का संबंध उपयोगिता से। ललित कलाओं की रचना में प्राप्त कुशलता कला है, उपयोगी कलाओं के निर्माण में प्राप्त दक्षता शिल्प है। विज्ञान, कला और शिल्प का स्वरूप जान लेने के बाद अब अनुवाद इनमें से क्या है, इसका निर्णय करने में अधिक कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

बोध प्रश्न - 1

निम्नलिखित की विशेषता तीन-चार पंक्तियों में बताइए-

1. विज्ञान

.....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

.....

.....

.....

2. कला

.....

.....

.....

.....

.....

3. शिल्प

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 क्या अनुवाद विज्ञान है ?

विद्वानों का एक वर्ग ऐसा है जो अनुवाद को विज्ञान को श्रेणी में रखना चाहता है। इन विद्वानों में नाइडा और ओटिंगर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये भाषावैज्ञानिक हैं और अनुवाद को विज्ञान सिद्ध करने में इनके दो तर्क हैं। पहला यह है कि अनुवाद की प्रक्रिया तुलनात्मक भाषा विज्ञान में प्रयुक्त होने वाली प्रक्रिया है। नाइडा के अनुसार अनुवाद में पहले स्रोत भाषा के पाठ का विकोडीकरण किया जाता है। इसके बाद विकोडीकरण के द्वारा प्राप्त अर्थ का कोडीकरण के द्वारा लक्ष्य भाषा में पुनर्गठन किया जाता है। इन दोनों प्रक्रियाओं को संपन्न कर लेने के बाद स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का वैज्ञानिक पद्धति से तुलनात्मक अध्ययन करके समानताओं और विषमताओं का पता लगाया जाता है। इसके बाद कोडीकरण के द्वारा पाठ के रूप में पुनर्गठन किया जाता है। अनुवाद की यह प्रक्रिया वैज्ञानिक प्रक्रिया है। दूसरा तर्क, जो इसी तर्क की परिणिति है, यह कि इस वैज्ञानिक प्रक्रिया को अपनाकर विकल्पनों पर नियंत्रण कर कंप्यूटर के द्वारा मशीनी अनुवाद संभव है और इस मशीनी अनुवाद में एक सीमा तक सफलता प्राप्त कर ली गयी है।

इन दोनों तर्कों को आँख बंद करके मान लें तब अनुवाद विज्ञान है, लेकिन इन तर्कों को लेकर कई आपत्तियाँ उठ, खड़ी होती हैं। जैसे भौतिकी, गणित या अन्य भौतिक विज्ञानों में कंप्यूटर का उपयोग जिस असीमता तक किया जा सकता है, क्या वैसे ही अनुवाद में भी संभव है ? क्या अनुवाद की प्रक्रिया पूर्णत: यान्त्रिक है ? भौतिक विज्ञानों, समाज विज्ञानों, प्रशासन या सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त तथ्यात्मक और सूचनात्मक पाठ का यांत्रिक अनुवाद संभव है, लेकिन वहाँ भी क्या विकल्पनों से पूरी तरह मुक्त हुआ जा सकता है ? एक सीधा सा वाक्य लीजिए- My Father is ill. क्या कम्प्यूटर भी भिन्न-भिन्न प्रोग्रामों के आधार

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

पर इसके भिन्न-भिन्न अनुवाद नहीं करेगा ? जैसे मेरे पिताजी बीमार हैं, मेरे पिताजी की तबीयत ठीक नहीं है, मेरे पिताजी रूग्ण हैं, इत्यादि। इनमें से एक भी अनुवाद गलत नहीं और न ही इनमें से एक अनुवाद को दूसरे अनुवाद से अधिक अच्छा सिद्ध किया जा सकता है। और यदि प्रोग्रामिंग में थोड़ी-सी त्रुटि हो जाये तो हास्यापद परिणाम निकल सकते हैं। कंप्यूटर-कृत अनुवाद को लेकर अनेक चुटकले प्रचलित हैं। एक चुटकला यह है। कंप्यूटर को रूसी में अनुवाद करने के लिए अंग्रेजी का यह वाक्य दिया गया-

The spirit is willing but the flesh is weak.

कंप्यूटर ने तुरंत इसका जो रूसी अनुवाद किया, उसका अंग्रेजी में अर्थ था-

The vodka is agreable but the neat has gone bad.

साहित्य का मशीनी अनुवाद तो लगभग असंभव है। माना तो यहाँ तक जाता है कि मशीन तो मशीन, मनुष्य के द्वारा भी उसका अनुवाद असंभव है। इसलिए राबर्ट फ्रास्ट ने कहा था कि कविता का अनुवाद करते समय जो कुछ छूट जाता है, वही कविता होती है। यह काफी हद तक सच है बिहारी का बड़ा प्रसिद्ध दोहा है-

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करै भौंहन हँसै, देन कहै, नटि जाइ॥

अमरनाथ झा ने इस दोहे का अंग्रेजी में इस प्रकार अनुवाद किया है

In order to hear him speak Radha conceals krishnas flute. She swears to him she knows nothing about it, she laughs with her eye - brows arched, the promises to return it, But eventually she denies all knoweldge of it.

जो बिहारी के दोहे के काव्य-सौन्दर्य से परिचित हैं, वे मानेंगे कि उसके अंग्रेजी अनुवाद में उसका पासंग भी नहीं आ पाया है। यही कारण है कि एक साहित्यिक रचना का अनेक अनुवादक बार-बार अनुवाद करते हैं, जिनमें से कोई अनुवाद सफल होते हैं, कोई असफल। यह सफलता-असफलता भी सापेक्ष होती है। हिंदी में उमर ख्य्याम की रूबाइयों के जो दसियों अनुवाद हुए हैं, वे सब सफल अनुवाद नहीं है और उनके बावजूद रूबाइयों का एक और पूर्णत्तर अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए कोई भी अनुवादक कमर कस सकता है।

इस स्थिति में भी क्या अनुवाद को विज्ञान माना जा सकता है ?

हमें लगता है कि जिन अर्थों में भौतिकी, रासायनिकी, गणित इत्यादि विज्ञान हैं उन अर्थों में अनुवाद विज्ञान नहीं है। मशीनी अनुवाद के अस्तित्व के बावजूद अनुवाद में विकल्पों की संभावना बराबर बनी रहती है और मनुष्य के द्वारा किए जाने वाले अनुवाद पर अनुवादक की व्यक्तिगत क्षमता, सूझबूझ और व्यक्तित्व की छाप अवश्य पड़ती है। इसलिए अनुवाद इस अर्थ में विज्ञान कहा जा सकता है कि उसमें तार्किक और एक सीमा तक निर्वैयक्तिक वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया जाता है और उसे यांत्रिक बनाया जा सकता है।

अनुवाद के अध्ययन की प्रक्रिया विज्ञान के अध्ययन की प्रक्रिया से निकटता रखती है, जिस प्रकार विज्ञान संबंधी अनुशीलन में तथ्य संकलन, तुलना, निरीक्षण, वर्गीकरण, विश्लेषण नियम निर्धारण आदि कार्य शामिल होते हैं, उसी प्रकार की स्थितियाँ अनुवाद कार्य में भी आती रहती हैं। वैज्ञानिक के समान अनुवादक को भी तटस्थ रहना पड़ता है एवं अनुवाद के माध्यम से एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में सही ढंग से लाना पड़ता है। इस प्रकार वह सांस्कृतिक भाषा का एक ऐसा संपर्क-सूत्र खड़ा करता है जिसकी उपयोगिता सामाजिक जीवन में अत्यधिक है। वैज्ञानिक अनुसंधानशाला में बैठकर मानव-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कल्याण की ओर प्रवृत्त होता है और अनुवादक स्रोत भाषा की सामग्री से जूझ-कर मानव-कल्याण की ओर या विचार के आदान-प्रदान की सुविधा के ओर समानार्थक शब्दों या नये शब्दो को खोजकर आगे बढ़ता है, दो देशों के भाषा-साहित्य और संस्कृतिपरक ज्ञान की सरलता, सुबोधगम्यता और दृष्टि की वैज्ञानिकता में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार अनुवादक कुछ अपवादों को छोड़कर निश्चित नियमों का अनुसरण करता है। यह प्रक्रिया पूरी तरह से वैज्ञानिक है और यदि इसमें वैज्ञानिक नियम न होते तो मशीनी अनुवाद संभव ही नहीं हो सकता था। दो भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन विश्लेषण के आधार पर सुनिश्चित वैज्ञानिक नियमों ने ही इस प्रक्रिया को संभव बनाया है। इस प्रकार अनुवाद की संपूर्ण मानसिकता वैज्ञानिक प्रक्रिया की मानसिकता से जुड़ी है और अनुवादक की पूरी पृष्ठभूमि कार्य-कारण सम्बन्ध से रहित नहीं है। इसी अर्थ में अनुवाद विज्ञान कहा जा सकता है।

2.6 क्या अनुवाद कला है ?

जो लोग अनुवादक को केवल जीता-जागता यंत्र मानते हैं और उसका कार्य इतना भर मानते हैं कि वह एक भाषा में व्यक्त की गयी बात को दूसरी भाषा में अंतरित कर रख-भर देता है, उनकी दृष्टि में अनुवाद कला नहीं है। लेकिन जो लोग अनुवादक के निजी व्यक्तित्व और सर्जनशीलता को स्वीकार करते हैं, वे अनुवाद को कला मानते हैं। अनुवाद कला है, इसका सबसे अधिक अनुभव हमें साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में मिलता है। तथ्य और सूचना प्रस्तुत करने वाले विज्ञानों और शास्त्रों में भी शब्दानुवाद से काम नहीं चल सकता है। भावों और विचारों को भाषा के सौष्ठव के साथ प्रस्तुत करना होता है। साहित्यिक कृतियों का अनुवाद तो अक्सर भाव प्रधान ही होता है। साहित्य में रचना की जिस अंर्तवस्तु को अभिव्यक्ति देनी पड़ती है, उसमें भाषा का अधिकतम संभव अर्थ में प्रयोग करना पड़ता है, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि अभिव्यक्ति पूर्ण हुई है। यही कारण है कि जहाँ विज्ञानों और शास्त्रों आदि में भाषा की अभिधा शक्ति से काम लिया जाता है वहीं सर्जनात्मक भाषा में अभिधा की अपेक्षा लक्षणा और व्यंजना शक्तियों से अधिक काम लिया जाता है। साहित्य में जो स्पष्टत: कथित है, उसकी अपेक्षा जो उस कथन के पीछे संकेतित है, उसका अधिक महत्त्व है। अनुवाद में इस संकेतित को पकड़ पाना अत्यन्त दुष्कर होता है। अनुवाद में इस संकेतित को पाने के लिए अनुवादक को सर्जक-कलाकार की भूमिका में उतरना पड़ता है। एक ही साहित्यिक रचना का बार-बार और अनेक बार अनुवादकों के द्वारा अनुवाद किया जाना इस बात का प्रमाण है कि हर अनुवाद के बाद भूल में ऐसा कुछ बचा रहता है, जो नये अनुवादक को ललकारता है और अनुवादक उस ललकार के उत्तर में एक नया अनुवाद प्रस्तुत कर देता है। कबीर का एक अत्यन्त प्रसिद्ध और सरल सा दिखने वाला दोहा है-

राम नाम की लूट है, लूटि सकै तो लूट,
तू पीछे पछिताएगा, साँस जाएगी छूट।

इस दोहे का अंग्रेजी में अनुवाद अनेक लोगों ने किया है, फिर भी इसकी संभावनाएँ चुकी नहीं है। इसके दो अनुवाद यहाँ प्रस्तुत है

If you can lunder, pluner,
Let the name of Ram be your booty.
Otherwise later you'll repent,
when you breath your last. (Charlotte Vaudeville)

Rejoice, O Kabir
In this gret feast
of Love !
Once death
Knocks at your door

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

This golden mement / will be gone forever! (Sahdev Kumar)

इनमें से पहला अनुवाद बहुत कुछ शब्दानुवाद है, जबकि दूसरा अनुवाद भावानुवाद है। पहले अनुवाद का अनुवादक अनुवादक ही रहा है, जबकि दूसरे अनुवाद का अनुवादक सर्जक बन गया है। उसने कबीर के दोहे के आधार पर एक नयी ही कविता रच दी है। निस्संदेह हम सहदेव कुमार को इस अनुवाद के लिए सर्जक-कलाकार कह सकते हैं और उनके अनुवाद को कला की श्रेणी में रख सकते हैं।

इसी प्रकार विदेशी कविताओं के एकाधिक हिन्दी अनुवाद उदाहरण के लिए प्रस्तुत किए जा सकते हैं। पुर्तगाली कवि अलबर्टो की एक कविता का अंग्रेजी अनुवाद और उसके एकाधिक हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है।

Core
I write my name on time
And on the world.
All belong to me as flower
Belongs to its perfume asleep
That stays virbrating in the air
After the sonbre shedding.

1. मैं अपना नाम लिखता हूँ
समय पर
और तमाम सारी दुनिया पर
और.....और सब कुछ मुझसे
वैसे ही संबंधित है,
जैसे फूल
अपनी सुवासित तन्द्रा से
जो हवा में ठहरती है
यों ही झर जाने तक....।
(परमानन्द श्रीवास्तव)

2. सत्त
मैंने लिख दिया है नाम
अपने काल पर, संसार पर
और यह सब मेरा है अब
जैसे फूल की सुगन्ध सुप्त अन्दर
जो टिकी रह जाती है, झड़ने के बाद भी
हवा में थरथराती।
(अरूण कमल)

दोनों हिंदी अनुवादों की तुलना करने पर दोनों अनुवादकों की क्षमता और सर्जनशीलता हमारे सामने आ जाती है और यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अनुवादक भाषान्तर करने वाला यंत्र मात्र नहीं है। यहां यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या अनुवादक को अनुवादक की भूमिका का अतिक्रमण करके सर्जक बनने की छूट दी जा सकती है ? यदि हम श्रेष्ठ अनुवाद चाहते

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

हैं तो हमें अनुवादक को यह छूट देनी होगी। साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में तो यह छूट आवश्यक है। इस छूट के बाद भी कुछ अनुवादक कभी-कभी बड़ा अनर्थ करते हैं।

अनुवादक मूल कृति में निहित बिंबों, प्रतीकों, संदर्भों को तलाशता है, कृति के समग्र सांस्कृतिक संदर्भों को पहचानता है, उन्हें व्याख्यायित करता है और लक्ष्य भाषा में उन्हें पुन: सृजित करता है। इस पुन: सृजन की प्रक्रिया में वे कभी तो अपने मूल रूप में ही, भाषांतरित हो कर आ जाते हैं कभी रूपान्तरित होकर आते हैं। इस रूपांतरण की प्रक्रिया में अनुवादक कभी-कभी भटक भी जाता है इस विवेचन के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अनुवादक मात्र उल्थकार नहीं है वरन् सफल अनुवादक बहुत बड़ी सीमा तक कलाकार होता है और सफल अनुवाद कला।

2.7 क्या अनुवाद शिल्प है ?

सफल अनुवादक कलाकार होता है और सफल अनुवाद को कला की श्रेणी में रखा जा सकता है, लेकिन उसकी एक सीमा है। और वह सीमा यह है कि सामान्यत: कलाकार जन्मजात होते हैं। उनमें सृजन की प्रतिभा प्रकृति, प्रदत्त होती है, व्युपत्ति और अभ्यास से उसमें निखार और संयम आता है जिस तरह कवि प्रशिक्षण और अभ्यास से बनाये नहीं जा सकते उसी तरह अनुवादक भी नहीं बनाए जा सकते हैं। प्रशिक्षण और अभ्यास उनकी प्रतिभा में दक्षता ला सकते हैं। प्रशिक्षण और अभ्यास से अनुवादक जो दक्षता प्राप्त करता है, वह शिल्प का गुण है। यह दक्षता साहित्यिक अनुवाद में कम, अन्य क्षेत्रों के अनुवाद में अधिक।

शिल्प और कौशल का अंग्रेजी रूपांतर है- क्राफ्ट (Craft) और कला का आर्ट (Art)। एक प्रकार से कला शब्द सभी प्रकार की लालित्य बोधीय अनुभूतियों, अनुभवों और अभिव्यक्तियों के लिए आता है।

कला और शिल्प को अलग नहीं किया जा सकता। अलग-अलग दिखाई देने पर वस्तुत: यह एक दूसरे से भिन्न नहीं होते। इस तरह शिल्प, कला की ही एक अवधारणा है। कला नैसर्गिक प्रतिभा का सहज विस्फोट है इसलिए तमाम ललित कलाएँ अर्जन और शिक्षण को महत्त्व देने पर भी यही नारा लगाती हैं कि कलाकार उत्पन्न होते हैं, वे बनाये नहीं जाते। अनुवादक कलाकार की भाँति सृजनकर्त्ता नहीं है क्योंकि सृजन आत्म-साक्षात्कार के क्षणों की अनिवार्य प्रक्रिया है जिसका परिणाम है- आत्माभिव्यक्ति। परन्तु अनुवादक इस अर्थ में कलाकार है कि वह कलाकार की आत्माभिव्यक्त को अपने में उतारता है, उससे पुन: आत्म-साक्षात्कार करता है और तटस्थ भाव से उसको पुन: अभिव्यक्त कर देता है। इस अर्थ में अनुवादक का व्यक्तित्व पुनरूत्पादक कलाकार का व्यक्तित्व है। कला सृजन है और अनुवाद पुनर्सृजन। यह एक प्रकार का प्रविधि और प्रक्रियागत पार्थक्य है।

चूँकि अनुवाद प्रशिक्षण और अभ्यास - साध्य उपयोगी कला (Functional art) है, अत: एक सीमा तक उसकी गणना शिल्प के अंतर्गत की जा सकती है।

2.8 अनुवाद में विज्ञान, कला और शिल्प तीनों के तत्त्व

ऊपर अनुवाद की प्रकृति के संबंध में जो कहा गया है, उससे स्पष्ट है कि अनुवाद को केवल विज्ञान या केवल कला या केवल शिल्प कहना ठीक नहीं है। उसमें किसी-न-किसी मात्रा में इन तीनों के तत्त्व विद्यमान रहते हैं। जब तक अनुवदक में संवेदनशीलता और तीक्ष्ण बुद्धि नहीं होगी तब तक वह स्रोत भाषा में प्रस्तुत कथ्य को ग्रहण कैसे करेगा ? अगर अनुवादक किसी साहित्यिक कृति का अनुवाद कर रहा है तो सबसे पहले तो उसे अनूद्य साहित्यिक कृति से अंतरंग का साक्षात्कार करना होगा। यह तब तक संभव नहीं होगा जब तक कि अनुवादक में एक रचनाकार की संवेदनशीलता न हो और वह उस अनुभव को स्वायत्त करने की क्षमता न रखता हो, जिसमें से गुजरकर साहित्यकार ने उस रचना को रचा है। यह अकारण नहीं है कि उमार

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

खय्याम की रूबाइयों का अंग्रेजी से सर्वाधिक सफल हिन्दी अनुवाद डॉ. हरिवंशराय ''बच्चन'' ने किया। अनुवाद करते समय फिट्जजेराल्ड और ''बच्चन'' दोनों अपने निजी जीवन में भी गहरी पीड़ा और घोर निराशा में से गुजर रहे थे। इसी प्रकार जो अनुवादक भौतिकी या अर्थशास्त्र में चंचु-प्रवेश तो अवश्य होना चाहिए। नहीं तो वह मूल को समझेगा कैसे? और मूल को समझे बिना अनुवाद करना संभव नहीं होगा। अत: अनुवादक के लिए संवेदनशीलता और समझ दोनों की आवश्यकता होती है। अनूद्य सामग्री के कथ्य को अच्छी तरह ग्रहण करने के पश्चात् उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की समस्या उपस्थित होती है। इस समस्या के समाधान के लिए लक्ष्य भाषा पर अधिकार के साथ-साथ वह सर्जनशीलता भी चाहिए जो ठीक-ठीक शब्द-चयन के लिए उत्तरदायी होती है। उदाहरण के लिए, यदि मूल पाठ में flowering शब्द का प्रयोग संज्ञा के रूप में एकाधिक अर्थच्छायाओं के साथ हुआ है तो अनुवादक के सामने प्रश्न ऐसे हिंदी शब्द का चयन का है जिसमें flowering शब्द का संगीत और मूल में संकेतित सभी अर्थच्छाएँ भी विद्यमान हों। अनुवादक फादर कामिल बुल्के का ''अंग्रेजी हिंदी कोश'' देखता है और उसे हिंदी शब्द मिलता है ''पुष्पण''। वह हरदेव बाहरी का ''बृहत्त अंग्रेजी हिंदी कोश'' देखता है और उसे दो हिंदी पर्याय मिलते हैं- ''पुष्पन'' और ''फूल आना''। इनमें वह ''पुष्पण'' या ''पुष्पन'' को चुन सकता है, लेकिन इनमें flowering की संगीतात्मक कम है। अत: उसे नये हिंदी शब्द चुनने या रचने में अनुवादक में संवेदनशीलता और रचनाशीलता दोनों विशेषताओं का होना आवश्यक है।

संवेदनशीलता और रचनाशीलता की विशेषताएँ तो जन्मजात होती है, किन्तु जो जन्मजात विशेषाताएँ हैं, उनके विकास और परिमार्जन के लिए शिक्षण और अभ्यास दोनों आवश्यक हैं। एक शिल्पी के लिए इनकी बहुत आवश्यकता होती है। स्रोत भाषा के लक्ष्य भाषा में ठीक ठीक प्रभावशाली ढंग से उतार पाने के लिए अनुवादक को शिल्पी तो बनना ही पड़ेगा। इसलिए वह जरूरी है कि अनुवादक में वैज्ञानिक की तर्क-प्रवणता, बौद्धिकता और तटस्थता हो, कलाकार की संवेदनशीलता और सर्जनशीलता हो तथा शिल्पी का प्रशिक्षण और परिश्रमशीलता हो।

इससे तो यही सिद्ध होता है कि अनुवाद अंशत: विज्ञान है, अंशत: कला और अंशत: शिल्प। इसमें से किस अनुवाद में कितना-कितना अंश होता है, यह अनूद्य और अनुवादक दोनों पर निर्भर होता है। यदि कविता का अनुवाद कलात्मक नहीं होगा तो उसमें सफलता कैसे मिलेगी? स्वाभाविक है कि कविता के अनुवाद में कला तत्त्व प्रधान होगा। इसके विपरीत यदि विज्ञान के अनुवाद में कलात्मकता लाने का प्रयास किया जाएगा तो अपने लक्ष्य से विचलित हो जाएगा। उसमें तो वैज्ञानिकता अपेक्षित है साथ ही शिल्प का मँजाव और निखार दोनों के लिए आवश्यक है।

बोध प्रश्न - 3

1. अनुवाद की किस अर्थ में विज्ञान कहा जा सकता है? छह-सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए:

.....

.....

2. क्या अनुवाद कला है?

.....

.....

3. अनुवाद विज्ञान, कला अथवा शिल्प में से क्या है?

.....

.....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इकाई – 3 अनुवाद की इकाई : शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ

संरचना

3.0 प्रस्तावना

3.1 उद्देश्य

3.2 अर्थ संप्रेषण की इकाई वाक्य

3.3 वाक्य का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

3.4 वाक्य रचना

3.4.1 पदक्रम

3.4.2 पदबंध

3.4.3 उपवाक्य

3.4.3 उपवाक्य

3.4.4 वाक्य

3.5 प्रोक्ति

3.6 वाक्य रचना गत्यात्मक और परिवर्तनशील होती है

3.7 वाक्य के घटकों का अनुवाद के संदर्भ में विवेचन

3.8 सारांश

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप पढ़ चुके हैं कि समस्त प्राणिजगत में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो बोलता है अर्थात् भाषा का प्रयोग करता है। भाषा ही मनुष्य को संसार के अन्य प्राणियों से अलग करती है। मनुष्य सभ्यता के विकास में किसी ऐसी अवस्था की कल्पना करना कठिन है, जब वह बोलता नहीं था। यदि हम डार्विन के विकासवाद के अनुसार यह मान लें कि मनुष्य जाति का विकास पशुओं से हुआ और विकास की प्रक्रिया में जब वह खड़ा होकर दो पैरों पर चलने लगा, तब वह पशु से मनुष्य बना, यह प्रश्न उठता है कि उसने बोलना कब आरम्भ किया। यह मान लेना अधिक तर्कसंगत होगा कि मनुष्य तभी मनुष्य बना, जब उसने बोलना शुरू किया। भाषा एक विलक्षण शक्ति है, जिसे प्रकृति ने केवल मनुष्य को ही प्रदान किया है। भाषा मनुष्य की समस्त सृजनात्मक क्षमताओं की जननी है। भाषा मनुष्य जाति की नियति है। भाषा से बाहर मनुष्य की कोई सत्ता नहीं। मनुष्य के सभी बाह्य तथा आंतरिक प्रत्ययों की प्रकृति भाषायी है। पिछली इकाई में आप भाषा की प्रकृति और स्वरूप के बारे में पढ़ चुके हैं। आप जानते हैं कि भाषा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक वाक्य है इस इकाई में हम भाषा के इस सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक ''वाक्य'' का अध्ययन करेंगे।

3.1 उद्देश्य

यह इकाई वाक्य एवं उपवाक्य पर आधारित है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- वाक्य के अर्थ और स्वरूप की चर्चा कर सकेंगे,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

- वाक्य रचना के अंतर्गत आने वाली वाक् युक्तियों, पदक्रम, पदबंध तथा उपवाक्य का विवेचन कर सकेंगे,
- प्रोक्ति के विषय में बता सकेंगे, और,
- वाक्य के घटकों का अनुवाद के संदर्भ में विवेचन कर सकेंगे।

3.2 अर्थ संप्रेषण की इकाई वाक्य

आपने पढ़ा है कि भाषा का प्रयोग मनुष्य संप्रेषण के लिए करता है। मनुष्य के प्रत्येक सम्प्रेषण में सृजनात्मकता होती है। वह अपने अनुभव जगत की केवल अभिव्यक्ति नहीं करता है, उसकी सृष्टि भी करता है। पशु-पक्षी मानव भाषा का केवल अनुकरण कर सकते हैं, भाषायी सृजन नहीं कर सकते। इसीलिए प्रख्यात दार्शनिक एवं भाषाविद् चॉम्स्की ने भाषा को मनुष्य की सहजात क्षमता बताया है जिसकी प्रकृति सृजनात्मक होती है। चॉम्स्की के अनुसार एक नवजात शिशु अपने माता-पिता और परिवेश से भाषा का अनुकरण नहीं करता है, अपने परिवेश में भाषा का सृजन करता है। ऊपरी तौर पर यह भाषा मनुष्य के मुख से विस्तृत करता शोर है, परंतु यह कोई मामूली शोर नहीं एक व्यवस्थित शोर है। यह व्यवस्था का ही चमत्कार है कि केवल 30-40 गिनी चुनी ध्वनियों के द्वारा मनुष्य के समस्त ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति होती है और वाङ्मय के अनन्त भण्डार की सृष्टि होती है। शब्द और अर्थ दोनों स्तरों पर यह व्यवस्था बहुआयामी होती है। इसीलिए प्राग स्कूल के भाषा वैज्ञानिक भाषा को व्यवस्था नहीं, व्यवस्थाओं की व्यवस्था कहते हैं। ''व्यवस्था'' के लिए आधुनिक शब्दावली में ''संरचना'' शब्द का प्रयोग अधिक उपयुक्त माना जाता है।

शब्द और अर्थ दोनों स्तरों पर भाषायी व्यवस्था की प्राथमिक तथा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण इकाई है वाक्य। अत्यंत प्राचीन काल से वैयाकरणों तथा भाषाविदों के बीच यह विवाद रहा है कि वक्ता क्या बोलता है और श्रोता क्या सुनता है? वक्ता ध्वनि बोलता है, शब्द बोलता है अथवा वाक्य बोलता है? और श्रोता ध्वनि सुनता है, शब्द सुनता है अथवा वाक्य सुनता है? यहां यह जान लेना महत्त्वपूर्ण होगा कि बोलने और सुनने की अन्तर्निहित भाषायी प्रक्रिया एक ही होती है। भारत की पुरातन व्याकरिणक परम्परा में वाक्य को ही भाषा की केंद्रीय सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है। वाक्य ही भाषा की मूल इकाई है। इस मत का प्रतिपादन करते हुए महावैयाकरण भर्तृहरि ''वाक्यपदीय'' में लिखते हैं-

पदे न वर्णा विद्यन्ते, वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात्पदानामत्यन्त प्रविवेको न कश्चन॥

...अर्थात् वाक्य ही सत्य है। वाक्य में ''पदों'' और पदों में वर्णों की प्रतीति एक भ्रम है। वाक्यों से पृथक पदों अथवा वर्णों की कोई सत्ता ही नहीं है। अत: तात्विक दृष्टि से यह कहने की अपेक्षा कि ''वाक्य ध्वनियों'', अक्षर अथवा शब्दों का समूह है, यह कहना अधिक उचित है कि ध्वनि, वर्ण अथवा शब्द वाक्य के काल्पनिक खण्ड हैं।

भर्तृहरि आगे लिखते हैं कि वाक्य निरवयव तथा क्रमरहित है। वक्ता श्रोता के लिए वाक्य अखण्ड्य है। केवल वैयाकरण वक्ता - श्रोता द्वारा प्राप्त भाषा का विश्लेषण करने के लिए ध्वनि, अक्षर, शब्द, पद आदि अमूर्त अभिधानों की उपकरण के रूप में कल्पना करता है। सम्प्रेषण के रूप में वक्ता सदा वाक्य बोलता है और श्रोता सदा वाक्य सुनता है। यह वाक्य एक अक्षर का, एक शब्द अथवा पद का, एक पदबन्ध का, एक वाक्यांश का हो सकता है। आपने किसी को बुलाने के लिए आवाज की ''आ'', यह ''आ'' एक अक्षर का वाक्य है। इसी प्रकार आपने किसी से पूछा, ''क्या पढ़ रहे हो?'' उसने उत्तर दिया, ''पुस्तक''। यहाँ पुस्तक एक शब्द का वाक्य है। अगर आप किसी से पूछें कि रावण का वध किसने किया? वह उत्तर दे सकता है कि ''राम ने'', ''राम ने'' एक पदबन्ध है और यह एक पदबन्धीय वाक्य है। यदि आप किसी से प्रश्न पूछते हैं ''लक्ष्मण कौन थे'' और वह उत्तर देता है कि ''राम के छोटे भाई'' तो यह वाक्य वाक्यांश से बना है। इन्हें ''आदिष्ट वाक्य'' कहा जाता है जो रचना की दृष्टि से तो अधूरे हैं परंतु जिनसे प्रश्न के सन्दर्भ में पूरी बात का संप्रेषण होता है। नवजात शिशु जब

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सामाजिकीकरण की प्रक्रिया में बोलना सीखता है तो वह अधूरे, टूटे-फूटे एक शब्दीय वाक्य ही बोलता है। श्रोता उसके शब्द को वाक्य के रूप में ग्रहण करता है। चॉम्स्की भाषायी विश्लेषण का आरम्भ वाक्य से ही करते हैं और स्वनिम, रूपिम आदि भाषायी इकाईयों की चर्चा वाक्य की भाषायी मूल एवं प्राथमिक इकाई मानकर वाक्य के संदर्भ में करते हैं। मनुष्य वाक्यों में बोलता है, वाक्यों के द्वारा वह बातचीत अथवा वार्ता करता है। यह ''वार्ता'' वाक्य के ऊपर की इकाई है। वाक्य के ऊपर की इस इकाई को समाज भाषा वैज्ञानिक शब्दावली में ''डिसकोर्स'' की संज्ञा दी गई है। ''डिस्कोर्स'' का हिन्दी पर्याय है ''प्रोक्ति''। प्रोक्ति को आचार्य विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थ ''साहित्य दर्पण'' में ''महावाक्य'' कहा है। प्रोक्ति की पहचान भी वाक्य के द्वारा ही की जाती है।

3.3 वाक्य का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

वाक्य को भाषायी सम्प्रेषण की मूल प्राथमिक इकाई के रूप में स्वीकार कर लेने के पश्चात् सबसे पहला प्रश्न यह उठता है कि वाक्य है क्या? आइए देखें कि वैयाकरण और भाषा वैज्ञानिक वाक्य की क्या परिभाषा देते हैं? जैसा कि हमने देखा भाषा शब्द-अर्थ की संश्लिष्टि है। भाषा में दो भिन्न तत्व अभिन्न रूप में अनुस्यूत होते हैं। परिणामस्वरूप भाषा की व्याकरणिक कोटियों की परिभाषा भी शब्द और अर्थ इन दो तत्वों के स्तर पर की जाती है। शब्द और अर्थ के लिए क्रमश: रचना और प्रकार्य शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। अर्थ के स्तर पर वाक्य को परिभाषित करने की परम्परा बहुत प्राचीन है। फ्राइज अपनी पुस्तक ''द स्ट्रक्चर ऑफ इंग्लिश'' में 500 ई. के लगभग पाश्चात्य वैयाकरणों द्वारा दी गई परिभाषा उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि ''पूर्ण विचारों के द्योतक पद समूह'' को वाक्य कहते हैं। ठीक यही परिभाषा नागेश भट्ट ने दी है- ''पद समूहो वाक्यम् अर्थ परिसमाप्तौ।'' पाई की ''डिक्शनरी ऑफ लिंग्विस्टिक्स'' में भी वाक्य की ऐसी ही परिभाषा दी गई है। प्रख्यात हिंदी वैयाकरण कामता प्रसाद गुरु ''हिंदी व्याकरण'' में वाक्य की इसी प्रकार परिभाषा करते हुए लिखते हैं, ''एक पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्दसमूह वाक्य कहलाता है।'' परन्तु ''विचारों की पूर्णता'' को वाक्य की परिभाषा का आधार बनाना समीचीन नहीं। वार्तालाप अथवा बातचीत एक अविच्छिन्न धारा प्रवाह है। आप जरा बताइए कि इस अविछिन्न धारा-प्रवाह का कौन-सा वाक्य वैचारिक दृष्टि से पूर्ण है? ''रावण ने सीता का हरण किया'', ''राम ने रावण का वध किया'', ''मैं कल बम्बई जा रहा हूँ'', ''मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ'' आदि वाक्यों को ''पूर्ण विचार व्यक्त करने वाले शब्द समूह'' के रूप में परिभाषित करते हुए उसका उदाहरण दिया है ''लड़के फूल बीन रहे हैं'' क्या यह वाक्य वैचारिक दृष्टि से पूर्ण है और क्या इस वाक्य के साथ अनेक प्रश्न नहीं जुड़े हैं? इसलिए वैचारिक पूर्णता को वाक्य को परिभाषा के आधार के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आइए, वाक्य को परिभाषित करने के लिए हम किसी और आधार की खोज करें। भारतीय परम्परा के प्राचीन आचार्यों ने पदों के आधार पर वाक्य की परिभाषा की है। यहाँ सबसे पहले ''पद'' का अर्थ आप समझ लीजिए। पाणिनि ने कहा है ''सुप तिङन्तं पदं'' अर्थात् कारक तथा क्रिया विभक्तियों के योग को पद कहते हैं। वाक्य में शब्दों का एक दूसरे से व्याकरणिक संबंध होता है। इस संबंध के आधार पर ही किसी वाक्य के शब्द दूसरे से जुड़कर वाक्य के अर्थ की रचना करते हैं। फ्राइज ने इस व्याकरणिक संबंध को ही संरचनात्मक अथवा व्याकरणिक अर्थ की संज्ञा दी है। भाषा में विभक्ति रहित शब्द का प्रयोग संभव नहीं। वाक्य में शब्द का प्रयोग होते ही उसकी संज्ञा 'पद' हो जाती है। संस्कृत जैसी योगात्मक भाषाओं में विभक्ति से युक्त शब्द की पद के रूप में पहचान प्रत्यक्ष रूप में होती है। ''राम: गच्छति'' में दो पद हैं- ''राम:'' तथा ''गच्छति''। ''राम'' शब्द के साथ ''सुप्'' विभक्ति के योग से राम: पद बनु और ''गच्छ'' में ''तिङ्'' विभक्ति के योग से ''गच्छति'' पद बना। ''राम: गच्छति'' का हिंदी अनुवाद हुआ, ''राम जाता है।'' अंग्रेजी अनुवाद हुआ, Ram goes हिंदी और अंग्रेजी जैसी अयोगात्मक भाषाओं के शब्द राम और Ram में यद्यपि प्रत्यक्षत: कोई विभक्ति नहीं लगी है, फिर भी ये पद हैं और यह मान लेना उचित होगा कि इनके साथ शून्य विभक्ति जुड़ी है। योगात्मक भाषाओं में जो कार्य विभक्तियाँ करती हैं, अयोगात्मक में उस कार्य की पूर्ति वाक्य में पदों के स्थान से होती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भारत की प्राचीन परम्परा के प्रतिनिधि और संसार में महानतम वैयाकरण है—पाणिनि। पाश्चात्य भाषाविदों ने पाणिनि की व्याकरणिक प्रतिभा की भूरि - भूरि प्रशंसा की है। अमरीका में आधुनिक भाषा विज्ञान के प्रवर्त्तक ब्लूमफील्ड ने अपनी पुस्तक ''लैंग्वेज'' में पाणिनि के ''अष्टाध्यायी'' को मानव मेधा का उत्कृष्टम उदाहरण बताया है। पाणिनि कहते हैं कि ''तङ्.'' अर्थात् क्रियापद ही वाक्य है। हिंदी व्याकरण के पाणिनि रूप में प्रसिद्ध आचार्य किशोरीदास वाजपेयी भी कुछ इसी प्रकार का मत व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि वाक्य में कम से कम एक क्रिया अवश्य होती है। उसके बिना वाक्य बन नहीं सकता। ''क्रिया ही वाक्य है'' यह भारत की परम्परा सिद्ध अवधारणा है। यह संसार नाम-रूप है। सारे नाम आख्यातज अर्थात् क्रियाजन्य हैं। क्रिया कर्त्ता की नियति है। सब कुछ क्रियामय है। यही हमारा कर्मवाद है। संस्कृत क्रियापदों में कर्त्ता का समाहार होता है। आपने पहले ही यह देख लिया है कि संस्कृत एक योगात्मक भाषा है। संस्कृत क्रियापद ''गच्छामि'' एक पूर्ण वाक्य है। ''गच्छामि'' क्रियापद में कर्त्ता ''अहं'' अंतर्निहित रूप से विद्यमान है।

यही स्थिति रूसी भाषा की भी है। रूसी भाषा में ''ईदू'' क्रियापद भी एक पूर्ण वाक्य है। यहाँ ''ईदू'' के साथ उसका कर्त्ता ''या'' (मैं) जोड़ना अनावश्यक है। परंतु कठिनाई तब उत्पन्न होती है, जब हम इन वाक्यों का अनुवाद हिंदी अथवा अंग्रेजी जैसी अयोगात्मक भाषाओं में करते हैं। आपके लिए यह स्वाभाविक है कि आप संस्कृत और रूसी के उपर्युक्त वाक्यों का अनुवाद हिंदी में ''मैं जाता हूँ'' और अंग्रेजी में Igo करें। इन आयोगात्मक भाषाओं में क्रियापद से पृथक सत्ता कर्त्ता पद की है। ऐसी स्थिति में हमें यह मानने के लिए विवश होना पड़ता है कि केवल क्रियापद ही वाक्य नहीं। वाक्य में क्रियापद के साथ-साथ कर्त्तापद की भी अनिवार्यता होती है। इसी साक्ष्य पर एथरिंगटन महोदय लिखते हैं कि कर्त्ता और दूसरे का कर्त्ता होना भी आवश्यक होगा। कुछ अन्य लोग वाक्य में कर्त्ता । क्रिया के अतिरिक्त विशेषण अव्यय आदि की भी सत्ता स्वीकार करना चाहेंगे। परन्तु आप देखेंगे कि वाक्य के अन्य सभी पदों का समाहार कर्त्तापद अथवा क्रियापद में हो जाता है। अन्य सभी पद अथवा क्रियापद के ही विस्तार हैं। इसीलिए चॉम्स्की वाक्य विश्लेषण के लिए दो अमूर्त अवधारणाओं-संज्ञापद तथा क्रियापद की प्रस्तावना करते है और वाक्य को इन दो खण्डों में विभाजित कर अन्य सभी पदों का अध्याहार इनके अंतर्गत करते हैं। इससे वाक्य-विश्लेषण की प्रक्रिया अत्यंत सरल हो जाती है।

''साहित्य दर्पण'' के ग्रन्थकार आचार्य विश्वनाथ वाक्य के विभिन्न पदों के बीच उनकी आंतरिक अर्थात् ''आर्थी संसाक्ति'' (अर्थपरक संबंध) के आधार पर वाक्य को परिभाषित करते हैं। वे लिखते हैं, ''वाक्य स्यात् योग्यता आकांक्षा आसत्तियुक्त: पदोच्चय:'' योग्यता, आकांक्षा तथा आसत्ति (वाक्य में पास-पास रहने वाले शब्दों का परस्पर संबंध) से युक्त पदसमूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य की आचार्य विश्वनाथ की यह परिभाषा बहुत प्रसिद्ध है और भाषा शास्त्रीय तथा काव्य शास्त्रीय ग्रंथों में अनिवार्य रूप से उद्धृत की जाती है। यहाँ योग्यता का अर्थ है वाक्य के संदेश-सम्प्रेषण में एक पद का दूसरे पद के योग्य तथा सहायक होना। जैसे ''आग से सींचता'' वाक्य में आग और सींचता पदों में परस्पर योग्यता नहीं है। आकांक्षा का अभिप्राय यह है कि वाक्य के सम्प्रेषण में, अर्थ की पूर्ति में एक पद को दूसरे पद की आकांक्षा रहती है। ''शीला पुस्तक पढ़ती है'', वाक्य में ''शीला'' पद के पश्चात् ''पुस्तक'' पद की आकांक्षा तथा ''शीला पुस्तक'' पदों के पश्चात् ''पढ़ती है'' पद की आकांक्षा होती है। आसत्ति समीपता को कहते हैं। वाक्य के पदों के बीच देश-काल का व्यवधान अथवा अन्तराल नहीं होना चाहिए।

अब हम देखेंगे कि पश्चिमी जगत के आधुनिक भाषा वैज्ञानिक वाक्य की परिभाषा कैसे करते हैं? संरचनावादी भाषाविद् अर्थ को भाषायी विश्लेषण का आधार नहीं बनाते। वे व्याकरणिक कोटियों के स्वरुप का निर्धारण व्याकरणिक संरचना के स्तर पर कहते हैं। ब्लूमफील्ड वाक्य की परिभाषा में उसके अर्थ अथवा पदों की चर्चा न करके पूरी उक्ति की व्याकरणिक संरचना में वाक्य के वितरण की चर्चा करते हैं, अर्थात् वे ''व्याकरणिक संरचना'' को वाक्य की परिभाषा का आधार बनाते हैं। वाक्य की परिभाषा करते हुए वे लिखते हैं वाक्य एक ऐसी स्वायत्त रचना है जो व्याकरणिक रूप से अपनी से

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

किसी बड़ी रचना का अंग न हो। हॉकेट भी व्याकरणिक संरचना के स्तर पर वाक्य की परिभाषा करते हैं। उनके अनुसार ''वाक्य एक संघटन है, संघटक नहीं - a constitute which is not a constituent जौल लॉयन्स वाक्य की उपुर्यक्त परिभाषाओं की समीक्षा करते हुए वाक्य की ''व्याकरणिक स्वायत्तता'' के तर्क को पूरी तरह स्वीकार नहीं करते हैं।'' वे इसके विरोध में सर्वनाम वाले वाक्यों तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कथन वाले वाक्यों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि अनेक ऐसे वाक् खण्ड जिनकी पहचान वैयाकरण वाक्य के रूप में करते हैं, अपनी सीमा का अतिक्रमण करते हैं। लॉयन्स कहते हैं कि भाषा एक अमूर्त सत्ता है। इस अमूर्त स्तर पर न तो कोई वाक् खण्ड है, न उसकी सीमा और न स्वायत्तता। यह सब वैयाकरणों की करामात है। लॉयन्स इस समस्या का समाधान सस्यूर द्वारा प्रतिपादित भाषा और वाक् के द्वित्व की सहायता से करते हैं। भाषा अमूर्त स्तर पर न तो कोई वाक् खण्ड है, न उसकी सीमा और न स्वायत्तता। यह सब वैयाकरणों की करामात है। लॉयन्स इस समस्या का समाधान सस्यूर द्वारा प्रतिपादित भाषा और वाक् के द्वित्व की सहायता से करते हैं। भाषा अमूर्त होती है, वाक् मूर्त, वाक् भाषा का मूर्त रूप है। भाषा को ही चावॅम्स्की ने मनुष्य की ''सहजात क्षमता'' की संज्ञा दी है। उच्चरित भाषा, भाषा नहीं भाषा का केवल निष्पादन है। भारतीय परम्परा में भाषा अमूर्त रूप ज्ञान माना गया है। वक्ता इस अमूर्त भाषा का निष्पादन अथवा उच्चारण वाक् रूप में करता है। वैयाकरण और भाषाविद वक्ता के इस वाक् का विश्लेषण भाषा के स्तर पर करके उसे एक सरलतम रूप में प्रस्तुत करता है जो सदा अपूर्ण तथा संशोधन सापेक्ष रहता है।

बोध प्रश्न - 1

1. ''वाक्य अर्थ संप्रेषण की इकाई है।'' पाच छः पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

2. पाणिनि द्वारा दी गई वाक्य की परिभाषा क्या है ?

.....

3. आचार्य विश्वनाथ ने वाक्य को किस प्रकार परिभाषित किया है ? विवेचन कीजिए।

.....

4. ब्लूमफील्ड वाक्य की परिभाषा किस प्रकार करते हैं ?

.....

3.4 वाक्य रचना

यह समझ लेना आवश्यक है कि किसी चीज के गठन में उसके उपादानों का अलग-अलग महत्त्व नहीं होता है। सारा महत्त्व होता है उन उपादानों की सयोजन प्रणाली का, व्यवस्था का, संरचना का। संसार की भाषाओं का अन्तर उनकी व्यवस्था का है। विभिन्न भाषाओं के वाक्यों की संरचना विभिन्न ढंग से होती है। पिछले भाग में हमने यह देखा कि वाक्य में शब्दों की नहीं पदों की सत्ता होती है। वाक्य से बाहर शब्द का कोई अर्थ नहीं होता है। वाक्य से ही शब्द अपना अर्थ ग्रहण करता है। अक्सर यह होता है कि वाक्य के पदों का अर्थ अलग-अलग कुछ और होता है। इसलिए वाक्य रचना में महत्त्वपूर्ण है पदक्रम।

3.4.1 पदक्रम- वाक्य-रचना का अर्थ हुआ पद-योजना। पद-योजना का सबसे महत्त्वपूर्ण बिन्दु है पद-क्रम। प्रसिद्ध हिंदी वैयाकरण कामता प्रसाद गुरू के शब्दों में पदक्रम दो प्रकार का होता है- एक व्याकरणिक और दूसरा आलंकारिक। 1. व्याकरणिक पदक्रम में पदों का क्रम व्याकरण के नियमों के अनुसार निश्चित होता है। व्याकरण ग्रंथों में इस पद-क्रम का ही विवेचन होता है। 2. आलंकारिक पदक्रम वक्ता या लेखक के व्यक्तित्व पर निर्भर होता है। वक्ता पर व्याकरण के नियमों का

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

नहीं, सम्प्रेषण के प्रयोजन का दबाव होता है। लेखक का प्रयोजन व्याकरणिक नियमों का पालन करना मात्र नहीं, अपने कलात्मक सृजन से हमारे सौन्दर्य-बोध का उद्रेक करना होता है। भाषा को अपनी अर्थवत्ता सिद्ध करने के लिए सम्प्रेषण के प्रयोजनों को प्रतिफलित करना पड़ता है। भाषा अपने प्रयोक्ता को यह आजादी देती है। पद-क्रम सबसे पहला चरण है-

1. कर्त्ता पद + क्रियापद—

संस्कृत जैसी योगात्मक भाषाओं में जहां क्रिया में ही कर्त्ता का भी समाहार होता है, क्रिया ही पूरा वाक्य है, परन्तु हिंदी, अंग्रेजी आदि अयोगात्मक भाषाओं में जहां कर्त्तापद तथा क्रियापद की पृथक सत्ता होती है, उनके वाक्यों में पहले कर्त्ता पद तत्पश्चात् क्रियापद आता है।

जैसे —राम पढ़ता है।

इस वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद आप करेंगे—

Ram reads.

कर्मपद की उपस्थिति में पदक्रम इस प्रकार होता है—

2. कर्त्तापद + कर्मपद + क्रियापद

राम पुस्तक पढ़ता है।

परन्तु अंग्रेजी भाषा की पद योजना में यह क्रम नहीं होता है। कर्मपद क्रियापद के पश्चात् आता है। अंग्रेजी भाषा का पदक्रम है—

कर्त्तापद + क्रियापद + कर्मपद

अत: उपर्युक्त हिंदी वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद आप करते हैं—

Ram reads a book.

हिंदी वाक्य-रचना में अन्य कारक पदों का क्रम इस प्रकार है—

3. कर्त्तापद + करण पद + क्रियापद (हम आँखों से देखते हैं।)

4. अपादानपद + कर्त्तापद + क्रियापद (पेड़ से पत्ता गिरा)

5. कर्त्तापद + अधिकरण पद + क्रियापद (किताब अलमारी में है)

विशेषण तथा क्रिया विशेषण पदों का क्रम इस प्रकार रहता है—

6. विशेषण पद + संज्ञापद (मेहनती आदमी)

अंग्रेजी में भी विशेषण संज्ञा का यही क्रम है। फारसी में संज्ञा विशेषण का क्रम है जैसे-उम्रे दराज

7. क्रिया विशेषण पद + क्रियापद (सही कहा)

गुरुता के आधार पर इनका क्रम नीचे लिखे ढंग से होता है—

नर-नारी, स्त्री- परुष, देख-भाल, देश-विदेश, लोक-परलोक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

पद स्थान

वाक्य रचना में पदों के स्थान का भी काफी महत्त्व होता है। आपको पहले बताया जा चुका है कि संस्कृत जैसी योगात्मक भाषाओं में पद के स्थान पर कोई महत्त्व नहीं होता है पदों का स्थान परिवर्तित कर देने पर भी वाक्य के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है क्योंकि पदों से जुड़ी विभक्तियों में पद का व्याकरणिक अर्थ निहित होता है। जैसे—

राम : रावणं अहन्।

रावणं राम : अहन्।

वाक्यों में पदों को कहीं भी रखिए, वाक्य का अर्थ वही का वही रहेगा। संस्कृत के विपरीत हिंदी अयोगात्मक भाषा है। इसमें कारकीय विभक्तियाँ अलग से लगती है फिर भी हिन्दी वाक्य रचना में पदों के स्थान परिवर्तित की छूट एक हद तक होती है और इस स्थान परिवर्तन से वाक्य का अर्थ नहीं बदलता है। उपर्युक्त संस्कृत वाक्यों का हिंदी अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है।

राम ने रावण का वध किया।

यदि हम उपर्युक्त वाक्य के पदों का स्थान परिवर्तन करके इस प्रकार लिखें-

रावण का वध राम ने किया।

तो वाक्य के अर्थ में परिवर्तन नहीं होता है। परन्तु अंग्रेजी भाषा में ऐसा संभव नहीं है। अंग्रेजी में, पदों का स्थान निश्चित है। आपने पहले देखा कि वाक्य में विभक्तियाँ जो व्याकरणिक कार्य करती हैं, वही कार्य अंग्रेजी भाषा में पद-स्थान करता है। अत: अंग्रेजी भाषा में संस्कृत तथा हिन्दी के वाक्यों का अनुवाद होगा—

Ram killed Rawan

यदि अंग्रेजी के इस वाक्य में आप राम और रावण का स्थान परिवर्तित करके यह लिखें—

Rawan killed Ram

तो वाक्य का अर्थ उलट जाएगा। हिन्दी के वाक्यों में भी पदक्रम बदलना एक हद तक ही संभव होता है। वाक्य में अर्थ के अतिरिक्त एक और चीज होती है अर्थच्छवि (Shade of Meaning)। भाषायी सम्प्रेषण का एक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन होता है प्रतिपादक और प्रतिपाद्य में अंतर करने का, सम्प्रेषण सापेक्ष प्रयोजनों के दबाव में हिंदी भाषा अपने प्रयोक्ता को पदों का स्थान परिवर्तित करने की स्वतंत्रता देती है। उदाहरण के लिए नीचे दिये गए वाक्य देखिए—

मोहन ने रोटी खा ली है।

में पदों का स्थान परिवर्तन किया जा सकता है—

रोटी मोहन ने खा ली है।

खा ली है मोहन ने रोटी।

आप देखेंगे कि पदों का स्थान परिवर्तित कर देने से वाक्य के अर्थ में परिवर्तन तो नहीं हुआ, उसकी अर्थच्छवि (Shade of Meaning) में परिवर्तन जरूर हुआ। भाषा में प्रयोजन अनुसार बल देने के लिए वक्ता या लेखक पदों का स्थान परिवर्तन बहुधा किया करते हैं। मौखिक भाषा में यह प्रवृत्ति और अधिक दिखाई देती है अपने सम्प्रेषण में जिस बात पर वह अधिक बल

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

देना चाहते हैं, उसे पहले रखते हैं। जब आप एक भाषा में दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं तो स्रोत भाषा के वाक्य में पदों के स्थान पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। अंग्रेजी का एक वाक्य है—

Elephants are found in India and Africa

एक विद्वान अनुवादक ने इसका हिंदी अनुवाद किया—

भारत और अफ्रीका में हाथी पाए जाते हैं।

अंग्रेजी वाक्य का प्रतिपादक पद Elephant है, India and Africa उसके प्रतिपाद्य हैं। इसके विपरीत हिंदी वाक्य में भारत और अफ्रीका प्रतिपादक तथा हाथी प्रतिपाद्य है। ऐसा अनुवाद शुद्ध नहीं कहा जा सकता है।

शुद्ध अनुवाद होगा—

''हाथी भारत और अफ्रीका में पाए जाते हैं।''

पद सामीप्य

वाक्य रचना में पदों की समीपता का भी बहुत महत्त्व है। पद की समीपता की दृष्टि से हिंदी वाक्यों की पद योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. संज्ञा के साथ परसर्ग-राम ने, राम को, राम से आदि।

2. संबंधवाचक तथा विशेषण पदों के बीच संबंध वाचक को प्राथमिकता दी जाती है- मेरी लाल गाय (लाल मेरी गाय नहीं)।

3. व्यक्तिगत अथवा धातुगत विशेषता संज्ञा के समीप रहती है- मोटी रेशमी डोरी।

4. संख्या वाचक तथा अन्य विशेषणों के बीच संख्या वाचक को प्राथमिकता दी जाती है- एक बुद्धिजीवी व्यक्ति।

5. संकेतवाचक विशेषण को प्राथमिकता दी जाती है- इस प्रथम संभाषण के लिए।

6. संख्यावाचक विशेषण पदों के बीच छोटी संख्या पहले, बड़ी संख्या बाद में आती है- दो-चार, दस-बीस, चार-पाँच।

7. सजातीयता का भी ध्यान आवश्यक है - खूबसूरत औरत/सुन्दर स्त्री।

पदान्वय

वाक्य के पदों के बीच व्याकरणिक अनुरूपता को पदान्वय कहा जाता है। हिंदी भाषा की वाक्य रचना में पदान्वय के प्रमुख नियम निम्न लिखित हैं।

1. कर्त्ता + क्रिया में वचन और लिंग का अन्वय

लड़का जाता हैं। लड़के जाते हैं।

लड़की जाती है। लड़कियाँ जाती हैं।

संस्कृत, अंग्रेजी, रूसी, फारसी आदि संसार की अधिकांश भाषाओं की वाक्य रचना में कर्त्ता + क्रिया के बीच केवल

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

वचन का अन्वय होता है, लिंग का नहीं। इसलिए गैर हिंदी भाषी हिंदी सीखने में बड़ी कठिनाई का अनुभव करते हैं। इस कठिनाई से बचने के लिए कुछ वक्ता इस प्रकार का वाक्य भी बोलते हैं—

लड़की लोग जाता है।

हालाँकि यह हिंदी की दृष्टि से बिल्कुल गलत है।

आदर प्रदर्शित करने के लिए एक वचन कर्त्ता के साथ बहुवचन क्रिया आती है—

राम दशरथ के पुत्र थे।

शिवाजी एक महान योद्धा थे।

हिंदी वाक्य-रचना में वचन-अन्वय की यह विशिष्टता अनुवाद में कठिनाई का कारण बनती है। अंग्रेजी भाषा की वाक्य रचना में एक वचन कर्त्ता पद के साथ एक वचन क्रिया पद का ही प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी भाषा की संरचना में तथ्य परकता है, हिंदी भाषा की संरचना में मूल्य परकता है। यह भाषायी प्रवृत्ति इतिहास के तथ्यपरक ग्रन्थों के लेखन में कठिनाई पैदा करती है। अंग्रेजी में हमेशा लिखा जाता है—

Ram was the son of Dasharath

Shivaji was a great warrior

Rawan was the king of Lanka.

इन अंग्रेजी वाक्यों का हिंदी में आप निम्न अनुवाद करते हैं—

राम दशरथ के पुत्र थे।

शिवाजी एक महान योद्धा थे।

रावण लंका का राजा था।

ऊपर के तीनों अंग्रेजी वाक्यों में केवल तथ्य-कथन है। परन्तु हिंदी वाक्यों में तथ्य-कथन के साथ-साथ आदर-अनादर भावना की भी अभिव्यक्ति है। इसीलिए आप अंग्रेजी was का अनुवाद आदर के लिए ''थे'' और अनादर के लिए ''था'' रूप में करते हैं।

2. कर्म + क्रिया = वचन और लिंग का अन्वय

सप्रत्यय कर्त्ता और अप्रत्यय कर्म की अवस्था में क्रिया का अन्वय कर्म के साथ होता है, कर्त्ता के साथ नहीं:

राम ने रोटी खाई / राम ने चावल खाये।

सीता ने पूड़ी खाई / सीता ने पराठा खाया।

परन्तु सप्रत्यय कर्त्ता के साथ यदि सप्रत्यय कर्म हो तो क्रिया का अन्वय कर्म के साथ नहीं होता है। क्रिया पुल्लिंग एक वचन में होती है-

राम ने लड़की को देखा / राम ने लड़कियों को देखा।

सीता ने लड़की को देखा / सीता ने लड़कियों को देखा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

यहां एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठता हे कि सप्रत्यय कर्म और अप्रत्यय कर्म के प्रयोग में क्या कोई आर्थी-अंतर है ? डब्ल्यू.एस.एलेन ने अपने लेख ''हिंदी वाक्य रचना के विश्लेषण का अध्ययन'' में इनके अंतर को रेखांकित करते हुए बताया है कि ''लड़की को'' प्रयोग में निश्चयार्थकता है और ''लड़की'' प्रयोग में अनिश्चयार्थकता है।

3. एक से अधिक कर्त्ता + क्रिया

यदि किसी वाक्य में अनेक कर्त्ता हो परंतु उनका लिंग समान हो, तो उनके साथ क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में आती हैं-

राम, भरत और लक्ष्मण गए / राधा, सीता और सावित्री गईं

यदि कर्त्ता पदों के लिंग में भिन्नता है तो क्रिया पुल्लिग बहुवचन में होती है-

राम, सीता और लक्ष्मण गए / राधा, श्याम और ललिता आए

3.4.2 पदबंध

पदबन्ध में एक से अधिक पद होते हैं। जब वाक्य में एक से अधिक पद मिलकर एक ही व्याकरणिक इकाई की रचना करें, तो उन पदों के योग को पदबन्ध कहते हैं। पदबन्ध के निम्नलिखित भेद हैं-

1. संज्ञा पदबन्ध - संज्ञा का काम करने वाले पदबन्ध को संज्ञा पदबन्ध कहा जाता है। जैसे-

कड़ी मेहनत करने वाला सफल होगा।

इस वाक्य में रेखांकित अंश पदों का समूह है। सभी पद मिलकर पदबन्ध के रूप में संज्ञा का कार्य कर रहे हैं। इस पदबन्ध को एक संज्ञा पद के द्वारा स्थनापन्न करके लिखा जा सकता है-

लड़का सफल होगा।

2. विशेषण पदबन्ध - विशेषण का काम करने वाले पदबन्ध को विशेषण पदबन्ध कहते हैं। जैसे कड़ी मेहनत करने वाला लड़का सफल होगा।

वाक्य के रेखांकित अंश सामूहिक रूप से संज्ञा पद लड़का की विशेषता बता रहे हैं। विशेषण पदबन्ध को एक विशेषण पद द्वारा स्थानापन्न किया जा सकता है-

मेहनती लड़का सफल होगा।

3. क्रियाविशेषण पदबन्ध - क्रिया विशेषण का काम करने वाला पदबन्ध को क्रिया विशेषण पदबन्ध कहा जाता है जैसे-

कड़ी मेहन करने वाला लड़का कभी न कभी अवश्य सफल होगा।

इस वाक्य के रेखांकित पदसमूह क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। इस कारण यह पदसमूह क्रिया विशेषण पदबन्ध हैं। इस पूरे पदबंध को एक क्रिया विशेषण पद से स्थानापन्न करके लिखा जा सकता है-

कड़ी मेहनत करने वाला लड़का शीघ्र सफल होगा।

4. क्रिया पदबन्ध - क्रिया का कार्य करने वाले पदबन्ध की क्रिया को पदबन्ध कहा जाता है। जैसे-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कड़ी मेहनत करने वाला लड़का कभी न कभी अवश्य सफल हो कर रहेगा।

वाक्य का रेखांकित पद-समूह क्रिया का कार्य करता है। इस पूरे पदबंध को एक क्रियापद द्वारा स्थानापन्न किया जा सकता है-

कड़ी मेहनत करने वाला लड़का कभी न कभी अवश्य सफल होगा।

2.4.3 उपवाक्य

रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं- सरल, मिश्र और संयुक्त। जब एक से अधिक सरल वाक्यों को मिलाकर मिश्र अथवा संयुक्त वाक्य की रचना होती है, तब इनके घटक वाक्यों को उपवाक्य की संज्ञा दी जाती है। ये उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं- प्रधान, आश्रित तथा सहयोगी। मिश्रित वाक्यों में एक ''प्रधान उपवाक्य'' और दूसरा ''आश्रित उपवाक्य'' होता है, जैसे-

मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो?

इस मिश्रित वाक्य में प्रधान वाक्य है-

मैं नहीं जानता

आश्रित उपवाक्य है-

तुम कौन हो?

आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के साथ ''कि'' समुच्चय बोधक द्वारा जुड़ा है। संयुक्त वाक्यों के उपवाक्यों के बीच प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य का संबंध नहीं होता है। ये उपवाक्य सहयोगी उपवाक्य कहलाते हैं। ये ''और'', ''अथवा'', ''या'', ''किन्तु'' आदि समुच्चय बोधकों से जुड़े रहते हैं-

तुम पत्रिका पढ़ो और मैं पुस्तक पढ़ता हूं।

इस संयुक्त वाक्य के दो उपवाक्य हैं- तुम पत्रिका पढ़ो, मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। दोनों उपवाक्य समकक्षीय हैं। अत: एक दूसरे के आश्रित न होकर सहयोगी हैं।

2.4.4 वाक्य

पद, पदबंध तथा उपवाक्य की यात्रा करते हुए, हम वाक्य तक पहुँचते हैं जैसा कि आपने पहले देखा वक्ता वाक्य बोलता है और श्रोता वाक्य सुनता है। वार्तालाप में वाक्य की ही सत्ता होती है। यह वाक्य प्रयोजन सापेक्ष होता है। वक्ता अपने संदेश सम्प्रेषण के लिए वाक्यों का प्रयोग करता है। अर्थ की दृष्टि से यह संप्रेषण आठ प्रकार का माना जाता है। अर्थ के आधार पर यह वाक्य भी आठ प्रकार का होता है-

1. विधान सूचक : इस वाक्य में किसी कार्य के होने की सूचना मिलती है- शीला पुस्तक पढ़ती है।

2. निषेध सूचक : इस वाक्य में किसी कार्य के न होने की सूचना मिलती है- शीला पुस्तक नहीं पढ़ती है।

3. प्रश्न सूचक : इस वाक्य में प्रश्न पूछने की सूचना मिलती है- क्या शीला पुस्तक पढ़ती है?

4. आज्ञा सूचक : इस वाक्य से किसी को आज्ञा देने, अनुरोध करने अथवा उपदेश देने की सूचना मिलती है-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

यहाँ आओ। वहाँ मत जाना। बड़ों का कहना मानो।

5. इच्छा सूचक : इस वाक्य से इच्छा अथवा आशीर्वाद की सूचना मिलती है– ईश्वर सबका भला करे।

6. संदेह सूचक : इस वाक्य से संदेह अथवा संभावना की सूचना मिलती है– मोहन आता होगा। शायद मोहन आए।

7. संकेत सूचक : इस वाक्य के संकेत अथवा शर्त की सूचना मिलती है– धूप निकलती तो कपड़े सूख जाते।

8. विस्मयादि सूचक : इस वाक्य से आश्चर्य, विस्मय आदि की सूचना मिलती है– वह कैसा मूर्ख है।

3.5 प्रोक्ति

आपने देखा कि व्याकरणिक सूचना की दृष्टि से भाषा की मूल प्राथमिक इकाई वाक्य है। ध्वनि, अक्षर, पद, पदबंध, उपवाक्य आदि इकाइयाँ वाक्य के ही खण्ड हैं। वैयाकरण तथा भाषा वैज्ञानिक भाषा का अध्ययन विश्लेषण वाक्य के ही आधार पर करता है। परन्तु संप्रेषण की दृष्टि से वक्ता वाक्य नहीं बोलता है, वार्तालाप अथवा बातचीत करता है। इस दृष्टि से यह कहना अधिक समीचीन होगा कि भाषा की सार्थक इकाई वाक्य समूह है। इस वाक्य समूह के लिए ''प्रोक्ति'' संज्ञा का उपयोग किया जाता है। यह अंग्रेजी शब्द Discourse का हिंदी पर्याय है। आपने पिछले भाग में पढ़ा कि आचार्य विश्वनाथ ने बिल्कुल इसी अर्थ में अपने ग्रन्थ ''साहित्य दर्पण'' में ''महावाक्य'' शब्द का प्रयोग किया है उन्होंने भाषा की दृष्टि से पूरे ग्रन्थ की भाषाई इकाई की पहचान ''महावाक्य'' संज्ञा से की है। यहाँ आपको समझ लेना चाहिए कि अक्षर पद, पदबंध, उपवाक्य वाक्य आदि एक ओर जहां भाषा की व्याकरणिक इकाइयाँ हैं, वहीं प्रोक्ति व्याकरणिक इकाई न होकर प्रकार्यात्मक इकाई है। पश्चिमी जगत में ''प्रोक्ति'' की संकल्पना समाज भाषाविज्ञान की देन है। संप्रेषण की दृष्टि से अथवा भाषाई प्रकार्य की दृष्टि से समाज भाषा–वैज्ञानिक ''प्रोक्ति'' को ही भाषा की सार्थक इकाई मानता है और प्रोक्ति का ही विश्लेषण करता है। भारतीय परम्परा में पूरे ग्रन्थ और उसके सर्गों अथवा खण्डों के अध्ययन विश्लेषण के लिए काव्यशास्त्र के अंतर्गत उसकी भाषायी इकाई को ''महावाक्य'' की संज्ञा दी गई है। आचार्य विश्वनाथ ने ''महावाक्य'' की परिभाषा करते हुए लिखा है–

स्वार्थ बोधे समाप्ताना मङ्गाङ्गित्व गत्वव्यपेक्षया।
वाक्यानामेक वाक्यत्वं पुनः सहत्य जायते॥

अर्थात् महावाक्य अथवा प्रोक्ति अपने–अपने अर्थ का सम्प्रेषण कर समाप्त हुए परंतु संदेश की एकता के स्तर पर अंग–अंगीभाव से पुनः एक दूसरे से मिले वाक्यों का समूह है। इसे आप महावाक्य अथवा प्रोक्ति की एक बहुत अच्छी परिभाषा कह सकते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने जिस प्रकार वाक्य की आंतरिक संसक्ति के लिए योग्यता, आकांक्षा तथा संसक्ति आदि विशिष्टताओं का विधान किया है, उसी प्रकार प्रोक्ति की आंतरिक संसक्ति, (जो प्रोक्ति की एक अपरिहार्य विशेषता है) – योग्यता, आकांक्षा तथा संसक्ति का विधान किया है। प्रोक्ति की आंतरिक संसक्ति के अतिरिक्त उसमें एक बाह्य संसक्ति भी होती है। इस बाह्य संसक्ति को संरचनात्मक संसक्ति कह सकते हैं। वक्ता अथवा लेखक सर्वनाम शब्दों तथा ''अतः'', ''अर्थात्'', ''और'', ''तथा'', ''एवं'', ''इसलिए'', ''परन्तु'', ''किन्तु'', ''लेकिन'', ''बल्कि'', ''यद्यपि'', ''अपितु'', ''मगर'', ''कि'', ''जबकि'', ''पर'' आदि संयोजकों के द्वारा प्रोक्ति के विभिन्न वाक्यों को परस्पर संसक्त करता है। परन्तु प्रोक्ति की बाह्य संसक्ति की अपेक्षा उसकी आंतरिक संसक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण तथा निर्णायक होती है। प्रोक्ति के वाक्य संदेश की एकता से परस्पर बंधे रहते हैं। यदि उसमें संदेश की एकता नहीं है तो संरचनात्मक संसक्ति निरर्थक है। बाह्य संसक्ति आंतरिक संसक्ति को केवल पुष्ट करती है।

संसक्ति प्रोक्ति का संदेश सापेक्ष धर्म है जिसका निर्धारण सम्प्रेषण के विभिन्न उपादान करते हैं। वक्ता अथवा लेखक, विषय, माध्यम, संदर्भ आदि सम्प्रेषण के उपादान प्रोक्ति के स्वरूप निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वक्ता अथवा लेखक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

के व्यक्तित्व के अनुसार संसक्ति के स्वरूप में पर्याप्त अंतर हो सकता है। इस संबंध में जैनेन्द्र के ''परख'' उपन्यास की भूमिका में उनके वक्तव्य का महत्त्व आप समझ सकते हैं। वे लिखते हैं,

''मैंने जगह-जगह कहानी के तार की कड़ियाँ तोड़ दी हैं। वहां पाठक को थोड़ा कूदना पड़ता है और मैं समझता हूं पाठक के लिए यह थोड़ा आयास वांछनीय होता है.... कहीं एक साधारण भाव को वर्णन से फुला दिया, कहीं लम्बा सा रिक्त छोड़ दिया। यह सबकुछ चित्र में खूबी और असलियत लाने के लिए जरूरी है।''

वक्ता अथवा लेखक की प्रोक्ति के स्वरूप के निर्धारण में श्रोता की भी अपनी भूमिका होती है। हिंदी के दो महान लेखकों प्रेमचंद तथा प्रसाद ने एक ही समय दो भिन्न पाठक समाजों के लिए लिखा। आप देखेंगे कि प्रसाद और प्रेमचंद की साहित्यिक कृतियों के भाषायी स्वरूप का अंतर उनके पाठक की पहचान का ही अंतर है। इसी प्रकार विषय की दृष्टि से विज्ञान, साहित्य, विधिशास्त्र, धर्मशास्त्र, व्याकरणशास्त्र आदि के भाषायी स्वरूप में अनिवार्यत: भिन्नता मिलती है।

डॉ. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव ने प्रोक्ति की संसक्ति तथा उनके तार्किक अनुक्रम के आधार पर तीन वाक्यों का उल्लेख किया गया है-

1. मोहन एक व्यापारी है।

2. मोहन के पास कपड़े के कई कारखाने हैं।

3. मोहन देश विदेश घूमता रहता है।

यहाँ आपको यह समझ लेना चाहिए कि वस्तु-जगत में कारण कार्य का एक तार्किक अनुक्रम मिलता है परंतु भाषा वस्तु जगत का अनुकरण नहीं उसका पुनर्सृजन है। वस्तु जगत के तार्किक अनुक्रम का कोई सामाजिक प्रयोजन नहीं होता है। परन्तु भाषा के तार्किक अनुक्रम का एक सामाजिक प्रयोजन होता है। भाषा सम्प्रेषण के प्रयोजन से बंधी होती है और वह अपने वक्ता को सम्प्रेषण की आवश्यकतानुसार वस्तु जगत में तार्किक अनुक्रम को उलट देने की सुविधा प्रदान करती है। प्रोक्ति की संसक्ति का एकमात्र निर्धारक तत्त्व सम्प्रेषण होता है, वस्तु जगत का नियम अथवा व्याकरण का नियम नहीं। अत: सम्प्रेषण के प्रयोजन के अनुसार वक्ता डॉ. श्रीवास्तव के वाक्यों के अनुक्रम का बदल सकता है, इसमें आपको तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए।

प्रोक्ति के आकार-प्रकार में भी बहुत अंतर होता है। प्रोक्ति एक अक्षर, पद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य, अनुच्छेद, सर्ग, खंड अथवा अध्याय और पूरे ग्रन्थ का हो सकता है। प्रोक्ति के स्वरूप की लघुतम सीमा हो सकती है, उसकी कोई महत्तम सीमा नहीं हो सकती है। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद की दृष्टि से शब्द अथवा पद, पदबंध, उपवाक्य की अपेक्षा भाषायी इकाई के रूप में प्रोक्ति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और निर्णायक इकाई है।

3.6 वाक्य रचना गत्यात्मक और परिवर्तनशील होती है

विविधता जीवित भाषा की नियति है। वैयाकरण अथवा भाषा वैज्ञानिक के भाषायी विश्लेषण का आधारतत्त्व अथवा प्राणतत्त्व है भाषा की एकरूपता अथवा व्यवस्था। वह भाषा विश्लेषण में भाषायी एकरूपता के नियमों की तलाश करता है और फिर उसकी व्याख्या करता है। भाषा सभी दृष्टियों से उसके लिए एक निश्चित व्यवस्था है, जो इस भाषायी एकरूपता और निश्चित व्यवस्था से बाहर है, उसे वह अपवाद मानता है, इसके विपरीत समाज भाषा वैज्ञानिक के भाषायी विश्लेषण का प्राणतत्त्व है भाषायी अव्यवस्था, विषमता। वैयाकरण के लिए भाषयी समता एक नियम है, विषमता अपवाद है। समाजभाषा-वैज्ञानिक के लिए भाषायी विषमता अपवाद नहीं, एक नियम है। समाज भाषा वैज्ञानिक भाषा की व्याकरणिक अव्यवस्था के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पीछे सम्प्रेषण व्यवस्था की तलाश करता है और फिर उसकी व्याख्या करता है। उसने भाषायी वैविध्य के तथ्य की भी अधिक तार्किक व्याख्या प्रस्तुत की है। समस्त भाषायी वैविध्य एवं विषमता सम्प्रेषण के प्रयोजन से बाधित हैं। विज्ञान, साहित्य, विधिशास्त्र, धर्मशास्त्र, व्याकरण आदि के भाषायी स्वरूप में अंतर तो है ही स्वयं साहित्य की विभिन्न विद्याओं- प्रगीत, काव्य, नाटक, निबंध, आलोचना, कहानी, उपन्यास की भाषायी बुनावट में वैविध्य होता है। भाषायी संरचना में देशकाल और संदर्भ के अनुसार वैविध्य होता है। एक ही व्यक्ति की भाषायी स्वरूप के निर्धारण में देशकाल का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। आज बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि हिंदी के मिश्र वाक्यों में ''कि'' संयोजक शब्द हिंदी का नहीं फारसी का है, जैसे—

मैंने सुना कि आप बनारस गए थे।

इस वाक्य में दो वाक्यों मैंने सुना, आप बनारस गए थे को ''कि'' संयोजक से जोड़ा गया है। हिंदी की भाषायी संरचना में पहले ''कि'' संयोजन से जुड़ने वाले वाक्यों की रचना नहीं होती थी। फारसी प्रभाव के कारण हिंदी में इस प्रकार के वाक्यों की रचना होने लगी। प्रारंभिक अवस्था में इसका पर्याप्त विरोध भी हुआ। यही कारण है कि हरिऔध ने अपने उपन्यास ''ठेठ हिंदी का ठाठ'' में हिंदी भाषा के ठेठ स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए ''कि'' वाले एक भी वाक्य की रचना नहीं की है। उपर्युक्त वाक्य को वे इस प्रकार लिखते हैं—

मैंने सुना आप बनारस गए थे।

परन्तु आज ''कि'' संयोजक वाले वाक्य हिंदी भाषायी संरचना के अपरिहार्य अंश हो गए हैं।

हिंदी की भाषायी संरचना में अंग्रेजी प्रभाव के परिणामस्वरूप वाक्य रचना के एक अन्य स्वरूप का विकास हुआ है। वह है प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कथनों की रचना। हिंदी का एक वाक्य है—

''आचार्य महोदय ने कहा कि शिक्षकों ने जो उन्नति की है, उससे वे संतुष्ट हैं।'' यह वाक्य रचना अंग्रेजी भाषा के अप्रत्यक्ष कथनों की वाक्य रचना से प्रभावित है। इस वाक्य का ''वे'' पद आचार्य महोदय के लिए है। हिन्दी वाक्य रचना के अनुसार ''वे'' के स्थान पर ''मैं'' होना चाहिए, मैं के स्थान पर ''वे'' रखने से ''वे'' का अर्थ संदिग्ध हो जाता है। इस प्रकार के वाक्यों की रचना अंग्रेजी भाषा से हिंदी में अनुवाद के कारण होने लगा है।

हिंदी वाक्य रचना में अंग्रेजी के प्रभाव स्वरूप इधर एक और प्रवृत्ति का तेजी के साथ विकास हो रहा है। यद्यपि इसे मानक हिंदी में स्वीकार्यता नहीं प्राप्त है। वह है निज वाचक सर्वनाम के स्थान पर पुरुषवाची सार्वनामिक विशेषणों का प्रयोग। आज इस प्रकार के वाक्यों की रचना धड़ल्ले के साथ होने लगी है—

मैं मेरी किताब पढ़ता हूँ, तुम तुम्हारी किताब पढ़ो।

उपर्युक्त हिंदी वाक्य नीचे लिखे अंग्रेजी वाक्य के अनुवाद के प्रस्ताव स्वरूप रचा गया है—

I read my book, you read your book.

हिंदी के भाषायी स्वरूप के अनुसार यह वाक्य इस प्रकार होना चाहिए—

मैं अपनी किताब पढ़ता हूँ, तुम अपनी, किताब पढ़ो।

हिंदी के भाषायी स्वरूप पर अंग्रेजी भाषा का यह प्रभाव स्पष्ट शब्दों में अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद के कारण ही हुआ। लेकिन ऐसे अटपटे और गलत प्रयोग भी बहु प्रचलन पा लेने पर भाषा का अंग बन जाते हैं। कहा भी गया है

What is Valgar today, become may perfectly correct tomorrow.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भाषा एक बहता प्रवाह है। भाषायी रचना का जो स्वरूप आज स्वीकार्य नहीं है कल स्वीकार्य हो जाता है, भाषायी व्यवस्था का अंग हो जाता है। पद, पदबंध, वाक्यांश, वाक्य, प्रोक्ति आदि भाषायी संरचनाओं का कोई भी स्वरूप पूर्ण एवं स्थिर नहीं है।

बोध प्रश्न-2

1. वाक्य में पदक्रम का महत्त्व बताते हुए बताइए कि पदक्रम कितने प्रकार का होता है ?

.....

.....

2. पदक्रम के विभिन्न चरणों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

.....

.....

3. पदबंध से अभिप्राय बताते हुए विभिन्न पदबंधों की चर्चा कीजिए।

.....

.....

4. उपवाक्य क्या है, तथा ये कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

.....

.....

5. प्रोक्ति के विषय में 7-8 पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

3.7 वाक्य के घटकों का अनुवाद के संदर्भ में विवेचन

वक्ता तथा वैयाकरण की भाषायी अन्तर्दृष्टि में आधारभूत अंतर होता है। जैसा कि आपने देखा कि वक्ता अपने संदेश-संप्रेषण के लिए बातचीत करता है। वह ध्वनि, अक्षर, पद, वाक्यांश, वाक्य अथवा प्रोक्ति न बोलकर पूरी बात बोलता है। श्रोता भी श्रुत - उक्तियों को इसी रूप में ग्रहण करता है। वक्ता और श्रोता का यह भाषायी यथार्थ अनुवादक का भी सत्य है। आपको पता है कि संसार के विभिन्न देशों तथा संस्कृतियों के कभी शब्द को ही भाषा माना जाता था। धर्मग्रंथों में प्रयुक्त ये शब्द ईश्वरकृत माने जाते थे और धार्मिक पवित्रता एवं मंत्र भावना से आवृत्त थे। इस भाषायी मान्यता ने अनुवाद की शब्द- प्रति-शब्द सैद्धांतिकता को जन्म दिया। बाइबिल के आरंभिक अनुवादों में यह सिद्धांत अपनाया गया कि स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा के अनुवाद में कुछ भी छोड़ा या जोड़ा जाना नहीं चाहिए। अनुवाद में स्रोत भाषा के शब्दरूप, शब्दक्रम, शब्दान्वय, शब्दार्थ, वाक्य रचना आदि को न केवल बनाए रखना चाहिए अपितु लक्ष्य भाषा की व्याकरणिक संरचना भी स्रोत भाषा के ही अनुसार होनी चाहिए। इससे भाषायी अर्थ के सम्प्रेषण को बहुत क्षति पहुंची। अनुवाद की इस सैद्धान्तिकता को 16वीं शताब्दी में लूथर ने एक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

क्रांतिकारी मोड़ देकर अनुवाद की आधुनिक अवधारणा को जन्म दिया। लैटिन से जर्मनी में उनके बाइबिल के अनुवाद ने पूरे यूरोप में तूफान खड़ा कर दिया। यूरोप के धर्माधिकारियों ने अनुवाद की परम्परा सिद्ध सैद्धांतिकता के विरूद्ध विद्रोह करने के अपराध में बड़ी तीव्रता के साथ लूथर की निंदा कर उसके लिए कठोर दण्ड का विधान किया। परन्तु लूथर ने उतनी ही तीव्रता के साथ अपने नव प्रतिपादन सैद्धांतिकता की रक्षा की। इतिहास ने लूथर का साथ दिया। परन्तु इसका खामियाजा भुगतना पड़ा आधुनिक अनुवाद सिद्धांत के प्रथम भाष्यकार तथा प्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक एतीने दोले को। उन्होंने प्लेटो के संवादों का फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद किया। उनका अपराध यह था कि उन्होंने लक्ष्य भाषा फ्रांसीसी की भाषायी सरंचना को स्रोत ग्रीक भाषा की संरचना से मुक्त करके उन संवादों के संदेश को अधिक प्रेषणीय बनाया था। इस अपराध में उन्हें प्राणदण्ड दिया गया और उनकी कृतियों को जला दिया गया।

आज भी अधिकांश लोगों के लिए अनुवाद का अर्थ है- शब्द- प्रति-शब्द अर्थात् शाब्दिक अनुवाद। आपने पिछले पृष्ठों पर अनुवाद के संबंध में दो बिल्कुल विरोधी वक्तव्य देखे। एक यह कि भाषाओं में परस्पर अनुवाद्यता होती ही नहीं। दूसरा यह कि भाषाओं में अनुवाद्यता होती है। भाषा सांस्कृतिक यथार्थ है। संस्कृति में विशिष्टता होती है। एक संस्कृति दूसरी संस्कृति से मूलत: पृथक है। वस्तु - जगत का आधार नानात्व है इनकी सम्पन्नता के पक्ष बाह्य तथा ऊपरी हैं। इसके माने यह हुए कि शब्द अथवा अर्थ किसी भी स्तर पर भाषाएँ अनुवाद्य नहीं होती हैं। अनुवाद छल है और अनुवादक छलिया। कुछ दूसरे विचारकों का मत है कि वस्तु जगत के नानात्व का मूलाधार एकत्व है। वस्तु- जगत एक अन्तर्निहित एकता से अनुस्यूत है। नानात्व केवल बाह्य तथा ऊपरी है। भाषाओं का नानात्व केवल ऊपरी अर्थात शाब्दिक है। पृथकता वस्तु जगत का नहीं, वस्तु जगत का सम्प्रेषण करने वाली वाक युक्तियों का है। अंग्रेजी भाषा में आप smoking करते हैं। सभी भाषा भाषी smoking करते हैं परंतु इसकी अभिव्यक्ति के लिए अलग-अलग वाक् उक्तियों का उपयोग करते हैं। अब आप smoking का अनुवाद कैसे करेंगे? कुछ लोग अधिक शुद्ध अनुवाद के रूप में ''धूम्रपान'' शब्द का समर्थन करेंगे। परन्तु यह पूछा जा सकता है कि क्या आप किसी पेय की तरह धूम्र को पीकर पेट में ले जाते हैं। smoking के हिंदी अनुवाद ''सिगरेट पीना'' पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। बंगाली में ''सिगरेट खाना'' ही ठीक है। इसी प्रकार फारसी में सही अनुवाद होगा ''सिगरेट कश'' (खींचना)।

अंग्रेजी, रूसी, फारसी आदि भाषाओं में गत्यर्थक क्रियापद के पश्चात् संज्ञा पद के पहले तक, को to के रूप में वाचक प्रत्यय लगाने का विधान है। अंग्रेजी का वाक्य है-

I am going to Mumbai.

इस प्रकार रूसी, फारसी, भाषाओं में भी कोई न कोई प्रत्यय लगता है। इस प्रकार के वाक्यों का हिंदी अनुवाद जब रूसी भाषी अथवा फारसी भाषी छात्र करते हैं तो वे शाब्दिक समान्तरता अथवा शाब्दिक अनुवाद के कारण इस प्रकार के वाक्य का अनुवाद करते हैं-

मैं मुम्बई को जा रहा हूँ।

जबकि हिन्दी की भाषायी प्रकृति के अनुसार सही अनुवाद है-

मैं मुम्बई जा रहा हूँ।

रूसी भाषा की एक अन्य विशिष्टता है दुहरे निषेध की, रूसी भाषा का एक वाक्य है-

या निचेवो ने ज्नायू

यदि इस वाक्य के अर्थपरक संदेश की उपेक्षा कर आप उसका शाब्दिक अनुवाद करें, तो वह इस प्रकार होगा-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

I dont know no body.

अंग्रेजी में ऐसी वाक्य रचना बेतुकी की जाएगी अतः अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा की भाषायी संरचना के अनुसार अनुवाद आवश्यक होता है। अंग्रेजी भाषा में warm welcome और cold welcome शब्दों का प्रयोग होता है। अब अगर शाब्दिक आधार पर आप इसका अनुवाद गरम स्वागत और ठंडा स्वागत करेंगे तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। हिंदी में इसका ठीक अनुवाद होगा–

हार्दिक स्वागत और रूखा (भावहीन) स्वागत

अर्थ की समानान्तरता की उपेक्षा कर अनुवाद में शब्द की समानान्तरता का आग्रह करने का एक हास्यापद उदाहरण नीचे देखिये– प्रेमचंद की एक कहानी में एक गरीब किसान गाँव के जमींदार से कहता है–

सरकार, मैं बहुत गरीब हूँ।

कोई अनुवादक इस वाक्य के ''सरकार'' शब्द का अनुवाद एक अंग्रेजी के Government शब्द कर दे तो बेतुका होगा आशय समझते हुए उसे sir शब्द का इस्तेमाल करना होगा।

लक्ष्य भाषा – भाषी समाज की सांस्कृतिक परम्परा भी अनुवाद के स्वरूप को निर्धारित करने में अपनी भूमिका निभाती है। जब हम किसी समाज से उसकी कोई वस्तु लेते हैं तो उस वस्तु के साथ उसके संज्ञा शब्द को भी लें या न लें, इस प्रश्न का उत्तर विभिन्न भाषा भाषी समाज विभिन्न रूप में देता है। Telephone, Television और train आदि उपकरणों को उनकी संज्ञा के साथ स्वीकार कर लिया जाए अथवा लक्ष्य भाषा में उनका अनुवाद किया जाए? हिंदी, संस्कृत भाषा की महान सांस्कृतिक रिक्थ की उत्तराधिकारिणी है। वह इस रिक्थ की उपेक्षा नहीं कर सकती। उसने Telephone, Television का अनुवाद कर दिया– दूरभाष और दूरदर्शन। लेकिन train शब्द का क्या किया जाए? संस्कृत भाषा, में जहां स्रोत भाषा की व्यक्ति तथा स्थान संज्ञाओं का भी संस्कृत अनुवाद कर देने की परम्परा है, ट्रेन शब्द को कैसे स्वीकारती है? संस्कृत भाषा के एकमात्र समाचार पत्र में ट्रेन का अनुवाद किया जाता है– ''शलाकाशटम्''। हिंदी ने उसे स्वीकार नहीं किया। हिंदी में या तो ट्रेन शब्द ही चलता है अथवा लोक स्तर पर रेलगाड़ी।

शब्दान्तर अथवा अर्थान्तर की समस्या इतनी सरल नहीं है। शब्द सदा अर्थाभिव्यक्ति ही नहीं करते हैं, वे हमारी गहरी सांस्कृतिक आस्थाओं को पहचान देते हैं। अरबी भाषा का एक शब्द है– हिजरत इसका अंग्रेजी और हिंदी मे शाब्दिक अनुवाद होगा escape और पलायन। मुसलमान धर्मानुयायियों के पैगम्बर मुहम्मद ने मक्का से मदीना को हिजरत की थी। यह हिजरत समस्त मुस्लिम जगत के लिए एक पवित्रतम घटना थी। इसी घटना से हिज्र संवत् का आरम्भ होता है। फारसी भाषा ने भी इस अरबी शब्द को पूर्ण धार्मिक पवित्रता के साथ ग्रहण किया है। परन्तु इस क्रियापद का हिंदी, अंग्रेजी अथवा अन्य किसी भाषा में अनुवाद करते समय क्या किया जाए? जहाँ तक शब्द के अर्थ का प्रश्न है, उसमें कोई कठिनाई नहीं। परंतु अभी कुछ वर्ष पहले जब मराठी की पाठ्य पुस्तक में 'हिजरत' का अनुवाद ''पलायन'' किया गया तो मुस्लिम धर्मानुयायियों की धर्म–भावना को ठेस पहुँची उन्होंने इसका विरोध किया। वह पाठ पुस्तक से निकाल दिया गया। ऐसी परिस्थितियों में अनुवाद केवल शब्दार्थ की दृष्टि से ही सही होना महत्त्वपूर्ण नहीं होता उसे भाषा संस्कार की दृष्टि से भी स्वीकार्य होना चाहिए।

वाक्य रचना के समीपी घटक

अनुवाद में वाक्य रचना में समीपी घटकों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। चॉम्सकी के अनुसार वाक्य रचना के समीपी घटकों का कोष्ठीकरण मनुष्य की बौद्धिक क्षमता का एक अंतर्निहित अंश होता है। इसी कारण बाह्य स्तर पर संरचनात्मक दृष्टि से संदिग्धार्थक वाक्यों के अर्थबोध में वक्ता – श्रोता को कोई कठिनाई नहीं होती है। हिंदी का एक वाक्य है–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उसने भागते हुए साँप को मारा।

समीपी घटकों के उपर्युक्त दो प्रकार के कोष्ठीकरण के अनुसार ही इस वाक्य का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद दो भिन्न रूप से होगा—

1. He killed the running snake.

2. While running he killed the snake.

प्रश्न उठता है कि इन दो अनुवादों में कौन सा अनुवाद उपयुक्त है। व्याकरणिक दृष्टि से दोनों वाक्य सही होते के बावजूद अर्थ की दृष्टि से पहला ही सही है हिंदी वाक्य का श्रोता उक्त संदिग्धार्थ वाक्य का निश्चित अर्थ लगता है कि ''साँप जो कि भाग रहा था- उसे उसने मारा'' और इसी दृष्टि से इस वाक्य का पहला अनुवाद सही ठहरता है।

बोध प्रश्न - 3

निम्नलिखित का उत्तर लगभग चार-पाँच पंक्तियों में दीजिए—

1. अनुवाद में भाषा के सांस्कृतिक संदर्भ का क्या महत्त्व है ?

.....

.....

2. वाक्य रचना के समीपी घटक अनुवाद में किस तरह महत्त्वपूर्ण होते हैं ?

.....

.....

3.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आप ने पढ़ा है कि वाक्य भाषा कि अत्यंत महत्त्वपूर्ण इकाई होती है क्योंकि इसी के द्वारा अर्थ संप्रेषण होता है। आपने वाक्य का अर्थ समझते हुए विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई वाक्य की परिभाषाएँ भी पढ़ी हैं तथा वाक्य के स्वरूप के विषय में जानकारी प्राप्त की है। आपने वाक्य रचना के विषय में पढ़ा है। अब आप जान गए हैं कि वाक्य रचना में पदक्रम, पदबंध और उपवाक्य का क्या महत्त्व होता है। आपको ये भी पता चल गया है कि अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं।

इस इकाई में आपने प्रोक्ति के विषय में भी पढ़ा है। आप जान गए हैं कि प्रोक्ति किसे कहते हैं। यह एक समग्र संदेश को प्रस्तुत करता है इसका विस्तार एक शब्द से लेकर संपूर्ण रचना तक हो सकता है।

इस इकाई में वाक्य के विभिन्न घटकों को अनुवाद के संदर्भ में देखते हुए आपको पता चल गया है कि अनुवाद में जो चीजें विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण होती हैं वे हैं- भाषा का सांस्कृतिक संदर्भ, उसका मुहावरा अथवा कथन शैली तथा वाक्य रचना के समीपी घटक।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

संवर्ग-2 : अनुवाद प्रविधि एवं प्रकार

इकाई-4 अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि

संरचना

4.0 प्रस्तावना

4.1 उद्देश्य

4.2 अनुवाद को समझने की दो दृष्टियाँ

4.2.1 पाठपरक दृष्टि

4.2.2 प्रक्रियापरक दृष्टि

4.3 अनुवाद का व्यापार क्षेत्र

4.4 अनुवाद प्रक्रिया : विभिन्न प्रारूप

4.4.1 नाइडा द्वारा प्रस्तावित प्रारूप

4.4.2 न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप

4.4.3 भूमिका-समस्या प्रारूप

4.5 सारांश

4.6 शब्दावली

4.0 प्रस्तावना

पिछले खंड की इकाइयों में आपने अनुवाद के महत्त्व, स्वरूप और परिभाषा के विषय में पढ़ा है। साथ ही अनुवाद की परंपरा की जानकारी भी हासिल की है।

प्रस्तुत खंड अनुवाद की प्रविधि से संबंधित है। इस खंड की पहली इकाई संख्या-5 में आप अनुवाद की प्रक्रिया को समझेंगे। अंग्रेजी के Process के पर्याय के रूप में प्रस्तुत ''प्रक्रिया'' शब्द प्र + क्रिया से मिलकर बना है। इसका अर्थ होता है- विशिष्ट क्रिया। किसी कार्य अथवा वस्तु अथवा कौशल की विशिष्ट क्रिया को जानने का मतलब होता है यह समझना कि यह कार्य कैसे किया जाता है। जाहिर है कि इस इकाई में अनुवाद की प्रक्रिया समझते हुए आपको पता चलेगा कि अनुवाद कैसे किया जाता है, इसमें क्या-क्या कार्य शामिल हैं तथा अनुवादक इस कार्य को किस प्रकार करता है।

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- अनुवाद को समझने की दो दृष्टियों का उल्लेख कर सकेंगे,
- बता सकेंगे कि अनुवाद कार्य क्या है, और

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

- अनुवाद की प्रक्रिया के विभिन्न प्रारूपों की चर्चा कर सकेंगे।

4.2 अनुवाद को समझने की दो दृष्टियाँ

अनुवाद या अनूदित कृति पर विचार करने की दो दृष्टियाँ हैं- 1. पाठपरक दृष्टि और 2. प्रक्रियापरक दृष्टि।

4.2.1 पाठपरक दृष्टि - पाठपरक दृष्टि के केन्द्र में मूलरचना और अनूदित कृति के बीच पाए जाने वाले संबंधों की प्रकृति रहती है। इसके आधार पर हम यह देखना चाहते हैं कि अपने संदेश, बनावट और बुनावट में अनूदित कृति, मूलरचना के कितने निकट या समतुल्य हैं। इस संदर्भ में जो भी चर्चा संभव है, उसका आधार और सीमा पाठ के रूप में मूलरचना और अनूदित कृति ही बनती है। इस दृष्टि के आधार पर हम ऐसे प्रश्नों का उत्तर पा सकते हैं कि अनुवाद क्या है ? अनुवाद कैसा बन पड़ा है ? अनूदित पाठ, मूलरचना के कितने निकट या कितनी दूर है ? मूलरचना के संदेश को किस सीमा तक अनूदित कृति संप्रेषित करने में समर्थ है ? या फिर अपनी संरचनात्मक बनावट या शैलीगत बुनावट में अनुवाद मूलरचना के शिल्पविधान के कितने अनुरूप है ?

स्पष्ट है, पाठपरक दृष्टि अनुवाद या अनूदित कृति को पहले एक बनी-बनाई वस्तु के रूप में स्वीकार करती है, और फिर उस पर चर्चा करती है। इस दृष्टि से अनुवाद पर बात करने वालों की आंख के आगे से वे सभी प्रसंग ओझल रहते हैं जिसका सामना अनुवाद करते समय एक अनुवादक को करना पड़ता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अनुवाद भाषा-व्यापार की एक सर्जनात्मक प्रक्रिया भी है। यह प्रक्रिया मूलरचना पर अनुवाद की भावात्मक प्रतिक्रिया से प्रारंभ होकर अनूदित पाठ के रचना-विधान तक फैली होती है। यह कहा जा सकता है कि अनुवाद भाषा-व्यापार की एक संश्लिष्ट प्रक्रिया भी है और इस प्रक्रिया का परिणाम भी। अनुवाद पर विचार करने वाली प्रक्रियापरक दृष्टि अनूदित कृति (पाठ) को मात्र मूल रचना में निहित संदेश और उसकी बनावट तथा बुनावट के संदर्भ के आधार पर नहीं देखना चाहती, बल्कि अनुवाद को उन प्रसंगों के परिप्रेक्ष्य में भी देखना चाहती है कि जिसका सामना अनुवादक को मूलरचना को समझने, इसके अर्थ को दूसरी भाषा में बाँधने तथा अनूदित कृति के रूप में एक सममूल्य पाठ के रचने के दौरान करना पड़ता है।

4.2.2 प्रक्रियापरक दृष्टि - प्रक्रियापरक दृष्टि अनुवाद (अनूदित कृति) को मूलरचना के सममूल्य एक स्वायत पाठ के रूप में भी देखती है और उसे उस प्रक्रिया के परिणाम के रूप में भी ग्रहण करती है जो दो पाठों (मूल और अनूदित) को सममूल्य और समतुल्य बनाती है। दूसरी तरफ वह अनूदित पाठ की अपनी विशिष्टता और सीमा के कारणों पर भी प्रकाश डालती है। इस दृष्टि के आधार पर हम ऐसे प्रश्नों का भी उत्तर पा सकते हैं- अनुवाद मूल रचना से भिन्न है तो क्यों ? इस तरह मूल रचना और अनूदित पाठ की भिन्नता का यह केवल आधार ही नहीं प्रस्तुत करती, वरन उसकी व्याख्या भी करती है। वह उन प्रसंगों का निर्धारण भी करती है जो मूलपाठ और अनूदित पाठ/कृति में अंतर का आधार पैदा करता है। वह उन भिन्न भूमिकाओं के संदर्भ में अनूदित कृति को देखती है जिसका निर्वाह अनुवाद करते समय एक अनुवादक को करना पड़ता है। एक तरफ अनुवाद प्रशिक्षण में इसका महत्त्व सहज सिद्ध है, क्योंकि वह अनुवादक को उसकी विभिन्न भूमिकाओं के प्रति सजग और समर्थ बनाने में सहायक होती है। दूसरी तरफ इसका उपयोग मशीनी अनुवाद में सार्थक ढ़ंग से किया जाना संभव है। क्योंकि वह अनुवाद-व्यापार के विभिन्न चरणों की ओर न केवल संकेत देती है, बल्कि उन चरणों में पाए जाने वाले विकल्पों को भी निर्धारित करने में सहायक होती है।

4.3 अनुवाद का व्यापार-क्षेत्र

किसी कही हुई बात को फिर से कहना अनुवाद है। दूसरे शब्दों में किसी एक भाषा में पहले से ही रचित कृति (पाठ)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

के संदेश को किसी दूसरी भाषा में सममूल्य रचना (पाठ) के रूप में व्यक्त करना अनुवाद है। स्पष्ट है कि अनुवाद दो भाषाओं के संप्रेषण व्यापार की अपेक्षा रखता है। पहली भाषा का संबंध मूल रचना से है, जिसे अनुवाद की तकनीकी शब्दावली में स्रोत भाषा कहा जाता है। दूसरी भाषा का संबंध उस भाषा से है जिसमें अनुवाद किया जाना है। इसे लक्ष्य भाषा की संज्ञा दी जाती है।

इस प्रकार दो, भाषाओं के संप्रेषण व्यापार से संबद्ध होने के कारण अनुवाद-व्यापार में हमें दो प्रकार के पाठों का सामना करना पड़ता है। पहला पाठ, स्रोत भाषा में रचित कृति के रूप में अनुवादक को पहले से ही उपलब्ध होता है। इस मूल कृति का रचयिता (लेखक) कोई अन्य होता है और लेखन के समय इसका पाठक समुदाय भी कोई दूसरा होता है। अनुवादक का मूल कृति के रचयिता से परिचय हो भी सकता है और नहीं भी। अनुवादक सबसे पहले पाठक के रूप में इस मूल रचना से टकराता है। उसका पहला दायित्व पाठक के रूप में मूलकृति में अंतर्निहित संदेश को समझना होता है।

अनुवाद संदेश का भाषांतर होता है। स्रोत-भाषा के पाठ में अंतर्निहित संदेश को समझने का काम तो उस भाषा का सामान्य पाठक भी करता है। पर अनुवादक को द्विभाषिक की भूमिका का निर्वाह भी करना पड़ता है। उसे इस संदेश को लक्ष्यभाषा में बाँधना पड़ता है। यहां ध्यान देने की आवश्यकता है कि अपने अस्तित्व के एक धरातल पर संदेश भाषा-तटस्थ होता है तो एक दूसरे धरातल पर वह भाषा-विशिष्ट। उदाहरण के लिए अंग्रेजी की अभिव्यक्ति Good Morning को ही लें। अपने अस्तित्व के एक धरातल पर यह भाषा तटस्थ है, क्योंकि हम कह सकते हैं कि इसके संदेश का संबंध अभिवादन-व्यवस्था से है। जब दो व्यक्ति आपस में मिलते हैं तब अपनी बात या आचरण का प्रारंभ अभिवादन के साथ शुरू करते हैं। प्रत्येक समाज की अपनी एक अभिवादन-व्यवस्था होती है, जिसे वह अपने आचरण की किसी विशिष्ट मुद्रा या भाषा की विशिष्ट अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त करता है। Good Morning को अभिवादन की अभिव्यक्ति समझना संदेश के प्रयोजन या प्रकार्य को समझना है। जो भाषा से बंधकर भी भाषा की विशिष्ट अभिव्यक्ति से मुक्त है।

अंग्रेजी भाषा में Good Morning को अभिवादन की अभिव्यक्ति के रूप में ग्रहण तो किया जाता है, पर प्रयोग के संदर्भ में इसका व्यवहार प्रात:काल ही संभव है। इस भाषा में यह अभिव्यक्ति समय-सापेक्ष है, इसलिए वहाँ Good Morning के साथ-साथ Good after-noon, Good evening, Good night का प्रयोग संभव है। यह अंग्रेजी भाषा या समाज का अपना वैशिष्ट्य है। हिंदी भाषा या समाज के संस्कार में अभिवादन-व्यवस्था का संबंध समय के साथ नहीं होता। अत: इन सभी संदर्भों में उसका समानांतर प्रयोग 'नमस्ते' ही होगा। सुबह, दोपहर, शाम या रात में किए जाने वाले अभिवादन में सर्वदा 'नमस्ते' का प्रयोग ही संभव है।

हिंदी भाषा या उसके समाज की अभिवादन-व्यवस्था की अपनी विशिष्टता है। इसमें अभिव्यक्तियाँ समय के संदर्भ में नहीं बदलती पर वे सामाजिक स्तर-भेद के साथ अपने प्रयोग में अवश्य बदल जाती है। हम बराबर वालों को 'नमस्ते' या 'राम-राम' कहते हैं तो बड़ों के अभिवादन के लिए 'प्रणाम' या 'पाँव लागे' का व्यवहार करते हैं। इस दूसरी स्थिति में बड़ा, छोटों को अभिवादन के संदर्भ में आशीर्वाद देते हुए 'खुश रहो' या 'चिरंजीव भव' कहता है। ये तथ्य इस बात की ओर संकेत देते हैं कि प्रत्येक भाषा और उसके समाज की अभिव्यक्ति रूढ़ियाँ संदेश को विशिष्ट बनाती हैं। संदेश के भाषांतरण के समय अनुवादक को उस द्विभाषिक की क्षमता का परिचय देना पड़ता है जो स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की न केवल अभिव्यक्ति-रूढ़ियों और शैली-संस्कार की भिन्नता का उसे पता बताएँ बल्कि यह भी सूचित करें कि अभिव्यक्ति-शैली की भिन्नता के बावजूद किस प्रकार भाषांतरित संदेश समान स्थिति में समान प्रकार्य संपादित करते हैं।

अनुवादक लक्ष्य भाषा में पाठ का रचयिता (लेखक) भी होता है। वह न केवल मूलकृति के संदेश को समझता हे और

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उसे भाषांतरित करता है, बल्कि लक्ष्यभाषा में पाठ के रूप में उसे प्रस्तुत भी करता है। लेखक के रूप में अनुवादक को कई प्रकार के दबाव का सामना करना पड़ता है। उसे एक तरफ मूल कृति में निहित संदेश को लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति-रूढ़ियों के माध्यम से व्यक्त करना पड़ता है, दूसरी तरफ उसे अनूदित पाठ का इस प्रकार का निर्माण करना पड़ता है जिससे वह (अनूदित पाठ) मूल पाठ के सममूल्य बन सके और साथ ही उसके अपने पाठकों के लिए बोधगम्य और संप्रेष्य हो सके। हर अनवुाद का अपना पाठक वर्ग होता है, अत: लेखक के रूप में अनुवादक को पाठ के संदेश के प्रति ईमानदारी के साथ-साथ अपने पाठक को भी अनुवाद के प्रति आश्वस्त करते चलना पड़ता है।

अनुवाद के इस व्यापार को निम्नलिखित आरेख द्वारा दिखलाना संभव है-

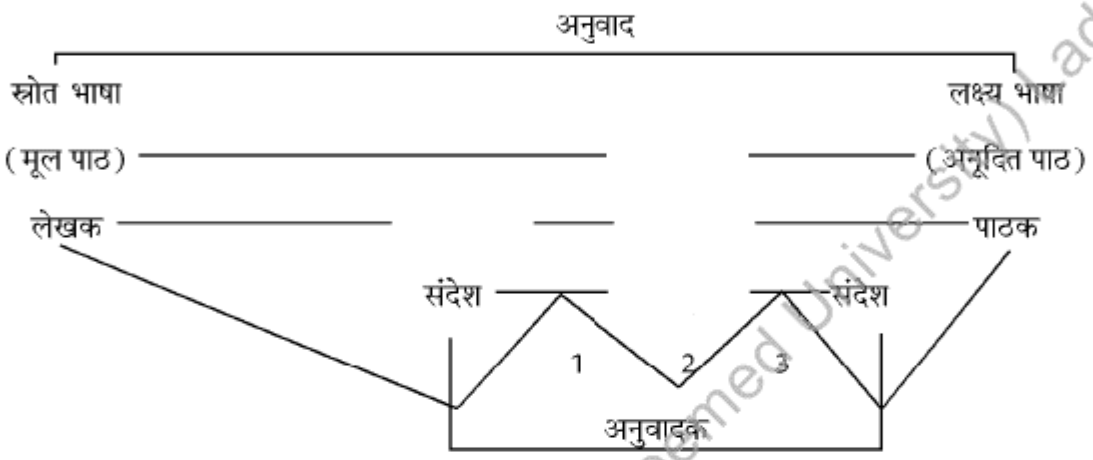

आरेख-1

ऊपर के आरेख (1) से स्पष्ट है कि दो भाषाओं के संप्रेषण-व्यापार के संदर्भ में अनुवादक को तीन प्रकार की विशिष्ट भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है- (1) मूलपाठ के पाठक की भूमिका, (2) मूलपाठ के संदेश को (अनूदित पाठ) में भाषांतरित करने वाले द्विभाषिक की भूमिका, और (3) अनूदित पाठ के रचयिता की भूमिका।

बोध प्रश्न -1

1. अनुवाद को समझने की दो दृष्टियाँ कौन-सी है ?

.....

.....

2. अनुवाद व्यापार में हमें कौन-से दो पाठ मिलते हैं ?

.....

.....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) अनुवाद ..... के बीच संप्रेषण व्यापार है।

(ख) अनुवाद में संदेश का ..... होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(ग) अनुवादक को ..... और ..... दोनों की भूमिका निभानी होती है।

(घ) अनुवादक को ..... कहा जा सकता है।

4.4 अनुवाद प्रक्रिया : विभिन्न प्रारूप

अनुवाद प्रक्रिया पर जिन विदेशी विद्वानों ने गंभीरतापूर्वक विचार किया है इनमें नाइडा और न्यूमार्क के विचार अधिक चर्चित है। यहाँ संक्षेप में इन दोनों विद्वानों द्वारा प्रस्तावित प्रारूप पर प्रकाश डालना उचित होगा।

4.4.1 नाइडा द्वारा प्रस्तावित प्रारूप – नाइडा अनुवाद को एक वैज्ञानिक तकनीक के रूप में स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार अनुवाद भाषाविज्ञान का एक अनुप्रयुक्त पक्ष है, अत: अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों को समझने और उसके विश्लेषण के लिए भाषावैज्ञानिक तकनीक का प्रयोग आवश्यक है। उनके अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपान है – 1. विश्लेषण, 2. अंतरण और 3. पुनर्गठन। एक कुशल और अनुभवी अनुवादक इन तीन भिन्न-भिन्न सोपानों को एक छलांग में पार कर लेता है। पर अनुवाद के प्रशिक्षार्थी को इन तीनों सोपानों से क्रमश: गुजरना पड़ता है। इन सोपानों को नाइडा ने आरेख द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया है-

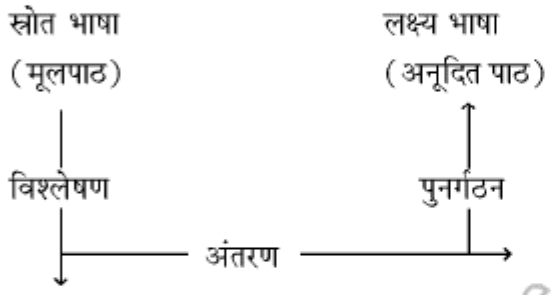

आरेख-2

आरेख (2) द्वारा स्पष्ट है कि इन तीनों सोपानों में एक निश्चित क्रम है। स्रोत भाषा में पहले से ही रचित मूलपाठ के संदेश को ग्रहण करने के लिए अनुवादक सबसे पहले पाठ का विश्लेषण करता है। पाठ भाषाबद्ध होता है और संदेश भाषिक संरचना के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है, इसलिए नाइडा के अनुसार मूलपाठ के विश्लेषण के लिए भाषासिद्धांत तथा उसमें अपनाई जाने वाली विश्लेषण तकनीक का उपयोग आवश्यक हो जाता है। नाइडा का यह भी मत है कि हर भाषिक संरचना के दो स्तर होते हैं- अभ्यांतर तथा बाह्य। आभ्यांतर स्तर का संबंध भाषा के सार्वभौम पक्ष से जुड़ा होता है। अत: इस स्तर पर स्थित संदेश स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा के लिए समान-रूप होता है। इसके विपिरीत बाह्य स्तर की संरचना का संबंध भाषाविशेष की विशिष्ट व्याकरणिक व्यवस्था के साथ रहता है, जिसके फलस्वरूप गहरे स्तर पर स्थित समान संदेश को अभिव्यक्त करने के लिए दो भाषाएँ (स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा) दो भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति-प्रणालियों का प्रयोग करती है। नाइडा के अनुसार अनुवाद गहन स्तर पर स्थिति समानधर्मी संदेश के फलस्वरूप ही संभव हो पाता है। अत: अनुवादक के लिए आवश्यक है कि वह बाह्य स्तर पर स्थित भाषिक संरचना का विश्लेषण करते हुए उसके गहन स्तर पर स्थित संदेश का पता लगाएँ और उस धरातल पर पाठ का अर्थबोध करें।

उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक वाक्य लें- Mohan frightens Sheela. गहरे स्तर पर इसकी दो व्याकरणिक संरचनाएँ संभव है। एक में मोहन, कर्त्ता के रूप में सक्रिय प्राणी (एजेन्ट) के रूप में कार्य करता है और दूसरे में वह करण के रूप में मात्र क्रिया के साधन के रूप में प्रयुक्त होगा। इसी के अनुसार क्रिया के दो अर्थ भी संभव हो पाते हैं। हिंदी में इसके दो

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समानार्थी संदेश संभव हैं- 1. मोहन शीला को डराता है और 2. शीला मोहन से डरती है। विश्लेषण के उपरांत प्राप्त इन दोनों संदेशों के बाही अनुवादक पाठ के संदर्भ के अनुसार उनमें से किसी एक या दोनों संदेशों को अनूदित पाठ में संप्रेषित करने का निर्णय लेता है।

विश्लेषण से प्राप्त अर्थबोध का लक्ष्यभाषा में अंतरण अनुवाद प्रक्रिया का दूसरा सोपान है। प्रत्येक भाषा मूल संदेश को अपने ढंग से भाषिक इकाइयों में बाँधती है। अत: संदेश को एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरित करने का मतलब ही है अभिव्यक्ति के धरातल पर उसका पुनर्विन्यास करना। नाइडा के अनुसार पुनर्विन्यास की यह प्रक्रिया कुछ-कुछ उसी प्रकार की है जिस प्रकार कुछ विभिन्न आकार के बक्सों के सामान को उससे भिन्न आकार के दूसरे बक्सों में दुबारा सुव्यवस्थित ढंग से सजाया गया। पुनर्विन्यास की यह प्रक्रिया कभी मात्र ध्वनि/लिपि स्तर तक सीमित होती है जैसे अंग्रेजी के शब्दों ''एकेडमी'', ''टेकनीक'', ''इंटरिम'', ''कॉमेडी'' क्रमश: अकादमी, तकनीक, अंतरिम और कामदी के रूप में, और कभी नवीन अभिव्यक्ति के रूप में भाषा के सभी स्तरों पर। हिंदी की लोकोक्ति ''नाच न आवे आँगन टेढ़ा'' के अंग्रेजी अनुवाद A bad carpenter quarrels with his tools. में न तो नाच का प्रसंग है और न ही आँगन और उसके टेढ़े होने का। पर संदेश के धरातल पर ये दोनों अभिव्यक्तियाँ सममूल्य है।

पुनर्गठन अनुवाद प्रक्रिया का तीसरा सोपान है। ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक भाषा की अपनी अभिव्यक्ति-प्रणाली और कथन-रीति होती है। लक्ष्यभाषा में अनूदित पाठ का निर्माण अगर मूलरचना के संदेश को यथारूप रखने के प्रयास से जुड़ा होता है, तो उसके साथ लक्ष्यभाषा की उस अभिव्यक्ति संस्कार के साथ ही संबद्ध रहता है, जो अनूदित पाठ को सहज, स्वाभाविक और बोधगम्य बनाता है। अनूदित पाठ के रचयिता के रूप में अनुवादक कई प्रकार की छूट ले सकता है, यथा पद्य में लिखी मूलकृति का यह गद्यानुवाद कर सकता है पर मूलकृति की काव्यात्मकता का बिना ह्रास किए हुए मूल रचना के सात-आठ वाक्यों के संदेश को चार-पाँच वाक्यों अथवा दस ग्यारह वाक्यों में बाँध या फैला सकता है पर मूल संदेश में बिना कुछ जोड़े या घटाए, व्याकरणिक संरचना में भी वह परिवर्तन ला सकता है, यथा कर्मवाच्य में व्यक्त मूल अभिव्यक्ति को अनूदित पाठ में वह कर्तृवाच्य में बदल सकता है। (बशर्ते यह बदलाव लक्ष्य भाषा की प्रकृति की माँग का परिणाम हो।)

बाइबिल का अनुवादक होने के कारण नाइडा की दृष्टि मूलत: एक विशिष्ट प्रकार के पाठ के अनुवाद तक सीमित थी। उनके अनुवाद संबंधी उदाहरण की प्राचीन पाठ, उसमें निहित गूढ़ाई की पकड़, विकसित तथा अविकसित भाषाओं में संदेश के संप्रेषण की समस्या आदि से जुड़े थे।

4.4.2 न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप - अनुवाद-प्रक्रिया पर न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप नाइडा के समान कुछ चरणों की अपेक्षा रखता है, पर अपने चिंतन में वह अधिक व्यापक है। इसे निम्नलिखित आरेख से दिखाया जाना संभव है।

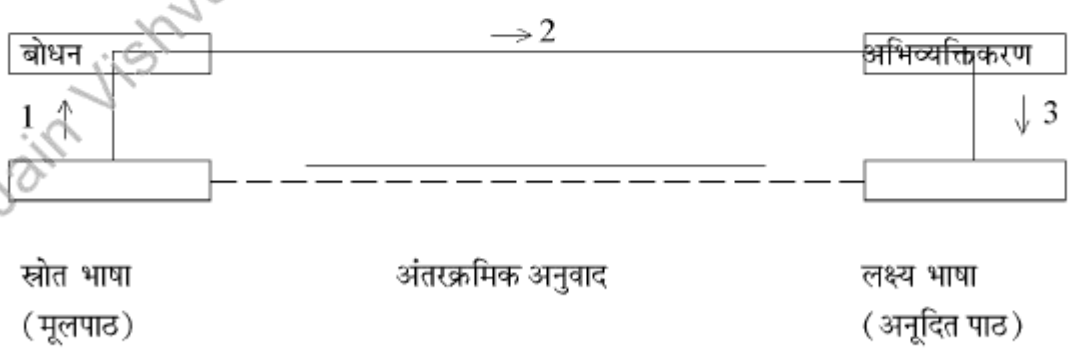

आरेख-3

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

न्यूमार्क और नाइडा द्वारा प्रस्तावित आरेख की तुलना से स्पष्ट होता है कि अनुवाद प्रक्रिया संबंधी संकल्पना में अगर उनमें समानता है, तो एक सीमा तक विभिन्नता भी है। न्यूमार्क अनुवाद प्रक्रिया की दो दिशाएँ स्वीकार करते हैं और इसीलिए मूलपाठ और अनूदित पाठ के सह संबंध को दो स्तरों पर स्थापित करते हैं। पहला संबंध दो पाठों के अंतरक्रमिक अनुवाद पर आधारित है, जिसे उन्होंने खंडित रेखा के माध्यम से जोड़ा है। अंतरक्रमिक अनुवाद, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद होता है। अत: कई संदर्भों में न केवल अपनी प्रकृति में अपारदर्शी होता है, बल्कि भ्रामक भी होता है। खंडित रेखा से जोड़ने का मतलब ही है कि यह अनुवाद की सही प्रक्रिया नहीं है, भले ही कुछ अनुवादक इस रास्ते को अपनाने की ओर प्रवृत्त हों और कुछ को यह मार्ग सहज और सीधा लगे।

अनुवाद का दूसरा रास्ता मूलपाठ के अर्थबोधन और लक्ष्यभाषा में उच्च अर्थ के अभिव्यक्तिकरण का है। न्यूमार्क द्वारा संकेतित बोधन की प्रक्रिया, नाइडा द्वारा प्रस्तावित विश्लेषण की प्रक्रिया से अधिक व्यापक संकल्पना है, क्योंकि इसमें विश्लेषण से प्राप्त अर्थ के साथ-साथ अनुवादक द्वारा मूलपाठ की व्याख्या का अंश भी सम्मिलित है। कई भाषिक पाठ या उक्तियाँ अनुवादक की व्याख्या की अपेक्षा रखती है, अन्यथा अर्थ पारदर्शी नहीं बन पाता।

हम कुछ उदाहरणों द्वारा इस प्रारूप को यहाँ स्पष्ट करना चाहेंगे। किसी ट्रक पर अंकित ''पब्लिक'' के लिए ''लोक/जन'' और ''केरियर'' के लिए ''वाहन'' मानते हुए अनुवाद लोकवाहन/जनवाहन संभव है। पर यह अनुवाद पारदर्शी अनुवाद नहीं माना जा सकता और न ही पूर्णरूप से बोधगम्य। बोधन के धरातल पर ''पब्लिक केरियर'' का एक अर्थ यह भी है कि उक्त वाहन किसी की निजी संपत्ति इस रूप में नहीं है कि सामान्य व्यक्ति इसका उपयोग कर सके। इसका जनसाधारण के लिए उपयोग संभव है बशर्ते कि व्यक्ति इसका उचित भाड़ा दे। अत: अर्थ के एक धरातल पर इसका अन्वय संभव है : A carrier which can be hired by public. अत: पारदर्शी अनुवाद के रूप में उसका अनुवाद ''भाड़े का ट्रक'' भी संभव है।

बोधन, व्याख्या सापेक्ष होता है और यह व्याख्या स्रोतभाषा में अन्वय के रूप में संभव है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी का एक वाक्य लें : Judgement has been reserved. अंतरक्रमिक अनुवाद के रूप में हिंदी में कहा जा सकता है : निर्णय आरक्षित/सुरक्षित कर लिया गया है। यह अनुवाद के रूप में न केवल अपारदर्शी है बल्कि अर्थ-संप्रेषण में भ्रामक भी है। ''निर्णय का आरक्षण/सुरक्षा'' अपने आशय को स्पष्ट नहीं कर पाता। अत: यह अर्थ बोधन के धरातल पर स्रोतभाषा में ही अन्वय की अपेक्षा रखता है : यथा Judgement wil not be announced immediately/Judgement will be announced later. आदि।

बोधन के बाद का चरण है लक्ष्यभाषा में संदेश के अभिव्यक्तिकरण का, जो पुनर्गठन और पुन:सर्जना की भी अपेक्षा रखता है। ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक भाषा की अपनी बनावट और बुनावट होती है, उसकी अपनी शैली और संस्कार होता है, अपना मिजाज और तेवर होता है। लक्ष्य भाषा में अनूदित पाठ के अभिव्यक्तीकरण के चरण में संदेश को यथासंभव सुरक्षित रखते हुए एक भाषा के रचनाविधान और संस्कार से दूसरी भाषा के रचना संस्कार और शैली संस्कार की यात्रा करनी होती है। अंग्रेजी के वाक्य : I have two books का अनुवाद होगा मेरे पास दो पुस्तकें है, पर I have two daughters का अनुवाद ''मेरे पास दो लड़कियाँ है'' गलत माना जाएगा। हिंदी के भाषा-व्यवहार के अनुरूप अनुवाद होगा : ''मेरे दो लड़कियाँ है।'' यह भाषा संस्कार ही है जिसके अनुसार A line in reply will be appreciated का अनुवाद उत्तर में ''लिखी एक पंक्ति प्रशंसित की जाएगी'' उत्तर गलत माना जाएगा जबकि ''उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी''। अनुवाद सही माना जाएगा। इसी प्रकार I wonder if this is true का अनुवाद ''मुझे इस सच्चाई में संदेह है'' अधिक उपयुक्त माना जाएगा। इस चरण पर Judgement has been reserved का हिंदी में अभिव्यक्तिकरण होगा : ''निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।''

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अनुवाद प्रक्रिया के अंतिम चरण का संबंध पाठ निर्माण से है। इस चरण पर अनुवादक न केवल लक्ष्य भाषा के अनुरूप संदेश को भाषिक अभिव्यक्ति का जामा पहनाता है, बल्कि मूलभाषा के पाठ की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सहपाठ का निर्माण करता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का No admission या No smoking का बोधन के धरातल पर अन्वय होगा Admission is not allowed या Smoking is not allowed और अभिव्यक्तिकरण के चरण पर हिंदी में कथन होगा ''अंदर आना मना है, सिगरेट बीड़ी पीना मना है''। पर यह संभव है कि पाठ-निर्माण के चौथे चरण में हम अनुवाद करें ''प्रवेश निषिद्ध''। इसी प्रकार Judgement has been reserved का अभिव्यक्तिकरण के चरण पर हिंदी रूपांतरण ''निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।'' स्वीकार हो सकता है। पर पाठ-निर्माण के चरण पर इसका अनुवाद ''निर्णय बाद में सुनाया जाएगा'' अधिक सार्थक माना जाएगा।

अनुवाद प्रक्रिया के इन विभिन्न चरणों पर पाई जानेवाली अंग्रेजी-हिंदी की दो अभिव्यक्तियों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :

1. स्रोत (मूल) भाषा पाठ

(क) No smoking

(ख) Judgement has been reserved.

1. अंतरक्रमिक अनुवाद

(क) नहीं धुआँ करना/धूम्रपान

(ख) निर्णय रख लिया गया सुरक्षित

2. बोधन

(क) Smoking is not allowed here.

(ख) Judgement will not be announced immediately.

3. अभिव्यक्तीकरण

(क) बीड़ी-सिगरेट पीना मना है।

(ख) निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।

4. पाठ-निर्माण

(क) धूम्रपान निषेध

(ख) निर्णय बाद में सुनाया जाएगा।

4.4.3 भूमिका-समस्या प्रारूप- श्रीवास्तव और गोस्वामी के अनुवाद की प्रक्रिया का एक ओर प्रारूप प्रस्तुत किया है। उन्होंने एक तरफ अनुवाद को प्रतीक सिद्धांत के साथ जोड़कर देखने का प्रयत्न किया है और दूसरी तरफ अनुवाद प्रक्रिया को दो भाषाओं के बीच संप्रेषण व्यापार के संदर्भ में देखने की कोशिश की है। उनके अनुसार संदेश (कथ्य) का प्रतीकांतरण अनुवाद है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

पाठ को भाषिक प्रतीक के रूप में देखा जाना संभव है। प्रत्येक प्रतीक अपने संकेतन व्यापार में संकेतक (वाचक, अभिव्यक्ति) और संकेतित (वाच्य, कथ्य) की समन्वित इकाई होती है। अनुवादक का कार्य प्रतीकांतरण के समय संकेतित के मर्म (संदेश) को यथासंभव अक्षुण्ण बनाए रखना होता है। यह तभी संभव है जब दो पाठों (मूल और अनूदित) की अभिव्यक्ति पद्धति (संकेतक) और कथ्य व्याख्या (संकेतार्थ) को सममूल्य और समतुल्य बनाए रखे। इस तथ्य को निम्नलिखित आरेख द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

(भाषिक प्रतीक)

संकेतक 1 → (संकेतार्थ1 → ← संकेतार्थ 2) ← संकेतक 2

(भाषिक प्रतीक)

आरेख-4

यहाँ ध्यान देने की बात है कि संदेश, संकेतित कथ्य का मर्म होता है जो भाषिक प्रतीक के

संदर्भ में अभिव्यक्ति और कथ्य के समन्वयन से बँधकर सामने उभरता तो अवश्य है, पर उसके दायरे में बँधा नहीं होता। उदाहरण के लिए ''मंदिर में जल चढ़ाने'' की उक्ति और उसकी दूसरी भाषा में प्रतीकांतरण की समस्या को ही लें। प्रेमचंद की कहानी ''कफन'' में प्रयुक्त हिंदी की यह उक्ति अंग्रेजी की चार भाषांतरित अभिव्यक्तियों में उपलब्ध है :

क) To offer obligations
ख) To offer Incense Water.
ग) To offer holy Water, और
घ) To offer Prayers.

अनुवाद (क) और (घ) में पानी का उल्लेख नहीं है और (ख) और (ग) में पानी का उल्लेख तो है, पर उसे विशिष्ट जल के रूप में अनूदित किया गया है इसका कारण स्पष्ट है (मंदिर में जल चढ़ाने) के संदेश के मर्म (संकेतन) को संबंध पूजा से है जो चारों अंग्रेजी अनुवादों के भूल में है और जो मूल और अनूदित पाठ को सममूल्य बनाता है।

जैसा कि आरेख (1) में बताया गया है, अनुवाद प्रक्रिया का संबंध दो भाषाओं के बीच के संप्रेषण, व्यापार से है। इस संप्रेषण व्यापार में अनुवादक को तीन निश्चित भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है। साथ ही भाषांतर अर्थव्यापार से संबद्ध रहता है। अतः अनुवादक को अर्थव्याख्या की तीन प्रक्रियाओं और उसके समरूपों से जूझना पड़ता है। अनुवाद प्रक्रिया के भूमिका-समस्या प्रारूप के अनुसार उसके तीन प्रसंग सामने आते हैं :

1	2	3
अनुवादक की भूमिका	**प्रक्रिया**	**समस्या**
1. (मूलपाठ का) पाठक	बोधन	अर्थग्रहण की समस्या
2. द्विभाषिक	अंतरण	अर्थांतरण की समस्या
3. (अनूदित पाठ का) रचयिता	सर्जन	अर्थ-संप्रेषण की समस्या

1. अर्थग्रहण की समस्या : पाठक की भूमिका के रूप में अनुवादक को मूलपाठ के अर्थग्रहण की समस्या का समाधान दो स्तरों पर करना पड़ता है। पहले स्तर का संबंध स्रोत भाषा की अपनी बनावट और बुनावट से है और दूसरे स्तर का पाठ के विषय तत्त्व से। भाषा स्तर से संबंधित कई उदाहरण पहले भी दिए जा चुके हैं। यहाँ इतना कहना पर्याप्त होगा कि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

मूलपाठ का संदेश भाषिक अभिव्यक्तियों के उस जाल के भीतर छिपा होता है जो कभी संकेतार्थ का सहारा लेता है और कभी संरचनार्थ, प्रयोगार्थ अथवा संपृक्तार्थ का।

अत: 'संदेश' को पकड़ने के लिए अभ्यांतर आवश्यक हो जाता है, यथा

(क) (किसी की) आँख लगना – निद्रा

(ख) (किसी से) आँख लगना – प्यार होना

(ग) (किसी पर) आँख लगना – लालसा

भाषा सामाजिक संस्कार का बोध भी करती है। अत: कुछ अभिव्यक्तियाँ अपने बोधन के लिए उस संस्कार को भी अर्थग्रहण के दायरे में ले जाती है। इसकी उपेक्षा करने से संदेश का मर्म ठीक से पकड़ में नहीं आ पाता और अनुवाद भ्रामक हो जाता है। उदाहरण के लिए ''कफन'' में ''गंगा नहाना'' का प्रसंग है, जिसके चार अनुवाद उपलब्ध हैं।

क) to go to the Ganges

ख) to bathe in the Ganges to wash away the sins.

ग) to swim in the Ganges to wash away the sins

घ) to wash their sins in the Ganges

स्पष्ट है (क) अनुवाद में ''पाप धोने'' का भाव व्यक्त नहीं होता और (ग) में नहाने के भाव को ''तैरने'' के भाव से अतिरंजित कर दिया गया है।

जहाँ तक विषय-वस्तु से संबंधित बोधन और अर्थग्रहण की समस्या का सवाल है, अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि पाठ-संबंधी विषय की उसे एक सीमा तक जानकारी हो। उसे पाठ संबंधी विषय का विशेषज्ञ नहीं माना जाता, पर एक सामान्य पाठक के रूप में कथ्य को समझने की क्षमता हमेशा अपेक्षित रहती है, अन्यथा अनुवाद सटीक नहीं बन पाता। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक शब्द लें reaction। इसके तीन विभिन्न विषय क्षेत्रों में अर्थ के आधार पर तीन अनुवाद संभव हैं। क्योंकि वे अलग-अलग प्रक्रियाओं से जुड़े हैं, यथा प्रतिक्रिया (भौतिकी), अभिक्रिया (रसायन शास्त्र) और अनुक्रिया (मनोविज्ञान)।

पाठक के रूप में अनुवादक को यह हमेशा याद रखने की आवश्यकता होती है कि शब्दार्थ, पाठ-सापेक्ष होता है। विषय और प्रसंग के अनुसार शब्दों के अर्थ बदल जाया करते हैं उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के शब्द treatment को ही लें। तीन विभिन्न प्रसंगों में इसके तीन अर्थ संभव हैं:

1.	Treatment of cancer	कैंसर का इलाज
2.	Treatment of the subject matter	विषय वस्तु का प्रतिपादन
3.	Treatment of servant	नौकर के साथ व्यवहार

2. अर्थांतरण की समस्या :

द्विभाषिक की भूमिका में अर्थांतरण की समस्या का समाधान अनुवादक को कई स्तरों पर करना पड़ता है। कभी वह मूल भाषा की शाब्दिक इकाई को आगत शब्द के रूप में अपनाता है, कभी उसका भाषांतरित पर्याय ढूँढ़ता है, और कभी उसकी व्याख्या करते हुए अन्वय प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए ''कफन'' कहानी में आए ''चमार'' शब्द को हम चार अनूदित

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

रूपों में पाते हैं।

1. Chamar

2. Cobbler

3. Tanner

4. Untouchable leather worker

इसी तरह ''रायता'' शब्द के चार अनूदित रूप देखने को मिलते हैं :

1. rayta
2. curd
3. curd with spices
4. vegetable salads spiced and pickled in curd.

(क) पूर्ण पुनर्विन्यास : अर्थांतरण के लिए इसमें संपूर्ण अभिव्यक्ति को ही बदलना पड़ता है। अत: संदेश को छोड़कर मूलपाठ और अनूदित पाठ में कोई समान-तत्व नहीं दिखाई पड़ता। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के मुहावरे by tooth and nail का हिंदी अनुवाद होगा ''जी जान से''।

(ख) विश्लेषणात्मक पुनर्विन्यास : इस प्रकार के अंतरण में मूल अभिव्यक्ति की किसी एक इकाई के द्वारा अर्थ को अनूदित पाठ में कई भाषिक इकाई द्वारा प्रेषित किया जाता है, यथा ''देवरानी'' शब्द का अंग्रेजी अनुवाद होगा wife of younger brother of husband.

(ग) संश्लेषणात्मक पुनर्विन्यास : इस प्रकार के अंतरण में मूलभाषा के एक व्याकरणिक प्रकार्य को व्यंजित करने के लिए अनूदित भाषा में किसी अन्य अभिव्यक्ति पद्धति का सहारा लिया जाता है। अंग्रेजी के उपपद 'a' और 'the' के अंतरण के लिए हिंदी में विभिन्न शब्द क्रम का प्रयोग, यथा :

1. There is a snake in the room.
2. There is the snake in the room.

का हिंदी में क्रमश: अनुवाद होगा

क) कमरे में साँप है।
ख) साँप कमरे में है।

3. अंतरण की समस्या : अंतरण करते समय दो सिद्धांतों का निर्वाह आवश्यक होता है पहले का संबंध मूलपाठ के अर्थ के समतूल्य अर्थ से है जिसका अनुवादक पाठ में ''न घटा कर, न बढ़ा कर'' (no loss, no gain) सिद्धांत के आधार पर प्रस्तुत करता है। दूसरा सिद्धांत समतुल्यता का है जिसके आधार पर अनुवादक अनूदित पाठ को शैली और अभिव्यक्ति के धरातल पर मूलपाठ के समतुल्य भाषिक उपादान के माध्यम से निर्मित करता है।

अनूदित पाठ के रचयिता के रूप में अनुवादक को अर्थ-संप्रेषण की समस्या का सामना करना पड़ता है। अनुवादक पाठ का मूल रचयिता नहीं है, उसके सामने ''प्रारूप'' के रूप में पहले से ही एक पाठ ''मूल पाठ'' होता है जिसके समानांतर अनूदित भाषा में एक ''सहपाठ'' का उसे निर्माण करना पड़ता है। मूलपाठ के संदेश और फिर उसकी अभिव्यक्ति से संबंधित

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

शैलीगत गठन के दबाव के साथ उसको अनूदित पाठ का निर्माण करना पड़ता है। दूसरी तरफ वह अपने पाठ का रचयिता होने के कारण अपने पाठक वर्ग की भी उपेक्षा नहीं कर सकता। अत: उसे अपने देश और काल के अनुरूप अनूदित पाठ को बोधगम्य और संप्रेष्य भी बनाना पड़ता है। यही कारण है कि ''चैत का महीना'' का अनुवाद वह कभी month of April और कभी end of spring season के रूप में करता है।

सममूल्य संदेश को बोधगम्य रूप से संप्रेषित करने के लिए अनूदित भाषा की प्रकृति का ज्ञान अनुवादक के लिए आवश्यक होता है। यह भाषा कीअपनी शैलीगत विशिष्टता का ही परिणाम है कि अंग्रेजी भाषा के कर्मवाच्य में अभिव्यक्त संदेश को हिंदी में कर्तृवाच्य के रूप में संप्रेषित किया जाता है। यथा

"Signed by X in the presence of Y and Z." का हिंदी अनुवाद होगा

''ख और ग की उपस्थिति में क ने हस्ताक्षर किए।''

इसी प्रकार "The meeting was chaired by Secretary." का अनुवाद होगा

''बैठक की अध्यक्षता सचिव ने की।''

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट है कि अनुवाद प्रक्रिया का संदर्भ अनुवादक को किसी प्रकार मूल कृति के अर्थ ग्रहण की समस्या (बोधन) स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लक्ष्य भाषा में अर्थांतरण की समस्या (अंतरण) और अनूदित पाठ के रूप में अर्थ-संप्रेषण की समस्या (सर्जन) के प्रति सजग और उसके उचित समाधान के लिए सक्षम बनाता है।

बोध प्रश्न - 2

1. अनुवाद प्रक्रिया से संबंधित प्रारूप किस-किसके द्वारा दिए गए हैं ?

   .....

   .....

2. नाइडा द्वारा दिए गए अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपानों की चर्चा कीजिए।

   .....

   .....

3. न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप में अनुवाद प्रक्रिया की दो दिशाएँ किस प्रकार बताई गई हैं ?

   .....

   .....

4. अनुवाद प्रक्रिया में भूमिका-समस्या प्रारूप पर प्रकाश डालिए।

   .....

   .....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

4.5 सारांश

अनुवाद प्रक्रिया संबंधी प्रस्तुत इकाई में आपने पढ़ा है कि अनुवाद को समझने की दो दृष्टियाँ हैं। इनमें से एक अनूदित पाठ को आधार बनाती है और दूसरी अनुवाद में निहित प्रक्रिया को। आपको पता चला है कि वास्तव में दूसरी दृष्टि ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक है क्योंकि अनुवाद कर्म का विश्लेषण करने के साथ ही यह अनुवाद सीख रहे लोगों को उनकी विभिन्न भूमिकाओं के प्रति सजग और समर्थ बनाने में सहायक होती है। अनुवाद व्यापार के विभिन्न सोपानों के अध्ययन के दौरान आपने विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए प्रारूपों को देखा। नाइडा, न्यूमार्क तथा श्रीवास्तव गोस्वामी द्वारा दिए गए प्रारूपों में मूल पाठ का विश्लेषण और संदेश स्रोत भाषा में ग्रहण तथा लक्ष्य भाषा में पुनर्प्रस्तुति को विभिन्न कोणों से समझाया गया है। यह समग्र विश्लेषण अनुवादक की जिन तीन भूमिकाओं को आधार बनाकर चलता है, वे हैं–

पाठक..... द्विभाषिक विश्लेषक.....लेखक या सर्जक।

आपने यह भी पढ़ा है कि इन तीन भूमिकाओं के निर्वाह में उसे क्रमशः तीन प्रकार की समस्याओं का समाधान करना पड़ता है– (1) अर्थ ग्रहण की समस्या, (2) अर्थांतरण की समस्या, और (3) अर्थ संप्रेषण की समस्या।

4.6 शब्दावली

संश्लिष्ट	–	जटिल
सममूल्य	–	समानांतर
सम्प्रेष्य	–	जिसका सम्प्रेषण हो सके।

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न – 1

1. देखें, भाग 4.2
2. देखें, भाग 4.3
3. (क) दो भाषाओं
   (ख) अंतरण
   (ग) पाठक–लेखक
   (घ) दुभाषिया

बोध प्रश्न–2

1. देखें, भाग 4.4
2. देखें, भाग 4.4.1
3. देखें, भाग 4.4.2
4. देखें, भाग 4.4.3

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई – 5 अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 उद्देश्य

5.2 अनुवाद में समतुल्यता का सिद्धांत

5.3 समतुल्यता का सिद्धांत पालन करने की सीमा

5.4 भाषाओं की विविधता

5.5 सृजनात्मक साहित्य की अपेक्षाएँ

5.6 भाषिक अपेक्षाएँ

- 5.6.1 सांस्कृतिक जरूरतें
- 5.6.2 पौराणिक अपेक्षाएँ
- 5.6.3 अनेकार्यता
- 5.6.4 ध्वनित अर्थ
- 5.6.5 पदपाठ द्वारा अनुवाद
- 5.6.6 संप्रेषणीयता

5.7 दार्शनिक साहित्य का अनुवाद

5.8 सारांश

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 प्रस्तावना –

प्रस्तुत इकाई में यह बताया गया है कि मूल रचना कि प्रतिकृति होने के बावजूद अनुवाद की अपनी अस्मिता होती है जो अनुवाद की प्रक्रिया और अपेक्षाओं के दौरान बनती है। अनुवाद की प्रक्रिया में और उसकी जरूरतों के कारण अनुवादक को अपनी ओर से कुछ जोड़ना या छोड़ना पड़ जाता है ऐसा कब और क्यों होता है इसके बारे में आप इस इकाई में पढ़ेंगे।

5.1 उद्देश्य –

इस इकाई का उद्देश्य आपको उन स्थितियों से परिचित कराना है जिनमें अनुवादक के लिए मूल पाठ का अनुवाद करते समय उसमें कुछ जोड़ना या उसमें से कुछ छोड़ना आवश्यक या वांछनीय हो जाता है। इसको पढ़कर आपको बता सकेंगे कि

- किन स्थितियों में मूल रचना के विचारों को घटाकर या बढ़ाकर अनूदित करना वांछनीय होता है।
- किन स्थितियों में मूल रचना की भाषा की समतुल्यता का त्याग करना पड़ सकता है।
- किन स्थितियों में अनुवाद में मूल रचना की शैली का अनुकरण करना उपयुक्त अथवा संभव नहीं होता है।
- किस प्रकार के साहित्य के अनुवाद में और कहां तक इस प्रकार कि काट-छाँट करना आवश्यक और वांछनीय होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

5.2 अनुवाद में समतुल्यता का सिद्धान्त -

आपको यह समझ में आ गया होगा कि अनुवाद की प्रक्रिया में प्रयास यह रहता है कि मूल लेखक के कथ्य को ज्यों का त्यों लक्ष्य भाषा में भाषांतरित किया जाए। इस बात को यों कहा जा सकता है कि प्रथम तो अनुवाद में मूल रचना के विचारों का पूर्ण भाषांतरण होना चाहिए, दूसरे, अनुवाद में शैली और लेखन विधि भी मूल के अनुरूप होनी चाहिए, और तीसरे, अनुवाद में मूल रचना की सहजता भी होनी चाहिए। अनुवाद में इन तीनों का जिस सीमा तक पालन किया जाता है अनुवाद उतना ही श्रेष्ठ होता है।

अत: यह स्पष्ट हुआ कि अनुवाद का मूल रचना से स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। वह केवल मूल रचना के विचारों, भावों आदि का वाहक होता है। वह मूलानुवर्ती होता है। अनुवाद के लिए यह आवश्यक है कि अनूदित पाठ, मूल पाठ का सह-पाठ..... बनकर आए। सहपाठ की संकल्पना में समतुल्यता का सिद्धांत रहता है। समतुल्यता का अर्थ यही है कि अनूदित पाठ प्रयोजन और प्रकार्य की दृष्टि से मूल पाठ जैसा ही हो। अनुवादक को लक्ष्य भाषा के अर्थ को स्रोत भाषा के अर्थ के मूल गुण के यथासंभव निकट बनाए रखना पड़ता है। अर्थ के इसी निकटतम सादृश्य को समतुल्यता की संज्ञा दी गई है।

5.3 समतुल्यता का सिद्धांत पालन करने की सीमा -

हमें यह देखना है कि अनुवाद में समतुल्यता के किस सिद्धांत का किस सीमा तक पालन किया जा सकता है और किया जाता रहा है। यह सही है कि अनुवाद में समतुल्यता का यह सिद्धांत विकसित हुआ है लेकिन अनुवाद के इतिहास का सिंहावलोकन करें तो पला चलता है कि भारत में मध्य काल में ऐसे अनुवाद बहुत होते थे जिनमें अनुवादक मूलनिष्ठ नहीं होते थे और अपने अनुवाद को स्वतन्त्र रचना का रूप दे देते थे। इस काल में संस्कृत के मूल ग्रंथों का अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया। इन अनुवादों का एक निश्चित प्रयोजन, निमित्त अथवा उद्देश्य होता था और उनमें प्राय: अनेक रचनाओं से भाव ग्रहण करने के बाद एक ऐसी नवीन रचना तैयार करने की प्रवृत्ति होती थी जिसमें एक मौलिक रचना का सम्पूर्ण सौंदर्य एवं रस हो। कई-कई संस्कृत ग्रंथों के अंशों पर आधारित यह अनुवाद कहीं मूलनिष्ठ होते थे, कहीं स्वतंत्र, कहीं छाया मात्र और कहीं अनेकानेक स्थानों से भावों को मिलाकर छंद में प्रस्तुत किया जाता था। तुलसी, सूर, बिहारी, केशव आदि इसी प्रकार के सारग्रही कवि-अनुवादक थे और उन्होंने कहीं संस्कृत ग्रंथों के अविकलांग अनुवादों के रूप में, कहीं भावानुवाद के रूप में कहीं कथाविस्तार के रूप में अपनी मौलिक रचनाएँ की। अनुवाद की आधुनिक परिभाषा के अनुसार ऐसी रचनाओं को अनुवाद की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

भारत में बाइबिल का विभिन्न देशी भाषाओं में अनुवाद करने का प्रयत्न शुरू होने के बाद ही मूलनिष्ठ अनुवाद का विचार विकसित हुआ। लेकिन साथ ही यह भी अनुभव किया गया कि जहाँ मूल लेखक का अभिप्राय संदिग्ध हो वहाँ अनुवादक को अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए। यह भी अनुभव किया गया कि मूल रचना के अस्पष्ट अंश को ज्यों का त्यों रख देना या तदानुरूप अस्पष्ट अनुवाद करना भी अनुचित है।

5.4 भाषाओं की विविधता

प्रत्येक भाषा की अपनी सीमाएँ होती है। अत: एक ही विचार अथवा भाव की अभिव्यक्ति सभी भाषाओं में समान रूप से नहीं होती है। भाषा की यह सीमाएँ व्याकरणिक भी होती हैं और सामाजिक तथा सांस्कृतिक भी। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी वाक्य रचना और हिंदी वाक्य रचना में मौलिक अंतर होता है। यदि अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय अनुवादक अंग्रेजी की तरह वाक्य रचना करेगा तो वह अनुवाद शाब्दिक होते हुए भी या तो समझ में नहीं आएगा या अजनबी सा लगेगा और उसमें से अर्थ को ढूँढ़कर निकालना पड़ेगा। यही कारण है कि अनुवाद मूलानुवर्ती होने के बावजूद मूल की हू-ब-हू नकल नहीं होता बल्कि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

लक्ष्य भाषा में मूल की पुनर्प्रस्तुति होता है, और इस पुनर्प्रस्तुति के दौरान मूलानुवर्ती होते हुए भी अनूदित रचना की लक्ष्य भाषा में अपनी एक पहचान बनती है। लक्ष्य भाषा में प्रस्तुति के दौरान स्रोतभाषा पाठ का अनुसरण करते हुए भी उसमें कुछ जोड़ना या छोड़ना पड़ता है। पिछली इकाई में व्यतिरेकी विश्लेषण के दौरान आप पढ़ चुके हैं कि रूप रचना, वाक्य और शब्द के स्तर पर परिवर्तन कई बार अनुवाद प्रक्रिया में किए जाते हैं। ये परिवर्तन लक्ष्य भाषा की आवश्यकता होते हैं क्योंकि लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा की अपनी-अपनी स्वतंत्र संरचना होती है। भाषिक स्तर पर व्यतिरेकी विश्लेषण और अनुवाद के दौरान जोड़े या छोड़े गए अंश हर तरह के अनुवाद में मिलते हैं चाहे वह किसी भी विषय से संबंधित हो। ये परिवर्तन लक्ष्य भाषा की जरूरतों का परिणाम होते हैं।

5.5 सृजनात्मक साहित्य की अपेक्षाएँ -

जहाँ किसी रचना के भावात्मक पक्ष एवं कलात्मक सौंदर्य को दूसरी भाषा के माध्यम से पहुँचाना होता है वहां अनुवाद केवल उल्था करने की प्रक्रिया नहीं रह जाता, बल्कि एक सृजनात्मक प्रक्रिया बन जाता है। कविता में भाव पक्ष प्रधान होता है। इसलिए कविता के अनुवाद में विशेष रूप से भावात्मक और कलात्मक पक्ष का ध्यान रखना पड़ता है। किसी भावपूर्णपद्यमय पाठ का यदि ऐसा अनुवाद किया जाए जो मूल कविता का भाव तो अभिव्यक्त करता हो किंतु यदि उसमें मूल जैसा सौंदर्य और लालित्य न हो तो वह सफल अनुवाद नहीं कहलाएगा। अनुवाद में मूल जैसा- सौन्दर्य और लालित्य लाने के लिए यह आवश्यक है कि अनुवादक मूल रचना के सृजनात्मक भाव का दूसरी भाषा में पर्याप्त सफलता से इस प्रकार प्रस्तुत करे कि पाठक अनुवाद रूपी दर्पण में मूल रचना के कलात्मक और भावात्मक महत्त्व की झलक देख सकें और उसके आस्वाद से आनंदित हों। संक्षेप में अनुवाद सौंदर्यपूर्ण भी हो और सार्थक भी। कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसा करने में संतुलन रखने की आवश्यकता होती है। अनुवाद को लालित्यपूर्ण बनाने की चेष्टा में अर्थ की हानि का खतरा रहता है। इसके विपरीत उसे सार्थक बनाने की चेष्टा से अनुवाद में सौंदर्य का अभाव रह सकता है। इसलिए सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद प्राय: अधिअनुवाद का रूप ले लेता है। और इस प्रकार उसमें लालित्य और सार्थकता दोनों ही गुणों का समावेश करने का प्रयत्न किया जाता है ताकि मूल रचना की तुलना में उन दोनों में से किसी की कमी न रह जाए। कहने का तात्पर्य यह है कि सृजनात्मक कृति के अनुवाद में पुन: सर्जना की अनिवार्यता स्वीकार करने के बाद अनुवादक को जोड़ने-छोड़ने की छूट मिल जाती है जबकि सिद्धान्त: अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह मूल में न कुछ छोड़े और न जोड़े।

अनुवाद की प्रक्रिया के इस व्यावहारिक पक्ष को हम कुछ उदाहरणों को देखकर समझ सकते हैं।

उदाहरण -1

डी.एच.लारेंस की निम्नलिखित कविता का रामधारी सिंह दिनकर ने अनुवाद किया है जो उसके नीचे दिया गया है:

"**The breath of life.** The breath of life is in the sharp winds of change mingled with the breath of destruction. But if you want to breathe deep, suaptuous life. Breathe all alone, in silence, in the dark, And see nothing.

दिनकर का अनुवाद :

''जिंदगी की साँस

जिंदगी की साँस परिवर्तन की तेज हवा है,

जिसके साथ विध्वंस का उच्छवास मिला होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हरियाली से भरी कोई नर्म टहनी जिस पर पावक का फूल खिला होता है।

लेकिन अगर तुम पूरी जिंदगी को गहरी साँस के साथ खींचना चाहो,

तो एकान्त में जाओ।

शांति के बीच समाधि लगाओ।

चीजों को देखने का काम बंद करो।

अंधेरे में बसो और आनन्द करो।''

उपरोक्त अनुवाद के मोटे अक्षरों में छपे अंशों में मूल के अर्थ को अधिक विस्तार से व्यक्त किया गया है। ऐसा शैली एवं अर्थ की व्यंजना को प्रभावपूर्ण बनाने की दृष्टि से किया गया है। यद्यपि इन अंशों को अनुवाद में न रखने पर अर्थ की क्षति नहीं होती किंतु संभवत: अनुवाद उतना प्रभावूपर्ण न बन पाता। यह अधिअनुवाद है तथापि इसमें अपनी ओर से कोई नया भाव नहीं जोड़ा गया है और न मूल भाव को विकृत किया गया है। वरन् मूल भाव का ही विस्तार किया गया है।

उदाहरण –2

इसी संदर्भ में हम फिट्जजेराल्ड द्वारा किए गए उमर खैयाम की एक रूबाई के अंग्रेजी अनुवाद के दो हिंदी रूपान्तरों का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे और यह देखेंगे कि दोनों ने किस प्रकार मूल अवतरण का अनुवाद किया है।

फिट्जजेराल्ड का अंग्रेजी अनुवाद :

Dreaming when Dawn's left hand was in the sky,
I heard a voice within the tavern cry.
"Awake, my little ones, and fill the cup,
Before life's liquor in ints cup be dry."

हिंदी रूपान्तर

क	हरिवंशराय बच्चन द्वारा अनूदित	ख	मैथिलीशरण गुप्त द्वारा अनूदित
	उषा ने ली **अंगड़ाई,** हाथ		वाम-**कनक**-कर ने उषा के
	दिए जब नभ की ओर पसार,		जब **पहला प्रकाश** डाला
	स्वप्न में मदिरालय के बीच		सुना स्वप्न में मैंने सहसा
	सुनी तब मैंने एक पुकार		गूँज उठी यों मधुशाला
	''उठो, मेरे शिशुओं **नादान,**		उठो, उठो, ओ मेरे बच्चो
	बुझा लो पी-पी मदिरा भूख		पात्र भरो, न **विलंब करो,**
	नहीं तो तन प्याली की शीघ्र		सूख न जाए जीवन हाला
	जाएगी जीवन-मदिरा सूख		रह जाये रीता प्याला

उपरोक्त कवियों ने अपने-अपने अनुवाद में मोटे अक्षरों में छपे शब्द अपनी ओर से जोड़े हैं और मूल भाव को अपने-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अपने तरीके से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। बच्चन जी ने left hand के अनुवाद में left शब्द का अनुवाद नहीं किया है। left शब्द को छोड़ दिया है।

उदाहरण –3

यहाँ सृजनात्मक अनुवाद का एक और उदाहरण देना उपयोगी होगा जिसमें अनुवादक ने मूल पाठ के भावों को इतना विस्तृत कर दिया है उसमें मूल पाठ की पहचान ही खो गई है।

मूल ''त्यागपत्र'' .. जैनेन्द्र का अंश

''यहाँ खरा कंचन ही टिक सकता है, क्योंकि उसे जरूरत ही नहीं कि वह कहे कि मैं पीतल नहीं हूँ। यहाँ कंचन की माँग नहीं हैं, पीतल से घबराहट नहीं है। इससे भीतर पीतल रहकर ऊपर कंचन दीखने वाला लोभ यहाँ क्षण भर नहीं टिकता हैं। बल्कि यहाँ पीतल का मूल्य है। इसलिए सोने के धैर्य की यहाँ परीक्षा है। सच्चे कंचन की परख नहीं होगी। यह यहाँ की कसौटी है। मैं मानती हूँ कि जो इस कसौटी पर खरा हो सकता है। वही खरा है और वही प्रभु का प्यारा हो सकता है।''

अनुवाद "The Resignation" स. ही वात्स्यायन

कहने की आवश्यकता नहीं कि उपरोक्त अनुवाद में अनुवादक ने अवतरण के प्रारंभिक शब्दों और अंतिम शब्दों को छोड़कर बीच में जो कुछ लिखा है उसमें पूर्णत: नवीन भावों और विचारों को समावेश किया गया है यद्यपि दोनों का निहितार्थ लगभग समान है। अत: इसे मूलनिष्ठ अनवुाद नहीं कहा जा सकता। इस अनुवाद पर कुछ लोग प्रश्नचिन्ह भी लगा सकते हैं कि यह अनुवाद नहीं है क्योंकि अनुवादक कि निष्ठा मूल कृति के प्रति होनी चाहिए। अनुवादक को मूल पाठ के भावों और विचारों में से कुछ भी छोड़ने या उनमें अकारण परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है। लेकिन संवेदना के स्तर पर हम इन दोनों–मूल पाठ और अनुवाद– को समान पाते हैं। इसलिए मूल से दूर होने पर भी अनुवाद को अनुचित नहीं ठहराते। मध्यकालीन अनुवादकों को यह आशंका नहीं थी कि कोई मूल से मिलाकर उनके अनुवाद को कसौटी पर कसेगा अर्थात् मूल से मिलाकर उनकी समझ तथा निष्ठा को आंकेगा। लेकिन आज मूल और अनुवाद की तुलना भी हो रही है। इसलिए आज अनुवाद की सार्थकता और सफलता के प्रश्न भी उठते हैं।

इस तरह अनुवाद में समतुल्यता एक गत्यात्मक संकल्पना है और उसे अनुवाद प्रक्रिया का अंतिम लक्ष्य नहीं माना जा सकता। वस्तुत: अनुवाद अधिअनुवाद और न्यूनानुवाद के बीच एक सतत् प्रक्रिया है जिसमें कभी–कभी समअनुवाद की अपेक्षा बढ़ जाती है।

5.6 भाषिक अपेक्षाएँ

सामान्यत: जिसे हम भाषा कहते हैं वह हमारे चेतन की उपज है और वह अवचेतन की गुत्थियों को व्यक्त करने में पूर्णत: सफल नहीं हो पाती है। इसीलिए किसी भी कृति के कृतिकार को अपने भीतर की उमड़न–घुमड़न को अभिव्यक्त करने के लिए लक्षणा और व्यंजना का सहारा लेना पड़ता है क्योंकि शब्द की अभिधा शक्ति इसमें असमर्थ रहती है। यह नहीं, इस व्यंजनात्मक भाषा में उसे संकेतों, बिंबों और प्रतीकों के माध्यम से अपने को अभिव्यक्त करना पड़ता है। भाषिक अपेक्षाओं की विस्तार से चर्चा हम आगे करेंगे।

5.6.1 सांस्कृतिक जरूरतें – प्रत्येक भाषा अपने में विशिष्टि होती है। अत: दो भाषाएँ न तो संरचना के धरातल पर और न ही कथ्य के धरातल पर समरूपी (identical) हो सकती है। किसी भी भाषा की रचना अपनी ही प्रकृति में प्रतीकबद्ध होती है। प्रतीकबद्ध होने के कारण उसमें कथ्य और अभिव्यक्ति का अंतरंग समन्वय होता है। दो भाषाओं की प्रतीक व्यवस्था

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

किसी (कथ्य या संदेश) को समान भाव से अभिव्यक्ति नहीं करती। अनुवाद भाषिक प्रतीकों द्वारा संकेतित वस्तु का नहीं किया जाता बल्कि उसके संकेतार्थ .. कथ्य या संदेश का होता है। भाषिक प्रतीक की मूल प्रकृति बोधात्मक होती है अत: संकेतार्थ भौतिक वस्तुओं की मात्र अमूर्त और वर्गीय संकल्पना नहीं है। वह एक सामाजिक यथार्थ है जिसके निर्माण में इतिहास, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक मूल का भी योग होता है। यह बात छोटे से उदाहरण से स्पष्ट की जा सकती है। प्रेमचन्द की एक कहानी के पात्र ने एक स्थल पर कहा, ''उसकी माँग में सिंदूर तो मैंने डाला था।'' यहाँ अंग्रेजी अनुवाद में अगर केवल यह कहा जाए,

"It was I who put the vermillion in her hair."

तो इसके मूल कथ्य का अभिप्राय स्पष्ट नहीं होता। ''मांग भरने'' का संकेतार्थ अर्थात् ध्वनितार्थ किसी को पत्नी के रूप में वरण करना है। यदि अनुवाद में यह अर्थ उद्भाषित नहीं होता तो ऐसे अनुवाद से उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती और जो पाठक भारतीय सामाजिक रीति-रिवाजों से परिचित नहीं है उन्हें मूल पाठ का ध्वनितार्थ समझ में नहीं आता। अत: उपर्युक्त शाब्दिक अनुवाद में कुछ शब्द जोड़कर और या पाठ टिप्पणी देकर संकेतार्थ..ध्वनितार्थ को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है:

It was I who put the ver million in her hair. (In married her)

पाद टिप्पणी :

A the time of wedding the husband streaks the parting in the bride's hair with vermillion. The red mark denotes that the woman is married and her husband is alive.

मूल वाक्य में संवाद बोलने वाले पात्र का अभिप्राय यह बताना है कि वह उस स्त्री का पति है क्योंकि पति ही स्त्री की माँग में सिंदूर डालता है। उपर्युक्त अनुवाद में कोष्ठक में व्याख्यात्मक शब्द जोड़कर और पाद टिप्पणी के द्वारा संकेतार्थ स्पष्ट किया गया है ताकि भिन्न संस्कृति के पाठक भी उसे समझ लें।

5.6.2 पौराणिक अथवा मिथकीय अपेक्षाएँ - पुराकथा (mythology) हर भाषा की विशिष्ट होती है। कथन को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण दिया जा सकता है। मिल्टन के paradise lost की आरंभिक पंक्तियों में कहा गया है:

"Of man's first dis obedience, and the fruit of the forbidden Tree, whose mortal taste. Brought Death in to the world, and allow we with loss of eden."

कवि अपनी कविता में उस घटना का उल्लेख करना चाहता है जब आदिमानव ने ईश्वरीय विधान का सर्वप्रथम उल्लंघन किया जिसके परिणामस्वरूप सांसारिक जीवन कष्टपूर्ण हो गया और मानव उस स्वर्गीय सुख से वंचित हो गया जिसका वह उपभोग करता आ रहा था। केवल शाब्दिक अनुवाद से उपरोक्त पंक्तियों का संकेतार्थ पूर्णत: प्रकट नहीं होता। इसलिए अनुवाद विस्तार से करने की आवश्यकता है ताकि उपरोक्त मिथकीय घटना से अपरिचित हिन्दी का पाठक उस संकेतार्थ को समझ जाए। अत: अनुवाद इन शब्दों में किया जा सकता है।

''जब मानव ने पहली बार (ईश्वरीय) आज्ञा का उल्लंघन किया और वर्जित वृक्ष का फल खाया। ... (आदि मानव द्वारा..) उस वर्जित फल का घातक स्वाद चखने के बाद ही विश्व में मरण और दु:ख .. (का क्रम) शुरू हुआ और मानव को ... (स्वगीर्य स्थान) ईडन से जाना पड़ा।''

उपुर्यक्त अनुवाद में कोष्ठक में दिया गया अंश अपनी ओर से जोड़ा गया है ताकि मूल का अर्थ स्पष्ट हो जाए। साथ ही उपरोक्त संकेतार्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए अनुवाद के नीचे निम्नलिखित पाद टिप्पणी भी जोड़ी जा सकती है:

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

पाद टिप्पणी : इसाई मिथकीय मान्यता के अनुसार सृष्टि के आरम्भ में पाप का अस्तित्व नहीं था। आदिम मानव .. (आदेम अथवा एडम) मृत्यु और दु:खों से मुक्त था और ईडन नामक स्वर्गीय उद्यान में रहता था। लेकिन हव्वा.. (स्त्री) ने शैतान की बातों में आकर आदेम को उस फल वृक्ष का फल खाने को प्रेरित किया जिसे खाना उसके लिए वर्जित था। इस प्रकार मानव ने ईश्वरीय आज्ञा का उल्लंघन करके पहली बार पाप किया जिसके परिणामस्वरूप मानव सांसारिक दुखों को भोगने लगा।

उपर्युक्त अनुवाद और पाद टिप्पणी को पढ़ने से यह पूर्णता: स्पष्ट हो जाता है कि 'पैराडाइज्ड लॉस्ट' को लेखक किस मिथकीय घटना के आधार पर यह संदेश देना चाहता है कि मनुष्य को लौकिक दुखों का मूल कारण मानव द्वारा ईश्वरीय आज्ञा का उल्लंघन किया जाना है।

5.6.3 अनेकार्थता—अनुवाद में कभी-कभी ये कठिनाई आती है कि प्राय: एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जैसे ''श्यामा'' शब्द का द्योतक केवल ''श्याम वर्ण की स्त्री'', न होकर स्त्री के अन्य गुणों ''यौवन, मध्यावस्था, प्रयंगुलतिका तप्त कांचन वर्णाभा'' आदि का भी बोध कराता है। संस्कृत के ऐसे शब्दों की एक लम्बी सूची दी जा सकती है। ऐसे शब्दों का अनुवाद करते समय प्राय: व्याख्यापरक अनुवाद का सहारा लिया जाता है। यही कारण है कि आर्ष ग्रंथों और क्लासिकल संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद में , जिसे ''भाष्य'' या ''टीका'' कहा जाता है, पदपाठ और निरूक्ति को आधार बनाया जाता है। पदपाठ में संहिताबद्ध वेद मंत्रों, संयुक्ताक्षरों आदि के पदों को, उपसर्ग तथा उदात्तादि पर प्रकाश डाल कर पृथक-पृथक किया जाता है और इस प्रकार अर्थ को प्रगट किया जाता है। निर्वचन अथवा निरूक्ति पद्धति में विश्लेषित किया जाता है किसी शब्द का एक धातु अथवा अनेक धातुओं से क्या संबंध है। ऐसा अनुवाद व्याख्यापरक होता है और, इसलिए, विस्तार में मूल से कहीं अधिक होता है। संस्कृत भाषा में प्रयोग और संदर्भ से ही शब्द का अर्थ प्रगट होता है। इसीलिए अन्य भाषाओं की अपेक्षा संस्कृत से किए गए अनुवादों में ही इस पद्धति का अधिकांशत: अनुसरण किया जाता है।

5.6.4 ध्वनित अर्थ—बहुधा साहित्यिक कृतियों में मूल पाठ में छिपा हुआ एक ध्वनित अर्थ भी होता हैं। यदि अनुवादक इस ध्वनित अर्थ को उद्घाटित न करे तो एक बड़ी कमी रह जाती है क्योंकि पाठक के लिए सदैव यह संभव नहीं होता कि वह मूल पाठ के शाब्दिक अनुवाद को पढ़कर ध्वनितार्थ को भी समझ ले। यहाँ एक उदाहरण देकर यह बात स्पष्ट की जा रही है। अठारहवीं शताब्दी के एक कथकलि काव्य ''कालिकेयवधम्'' में उर्वशी का वर्णन करते समय उसमें कविता के गुणों को भी आरोपित किया गया है। पद्यांश का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है उर्वशी में वे सब गुण मौजूद हैं जो कविता में होते हैं।

मूल पाठ

सुललित पदविन्यासा

रूचिरलंकारथालिनी मथुरा

मृदुलपिगहनभावा

सूक्तखिप सोर्वशी विजयम्॥

अंग्रेजी अनुवाद :

Graceful in the movement of her steps

(set in simple beautiful words)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Sweet and adorned with ornaments

Gentle yet magnificant in appearance

Like poetry Urvasi cam to vijay (victory).

उपुर्यक्त अनुवाद में प्रत्येक पंक्ति के बाद कोष्ठक में उसका ध्वनित अर्थ भी दिया गया है जो उर्वशी का उन गुणों से संपन्न होने का उल्लेख करता है जो गुण कविता में होते हैं। अनुवाद के अंत में केवल Like poetry Urvasi come to Vijay लिख देने से यह ध्वनिपाठ उद्घाटित नहीं हो सकता था। इसलिए कोष्ठक में Victory दिया गया है। कोष्ठकों में दिये गए समस्त अंश संपूर्ण अर्थ को व्यक्त करने के लिए जोड़े गए हैं।

5.6.5 पदपाठ द्वारा अनुवाद—पदपाठ की पद्धति के द्वारा किए गए अनुवाद का एक उदाहरण भी नीचे दिया जा रहा है जिसमें गीता के निम्नलिखित श्लोक का अनुवाद किया गया है

संन्यास: कर्मयोगश्च नि:श्रेयस करावुभौ,

तयोस्तु कर्मसन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥

.. गीता 5.2

गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित गीता की पद-छंद-अन्वय सहित भाषा टीका में उपुर्यक्त श्लोक का अनुवाद पदपाठ की पद्धति से इस प्रकार किया गया है।

''इस प्रकार अर्जुन के पूछने पर श्रीकृष्ण महाराज बोले, हे अर्जुन''

संन्यास - **कर्मों** का संन्यास

च - और

कर्मयोग: - **निष्काम** कर्मयोग

उभौ - .. (यह) दोनों ही

नि:श्रेयसकरौ - परम कल्याण करने वाले हैं

तु - परन्तु

तयो: - उन दोनों में भी

कर्म-सन्यासात - कर्मसंन्यास से

कर्मयोग - निष्काम कर्मयोग .. (साधन में सुगम होने से)

विशिष्यते - श्रेष्ठ है

उपर्युक्त अनुवाद में मोटे अक्षरों में छपे और कोष्ठक में दिए गए शब्द अनुवादक ने अपनी ओर से जोड़े हैं जो मूल पाठ में नहीं है।

इसके अतिरिक्त अनुवाद के नीचे दो शब्दों की व्याख्या पाद टिप्पणियों द्वारा की गई हैं....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

संन्यास – अर्थात् मन, इंद्रियों और शरीर द्वारा होने वाले महत्त्वपूर्ण कर्मों से कर्तापन का त्याग।

कर्मयोग : – अर्थात् समत्वबुद्धि से भगवत अर्थ कर्मों का करना

इतना ही नहीं, उपर्युक्त भाषा टीका में ही अन्यत्र .. (अध्याय में 3 का श्लोक 3) जहाँ ''कर्मयोग'' शब्द आया है वहाँ निम्नलिखित पाद टिप्पणी से उसका अर्थ स्पष्ट किया गया है:

कर्मयोग : फल आसक्ति को त्यागकर भगवत-आज्ञानुसार केवल भगवत-अर्थ समत्वबुद्धि से कर्म करने का नाम ''निष्काम कर्मयोग'' है, इसी को ''समत्वयोग'', ''बुद्धियोग'', ''तदर्थकर्म'', ''मदर्थकर्म'' इत्यादि नामों से कहा है।

इस प्रकार किया गया व्याख्यापरक अनुवाद शाब्दिक अनुवाद की अपेक्षा मूल पाठ के उद्देश्य को अधिक स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है और उसके गूढ़ार्थ को बोधगम्य बनाता है। यहाँ की गई व्याख्या से यह प्रगट होता है कि गीतों में कर्मयोग शब्द का तात्पर्य ऐसे कर्म से है जो निष्काम रहकर, भगवत-अर्थ समत्वबुद्धि से किया जाता है। केवल शाब्दिक अनुवाद से कर्मयोग का यह अर्थ साधारण पाठक की समझ में नहीं आता। इसी प्रकार इस श्लोक में कर्म संन्यास... शब्द, का तात्पर्य केवल इस अवस्था से नहीं है जो मनुष्य जीवन का चतुर्थ आश्रम कहलाता है जिसमें वह सन्यास की दीक्षा लेकर सांसारिक जीवन त्याग देता है। गीता का अनुवाद तभी उपयोगी हो सकता है जब उसके संदेश को इस प्रकार की गई व्यवस्था के द्वारा स्पष्ट किया जाए।

लेकिन यह भी आवश्यक है कि ऐसा व्याख्यापरक अनुवाद केवल अर्थ को प्रगट करने की दृष्टि से किया जाए। ऐसे अनुवाद में संयम की आवश्यकता रहती है। यह ध्यान रखना होता है कि अनुवाद व्याख्यापरक होने के बजाए व्याख्या का ही रूप न ले ले। व्याख्या की अपनी अलग उपयोगिता है, लेकिन व्याख्या को सामान्य अनुवाद के वर्ग में नहीं रखा जा सकता।

बाल गंगाधर तिलक ने गीता रहस्य में उपर्युक्त श्लोक की व्याख्या 65 पृष्ठों में लिखी है जिसमें ''कर्म सन्यास'' और ''कर्मयोग'' शब्दों की दार्शनिक व्याख्या की गई है। लेकिन वह सामान्य अनुवाद नहीं है। गीताप्रेस के अनुवाद में उसी व्याख्या के केन्द्रीय विचार को शाब्दिक अनुवाद में और पाद टिप्पणी में जोड़ा गया है और इस प्रकार अनुवादक ने अपनी सीमा में रहकर, श्लोक का संकेतार्थ अभिव्यक्त किया है जिसकी तिलक ने अपनी टीका में विशद व्याख्या की है।

5.6.6 संप्रेषणीयता—अनुवाद का मूल्यांकन करते समय प्राय: यह भुला दिया जाता है कि उसमें केवल दो पक्ष-मूल पाठ का लेखक और अनुवादक ही शामिल नहीं होते। एक तीसरा पक्ष भी होता है। यह तीसरा पक्ष अनुवाद का पाठक या श्रोता होता है। मूल रचना को इस तीसरे पक्ष तक पहुंचाने के लिए ही अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए अनुवाद में संप्रेषणीयता का गुण होना बहुत जरूरी है। यह बात सामान्यत: सभी प्रकार के अनुवाद पर न्यूनाधिक रूप में लागू होती है। लेकिन साहित्य के अनुवाद और उसमें नाटकों के अनुवाद पर विशेष रूप से लागू होती है। नाटक ऐसी संवादात्मक और कार्य व्यापार मूलक कथा होती है जिसे अभिनेता किसी-न-किसी रंगमंच पर दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर सकें और करें। नाटक के रूप में स्वीकृत होने के लिए रचना का अभिनय होना सर्वथा अनिवार्य है। यही बात नाटक के अनुवाद पर भी लागू होती है। नाटक संवादों के अनुवाद में केवल उक्ति के अर्थ अथवा भाव का प्रकाश ही पर्याप्त नहीं होता। यह आवश्यक होता है कि अनुवाद पात्रों के उपयुक्त हो और उनके लिए सहज स्वाभाविक भाषा में कलात्मक तथा निखरे हुए रूप में प्रस्तुत किया जाए।

नाटकीय संवादों में ध्वनि संयोजन का भी महत्त्व होता है, संवादों के उच्चारण का अपना संगीत होता है। यद्यपि अनुवाद में इसकी रक्षा अथवा सृष्टि करना असंभव है फिर भी अनुवादक को देखना होता है कि वह अनुवाद में लक्ष्य भाषा के साथ सौंदर्य को लाने का भरसक प्रयत्न करें। अत: नाट्यानुवाद में अक्षरश: अनुवाद या भावानुवाद का कोई बंधन नहीं रखा जा सकता। नाटक का अच्छा अनुवाद अपने में एक स्वतंत्र कृति बन जाता है। इस तरह संप्रेषणीयता अनुवाद की अपरिहार्य शर्त

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

होती है।

बोध प्रश्न –1

1. अनुवाद में समतुल्यता के सिद्धांत का क्या अर्थ है ? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

2. सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में किन बातों की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है ? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

3. अनुवाद की भाषिक अपेक्षाओं पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

4. पद पाठ पर आधारित अनुवाद कैसे किया जाता है ? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

5. अनुवाद में संप्रेषणीयता पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

5.7. दर्शनिक साहित्य का अनुवाद –

सारगर्भित साहित्य और दार्शनिक रचनाओं में गूढ़ विचारों को, प्राय: सूत्र रूप में कहा जाता है। ऐसे साहित्य का अनुवाद करते समय केवल शाब्दिक अनुवाद से मूल का अभिप्राय स्पष्ट नहीं होता। दार्शनिक साहित्य के अनुवाद में यह बात विशेष रूप से लागू होती है। ऐसे साहित्य में विचारों में गूढ़ता तथा जटिलता अन्य प्रकार के साहित्य की तुलना में अधिक होती है। अधिकांश शब्द प्रतीकात्मक या संदिग्ध अर्थ वाले होते हैं जिनका विशिष्ट अर्थ पर्याय मात्र द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। ऐसे शब्दों की व्याख्या करना आवश्यक हो जाता है। ऐसे साहित्य का केवल शाब्दिक अनुवाद करने से अनुवाद हास्यापद बन सकता है। कार्ल मार्क्स ने अपने मार्क्सवादी दर्शन को Capital नामक ग्रंथ में अभिव्यक्त किया है। मार्क्सवाद के दूसरे महान विचारक लेनिन ने भी अपने दार्शनिक विचार अनेक रचनाओं में व्यक्त किए हैं। इन रचनाओं में ऐसे अनेक शब्द और संकल्पनाएँ हैं जिनका विशेष अर्थ में प्रयोग किया गया है। इन ग्रंथों के वही अनुवाद मार्क्सवादी दर्शन को पूरी तरह से उद्घाटित करने में सफल हुए हैं जिनमें अनुवादक ने व्याख्या का सहारा लिया है। यहाँ एक छोटा सा उदाहरण देकर यह बात समझाई जा सकती है। मार्क्सवादी साहित्य में अनेक बार bourgeoisie शब्द का प्रयोग हुआ है सामान्य कोश में देखने से पता चलता है कि हिंदी में इसके लिए ''मध्य वित्त वर्ग'' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिससे इसका वास्तविक संकेतार्थ समझने में मदद नहीं मिलती। क्योंकि मार्क्सवादी साहित्य में इस शब्द का प्रयोग एक विशेषण के रूप में ऐसे वर्ग के लोगों के लिए किया जाता है जो श्रमजीवी नहीं होता है। इसमें उद्योगपति, वित्तीय कारोबार करने वाले, छोटे शिल्पकार, दुकानदार आदि भी शामिल हैं

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

जिनमें से अधिकांश का जीवन स्तर श्रमिकों से बहुत ज्यादा ऊँचा नहीं होता। भारतीय दार्शनिक साहित्य में विशेष रूप से प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। दर्शन की प्रत्येक शाखा में अपनी प्रतीक व्यवस्था होती है। अथर्ववेद के सर्वोपनिषद में ऐसे कुछ शब्दों की सूची दी गई है और उन्हें पारिभाषित किया गया है। इन प्रतीकों का केवल शाब्दिक अर्थ करने से उनमें निहित दार्शनिक विचार उद्घाटित नहीं होता। अनुवादक के लिए यह आवश्यक होता है कि वह उन प्रतीकों का अर्थ समझकर उन्हें अनुवाद में भी पारिभाषित करें। ऐसा न करने पर अनुवाद एक पहेली बन कर रह जाएगा और अनुवादक का श्रम व्यर्थ हो जाएगा।

ऋग्वेद के निम्नलिखित मंत्र के अनुवाद से हम यह समझ सकेंगे कि अनुवाद में प्रतीकों की व्याख्या करना गूढ़ अर्थ को समझाने के लिए कितना आवश्यक है:

द्वा सुपर्णा सहुजा सखाया
समानं वृक्षं परिसष्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन्
अन्यो अभिचाकशीति। (.. ऋ 1-164-20)

शब्दार्थ :

वृक्ष पर दो पक्षी सखाभाव युक्त परस्पर मिले हुए बैठे हैं, उनमें एक वृक्ष के स्वादिष्ट फलों को खा रहा है, दूसरा फलों को नहीं खाता केवल देख ही रहा है।

उपरोक्त मंत्र में सुपर्णा, वृक्षं पिप्पलं .. (वृक्ष, पक्षी, फल) शब्दों का प्रतीक रूप में प्रयोग किया गया है। अत: केवल शब्दार्थ से मंत्र का वास्तविक अर्थ समझ में नहीं आता। यहाँ वृक्ष का प्रयोग संसार के लिए, पक्षी का ईश्वर और जीवात्मा के लिए, फल का प्रयोग सांसारिक सुख, दुख के लिए किया गया है। इन प्रतीकों के द्वारा द्वैतवाद के सिद्धांत का समर्थन किया गया है। भावार्थ यह है कि संसार में ईश्वर और जीवात्मा दोनों का अस्तित्व है। उन दोनों में से जीवात्मा ... (अविद्या का कारण संसार) के राग द्वैषात्मक सुख-दुख का भोग करता है और ईश्वर अविद्या से रहित तृत्त है। उसे सुख-दुख भोग की आवश्यकता नहीं होती।

उपरोक्त व्याख्या परक अर्थ से ही मंत्र का मूल अर्थ समझ में आ सकता है यद्यपि जिस द्वैतवादी दर्शन की ओर इस मंत्र में संकेत किया गया है, अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा का अस्तित्व भिन्न होना बताया गया-उसको समझाने के लिए लम्बी चौड़ी व्याख्या लिखी जा सकती है जो अनुवादक का काम नहीं है।

बोध प्रश्न -2

1. दार्शनिक विषयों के अनुवाद पर सात-आठ पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

5.8 सारांश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई - 6 अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार

संरचना

6.0 प्रस्तावना

6.1 उद्देश्य

6.2 भाषा प्रयुक्ति तात्पर्य

6.3 भाषा प्रयुक्ति के निर्धारक तत्त्व

6.4 प्रयुक्ति का आधार

- 6.4.1 भाषा के प्रयोग का विषय क्षेत्र
- 6.4.2 संप्रेषण की रीति
- 6.4.3 वक्ता-श्रोता अथवा लेखक और पाठक की स्थिति
- 6.4.4 भाषा प्रयोग की औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थिति

6.5 विभिन्न प्रयुक्तियों की भाषिक विशिष्टताएँ

- 6.5.1 सामान्य व्यवहार की प्रयुक्ति
- 6.5.2 साहित्यिक प्रयुक्ति
- 6.5.3 सामाजिक विज्ञानों संबंधी प्रयुक्ति
- 6.5.4 वाणिज्य व्यापार संबंधी प्रयुक्ति
- 6.5.5 वैज्ञानिक प्रयुक्ति
- 6.5.6 प्रशासन प्रयुक्ति
- 6.5.7 विधिक प्रयुक्ति
- 6.5.8 संचार माध्यमों संबंधी प्रयुक्ति
- 6.5.9 विज्ञापनी प्रयुक्ति

6.6 अनुवाद की दृष्टि से प्रयुक्तियों का महत्त्व

6.7 सारांश

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 प्रस्तावना

''अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार'' नामक इस इकाई में आप पढ़ेंगे कि हमारे जीवन के विभिन्न संदर्भों के अनुसार हमारी भाषा का स्वरूप निर्धारित होता है। भिन्न-भिन्न जीवन स्थितियों और कार्य क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा रूपों की अपनी निजी विशेषताएँ होती हैं। इन्हीं के आधार पर भाषा प्रयुक्ति Language Register की संकल्पना की गई है। भाषा प्रयुक्ति से क्या तात्पर्य है इसका स्वरूप कैसे निर्मित होता है, इसे कैसे पहचाना जाता है आदि जैसे प्रश्नों के उत्तर तो आपको इस इकाई में मिलेंगे ही प्रयुक्ति के विभिन्न आधारों के विषय में भी आपको यहाँ जानकारी मिलेगी। इसके साथ ही आपको हिंदी भाषा की नौ प्रयुक्तियों की विशेषताओं से सोदाहरण परिचित कराया जाएगा। भाषा प्रयुक्तियों की चर्चा यद्यपि यहाँ हिन्दी भाषा के माध्यम से हुई है

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

लेकिन ध्यान में रखने की बात यह है कि ये प्रयुक्तियाँ लगभग सभी सम्पन्न भाषाओं में मौजूद होती हैं। किसी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले व्यक्ति का इन प्रयुक्तियों से परिचय होता है और वह इनके अंतर्गत भाषा-व्यवहार में सक्षम होता है। एक प्रयुक्ति से दूसरी प्रयुक्ति किस प्रकार भिन्न होती है इसकी व्यावहारिक जानकारी इस इकाई में दी गई है। साथ ही, अनुवाद में इन प्रयुक्तियों के महत्त्व की चर्चा करते हुए बताया गया है कि अनुवाद करते समय प्रयुक्ति विशेष में इस्तेमाल होने वाले भाषा रूप का ही प्रयोग क्यों जरूरी है।

6.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप बता सकेंगे कि :

भाषा प्रयुक्ति क्या होती है,

प्रयुक्ति का निर्माण किन आधारों पर होता है,

विभिन्न भाषा प्रयुक्तियाँ कौन सी हैं उनकी क्या विशेषताएँ हैं,

अनुवाद की दृष्टि से भाषा प्रयुक्तियों का क्या महत्त्व है।

6.2 भाषा प्रयुक्ति से तात्पर्य

''प्रयुक्ति'' शब्द ''प्रयुक्त'' से बना है जिसका अर्थ है प्रयोग में लाया गया। भाषा के क्षेत्र में ''प्रयुक्ति'' शब्द अंग्रेजी के ''रजिस्टर'' (Register) शब्द का हिंदी पर्याय है। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में ''रजिस्टर'' वस्तुत: एक पारिभाषिक शब्द है और अब तक आपने रजिस्टर के जो अर्थ पढ़े या जाने हैं उनसे भिन्न अर्थ का द्योतक है। भाषा विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है समाज भाषाविज्ञान (Social Linguistics) इसके अन्तर्गत भाषा का सामाजिक संदर्भों में विवेचन और अध्ययन किया जाता है। ''रजिस्टर'' शब्द समाज भाषा विज्ञान का पारिभाषिक शब्द है जो भाषा के भीतर पाए जाने वाले रूपभेदों का द्योतक है। प्रसिद्ध समाजभाषा वैज्ञानिक हैलिडे के अनुसार रजिस्टर भाषा की उन प्रयोगाश्रित विविधताओं को कहा जाता है जो किन्हीं विशिष्ट स्थितियों अथवा विषय क्षेत्रों में प्रयुक्ति भाषा के रूपभेदों को प्रकट करती है। जीन एट्चिसन का मानना है कि रजिस्टर भाषा की विशेषीकृत शैलियाँ हैं जो भाषा प्रयोग की परिस्थिति पर आधारित होती है। भाषा प्रयोक्ता इन शैलियों को स्थिति विशेष के अनुरूप प्रयोग करता है। इस तरह कुछेक विशिष्ट स्थितियों अथवा विषय क्षेत्रों की विशेषीकृत भाषा को ''प्रयुक्ति'' कहा जाता है। ये विशिष्ट स्थितियाँ अथवा विषय क्षेत्र भाषा प्रयोक्ता की निजी सामाजिक विशिष्टताओं जैसे उसकी आयु, शिक्षा-दीक्षा, सामाजिक वर्ग आदि से भिन्न होती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि ये विशिष्ट स्थितियाँ भाषा प्रयोक्ता के सामाजिक संदर्भों से उत्पन्न होती है। यानी व्यक्ति किससे, कहाँ, किस विषय में बात कर रहा है या लिखित संप्रेषण कर रहा है इसके अनुरूप ही शैली का वह प्रयोग करता है। एक ही व्यक्ति भिन्न-भिन्न स्थितियों में और भिन्न-भिन्न प्रयोजनों के लिए अलग-अलग भाषा रूपों का इस्तेमाल करता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित तीन वाक्यों को देखिए :

यदि आप अंदर पधारेंगे तो आपका बहुत आभारी होऊँगा।

कृपया अंदर पधारें।

अंदर आओ।

तीन वाक्यों में अत्यधिक औपचारिक शैली से लेकर नितांत अनौपचारिक शैली के प्रयोग पर गौर कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

समाज में जीवन संदर्भों की विविधता होती है और इन जीवन संदर्भों की आवश्यकताओं, कार्य पद्धतियों और उद्देश्यों के अनुरूप इनकी भाषा में भी विशिष्टता उत्पन्न होती है। जीवन संदर्भों की विशिष्टता के अनुरूप भाषा में विकसित व्यवहारपरक रूपभेद भाषा प्रयुक्ति निर्धारित करते हैं। उदाहरण के लिए वैज्ञानिक, चिकित्सक, व्यापारी, वकील, इतिहासविद्, खिलाड़ी अपने-अपने कार्यक्षेत्र में जिस भाषा रूप का इस्तेमाल करते हैं वह समान नहीं होता। प्रश्न उठता है कि वह समान किस अर्थ में नहीं होता? क्या एक की भाषा अंग्रेजी, दूसरे की फ्रांसीसी, तीसरे की बंगला और चौथे की हिंदी होती है? उत्तर होगा नहीं। वे उसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं जिस भाषा-समाज में वे रह रहे हैं। यानी हिंदी भाषी समाज में हैं तो हिंदी, तमिल भाषी समाज में हैं तो तमिल, अंग्रेजी भाषी समाज में हैं तो अंग्रेजी। लेकिन एक ही भाषा का इस्तेमाल करते हुए भी उनकी भाषा में एक खास तरह का अंतर होता है। यह अंतर उनके व्यवसाय की भाषायी विविधताओं के कारण उत्पन्न होता है। विज्ञान, विधि, व्यापार या चिकित्सा के अपने-अपने प्रयोग संदर्भ, शब्दावली और शैली होती है जो इन क्षेत्रों की भाषा को एक खास स्वरूप प्रदान करती है। इस तरह प्रयुक्ति किसी सामाजिक संदर्भ द्वारा निर्मित विशिष्ट भाषा रूप हैं।

6.3 भाषा प्रयुक्ति के निर्धारक तत्त्व

प्रश्न यह उठता है कि एक भाषा प्रयुक्ति से दूसरी भाषा प्रयुक्ति की अलग पहचान किन तत्त्वों के आधार पर की जा सकती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि वे कौन से तत्त्व हैं जो विभिन्न प्रयुक्तियों को निर्मित करते हैं और उनकी स्वतंत्र पहचान बनाते हैं। चूँकि प्रयुक्तियाँ एक भाषा के भीतर विकसित विविध रूपभेद हैं अत: उनको निर्मित करने वाले घटक उस भाषा के संरचनात्मक घटक ही होते हैं। हाँ, उनका चयन एवं संयोजन विशिष्ट स्थितियों एवं जरूरतों के अनुरूप किया जाता है। मूल संरचना उस भाषा की रहती है। शब्द प्रयोग, पदक्रम, वाक्य-विन्यास, शैली आदि विशिष्ट होती है जिसके कारण प्रयुक्ति विशेष की निजी पहचान बनती है। इस दृष्टि से प्रयुक्ति के प्रमुख निर्धारक तत्त्व तीन हैं :

शब्दावली

वाक्य-विन्यास

शैली

1. शब्दावली - प्रयुक्ति का प्रमुख आधार शब्दावली होता है। एक प्रयुक्ति को दूसरी प्रयुक्ति से मुख्य रूप से शब्दावली के स्तर पर अलग किया जा सकता है। कुछ स्थितियों अथवा विषयों की शब्दावली दूसरे विषयों से भिन्न होती है उदाहरण के लिए कानून की भाषा और चिकित्सा की भाषा की शब्दावली में बहुत अधिक अंतर होता है। इसी तरह वाणिज्य की भाषा और विज्ञान की भाषा की शब्दावली के स्तर पर काफी अलग होती है। इन विषयों के विशेषज्ञ अपने क्षेत्र में उसी शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अपने व्यवसाय से इतर परिस्थितियों में अपने व्यवसाय की भाषा का प्रयोग नहीं करते, यानि अपने परिवार के लोगों मित्रों आदि से बातचीत में वे उस शब्दावली का इस्तेमाल नहीं करते हैं।

कुछ शब्द और संकल्पनाएँ तो विषय या व्यवसाय विशेष से जुड़ी ही होती हैं जैसे गणित में ''प्रमेय'' अथवा वाणिज्य में ''रोकड़'' या ''बिचौलिया''। दूसरी और कुछ शब्दों के अर्थ भिन्न-भिन्न विषयों और संदर्भों में भिन्न-भिन्न होते हैं। इसी प्रकार एक ही चीज के लिए भिन्न-भिन्न कार्यों में भिन्न-भिन्न शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं जैसे खेलों को ही लें, शून्य zero को क्रिकेट में ''डक'' duck कहते हैं, टेनिस में ''लव'' love और चौसर में ''निल'' nil ।

2. वाक्य-विन्यास- शब्दावली के अतिरिक्त विभिन्न विषयों अथवा व्यवसायों की वाक्य संरचना भी एक हद तक विशिष्ट होती है। यह विशिष्टता भाषा की सामान्य संरचना के भीतर ही चलती है जैसे पत्रकारिता की हेडलाइनों में शब्दावली तो

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सामान्य होती है लेकिन वाक्य रचना विशिष्ट होती है। अक्सर क्रियाएँ छोड़ दी जाती हैं जैसे ''ब्रिटेन की महारानी 12 अक्टूबर से भारत दौरे पर'' ''नई सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर केन्द्र का राज्यों को समर्थन।''

इसी तरह विज्ञान, प्रशासन आदि की भाषा में कर्मवाच्य का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक होता है जैसे ''रिक्त पद छः माह के भीतर भर लिए जाएँ।''

3. शैली-

शैली प्रयुक्ति का इतना महत्त्वपूर्ण आधार होती है कि कुछ भाषा वैज्ञानिक तो शैली अथवा कथन के ढंग और प्रयुक्ति Register को पर्याय के रूप में स्वीकार करते हैं। हम चर्चा कर चुके हैं कि परिस्थितियों और विषयों के अनुसार व्यक्ति के भाषा प्रयोग की शैली बदलती हैं। यहाँ शैली से तात्पर्य विशिष्ट साहित्यिक शैली से न होकर कथन के ढंग अथवा मुहावरे से है। उदाहरण के लिए अदालत न्यायालय की भाषा को ही लें। अदालत में इस्तेमाल होने वाली हिंदी में उर्दू शब्दों की अधिकता होती है और वाक्य विन्यास भी अपने ढंग का होता है। भाषा औपचारिक होने के साथ ही अर्थ की निश्चितता होती है। उदाहरण के लिए ''बनाम'' शब्द सुनते ही हमें ऐसे दो पक्षों का ध्यान आएगा जिनके बीच कोई मुकदमा चला हो या चल रहा हो। ''रामधन बनाम हीरा सिंह के बीच'' कहने से यह अर्थ स्पष्ट नहीं होगा क्योंकि दोनों के बीच दोस्ती भी हो सकती है झगड़ा भी हो सकता है बँटवारा भी हो सकता है। इसी भाँति न्यायालय में जब वादी अथवा प्रतिवादी पक्ष को प्रस्तुत होने के लिए ''पुकार'' की जाती है तो कहा जाता है, ''..... हाजिर हों''। लेकिन ''हाजिर हों'' का प्रयोग अदालत तक ही सीमित है। सार्वजनिक सभा में किसी व्यक्ति को मंच पर बुलाते समय ''हाजिर हों'' का प्रयोग न करके कहा जाता है, ''श्री.....मंच पर आएँ...पधारें....आने का कष्ट करें।''

6.4 प्रयुक्ति का आधार

6.4.1 भाषा प्रयोग का विषय क्षेत्र- भाषा के प्रयोग के विषय-क्षेत्र से तात्पर्य जीवन का वह संदर्भ-विशेष अथवा विषय-विशेष है जिसके अंतर्गत भाषा के प्रयोग की बात की जा रही है। हम चर्चा कर चुके हैं कि हर विषय क्षेत्र की अपनी शब्दावली और वाक्य-संरचना अपने ढंग की होती है। यह संरचना, संदर्भ विशेष में तो बड़ी सार्थक और उपयुक्त होती है, किन्तु उसका इस्तेमाल अन्य संदर्भ या क्षेत्र में कर दिया जाए तो बड़ा ही अटपटा प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए जब हम कोई औपचारिक पत्र लिखते हैं यानी किसी अधिकारी के नाम, या किसी संस्था के प्रधान या सचिव के नाम अथवा किसी समाचारपत्र या पत्रिका के संपादक के नाम पत्र लिखते हैं तो स्वनिर्देश के रूप में 'भवदीय', - 'प्रार्थी' आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं। किन्तु यदि अपने पिता को लिखे पत्र में इस तरह का स्वनिर्देश लिखें तो बड़ा ही अटपटा होगा। इसी तरह यदि कोई पत्र या सूचना या विशिष्ट दस्तावेज हमारे कई परिचित व्यक्तियों या मित्रों से संबंधित हैं तो हम कहते हैं कि हमने वह पत्र या दस्तावेज उन सब लोगों को 'दिखा दिया' या 'पढ़वा दिया' है। किन्तु जब किसी कार्यालय में कोई सूचना या पत्र या दस्तावेज विभिन्न व्यक्तियों से संबंधित होता है तो कहा जाता है कि ''सभी संबद्ध व्यक्तियों में परिचालित करा दिया गया है।''

कार्यालय के कामकाज की पद्धति में यह प्रयोग सहज और उचित लगता है। इसी प्रकार अखबार में बाजार भाव के पृष्ठ पर आपने इस तरह के समाचार पढ़े होंगे :

चाँदी टूटी, गिन्नी उछली

दिल्ली 21 मार्च .. (एन.एन.एस.) मुनाफा वसूली की बिकवाली से चाँदी 30 रूपये टूट गई। सोना भी ढीला रहा। लेकिन असली गिन्नी उछलती सुनी गई।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इसका आशय है चाँदी का भाव कम हुआ सोना भी मंदा रहा लेकिन गिन्नी की कीमत में थोड़ी बढ़त रही। लेकिन ऊपर दिया गया उदाहरण व्यापार एवं बाजार की ठैठ भाषा का है जिसमें ''मुनाफा'', ''बिकवाली'' आदि विशिष्ट शब्दावली के प्रयोग हैं और ''टूटना'', ''ढीला रहना'', ''उछलना'' आदि शब्दों को संदर्भ विशेष में विशिष्ट अर्थ में प्रयोग किया गया है। अत: यहाँ शब्द चयन और संयोजन विशिष्ट विषय क्षेत्र व्यापार और वाणिज्य का संकेत करते हैं।

6.4.2 संप्रेषण की रीति- संप्रेषण की रीति से तात्पर्य है कि संप्रेषण किस प्रकार का है- मौखिक या लिखित? यदि मौखिक है तो क्या आमने-सामने है, रेडियो पर है या टेलीविजन पर है या टेलीफोन पर है, भाषण या व्याख्यान के रूप में है या वार्तालाप के रूप में? इसके विपरीत यदि लिखित है तो वह किस रूप में है? समाचारपत्र के रूप में या लेख अथवा पुस्तक के रूप में? गौर करने पर हम पाएँगे कि व्यक्ति जब आमने-सामने वार्तालाप कर रहा होता है तब उसकी भाषा का रूप और होता है तथा जब वह भाषण दे रहा होता है तब उसकी भाषा का रूप दूसरा। शब्दावली, वाक्य-विन्यास, लहजा आदि सभी में यह अंतर देखा जा सकता है। भाषण देते समय वह अपेक्षाकृत अधिक सतर्क भाषा का प्रयोग करता है और प्रभावपूर्ण ढंग अपनाना चाहता है। इसी तरह टेलीफोन और रेडियो के माध्यम से चूँकि व्यक्ति की आवाज ही उसकी पहचान के रूप में उभरकर आती है अत: भाषा प्रयोग में एक खास तरह की विशिष्टता होती है। आमने-सामने बोलकर संप्रेषण और दूर से टेलीफोन या रेडियो पर केवल आवाज द्वारा संप्रेषण में एक सहज और सजग अंतर होता है। शारीरिक भाव-भंगिमाओं के स्थान पर वाणी का उतार-चढ़ाव यहाँ अभिव्यक्ति का सहायक बनकर आता है। दूर-संप्रेषण में भी रेडियो और टेलीविजन द्वारा संप्रेषण के बीच अन्तर होता है क्योंकि टेलीविजन में वाणी के साथ-साथ चहरे की अभिव्यक्तियाँ भी सहायक के रूप में सक्रिय होती है।

इसी तरह मौखिक और लिखित संप्रेषण में अंतर पाया जाता है। भाषा का लिखित रूप एक स्थायी दस्तावेज बन जाता है। इसलिए यहाँ मौखिक भाषा की बजाए अधिक व्यवस्थित, नियमित, संतुलित और सजग भाषा प्रयोग देखने में आता है। रेडियो और टेलीविजन की प्रस्तुतियाँ या टेप-रिकार्ड हो रहे भाषण या वार्तालाप भी मौखिक रूप होने के बावजूद दर्ज होते हैं। इसलिए वक्ता अपनी भाषा के प्रति ज्यादा सजग होता है। उदाहरणार्थ, कोई अधिकारी अपने अधीनस्थ को पत्र के माध्यम से हिदायत दे या टेलीफोन पर हिदायत दे या फिर कोई कर्मचारी अपने अधिकारी को फोन पर कोई सूचना दे तब और पत्र के माध्यम से वही सूचना संप्रेषित करे तब उसकी भाषा में एक खास तरह का अंतर दिखाई देता है।

संप्रेषण की रीति लिखित और मौखिक के अतिरिक्त और भी कई दृष्टियों से अलग-अलग होती है। लिखित भाषा में भी अखबार की भाषा और शोधलेख की भाषा में बुनियादी अंतर होता है। अखबार की भाषा में तात्कालीकता होती है जबकि शोध लेख की भाषा में विषयगत गहनता। अखबार सूचना इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि पाठक का ध्यान आकृष्ट हो और रोचकता भी बनी रहे। शोध लेख शोध विषय को स्थापित करने और विद्वानों के बीच उसकी मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से लिखा जाता है अत: संप्रेषण की रीति में खंडन-मंडन, तथ्यों के पुष्टीकरण और स्थापना की प्रवृत्ति रहती है।

6.4.3 वक्ता-श्रोता अथवा लेखक और पाठक की स्थिति - वक्ता और श्रोता का पारस्परिक सामाजिक, व्यावसायिक अथवा पदीय संबंध उनके भाषा व्यवहार को प्रभावित करता है। अपने माता-पिता, मित्र, अध्यापक और अधिकारी से वार्तालाप या लिखित संप्रेषण के समय हमारी भाषा का स्वरूप और शैली भिन्न-भिन्न होती है। यह भिन्नता वैयक्तिक अथवा पदीय सम्पर्क में तो दिखाई देती है, सामाजिक और सामुहिक सम्पर्क में भी दिखाई देती है। उदाहरण के लिए यदि समाचारपत्र के विभिन्न कालमों पर नजर डालें तो विशुद्ध समाचार की मदों, संपादकीय, विशिष्ट विषयों के लेखों, साहित्य और कला समीक्षा के लेखों, संपादक के नाम पत्रों, खेल समाचारों, व्यापारिक समाचारों और 'बच्चों के पन्ने' की भाषा पर गौर करते ही हम इस भिन्नता को आसानी से समझ सकते हैं। एक अन्य स्तर पर भी हम इसे देख सकते हैं। किसी विषय पर विद्यार्थियों के लिए लिखी गयी पाठ्य-पुस्तकों, आलोचनात्मक और शोधपरक रचनाओं तथा विशुद्ध साहित्यिक कृतियों में भाषा व्यवहार के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

भिन्न-भिन्न रूप और स्तर देखे जा सकते हैं।

संप्रेषण चाहे लिखित हो अथवा मौखिक, इस बात का बहुत असर पड़ता है कि कौन किससे किस समय बात कर रहा है जैसे आयुर्विज्ञान संस्थान का डॉक्टर मरीज की नाजुक हालत और उसके उपचार के संबंध में अपने सहयोगियों से राय-मशविरा कर रहा हो तब और अपने अनुसंधान आलेख को विद्वान मंडली में पढ़ रहा हो तब उसकी भाषा के वाक्य-विन्यास, लहजे आदि में काफी अंतर होता है। वही डॉक्टर जब उस बात को आयुर्विज्ञान संस्थान के प्रथम वर्ष या द्वितीय वर्ष के छात्रों को समझा रहा हो तो फिर एक खास तरह का अंतर दिखाई देता है।

अक्सर यह माना जाता है कि लिखित संप्रेषण मौखिक संप्रेषण की तुलना में औपचारिक होता है। लेकिन लिखित संप्रेषण की औपचारिकता के भी कई स्तर होते हैं जो लिखने वाले और जिसे निर्दिष्ट करके लिखा गया है उसके बीच के संबंध पर निर्भर करते हैं उदाहरण के लिए निम्न लिखित वाक्यों को देखिए :

(a) Just a short note to tell you that we reached home in one piece.

(b) This is to inform you that we reached home safely.

वाक्य (a) का संदेश किसी अंतरंग व्यक्ति के लिए है जबकि वाक्य ... का संदेश अपेक्षाकृत भिन्न हैसियत के व्यक्ति के लिए।

6.4.4 भाषा प्रयोग की औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थिति- एक ही विषय क्षेत्र के भीतर तथा वक्ता-श्रोता की समान स्थिति में भी अभिव्यक्ति की स्थितियाँ सदैव समान नहीं होती। कभी वे औपचारिक होती है तो कभी अनौपचारिक। इन दोनों ही स्थितियों में भाषा व्यवहार का रूप अलग-अलग होता है। उदाहरण के लिए दो मित्र जब सामान्य जीवन के विषय में अनौपचारिक बातचीत कर रहे हों तब उनकी भाषा का रूप और होता है और जब वे राजनीतिक परिस्थितियों या काव्य रचना-प्रक्रिया पर विचार-विमर्श कर रहे हों तो उनकी भाषा का रूप और होता है। इसी तरह राजनीतिक गतिविधियों पर मित्रों के बीच होने वाली चर्चा तथा किसी संगोष्ठी में होने वाली चर्चा में भाषा व्यवहार के भिन्न-भिन्न रूप होते हैं। एक अन्य उदाहरण लें। दो देशों के प्रधानमंत्री जब मिलते हैं तो परस्पर राजनयिक संबंधों के बारे में उनके बीच हुई चर्चा में जो भाषा व्यवहार होता है उसमें और प्रेस कॉन्फ्रेंस के समय जो भाषा व्यवहार होता है उसमें काफी अंतर होता है।

ऊपर जिस डॉक्टर का उदाहरण दिया गया है, वही जब अपने डॉक्टर मित्रों से चाय पार्टी में बात कर रहा हो तब उसका भाषा व्यवहार ऑपरेशन की मेज पर उन्हीं डॉक्टर मित्रों के भाषा व्यवहार से भिन्न होगा। कहने का आशय यह है कि पहली स्थिति में वह अनौपचारिक भाषा का इस्तेमाल करेगा, जबकि दूसरी स्थिति में वह पूरी तरह औपचारिक और सचेत होगा। दूसरी स्थिति में उसकी भाषा चिकित्सा विज्ञान की प्रयुक्ति के भीतर आएगी, जबकि पहली स्थिति में ऐसा होना जरूरी नहीं है।

उपर्युक्त आधारों को हम प्रयुक्ति के निर्धारण में इस्तेमाल करते हैं। ध्यान रखने की बात यह है कि जरूरी नहीं कि ये चारों आधार हर प्रयुक्ति के संबंध में बराबर मात्रा में लागू हों। ये आधार वस्तुतः मोटे तौर पर निर्धारित किए गए हैं और दो प्रयुक्तियों के बीच अंतर में कभी किसी एक या दो आधारों पर बल रहता है तो कभी अन्य आधारों पर।

बोध प्रश्न 1

1. भाषा प्रयुक्ति से आप क्या समझते हैं ? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

2. प्रयुक्ति के निर्धारक तीन तत्त्व कौन से हैं ?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

3. विषय क्षेत्र के अनुसार भाषा रूप क्यों बदलता है ?

4. संप्रेषण की रीति भाषा को किस तरह प्रभावित करती है ?

5. कहने और सुनने वाले के बीच संबंध के आधार पर भाषा प्रयोग में कैसे अंतर आता है ? उदाहरण दीजिए।

6.5 विभिन्न प्रयुक्तियाँ और उनकी भाषिक विशिष्टताएँ

समाज और जीवन के विविध कार्यक्षेत्रों के आधार पर किसी भाषा की सामान्यता निम्नलिखित प्रयुक्तियाँ हो सकती हैं:

सामान्य व्यवहार

साहित्यिक प्रयुक्ति

सामाजिक विज्ञानों संबंधी प्रयुक्ति

वाणिज्य व्यापार की प्रयुक्ति

वैज्ञानिक प्रयुक्ति

प्रशासनिक प्रयुक्ति

विधिक प्रयुक्ति

मीडिया और पत्रकारिता (संचार माध्यमों) से संबंधित प्रयुक्ति

विज्ञापनी प्रयुक्ति

खेल संबंधी प्रयुक्ति

इन प्रयुक्तियों के अलावा भी और तरह की प्रयुक्तियाँ आवश्यकतानुसार विकसित हो सकती हैं।

जब कभी सामाजिक जीवन में कोई नई घटना अथवा नया कार्यकलाप होता है अथवा चले आते कार्यकलाप में कोई नई स्थिति उत्पन्न होती है उससे संबंधित शब्दावली और भाषिक प्रयोग वहाँ की भाषा में विकसित होते जाते हैं। इसलिए जब कहा जाता है कि भाषा निरंतर विकासशील होती है तो समझना चाहिए कि भाषा अपने प्रयोक्ता समाज की गतिविधियों और जरूरतों के अनुरूप विकसित होती रहती है। जीवन के नए-नए क्षेत्र विकसित होते हैं उनकी अभिव्यक्त के अनुरूप विकसित होती जाती है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक घटनाचक्र, वैज्ञानिक अनुसंधानों, साहित्यिक-सांस्कृतिक चिंतन और सृजन, भाषा विकास की इस प्रक्रिया को संपन्न बनाते हैं। उदाहरण के लिए पिछले तीन-चार दशकों में कम्प्यूटर के विकास के साथ दुनिया भर में संचार-क्रांति का जो दौर आया है उसने भाषा को नई शब्दावली, नई अर्थ-छवियाँ और नई अभिव्यक्ति शैली प्रदान की है। कम्प्यूटर अपने आप में एक स्वतंत्र विषय के रूप में विकसित हुआ है उसकी अपनी तकनीकी शब्दावली और भाषा विकसित हुई है साथ ही उसने न केवल विज्ञान की भाषा अपितु विभिन्न विषय क्षेत्रों की भाषा प्रयुक्तियों को प्रभावित किया है।

6.5.1 सामान्य व्यवहार की प्रयुक्ति- जब हम सामान्य व्यवहार में भाषा प्रयुक्ति की बात करते हैं तो भाषा का अत्यंत लचीला रूप हमारे सामने होता है विशेष तौर पर बोलचाल की भाषा का रूप जो अपने आप में बहुत ही अनौपचारिक होता है इसकी शब्दावली अत्यंत सहज और सामान्य होती है। वाक्य विन्यास भी बहुत सीधा और सरल होता है। आवश्यकता पड़ने पर विशिष्ट प्रयुक्ति क्षेत्रों के शब्द भी इसमें आ जाते हैं। इसमें भाषा का मौखिक और अनौपचारिक लिखित रूप दोनों ही शामिल होते हैं। इसका इस्तेमाल हम आपसी व्यवहार में करते हैं घर-परिवार, पास-पड़ोस, मित्र-मंडली से लेकर दैनिक जीवन के सभी कार्यों में इसका व्यवहार होता है। स्कूल, बाजार, यात्रा, मनोरंजन, सांस्कृतिक कार्यकलाप, पत्र-व्यवहार आदि में इसी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

का आमतौर पर इस्तेमाल होता है।

इस भाषा प्रयुक्ति की बहुत बड़ी विशेषता यह होती है कि यह सहज-सरल होने के बावजूद बहुत सपाट नहीं होती। व्यंजनाश्रितता इसमें काफी गहरी होती है। दैनिक जीवनानुभवों पर आधारित होने के कारण इसमें अर्थ की पर्याप्त गहराई होती है। कहावतें और मुहावरे, जो किसी भी भाषा समाज और संस्कृति की आंतरिक लय होते हैं, सामान्य व्यवहार की भाषा में ही बनते और अर्थ ग्रहण करते हैं उनका सर्वाधिक व्यवहार भी सामान्य जीवन में ही होता है। जो भाव अथवा स्थिति सामान्य शब्दों से व्यक्त नहीं हो सकता/सकती उसे ये कहावतें और मुहावरे बड़ी सहजता से संप्रेषित करा देते हैं। कम जानकार व्यक्ति किस तरह अपने ज्ञान की शैली बघारता है और थोड़ा सा धन इकट्ठा कर लेने वाला व्यक्ति किस तरह संपन्नता का दिखावा करता है या अर्द्ध शिक्षित व्यक्ति किस तरह पांडित्य का प्रदर्शन करता है यह बात ''अधजल गगरी छलकत जाए'' जैसी कहावत बड़ी ही सहजता से सोदाहरण प्रस्तुत कर देती है।

6.5.2 साहित्यिक प्रयुक्ति- साहित्य का संबंध भाषा विशेष के समाज और संस्कृति से होता है। जहाँ बोल-चाल की भाषा अपने बोलने वालों के दैनिक जीवन व्यवहार को अभिव्यक्ति प्रदान करती है वही साहित्य अपने समाज की आंतरिक अनुभूतियों, विचारों, प्रत्ययों, संघर्षों, अंतर्द्वन्द्वों, आंदोलनों और सामाजिक परिवर्तनों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अत: भाषा की साहित्यिक प्रयुक्ति एक ओर तो दैनिक जीवन की भाषा से शक्ति ग्रहण करती है। दूसरी और जटिल, गहन और संश्लिष्ट मानवीय अनुभवों को व्यक्त करने के लिए अभिव्यक्ति के पुराने मुहावरों को तलाशती - तराशती हुई उनका नवोन्मेष करती है। जीवन यथार्थ के साथ ही कल्पनाशीलता का समावेश साहित्य की भाषा की प्रमुख विशेषता होती है। स्थिति-परिस्थिति की टकराहट के भीतर से विस्तृत गहन मानवीय अनुभवों को व्यक्त करते हुए रचनाकार भाषा को नए ढंग से रचता है, उसमें नवोन्मेष की ताजगी पैदा करता है। इस प्रक्रिया में वह संपूर्ण स्थिति का ऐसा सजीव बिंब सृजित कर देता है कि पाठक की कल्पना में वह स्थिति अपनी संपूर्ण गहनता और तीव्रता के साथ मूर्तिमान हो उठती है। प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास ''गोदान'' की कुछ पंक्तियां यहां उद्धृत की जा रही है। जिंदगी भर गरीबी से जूझता हुआ होरी जीवन से अपनी लड़ाई हार जाता है।

उस मजदूर ने कहा - कैसा जी है होरी भैया?

होरी के सिर में चक्कर आ रहा था। बोला - कुछ नहीं, अच्छा हूँ।

यह कहते-कहते उसे फिर कै हुई और हाथ-पाँव ठण्डे होने लगे। यह सिर में चक्कर क्यों आ रहा है? आँखों के सामने जैसे अंधेरा छाया जाता है। उसकी आँखें बंद हो गई और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगी, लेकिन बेक्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे स्वप्न-चित्रों की भांति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध, वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों पर गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुँदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गई और .....उसी मजदूर ने फिर पुकारा-दोपहरी ढल गई होरी, चलो झौवा उठाओ।

होरी कुछ न बोला। उसके प्राण तो न जाने किस-किस लोक में उड़ रहे थे। उसकी देह जल रही थी, हाथ-पाँव ठण्डे हो रहे थे। लू लग गई थी।

उसके घर आदमी दौड़ाया गया। एक घण्टा में धनिया दौड़ी आ पहुँची। शोभा और हीरा पीछे-पीछे खटोले की डोली बनाकर ला रहे थे।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

धनिया ने होरी की देह छुई, तो उसका कजेजा सन् से हो गया। मुख कांतिहीन हो गया था।

काँपती हुई आवाज से बोली – कैसा जी है तुम्हारा?

होरी ने अस्थिर आँखों से देख और बोला – तुम आ गए गोबर? मैंने मंगल के लिए गाय ले ली है। वह खड़ी है, देखो।

धनिया ने मौत की सूरत देखी थी। उसे पहचानती थी। उसे दबे पाँव आते भी देखा था, आँधी की तरह भी देखा था। उसके सामने सास मरी, ससुर मरा, अपने दो बालक मरे, गाँव के पचासों आदमी मरे। प्राण में एक धक्का सा लगा। वह आधार जिस पर जीवन टिका हुआ था, जैसे खिसका जा रहा था, लेकिन नहीं, यह धैर्य का समय है, उसकी शंका निर्मूल है, लू लग गई है, उसी से अचेत हो गए हैं।

उमड़ते हुए आँसुओं को रोककर बोली–मेरी और देखो, मैं हूँ क्या मुझे नहीं पहचानते?

होरी की चेतना लौटी। मृत्यु समीप आ गई थी, आग दहकनेवाली थी। धुआँ शांत हो गया था। धनिया को दीन आंखों से देखा, दोनों कोनों से आँसू की दो बूँदें ढलक पड़ी। क्षीण स्वर में बोला– मेरा कहा–सुना माफ करना धनिया। अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गई। अब तो यहाँ के रूपये क्रिया–करम में जायेंगे। रो मत धनियाँ, अब कब तक जिलाएगी? सब दुर्दशा तो हो गई। अब मरने दे। और उसकी आँखें फिर बंद हो गई। उसी वक्त हीरा और शोभा डोली लेकर पहुँच गए। होरी को उठाकर डोली में बिठाया और गाँव की ओर चले।

गाँव में यह खबर हवा की तरह फैल गई। सारा गाँव जमा हो गया। होरी खाट पर पड़ा शायद सब कुछ देखता था, सब कुछ समझता था, पर जबान बंद हो गई थी। हाँ, उसकी आँखों के बहते हुए आँसू बतला रहे थे कि मोह का बंधन तोड़ना कितना कठिन हो रहा है। जो कुछ अपने से नहीं बन पडा, उसी के दु:ख का नाम तो मोह है। पाले हुए कर्त्तव्य और निपटाए हुए कामों का क्या मोह। मोह तो उन अनाथों को छोड़ जाने मे है, जिनके साथ हम अपना कर्त्तव्य न निभा सके। उन अधूरे मंसूबों में है, जिन्हें हम न पूरा कर सके।

मगर सब कुछ समझकर भी धनिया आशा की मिटती हुई छाया को पकड़े हुए थी। आँखों से आँसू गिर रहे थे, मगर यन्त्र की भाँति दौड़–दौड़कर कभी आम भूनकर पना बनाती, कभी होरी की देह में गेहूँ की भूसी की मालिश करती। क्या करे, पैसे नहीं हैं, नहीं किसी को भेजकर डॉक्टर बुलाती।

हीरा ने रोते हुए कहा– भाभी, दिल कड़ा करो, गो–दान करा दो, दादा चले।

धनिया ने उसकी ओर तिरस्कार की आंखों से देखा। अब वह दिल को और कितना कठोर करे? अपने पति के प्रति उसका जो कर्म है, क्या वह उसको बताना पड़ेगा? जो जीवन का संगी था, उसके नाम को रोना ही क्या उसका धर्म है?

और कई आवाजें आयीं–हाँ, गो–दान करा दो, अब यह समय है।

धनिया यंत्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली–महाराज, घर में गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गो–दान है।

और पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

मृत्यु से जूझते हुए होरी की जीवन के अभावों, व्यथाओं, स्वप्नों और आकांक्षाओं का और धनिया की बेबस लाचारी और असहाय स्थिति का सजीव चित्र पाठक की कल्पना में मूर्तिमान हो उठता है। घर में गाय रखने की लालसा और प्रयास में

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

बीते होरी के जीवन की विडंबना गोदान की रस्म के माध्यम से अपनी पूरी व्यंग्यात्मक तीक्ष्णता के साथ उभरती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि साहित्य की भाषा सीधे कथन के साथ-साथ लाक्षणिकता और व्यंजनश्रितता का भी आश्रय लेती है। प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग उसकी सहज विशेषता होती है। सीधे अर्थ के अतिरिक्त सांकेतिक अर्थ अथवा निहितार्थ का उसमें विशेष महत्त्व होता है। शब्दावली की दृष्टि से साहित्य की भाषा मुक्त होती है। रोजमर्रा के जीवन से लेकर किसी भी प्रयुक्ति की तकनीकी शब्दावली तक उसमें ग्रहण की जा सकती है। तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी सभी स्रोतों से आए शब्दों का रचनाकार अपने ढंग से सर्जनात्मक प्रयोग कर सकता है। इतना ही नहीं, वह शब्दों के पारंपरिक अर्थ में नई अर्थ व्यंजना का समावेश कर सकता है। उन्हें लय और छंद के अनुकूल ढाल भी सकता है।

मुक्तिबोल की प्रसिद्ध कविता - ''अंधेरे में'' की कुछ पंक्तियाँ है:

''मैं ही कनफटा हूँ हेठा हूँ

शेवरलेट डोज के नीचे

मैं ही लेटा हूँ

तेलिया लिवास में पुर्जे सँभालता हूँ

आपकी आक्षाएँ ढोता हूँ।''

यहाँ ''कनफटा'', ''हेठा'', ''आज्ञाएँ'', ''ढोता'' आदि शब्दों में निहित व्यंग्य और व्यंजना इन शब्दों के पारंपरिक प्रयोग से कहीं ज्यादा गहरी और तीखी है।

साहित्य की भाषा की विशेषता यह होती है कि उसमें वह अर्थ भी ध्वनित होता है जो सीधे-सीधे नहीं कहा जा रहा। गोदान से ही दो अंश उदाहरण के लिए प्रस्तुत हैं:

1. 'बड़ी लू लगती होगी।'

'लू क्या लगेगी? अच्छी छाँह है।'

'मैं डरती हूँ, कहीं तुम बीमार न पड़ जाओ।'

'चल, बीमार वह पड़ते हैं, जिन्हें बीमार पड़ने की फुरसत होती है। यहाँ तो यह धुन है कि अब की गोबर आये, तो रामसेवक के आधे रूपया जमा रहें। कुछ वह भी लाएगा। बस, इस साल इस रिन से गला छूट जाय, तो दूसरी जिन्दगी हो।'

2. होरी ने बात काटी-तुम नाहक भागे। अरे, दरोगा को दस-पाँच देखकर मामला रफे-दफे करा दिया जाता और होता क्या?

'तुमसे जीते-जी उरिन न हूँगा दादा'

'मैं कोई गैर थोड़े हूँ भैया।'

होरी प्रसन्न था। जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लोट रही थी। कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय हैं। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय पताकाएँ है। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है। हीरा की कृतज्ञता में उसके जीवन की सारी सफलता मूर्तिमान् हो गई है। उसके बुखार में सौ-दो-सौ मन अनाज भरा होता, उसकी हाँड़ी में हजार-पाँच सौ गड़े हाते,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

पर उससे यह स्वर्ग का सुख क्या मिल सकता था?

हीरा ने उसे सिर से पाँव तक देखकर कहा–तुम भी तो बहुत दुबले हो गए दादा।

होरी ने हँसकर कहा–तो क्या यह मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं, जिन्हें न रिन का सोच होता है, न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों। शोभा से भेंट हुई?

उपुर्यक्त उदाहरणों से होरी के चरित्र के बहुत से पक्ष उजागर होते हैं। वह एक ईमानदार, सज्जन हृदय, उदार और भला व्यक्ति है जो अपनी सुख सुविधा की अपेक्षा कर्जयुक्त और इज्जतदार होने में तथा दूसरों का हित चाहने, उनमें भलाई देखने में विश्वास रखता है।

6.5.3 सामाजिक विज्ञानों संबंधी प्रयुक्ति– सामाजिक विज्ञानों की भाषा सामान्य व्यवहार की भाषा के काफी हद तक निकट प्रतीत होती है। क्योंकि इसे विशिष्टता प्रदान करने वाला तत्त्व वाक्य–संरचना न होकर शब्दावली होता है। सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्गत आने वाले चार विषयों–इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में परस्पर पर्याप्त आदान–प्रदान होता है। इसलिए विषय वस्तु और भाषा दोनों की दृष्टि से ये एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप इनमें प्रचलित शब्दावली में कुछ स्तरों पर समानता होती है। इसके कई कारण हैं:–

सामाजिक विज्ञानों की शब्दावली का बड़ा हिस्सा विभिन्न विचारधाराओं, गतिविधियों और आंदोलनों से निर्मित होता है। किसी काल विशेष में घटी कुछ घटनाएँ अथवा आंदोलन उस समय के जीवन में कोई ऐसा विशिष्ट परिवर्तन लाते हैं जो अपने समय के समाज को या आगे जाने वाले समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। ऐसी घटनाओं या आंदोलनों से जुड़ी शब्दावली सामाजिक विज्ञानों का अभिन्न अंग बन जाती है। इसी तरह विभिन्न समयों में हुए विचारक और चिन्तक विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विषयों के बारे में जो सिद्धांत प्रतिपादित करते हैं उनसे निकली शब्दावली सामाजिक विज्ञानों के विभिन्न सिद्धान्तों के रूप में समाविष्ट होती है। इस तरह सामाजिक विज्ञानों की शब्दावली तथ्यात्मक होती है। काल विशेष से जुड़ी होने के कारण वह एक तरह से समय को अपने साथ बाँधती चलती है।

उदाहरण के लिए 'दीन इलाही', 'सत्याग्रह', 'स्वदेशी', 'अहिंसक संघर्ष' या 'मित्र राष्ट्र' शब्दों पर गौर करें तो हम देखेगें कि ये शब्द अपने समय की बड़ी महत्त्वपूर्ण घटनाओं से जुड़े हैं। 'सत्याग्रह' शब्द अपने आप में किस अर्थ का द्योतक है? सत्य के आग्रह का यानी सत्य पर जोर देने का। किन्तु स्वाधीनता–संग्राम में गांधी की भूमिका और उससे जुड़े व्यापक जन–आंदोलनों से संबद्ध होने के कारण यह शब्द सत्ता के विरुद्ध संघर्ष की एक विशिष्ट नीति और पद्धति का द्योतक बन गया है। इसी तरह 'स्वदेशी' शब्द का अर्थ है ''अपने देश'' का यानी अपने देश की कोई वस्तु, व्यक्ति, परम्परा, विचारधारा या अन्य कुछ भी चीज स्वदेशी होगी। किन्तु भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान यह शब्द एक खास अर्थ से जुड़ गया। यह उस आंदोलन का प्रतीक बन गया जिसमें वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल पर जोर देकर भारत की चरमराई हुई अर्थ–व्यवस्था को सुधारने का प्रयास किया गया था।

इस तरह सामाजिक विज्ञान जानी–पहचानी शब्दावली को काल–विशेष में एक ठोस अर्थ प्रदान करते हैं और पूरे ऐतिहासिक संदर्भ को काल–केन्द्रित कर देते हैं।

सिद्धांतों, विचारधाराओं, संकल्पनाओं और नियमों की व्याख्याओं तथा उद्भावनाओं के आधार पर सामाजिक विज्ञानों में अनेक प्रकार के मत और वाद मिलते हैं। कभी इन वादों का नाम किसी विचारक के नाम पर होता है जैसे मार्क्सवाद, गांधीवाद

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

तथा कभी निहित सिद्धांतों और संकल्पनाओं के आधार पर जैसे- भौतिकवाद, साम्राज्यवाद, प्रतिक्रियावाद, साम्यवाद, मानवतावाद, सामंतवाद, सुधारवाद, उदारवाद, पूँजीवाद, राष्ट्रवाद आदि। ध्यान देने की बात है कि 'वाद' प्रत्यय लगाने से सभी शब्दों के अर्थ में हमेशा एक-सा अंतर नहीं आता। कहीं 'वाद' सकारात्मक अर्थ का द्योतक होता है, कहीं नकारात्मक अर्थ का। उदाहरण के लिए 'प्रतिक्रिया' अथवा 'संप्रदाय' शब्द अपने आप में किसी नकारात्मक अर्थ के द्योतक नहीं हैं। किन्तु इनके साथ 'वाद' प्रत्यय जुड़ जाने से इनका अर्थ सकारात्मक नहीं रहता। 'प्रतिक्रियावाद' और 'संप्रदायवाद' क्रमश: प्रगति विरोधी और संकुचित दृष्टिकोण के द्योतक हैं।

सामाजिक विज्ञानों के अंतर्गत अर्थशास्त्र की शब्दावली की विशेषता यह होती है कि रोजमर्रा के जीवन में सामान्य अर्थ में प्रयुक्त शब्द अर्थशास्त्र में विशिष्ट पारिभाषिक और तकनीकी संदर्भों में प्रयुक्त होते हैं। 'बाजार', 'मुद्रा', 'पूँजी', 'श्रम', 'उपयोगिता' आदि शब्द यहाँ विशिष्ट सुनिश्चित अर्थ के द्योतक हैं। इसी तरह शब्दों के संयुक्त प्रयोग किसी विशिष्ट संकल्पना अथवा प्रक्रिया के द्योतक होते हैं जेसे-

'कीमत-प्रणाली', 'प्रतियोगी अर्थ-व्यवस्था', 'किराए का श्रम', 'आगत-निर्यात विधि', 'उत्पादन सम्बन्ध', 'वितरण संबंध' आदि।

अर्थशास्त्र में आंकड़ों, प्रमाणों, तालिकाओं, रेखाचित्रों आदि में संकेत चिह्न, प्रतीक और संक्षिप्तियाँ आदि इस्तेमाल की जाती हैं। इनके लिए अक्सर अंग्रेजी वर्णों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के नीचे लिखे पैराग्राफ को देखिए :

''किसी वस्तु को निर्धारित करने वाले जिन तत्त्वों की चर्चा हम कर चुके हैं उन्हें संक्षेप में निम्नलिखित समीकरणों के रूप में व्यक्त किया जा सकता है, जिसे पूर्ति-फलन (supply function) कहा जाता है।

(Px, p1, ... px, p, fm, T,G)

इसमें Q^3X वस्तु X की पूर्ति, PY वस्तु X की कीमत P_1P_x वस्तु X से संबंधित अन्य वस्तुओं की कीमतें F_1F_m उत्पादन के साधनों की कीमतें T तकनीकी ज्ञान का स्तर G उत्पादनों का उद्देश्य, तथा F फलनात्मक संबंधों को व्यक्त करता है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी वस्तु X की पूर्ति उपर्युक्त पाँच तत्त्वों पर निर्भर करती है।''

इस दृष्टि से अर्थशास्त्र की भाषा विज्ञान की भाषा से मिलती-जुलती प्रतीत होती है।

सामाजिक विज्ञानों की भाषा की एक अन्य विशेषता है तिथियों और स्थानों के नाम पर किन्हीं घटनाओं और परिस्थितियों का नामकरण जैसे 1857 की क्रांति, 1853 का चार्टर ऐक्ट, 1887 का तीसरा अधिवेशन, 1906 का तीसरा भाषण, मोप्पला विद्रोह, जेनेवा समझौता, तेलंगाना विद्रोह, चौरी-चौरा कांड, दांडी यात्रा पानीपत का युद्ध आदि। तिथियों या स्थानों के आधार पर घटनाओं की यह पहचान विशेष रूप से इतिहास में होती है। कुछ हद तक इसका प्रयोग-विधि की भाषा में भी होता है। अधिनियम अपने नाम के साथ-साथ अपनी तारीख से भी पहचाना जाता है जैसे, ऊपर '1853 के चार्टर ऐक्ट' की बात हम कर चुके हैं। एक बार अधिनियम बन जाने के बाद उसमें होने वाले संशोधनों की पहचान भी उसकी तारीख से होती है।

6.5.4 वाणिज्य-व्यापार संबंधी प्रयुक्ति - व्यापार एवं वाणिज्य में प्रयुक्त भाषा का कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक होता है। इसके अंतर्गत व्यापार, व्यवसाय, उद्योग, परिवहन, बैंक, कम्पनी, सहकारिता और व्यापारिक विज्ञापन आदि आते हैं। अत: प्रयोजनमूलक भाषा का सबसे व्यापक कार्यक्षेत्र यही है। एक ही रजिस्टर के अंतर्गत आने के बावजूद इसके विविध अंगों की भाषा की अपनी-अपनी विशिष्टता होती है। एक ओर तो यह रजिस्टर जीवन के लगभग सभी अनिवार्य कार्यकलापों से जुड़ा होता है दूसरी ओर इसमें क्षेत्र-विशेष से जुड़ी विशेषज्ञता भी निहित होती है। व्यवसाय, उद्योग, बैंक, परिवहन व्यवस्था,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सहकारिता का संबंध एक तरफ आम आदमी की दैनिक जरूरतों से होता है दूसरी तरफ अपने कार्यकलाप की विशिष्ट प्रवृत्तियों से। विज्ञान की शब्दावली यदि आम आदमी की पहुँच से दूर है तो भी इसका आम आदमी के सामान्य जीवन-यापन पर प्रभाव नहीं पड़ता। किन्तु बैंक, उद्योग, सहकारिता, परिवहन आदि क्षेत्र से सर्वसामान्य के लिए ही हैं, अत: उनकी भाषा का सर्वसामान्य के लिए संप्रेषणीय होना नितान्त आवश्यक है।

व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र की एक अन्य विशेषता है। इसकी विभिन्न इकाईयों के आकार, विस्तार और कार्यक्षेत्र में पर्याप्त विविधता है। व्यवसाय का कार्यक्षेत्र बहुत छोटा यानी एक नगर अथवा कस्बे तक सीमित हो सकता है और राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर वह विस्तृत हो सकता है। उदाहरण के लिए बैंकिंग को ही लें। इस क्षेत्र का कार्य-विस्तार एक तरफ छोटे स्तर के सहकारी बैंकों के स्थानीय लेन-देन तक सीमित होता है तो दूसरी और अंतर्राष्ट्रीय लेन-देन करने वाले बैंक भी होते हैं। इसी तरह छोटी फैक्टरियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का उदाहरण लिया जा सकता है।

माल का उत्पादन, परिवहन, प्रचार, क्रय-विक्रय, लेन-देन, लेखा-जोखा, पूँजी की व्यवस्था, कर्मचारियों की नियुक्ति, उनके वेतन और सेवा-शर्तों का नियमन, व्यवसाय का प्रबन्ध, बीमा, कारोबार का प्रसार आदि विभिन्न प्रकार के कार्य इस क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। इनके लिए हिसाब-किताब, बही-खाता और पत्र-व्यवहार भी करना पड़ता हैं। अत: भाषा की अन्य प्रयुक्तियों का यहां काफी अंत: प्रवेश होता है, जैसे कर्मचारियों की नियुक्ति, सेवा-नियमों आदि में प्रशासनिक भाषा का, संविदा तथा अनुबंध आदि करने और संस्था का ज्ञापन पत्र और अन्तर्नियमावली आदि में विधि की भाषा का, प्रचार के मामले में विज्ञापन की भाषा का। इस दृष्टि से व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप मिला-जुला होते हुए भी अपने आप में विशिष्ट है।

इनकी शब्दावली तथा वाक्य-रचना अपने ढंग की होती है। इस क्षेत्र के कुछ शब्दों को देखिए :

थोक व्यापारी, फुटकर व्यापारी, एकल स्वामित्व, तुलन पत्र, लेखाकरण, साख, देनदार, लेनदार, लेन-देन, रोकड़, वाउचर, जर्नल, गबन, तेजड़िया, मंदड़िया, बिचौलिया, दिवालिया, साझेदारी, डेबिट, क्रेडिट।

इनमें से कुछ शब्दों को हम आम बोलचाल में भी इस्तेमाल करते हैं। इस शब्दावली में ठेठ हिन्दी के शब्दों के साथ अंग्रेजी के शब्दों का सामान्य रूप से प्रयोग किया जाता है। ''रोकड़'', ''बिचौलिया'', ''सटोरिया'' के साथ ही ''डेबिन'', ''क्रेडिट'' और ''जर्नल'' जैसे शब्द आ जाते हैं।

व्यापारिक सूचनाओं में भाषा का प्रयोग एक खास ढंग से किया जाता है। अखबारों में बाजार भाव पढ़ते समय हमें निम्नलिखित ढंग के खास प्रयोग दिखाई देते हैं-

'सोना लुढ़का', 'चावल नरम', 'काला चना उछला', 'चाँदी ढीली पड़ी', 'गेहूँ के भाव टूटे।'

बाजार में प्रचलित शब्दावली की यह विशिष्ट प्रयोग-विधि है जिसे इनसे संबंधित लोग आसानी से समझ लेते हैं।

6.5.5 वैज्ञानिक प्रयुक्ति - विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त हिन्दी की चर्चा से पहले कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी है। विज्ञान की भाषा तथ्यपरक संदर्भों की भाषा होती है। इसलिए यह मूर्त भाषा होती है। शब्द के प्रयोग की निश्चितता के कारण यहां अर्थ का स्थिरीकरण होता है जैसे एक शब्द है 'परमाणु'। इसका अर्थ निश्चित है क्योंकि प्रयोग का तथ्य निश्चित है। अर्थ में संभावनापरकता या लाक्षणिकता की बात यहाँ हो ही नहीं सकती। साहित्य की भाषा में अर्थ की संभावनाएँ बराबर खुलती रहती हैं। अत: शब्द व्याख्या सापेक्ष होता है। जीवन के विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुसार उसकी विभिन्न प्रकार से व्याख्या की जाती है। विज्ञान की भाषा में ऐसा संभव नहीं है। विज्ञान की भाषा के प्रतीक ज्ञान चिन्ह होते हैं। अत: वे तथ्यों और विचारों के दायरे में रूढ़ होते रहते हैं जैसे, 'गुरुत्वाकर्षण' शब्द एक निश्चित सिद्धांत को प्रतिपादित करता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

साहित्य की भाषा के प्रतीक गढ़े जाते हैं। रचनाकार शब्द के साथ प्रयोग करता है उसे नई अर्थ-छवियाँ प्रदान करता है। उदाहरण के लिए एक शब्द है 'विभक्त'। सामान्य रूप से इसका अर्थ है विभाजित या बँटा हुआ। किन्तु निराला जब 'राम की शक्ति पूजा' में हनुमान के लिए लिखते हैं : 'जपते सभक्ति अजपा विभक्त हो राम नाम' तो यहाँ 'विभक्त' शब्द उस विशिष्ट भक्त का द्योतक हो जाता है जो स्वयं प्रभु से अधिक शक्तिशाली है। इस तरह साहित्य की भाषा जहां प्रयोग की भाषा होती है वहीं विज्ञान की भाषा प्रयोग के ज्ञान से जन्मी भाषा होती है। विज्ञान की भाषा में ज्ञान की स्वायत्तता पैदा होती है। वह भौतिक वास्तविकताओं की भाषा होती है। जैसे-जैसे भौतिक वास्तविकताओं के ज्ञान में वृद्धि होती है वैसे-वैसे शब्दावली में संशोधन और संपादन होता है। जब किसी नई प्रौद्योगिकी का विकास होता है तब उसके साथ उसकी भाषा भी विकसित होती है।

साहित्य की भाषा अंतवृत्तियों की भाषा होने के कारण जटिल और संश्लिष्ट होती है। अमूर्त प्रतीकों के माध्यम से वह कल्पना में बिम्ब या भावचित्र उत्पन्न करती है जबकि विज्ञान की भाषा में प्रत्ययमूलक तार्किकता होती है।

साहित्य और सामाजिक विज्ञानों की भाषा परिस्थितियों से फूटती और अर्थ पाती है। अत: भाषा विज्ञान की तीन प्रक्रियाएँ-अर्थदेश, अर्थ विस्तार और अर्थापत्ति इन पर लागू होती हैं। परन्तु जीवन-जगत् के प्रेक्षण और अनुसंधानों पर आधारित विज्ञान की भाषा की ठोस तार्किकता पर ये प्रतिक्रियाएँ लागू नहीं होती।

हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली के संदर्भ में कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं। विज्ञान की जो संकल्पनाएँ भारत में मौजूद रही हैं उनको व्यक्त करने वाली शब्दावली संस्कृत, हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओं से ग्रहण की गई है। दूसरी और जो संकल्पनाएँ नई अथवा जिनके लिए शब्दावली-उपलब्ध नहीं है उनके लिए अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली ग्रहण की गई है। इन अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को उनके प्रचलित अंग्रेजी रूप में ही अपनाया गया है। हाँ उनका लिप्यंतरण हिन्दी की प्रकृति के अनुसार किया गया है जैसे कार्बनडाईआक्साइड, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कैलोरी, ऐम्पियर, वोल्टमीटर, इलेक्ट्रान, प्रोटोन, रडार, पैट्रोल, रेडियो साइन, कोसाइन, लॉग, टेन्जेन्ट आदि। इसी तरह स्थिरांकों (constants) को भी उनके अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही स्वीकार किया गया है, जैसे.. आदि। प्रतीकों को रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में रखा गया है। रेखागणित में कुछ आकृतियों के लिए भारतीय अक्षर अ, ब, स आदि के प्रयोग के बावजूद त्रिकोणमितीय संबंधों के केवल रोमन अक्षर A,B,C ही प्रयुक्त होते हैं।

वैज्ञानिक हिन्दी की एक अन्य विशेषता है संकर शब्दों का प्रयोग यानी अंग्रेजी से लिए गए शब्द में हिन्दी प्रत्यय लगाना। उदाहरण के लिए एक शब्द है 'आयन'..। हिन्दी में ग्रहण कर लिये जाने पर यह हिन्दी परिवार का सदस्य हो गया यानी इसके रूप उसी ढंग से बनाएँगे जैसे हिन्दी के अन्य शब्दों के। इसलिए 'आयन' को लेने के बाद हमने 'आयोनाइज' अथवा 'आयोनाइजेशन' Ionization रूपों को न अपनाकर 'आयनीकरण' रूप बनाया, ठीक वैसे ही जैसे विभाग से विभागीय या विभागीकरण बनाते हैं। ऐसे मिले-जुले रूप वाले शब्दों को संकर शब्द कहा जाता है।

हिंदी में अपनाए गए विदेशी शब्द अक्सर पुल्लिंग में प्रयुक्त होते हैं। पदों में भी मिली-जुली शब्दावली देखने में आती है जैसे पैट्रोल चालित, सौर स्पेक्ट्रम, अवरक्त फोटोग्राफी, लेंस त्रिवमदर्शी, पार्श्वदर्शी रडार।

वैज्ञानिक भाषा की महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग। वैज्ञानिक हिन्दी में ये संकेत अक्सर रोमन अथवा ग्रीक अक्षरों या चिन्हों के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए नीचे लिखे वाक्यों को देखिए:

''रदरफोर्ड ने इन किरणों के नाम क्रमश: अल्फा (a) किरण, बीटा (b) किरण तथा गामा (y) किरण रखा।''

''प्रयोग के आधार पर पाया गया कि ये कण वस्तुत: द्विआवेश युक्त हीलियम आयन (H++) हैं।''

''पैलेडियम का संकेत Pd, परमाणु क्रमांक-46 और परमाणु भार-106-4 है। इसका गलनांक 1552^0C है और

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

घनत्व 12.0 है।''

6.5.6 प्रशासनिक प्रयुक्ति – कार्यालयी अथवा प्रशासनिक भाषा का प्रयोग प्रशासनिक कार्यों के लिए होता है। प्रशासनिक कार्यों का सम्बंध विभिन्न सरकारी तथा गैर-सरकारी कार्यालयों की आंतरिक प्रशासन व्यवस्था तथा लोक प्रशासन दोनों से होता है। इसलिए कार्यालयी भाषा सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों के साथ-साथ जन-सामान्य से भी संबंधित होती है। यानी जो लोग प्रशासन व्यवस्था कर रहे हैं और जिनके लिए कर रहे हैं उन दोनों का भाषा-व्यवहार इससे जुड़ा होता है। इसलिए सुबोधगम्यता इसकी पहली शर्त होती है। विषय को स्पष्ट सीधे शब्दों से कहा जाना जरूरी होता है। मान लीजिए किसी व्यक्ति को किसी कार्यालय से कोई पत्र प्राप्त होता है। मिसाल के तौर पर उसे नगरपालिका से एक पत्र मिलता है कि उसने पिछले तीन वर्ष से भूमि-भवन कर अदा नहीं किया है। इसलिए अब उसे चेतावनी दी जाती है कि वह कर की राशि तुरन्त ही अदा कर दे नहीं तो उसे भरी मात्रा में जुर्माना अदा करना होगा। अब यह बात सीधे और सरल ढंग से कही जानी चाहिए ताकि उस व्यक्ति को तुरन्त समझ आ जाए। यह हो सकता है कि जिस व्यक्ति के नाम यह पत्र आया है वह ज्यादा पढ़ा-लिखा न हो। इसलिए बहुत कठिन या सांकेतिक शब्दावली का इस्तेमाल होने पर उसे समझने में कठिनाई हो सकती है। वाक्य-विन्यास जटिल होने पर भी उसे अर्थ समझाने में दिक्कत हो सकती है।

कार्यालयी कामकाज में टिप्पण, प्रारूपण, सार लेखन, प्रतिवेदन आदि शामिल हैं। सरकारी पत्राचार के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के पत्र शामिल हैं। जैसे-सरकारी पत्र, अर्द्ध सरकारी पत्र, अधिसूचना, ज्ञापन, परिपत्र, पृष्ठांकन आदि। इनकी भाषा सीधी, सरल और सुसंगत होना अपेक्षित है। इसलिए न तो ठेठ स्थानीय अप्रचलित भाषा का प्रयोग होता है और न ही जटिल अथवा साहित्यिक भाषा का। अनेकार्थता की यहां कोई गुंजाइश नहीं होती।

कार्यालयी भाषा में प्रशासनिक शब्दावली की प्रधानता होती है। इस शब्दावली का मानक रूप वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा समेकित किया जा चुका है। शब्दावली तथा वाक्य-रचना दोनों की दृष्टि से कार्यालयी हिन्दी आम बोलचाल की भाषा तथा साहित्यिक भाषा से भिन्न होती है। नीचे दिए गए वाक्यों पर गौर कीजिए:

''आदेश सभी सम्बद्ध कार्यालयों को पृष्ठांकित कर दिए गए हैं।''

''तदर्थ भर्ती के प्रस्ताव पर विचार किया जा रहा है।''

''आवती दर्ज करके मिसिल फाइल.. में रख ली गई है।''

''यदि श्री..श्रीमती .... को यह नियुक्ति प्रस्ताव स्वीकार्य हो तो वे अपनी स्वीकृति दिनांक ..... तक भेज दें।''

''सक्षम प्राधिकारी का अनुमोदन प्राप्त कर लिया गया है।''

''अनुसंधान सहायकों के कुल पदों में से 75 प्रतिशत सीधी भर्ती द्वारा तथा 25 प्रतिशत पदोन्नति द्वारा भरे जाएँगे।''

''सक्षम प्राधिकारी का अनुमोदन प्राप्त करें।''

इन वाक्यों में प्रयुक्त ''आवती'', ''मिसिल'', ''आवधिक रिपोर्ट'', ''सक्षम प्राधिकारी'', ''अनुमोदन'', ''पदोन्नति'', ''पृष्ठांकित'', ''कार्यान्वयन'', ''बजट प्राक्कलन'', ''तदर्थ भर्ती'' नियुक्ति प्रस्ताव आदि रोजमर्रा की भाषा में नहीं होते। हिन्दी की अन्य प्रयुक्तियों में भी इनका प्रयोग लगभग नहीं होता।

कार्यालयी हिन्दी की शब्दावली पर ध्यान देने पर हम पाते हैं कि इसमें अंग्रेजी और उर्दू से आए शब्दों का बड़ी मात्रा में प्रयोग होता है। इसका कारण यह है कि लम्बे समय से प्रशासन के क्षेत्र में ये भाषाएँ प्रयुक्त होती चली आ रही थी। हिन्दी को इन भाषाओं से परहेज करके रखने का मतलब है उसे कृत्रिम बनाना और इनके शब्द ग्रहण करने का अर्थ है भाषा को

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

स्वाभाविक बनाना। इसलिए कार्यालयी हिन्दी की शब्दावली मिली-जुली शब्दावली है। उदाहरण के लिए नीचे लिखे वाक्यों को देखिए-

''आयोग ने सिफारिश की कि इस मामले में कोई तारीख न तय की जाय।''

''जुर्माने की राशि एक-मुश्त अदा करनी होगी।''

''व्यक्तिगत ब्योरे संलग्न किए जाएँ।''

''अंतरिम रिपोर्ट तैयार कर ली गई है।''

इसके अतिरिक्त संकर शब्दों का प्रयोग भी कार्यालयी हिन्दी में बहुधा होता है। 'शेयरधारक', 'टेंडरदाता', 'पैक्टिसबंदी भत्ता' आदि जैसे शब्द भी अक्सर देखने को मिल जाते हैं।

वाक्य-रचना पर गौर करने पर हम पाएँगें कि कार्यालयी हिन्दी में कर्मवाच्य का खूब प्रयोग होता है जबकि हिन्दी भाषा का मूल स्वभाव कर्तृवाच्य प्रधान हैं। हिन्दी की अन्य प्रयुक्तियों में भी कर्तृवाच्य का ही प्रमुख रूप से इस्तेमाल किया जाता है।

कार्यालयी हिन्दी की एक अन्य विशेषता है पारिभाषिक शब्दावली की विशिष्ट अन्विति। उदाहरण के लिए दो शब्द हैं- 'आज्ञा और आदेश।' आम बोलचाल में इन्हें कभी-कभी समान अर्थ में इस्तेमाल कर दिया जाता है। किन्तु कार्यालय की भाषा में कोई उच्चतर अधिकारी को 'आज्ञार्थ' प्रस्तुत न करके आदेशार्थ ही प्रस्तुत किया जाएगा। इसी तरह अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारी से 'स्पष्टीकरण' माँगेगा 'राय' नहीं। रजिस्टर में कोई बात लिखी नहीं जाएगी, 'दर्ज' अथवा 'प्रविष्ट' की जाएगी।

कार्यालयी हिन्दी की अगली विशेषता है औपचारिकता। कार्यालयी कार्यविधि में अनौपचारिकता न तो अपेक्षित होती है न ही वांछित। अत: अपने उच्चतर अधिकारी, समकक्ष अधिकारी तथा अधीस्थ अधिकारी अथवा कर्मचारी के साथ भाषिक औपचारिकता का निर्वाह किया जाता है।

6.5.7 विधिक प्रयुक्ति - विधि की भाषा बड़ी सतर्क और सुनिश्चित भाषा होती है। उसकी सबसे बड़ी अपेक्षा यह होती है कि जो कुछ भी कहा जा रहा है उसका वही और उतना ही अर्थ निकले जितना अभीष्ट है। इसलिए औपचारिकता, एकार्थकता तथा निश्चित स्पष्टता उसकी विशेषताएँ है। विधि की शब्दावली और वाक्य-विन्यास का एक रूढ़ ढाँचा होता है जिसका पालन अनिवार्य रूप से किया जाता है ताकि उसकी व्याख्या का चाहे जितना भी प्रयास किया जाये फिर भी उसका अभीष्ट अर्थ से भिन्न कोई अर्थ न निकल सके।

विधिक हिन्दी की शब्दावली विधि मंत्रालय के राजभाषा खंड द्वारा निर्धारित कर दी गई है। इसमें संस्कृतनिष्ठ शब्दों की प्रधानता है। इसके अलावा अरबी-फारसी, अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी शामिल किया गया है। भारतीय विधि-व्यवस्था में बहुत से कानून वे ही चले आ रहे हैं जो अंग्रेजी शासन के दौरान बनाए गए थे। इसके अलावा हमारी न्याय व्यवस्था का ढाँचा भी अंग्रेजी शासन के दौरान लागू ढाँचे पर आधारित है। इसलिए हिन्दी विधि शब्दावली मूलत: अंग्रेजी विधिक शब्दों के पर्याय निर्धारित करके ही निर्मित की गई है। ये पर्याय दोनों स्रोतों से आए हैं-संस्कृत से भी और अरबी-फारसी से भी। विधि एवं न्याय जैसे विषयों के विशिष्ट स्वरूप के कारण यह शब्दावली आम बोलचाल की शब्दावली से काफी भिन्न है। नीचे दिए शब्दों पर ध्यान देने पर हम पाएँगे कि इनमें से अधिकांश शब्दों की जानकारी आम शिक्षित व्यक्ति को नहीं होती।

'समीचीन', 'उदेशिका', 'प्राख्यापन', 'उपबन्ध', 'अधिरोपण', 'परिसीमन', 'नाम निर्देशन'।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विधिक हिन्दी की वाक्य रचना की भी कई विशेषताएँ होती हैं। हिन्दी की अन्य प्रयुक्तियों के विपरीत इसके वाक्य अक्सर काफी लंबे होते हैं। लंबे वाक्यों के कारण समुच्चबोधकों का प्रयोग खूब होता है। 'जो', 'जोकि', 'तो', 'यदि', 'अथवा', 'या', 'परंतु', 'किन्तु', 'तथापि', 'यद्यपि', 'ताकि' आदि का प्रयोग यहाँ सामान्य से काफी ज्यादा मिलता है। साथ ही उपवाक्यों का प्रयोग भी बहुतायत में दिखाई देता है। नीचे दिए गए पैराग्राफ को पढ़ने पर हमारी बात स्वत: स्पष्ट हो जाएगी:

''परन्तु यदि कोई उद्घोषणा ... (जो पूर्ववर्ती उद्घोषणा को वापस लेने वाली उद्घोषणा नहीं है...) उस समय जारी की जाती है जब लोकसभा का विघटन हो गया है या लोकसभा का विघटन इस खंड में निर्दिष्ट दो मास की अवधि के दौरान हो जाता है और यदि उद्घोषणा का अनुमोदन करने वाला संकल्प राज्य सभा द्वारा पारित कर दिया गया है, किन्तु ऐसी उद्घोषणा के संबंध में कोई संकल्प लोक सभा द्वारा पारित कर दिया गया है, किन्तु ऐसी उद्घोषणा के संबंध में कोई संकल्प लोकसभा द्वारा उस अवधि की समाप्ति से पहले पारित नहीं किया गया है तो, उद्घोषणा उस तारीख से जिसको लोकसभा अपने पुनर्गठन के पश्चात् प्रथम बार बैठती है, बीस दिन की समाप्ति पर, यदि उक्त बीस दिन की अवधि की समाप्ति से पहले उद्घोषणा का अनुमोदन करने वाला संकल्प लोकसभा द्वारा पारित नहीं कर दिया जाता तो, प्रवर्तन में नहीं रहेगी।''

विधिक हिन्दी में कुछ प्रयोग खास ढंग के होते हैं और बहुधा इस्तेमाल में आते हैं जैसे वाक्य का आरंभ निम्नलिखित वाक्यांशों से होना :

'परन्तु यह और कि इस नियम अधिनियम में किसी बात के होते हुए भी', 'इसमें इसके बाद', 'खंड... की कोई बात', 'जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंधित न करे।'

किसी अवधि या तारीखों आदि के उल्लेख की विशिष्ट पद्धति होती है। सामान्य भाषा में जब कोई चीज या व्यवस्था जब से लागू होती है, उस तारीख का उल्लेख कर दिया जाता है जैसे ''श्री..... को दिनांक ..... से ..... के पद पर नियुक्त किया जाता है।'' किन्तु विधिक भाषा में तारीख के उल्लेख के इस सामान्य तरीके के अलावा अधिक सुनिश्चित तरीका भी होता है, जैसे:

''मिजोरम संघ राज्य क्षेत्र में विहित तारीख से ठीक पहले विद्यमान प्रत्येक स्वशासी प्रदेश उस तारीख से ही उस संघ राज्य क्षेत्र का स्वशासी जिला हो जाएगा।''

6.5.8 संचार माध्यमों से संबंधित प्रयुक्ति – संचार माध्यमों का संबंध समाज के सभी वर्गों के व्यक्तियों से होता है। इसलिए सरलता, सहजता और संप्रेषणीयता संचार माध्यमों की भाषा की पहली शर्त होती है। संचार माध्यमों की भाषा का प्रयोग क्षेत्र भी बड़ा व्यापक होता है। जीवन के विविध पक्ष-समाज, राजनीति, धर्म, उद्योग, व्यापार, व्यवसाय, रोजगार, साहित्य, कला, खेलकूद, विज्ञापन आदि सभी संचार माध्यमों का विषय होते हैं। इन सभी से संबंधित गतिविधियों की सूचना देना, उन पर टिप्पणी करना और उनके संबंध में जनमत् निर्मित करना संचार माध्यमों का कार्य होता है। इसलिए इनकी भाषा में तटस्थता, पैनापन और सुबोधगम्यता अपेक्षित होती है।

संचार माध्यमों के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन और पत्रकारिता आते हैं। रेडियो और टेलीविजन दृश्य-श्रव्य संचार माध्यम हैं। इनके द्वारा मौखिक संप्रेषण किया जाता है जबकि पत्रकारिता द्वारा लिखित संप्रेषण किया जाता है। मौखिक संप्रेषण की कुछ निजी विशेषताएँ होती हैं। सर्वप्रथम तो यह तात्कालिकता की अपेक्षा करता है। तात्कालिकता से तात्पर्य यह है कि बात सुनते ही समझ में आनी चाहिए। सोचने, विचार करने और दोहराने का समय नहीं होता। अत: वक्ता अपनी बात ऐसे शब्दों में और इस ढंग से कहे कि श्रोता उसे तुरन्त समझे। ऐसी स्थिति में सरल शब्दावली और सुस्पष्ट वाक्य-रचना अपेक्षित होती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

लम्बे और जटिल वाक्यों का प्रयोग लगभग वर्जित होता है। भाषा में बोलचाल की सहजता निहायत जरूरी है। दृश्य-श्रव्य माध्यमों द्वारा उन लोगों से भी संप्रेषण स्थापित किया जाता है जिनकी पहुँच अखबार तक नहीं है यानी जो पढ़ नहीं सकते। अत: भाषा का दायित्व यहाँ और ज्यादा बढ़ जाता है।

पत्रकारिता की भाषा में एक अन्य पक्ष विशेष रूप से कार्य करता है। वह यह है कि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में एक तरह की व्यावसायिक होड़ होती है। समाचारपत्र या पत्रिका खबरों को तटस्थता, पैनेपन और प्रभावपूर्णता के साथ ही जितने रोचक ढंग से प्रस्तुत करेगा उतना ही अधिक उसे पाठक वर्ग मिलेगा। यह पक्ष पत्रकारिता की भाषा को काफी हद तक नियंत्रित (Dominate) करता है।

बोलचाल की भाषा से निकटता सभी संचार माध्यमों की भाषा की विशेषता होती है। भाषा में रवानी कायम करने के लिए पत्रकारिता की हिंदी में शब्दावली की काफी विविधता दिखाई देती है। यह विविधता एक ओर तो विषय के स्तर पर होती है ... (यानी विषय के अनुकूल शब्दावली का चयन होता है।....) दूसरी और इस भाषा में तत्सम-तद्भव शब्दों से लेकर लोक भाषाओं के शब्दों तथा उर्दू, अंग्रेजी आदि के शब्दों का मिला-जुला रूप दिखाई देता है। उदाहरण के रूप में हम नीचे दिये गये वाक्यों को देख सकते हैं।

''दूसरे नजरिये वाले लोगों का मानना है कि नीलकंठ की भाँति गरल प्राशनकार सुप्रीम कोर्ट ने अपनी जनता-इस मामले में भोपाल के गैस पीड़ितों-को लम्बी मुकदमेबाजी से बचने का फैसला दिया।''

''यथार्थ को फंतासी का पुट देने वाले उपन्यासकार की रचना ने विसंगतियों का पिटारा खोल दिया।''

भाषा में सहजता लाने के लिए कहावतों और मुहावरों का प्रयोग खूब किया जाता है। 'वही ढाक के तीन पात' या 'दो-दो हाथ करने को मुस्तैद' जैसे प्रयोग खुब देखने में आते हैं। उदाहरण के लिए नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित पंक्तियों पर ध्यान दीजिए:

''रांची की अदालतों में किरानियों का सिक्का चलता है।''

''छ: वर्ष के किए-कराए पर छ: दिनों के राजनीतिक शासन ने पानी फेर दिया।''

''लेकिन इससे रामलाल के दामन पर कुछ दाग तो लगे ही हैं।''

हिन्दी मुहावरों के अलावा अंग्रेजी मुहावरों का हिन्दीकरण भी पत्रकारिता में खूब देखने में आता है। 'एक ही नाव पर सवार' ऐसा ही रूपांतरित मुहावरा है। अन्य उदाहरणों के लिए नीचे रेखांकित वाक्यांश देखिए :

''गैर कम्युनिस्ट विपक्षी राजनीति के सितारों पर जमावड़ा 1988 पर संशय के बादलों से आँख मिचौली खेलता रहा।''

''सीमा संबंधी नाजुक मामलों पर दोनों देश यद्यपि बातचीत के आठ दौर चला चुके हैं मगर उनसे यह तक संकेत नहीं मिल सका कि बर्फ पिघलने की संभावना है भी या नहीं।''

पत्रकारिकता की हिन्दी की एक अन्य विशेषता है संक्षिप्तियों का भरपूर प्रयोग जैसे - 'इंका', 'भाकपा', 'माकपा', 'बंशेबा', ... 'एग्रविका'..... आदि। इस तरह के प्रयोग हिंदी को अन्य प्रयुक्तियों में देखने को नहीं मिलते। रेडियो और दूरदर्शन पर भी इनका प्रयोग लगभग नहीं होता।

कर्मवाच्य का सामान्य से अधिक प्रयोग इसकी अन्य विशेषता है। 'मामले की छानबीन के लिए एक स्पेशल टीम बनाई

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

गई।' 'आयकर विवरणी दाखिल करने की नई तारीख तय की गई' आदि जैसे प्रयोग इसमें आमतौर पर मिलते हैं। इसके अलावा वाक्यों का शुरू करने का एक खास ढंग होता है। किसी मामले के विषय में सूचना अक्सर निम्नलिखित शब्दों से शुरु की जाती है–

'बताया जाता है', 'सूचना मिली है', 'विश्वस्त सूत्रों से पता चला है' आदि।

अखबारी हिन्दी में संप्रेषणीयता को बढ़ाने के लिए अक्सर पौराणिक ऐतिहासिक प्रतीकों या उद्धरणों का प्रयोग किया जाता है।

''इंका मुहिम की बाट खोजने में देवीलाल परेशान, एक ओर तो वे विपक्षी नेताओं के महाभारत में भीष्म पितामह की भूमिका निभा रहे हैं, दूसरी ओर अपने ही राज्य में उनकी मुख्यमंत्री छवि पर उनके बेटों के कारनामों का साया मंडरा रहा है।''

''जिस तरह बौद्धों का जन्म चक्र निर्विकार, अंतहीन और मायावी संसार में परिक्रमा करता रहता है उसी तरह देश की समस्याएँ भी हर गर्मियों में घूम फिर कर उसी जगह पहुँच जाती दिखती हैं।''

हिन्दी पत्रकारिता, खासतौर से अखबारों, की भाषा पर अंग्रेजी के वाक्यों की छाया भी जहाँ-तहाँ दिखाई देती है। इसका कारण है कि अधिकांश समाचार एजेंसियाँ अंग्रेजी में समाचार देती हैं और ज्यादातर हिन्दी समाचारपत्र अंग्रेजी समाचारपत्र घरानों से ही निकलते हैं। अंग्रेजी में मिले समाचारों को हिन्दी में प्रस्तुत करते समय अक्सर थोड़ा बहुत अंग्रेजी प्रभाव बना रहता है। इससे कभी-कभी वाक्य-विन्यास अटपटा हो जाता है। वाक्यों में शब्दक्रम अस्वाभाविक हो जाता है या अंग्रेजी मुहावरा हिन्दी में प्रस्तुत हो जाता है। हमारी बात नीचे दिए उदाहरणों से स्वतः स्पष्ट हो जाएगी :

''फिर भी इस जीत ने यूनाइटेड नेशनल पार्टी की आर्थिक और सामाजिक नीतियों को जारी रखने पर मोहर लगा दी।''

''पेइचिंग में मौके से भेजी रिपोर्ट''

''मुख्यमंत्री नंदमूरि तारक रामाराव ने पिछले पखवाड़े एक अनूठा इतिहास रच दिया।''

''प्रेमदास भारतीय शांति सेना की वापसी के लिए कटिबद्ध हैं लेकिन राजीव गांधी चाहते हैं कि वापसी चरणों में हो।''

समाचारपत्रों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग होता है-हैडलाइन्स। हैडलाइन्स को देखकर ही पाठक अगली सामग्री को पढ़ने को आकृष्ट होता है। इसलिए हैड-लाइन्स ऐसी लिखी जाती है कि तुरन्त पाठक का ध्यान खींचे। पूरे समाचार का कुछ शब्दों में परिचय देने के कारण हैडलाइन्स में कभी-कभी व्यंग्य-वक्रोक्ति का सहारा भी लिया जाता है जैसे 'मूपनार रातों-रात हीरो से जीरो', '12वां फिल्मोत्सव बासी भात की नुमाइश', 'जुल्म कोतवाल का तो कौन सुने फरियाद' आदि।

6.5.9 विज्ञापनी प्रयुक्ति – विज्ञापनों में हिन्दी की चर्चा करने से पहले हमें यह विचार करना होगा कि अधिकांश विज्ञापन हमारे पास संचार माध्यमों के जरिये पहुँचने के बावजूद विज्ञापनी भाषा को संचार माध्यमों से अलग प्रयुक्ति क्यों माना जाता है। सबसे पहली बात तो यह है कि विज्ञापनों में भाषा का इस्तेमाल एक खास प्रयोजन से किया जाता है। यह प्रयोजन यद्यपि सूचना प्रदान करता है, किन्तु इसका उद्देश्य केवल सूचना देकर ही पूरा नहीं हो जाता। विज्ञापन के माध्यम से वस्तु उपभोक्ता तक अथवा उपभोक्ता वस्तु तक पहुँचता है। व्यावसायिक विज्ञापनों के अतिरिक्त अन्य प्रकार के विज्ञापन भी इसी प्रयोजन को सिद्ध करते हैं। मिसाल के तौर पर रोजगार संबंधित विज्ञापनों से किसी संस्था को उचित कार्मिक और व्यक्ति को उचित काम मिल जाता है। रेडियो, टेलीविजन और पत्र-पत्रिकाओं के अलावा विज्ञापन के अन्य माध्यम भी होते हैं। जैसे होर्डिंग, पोस्टर, सिनेमा, पैम्फलेट आदि। इसलिए भी विज्ञापनी हिन्दी को संचार माध्यमों में संबंधी प्रयुक्ति के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विज्ञापनों में हिन्दी की कोई विशिष्ट तकनीकी शब्दावली नहीं होती। आम बोलचाल की शब्दावली के प्रयोग के बावजूद यह सामान्य बोलचाल की भाषा नहीं होती। विज्ञापन का उद्देश्य होता है पढ़ने, देखने या सुनने वाले का ध्यान आकृष्ट करना। अत: वाक्य-रचना और शब्द-विन्यास में सदैव नये-नये प्रयोगों की कोशिश रहती है। विज्ञापन कई प्रकार के होते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख हैं-

1. व्यावसायिक विज्ञापन
2. रोजगार के विज्ञापन
3. वर्गीकृत विज्ञापन
4. वैवाहिक विज्ञापन
5. क्रय-विक्रय संबंधी विज्ञापन
6. संपत्ति ..मकान-दुकान आदि ... किराए पर लेने-देने के विज्ञापन।

व्यावसायिक विज्ञापन का उद्देश्य पाठक या दर्शक या श्रोता का ध्यान इस ढंग से आकृष्ट करना होता है कि उसके मन में वस्तु को पाने और इस्तेमाल करने की ललक पैदा हो जाये। इसमें भाषा के अर्थ से अधिक बल भाषा से पड़ने वाले प्रभाव पर दिया जाता है। इसलिए इस भाषा की विशेषताएँ होती हैं:

1. आकृष्ट करने की क्षमता
2. सुसंप्रेषणीयता
3. स्मरणीयता
4. प्रभविष्णुता

विज्ञापन उत्पादक और उपभोक्ता के बीच विश्वसनीय संबंध स्थापित करता है। उत्पादक न केवल किन्हीं वस्तुओं का निर्माता होता है वरन् किन्हीं सेवाओं को प्रदान करने वाला व्यक्ति या संस्था भी होता है,

जैसे-बैंक, बीमा आदि संस्थाएँ। विज्ञापन चाहे वस्तुओं का हो या सेवाओं का इसकी भाषा में उपर्युक्त गुण नितांत अपेक्षित होते हैं।

व्यावसायिक विज्ञापनों में प्रयुक्त हिन्दी पर गौर करने पर हम पायेंगे कि यह भाषा अक्सर चौंकाने वाली और अतिश्योक्तिपूर्ण होती है।

''गेल्वेनाइज्ड चादरों की छतें-जो जीवन भर साथ निभाएँ व स्वस्थ रखें।''

''पंखों में चली आएँ-ताजी ठंडी हवाएँ

ओरिएंट फैन्स
ये ताजी हवाएँ, जीवन पर आपकी हो जाएँ''

ग्राहक की याददाश्त पकड़ने के लिए विज्ञापनों में तुकबंदी का प्रयोग खूब होता है:

''धूम मचा दे.....
रंग जमा दे.....'' ..पान पराग

''आयोडेक्स मलिए

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

काम पर चलिए''

''क्रैक जैक कुरमुराइए।
क्रैक जैक ही खाइए

हर चीज के संग जगमगाइए''

''दोहरा धार असरदार''
(नया सेवन ओ क्लॉक एजटेक ब्लेड)

विज्ञापनों में भाषा के साथ-साथ चित्रों और रंगों से भी काम लिया जाता है। इनमें शब्दों के साथ-साथ तस्वीर भी बोलती है। तस्वीर के साथ दी गई शीर्ष पंक्तियाँ सूत्र में होती हैं जो कहती कम व्यंजित ज्यादा करती हैं जैसे-

''जोड़ी अनोखी मेल अनोखा
(विल्स फिल्टर)

फिल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल''
''आओ मिलकर घर-घर खेलें

मजबूत रहे यह बंधन जीवन-भर
(सुपरप्लस जेपी सीमेंट'')

''जीवन भर साथ निभाने वाले मुश्किल से मिलते हैं
केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर, इसकी ठंडक .....बेमिशाल''

''अब रुकने का नाम नहीं
व्यवसायी यात्री की बेहतर पसंद - एयर इंडिया''

ध्यान आकृष्ट करने के लिए काफी नकारात्मक या चौकाने वाले वाक्यों का प्रयोग होता है, जैसे-

''ऑनिडा 21
पड़ोसियों की जले जान, आपकी बढ़े शान

क्या नए ओनिडा पर प्रतिबंध
लगाया जाए''

पाठक को सुझाव देने की प्रवृत्ति इस भाषा में होती है:

''आज ही से सरिता पढ़िए
अपने घर को सर्वोत्तम मित्र दीजिए''

''समय के साथ कदम बढ़ाइए.....मॉडर्न अपनाइए''
''टेलेरामा मैगेनम .... हाई-गेन टीवी।
यकीन कीजिए-यही है चैम्पियनों का चैम्पियन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अपने करीबी डीलर के पास इसके दमखम की जाँच कीजिए''

''अब आप ही चुनिए
सर्वोत्तम ही खरीदिए
ए सी सी सीमेंट''

रेडियो अथवा दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों को गायन और अभिनय द्वारा सजीव बनाया जाता है। कभी-कभी तो इनका गायन इतना अच्छा होता है कि श्रोता का मन मोह लेता है। कभी-कभी चित्र या अभिनय के विरोधाभास द्वारा दर्शक को आकृष्ट किया जाता है।

विज्ञापनों की भाषा में कभी-कभी शब्दों की वर्तनी अथवा वाक्य-रचना का मनमाना प्रयोग भी देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए नीचे दिए गये विज्ञापनों में मोटे अक्षरों में छपे शब्दों पर ध्यान दीजिए:

''सफेदी की चमकार बार-बार लगातार रिन से''

''दोहरा धार असरदार''

''छतें जो चिटकें नहीं
गैल्वेनाइज्ड चादरों की छतें''

''मार्टन ही मजा
मार्टन का स्वाद

दादा-दादी के मन भाए''

रोजगार संबंधी विज्ञापनों तथा वर्गीकृत विज्ञापनों की भाषा अभिधापरक और स्पष्ट होती है। संबद्ध संस्था अपनी अपेक्षाओं और शर्तों का स्पष्ट उल्लेख करती है। शब्दों का कोई घुमाव-फिराव नहीं होता।

वर्गीकृत विज्ञापनों के माध्यम से निविदाएँ मांगी जाती हैं जिनमें ब्यौरेबार विवरण दिया जाता है। इनकी भाषा में कर्मवाच्य की प्रधानता होती है। इनका एक निश्चित फार्मेट होता है जिसमें सारी सूचनाएँ दी जाती है। इन दोनों प्रकार के विज्ञापनों के उदाहरण क्रमश: नीचे दिए गये हैं-

रोजगार संबंधी विज्ञापन

आवश्यकता है - फौरमैन ... (गीजर) - दिल्ली

राष्ट्रीय स्तर के जाने-माने प्रोफेशनल व्यापारिक संगठन की एक कंपनी को गीजर निर्माण के क्षेत्र में 5 से 10 वर्षों का अनुभव प्राप्त कुशल फोरमैन की आवश्यता है। प्रार्थी को गीजर कॉम्पोनेन्ट डवलपमेंट, असेम्बली, पेटिंग व टेस्टिंग की पूरी जानकारी होनी आवश्यक है। यह पद एक कुशल व जिम्मेदार व्यक्ति के लिए हैं, जिसको प्रॉडक्शन, क्वालिटी व मेण्टेनेन्स की पूरी जिम्मेदारी दी जाएगी। जो व्यक्ति 2500 रुपये प्रतिमाह से कम पर कार्यरत हैं, उन्हें प्रार्थना पत्र भेजने की आवश्यकता नहीं है। प्रार्थी की आयु 25 से 30 वर्ष के बीच हो।

प्रार्थना-पत्र सात दिनों के भीतर निम्नलिखित पते पर भेजें:

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

बॉक्स नं. 133 जनसत्ता,

नई दिल्ली – 110002

वर्गीकृत विज्ञापन

निविदा सूचना

राजस्थान सरकार

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, नगरवृत्त जोधपुर

क्रमांक:जनस्वा..जी-वृत्त.. दिनांक

निविदा सूचना

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्न लिखित सामान की खरीद हेतु मोहरबंद निविदाएँ निर्धारित प्रपत्र में नीचे लिखी दिनांक को सायं 3.30 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। निविदाएँ उसी दिन 4 बजे उपस्थित निविदाताओं के समक्ष खोली जाएँगी। निर्धारित प्रपत्र एवं विवरण निम्न हस्ताक्षरकर्त्ता के कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस की निविदा प्रारूप राशि (रोकड़ अथवा मनीआर्डर द्वारा) जमा करवा कर प्राप्त किया जा सकता है।

इस तरह हम देखते हैं कि आधुनिक जीवन के विविध संदर्भों के अनुरूप हिंदी भाषा की अनेक प्रयुक्तियाँ ... विकसित हुई हैं। ये प्रयुक्तियाँ जितनी अधिक और व्यापक होंगी भाषा उतनी ही ज्यादा समक्ष और समर्थ बनेगी। कारण, किसी भाषा में चाहे कितना ही उच्चकोटि का ललित साहित्य अथवा सृजनात्मक साहित्य क्यों न मौजूदा हो उस भाषा का सर्वांगीण विकास तब तक नहीं हो पाता जब तक समाज की विभिन्न जरूरतों के लिए प्रयुक्त न किया जाए। विविध प्रकार के ज्ञान-विज्ञान और जीवन-संदर्भों से जुड़कर ही भाषा अपनी सामर्थ्य का विकास करती है। जिन-जिन क्षेत्रों में समाज का विकास होता जाता है उन-उन क्षेत्रों में संप्रेषण और अभिव्यक्ति माध्यम के रूप में भाषा विकसित होती जाती है। हिंदी भाषा का प्रयोग हम जितने अधिक क्षेत्रों में करेंगे उतने ही ज्यादा उसके प्रयोजनमूलक विकसित होंगे। किंतु यदि हम उसे किन्हीं प्रयोजनों के लिए अविकसित अथवा अनुपयुक्त लगेंगे तो उन क्षेत्रों में उसका विकास स्वत: ही रूक जाएगा। न तो उस क्षेत्र की शब्दावली हिंदी में विकसित होगी न ही मुहावरा। उस क्षेत्र विशेष के कार्यकलापों को व्यक्त करने की क्षमता उसमें आयेगी ही नहीं।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित भाषा प्रयुक्तियों की विशेषताएँ पाँच-पाँच पंक्तियों में बताइए-

1. साहित्यिक भाषा

.....

.....

2. विज्ञान की भाषा

.....

.....

3. सामाजिक विज्ञानों की भाषा

.....

.....

4. संचार माध्यमों की भाषा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

.....

.....

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित भाषा प्रयुक्तियों के दो-दो उदाहरण दीजिए:

1. साहित्यिक प्रयुक्ति

.....

.....

2. वाणिज्य और व्यापार संबंधी प्रयुक्ति

.....

.....

3. प्रशासनिक प्रयुक्ति

.....

.....

4. विज्ञापनी प्रयुक्ति

.....

.....

6.6 अनुवाद की दृष्टि से प्रयुक्तियों का महत्त्व

आप पढ़ चुके हैं कि सामाजिक स्थिति, विषय क्षेत्र, व्यवसाय, संप्रेषण के तरीके आदि के आधार पर भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियाँ होती हैं। आपके मन में सहज सवाल उठा होगा कि अनुवाद को पढ़ते समय भाषा प्रयुक्ति के विषय में पढ़ने या जानने की क्या आवश्यकता है। आपका सवाल उचित है। प्रयुक्ति के विषय में जानकारी मूलत: भाषा विज्ञान का विषय है। लेकिन आप जानते हैं कि अनुवाद अपने आप में भाषा विज्ञान की कई प्रविधियों को समेटे हुए हैं। दो भाषाओं की तुलना और पुन: सृजन की प्रक्रिया में यह अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान और व्यतिरेकी भाषा विज्ञान को अपनाता ही है, भाषा के विविध सामाजिक संरचनात्मक संदर्भों की भी जाँच पड़ताल करता है। अत: भाषा के विविध रूपभेदों को पहचानना अनुवादक के लिए आवश्यक होता है। बार-बार इस बात पर जोर दिया जाता रहा है कि संदर्भ-प्रसंग समझे बगैर सही अनुवाद नहीं किया जा सकता क्योंकि उसके बगैर आप लक्ष्य भाषा में न तो सही पर्याय का चयन कर सकते हैं और न ही कथ्य को प्रस्तुत करने का सही ढंग अपना सकते हैं।

ऊपर भाषा प्रयुक्तियों के विषय में पढ़ते समय समझ गए होंगे कि प्रयुक्तियाँ वस्तुत: भाषा के विभिन्न प्रयोग संदर्भ ही हैं। अनुवाद की प्रक्रिया में इन प्रयोग संदर्भों अथवा प्रयुक्तियों को सही-सही पहचानना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक प्रयुक्ति के अनुरूप अनुवाद करना भी है। कहने का तात्पर्य है कि जिस सामग्री का अनुवाद आप कर रहे हैं वह किस विषय अथवा विषय क्षेत्र से संबद्ध है, उस विषय क्षेत्र में स्रोतभाषा का स्वरूप कैसा है और लक्ष्य भाषा में उस विषय क्षेत्र की भाषा कैसी है इस बात के प्रति जागरूक होना आपके लिए नितांत आवश्यक है। अन्यथा पहले तो आप कथ्य का सही अर्थ समझने में असमर्थ रहेंगे और सही अर्थ की समझ के अभाव में उपयुक्त अनुवाद तो असंभव ही है। किसी तरह यदि कथ्य का अर्थ समझ भी आ गया तो लक्ष्य भाषा में शब्दों के उपयुक्त पर्याय आप तब नहीं खोज पाएँगे जब तक आपको सही प्रयुक्ति की पहचान नहीं है। जब अनुवादक में यह सूझ-बूझ पैदा हो जाती है कि किस शब्द के लिए किस विषय में किस संदर्भ में कौन पर्याय इस्तेमाल

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

किया जाना चाहिए तो वह न केवल कोश में दिए गए विभिन्न पर्यायों में से सही पर्याय चुन लेता है बल्कि उपयुक्त पर्याय न मिल पाने पर अटपटा समझौता नहीं करता वरन् लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति शैली को टटोलता है और लक्ष्य भाषा में सहज ढंग से कथ्य को पुन:प्रस्तुत करने का यत्न करता है। किसी शब्द के विभिन्न विषयों अथवा संदर्भों में विभिन्न अर्थ के उदाहरणस्वरूप नीचे Term शब्द के विभिन्न प्रयोगों को देखिए:

1. He asked them what they understoond by the term "radical".

1-A "Habeas Corpus" is a legel term.

2. The press termed the visit a triumph.

3. None of you have any lectures next term.

3-A It was the first week of the term/spring term.

4. A mid term by - election can not be avoided.

5. The policy is near the end of its term.

6. Such a policy would be economically and in the long term, socially also highly disadvantageous. What are your plans over the long term? These are only short term solutions.

7. We will not accept these terms. They would never surrender this territory, on any terms whatsoever.

8. The question of finance was not with in our terms of reference.

8-A. The opposition welcomed the inquiry, though called for wider terms of reference.

9. You need to be on friendly terms with him.

10. They are trying to compete with us on unfair terms.

10.A. They decided to let women be conscripted on the same terms as men.

11. They are not on speaking terms.

1. उसने उनसे पूछा कि ''आमूल परिवर्तनवादी'' **शब्द** से वे क्या समझते हैं।

1-ए. ''बंदी प्रत्यक्षीकरण'' एक विधिक **शब्द** है।

2. अखबारों ने दौरे/यात्रा को विजय **कहा/बताया।**

3. आप में से किसी का भी अगले **सत्र** में कोई भाषण नहीं है।

3-ए. सत्र/वसंतकालीन सत्र का पहला सप्ताह था।

4. मध्यावधि चुनाव अवश्यंभावी है।

5. पालिसी की **अवधि/मियाद** समाप्त होने वाली है।

6. ऐसी नीति आर्थिक दृष्टि से तो बहुत हानिकर/अलाभकारी है आगे चलकर सामाजिक दृष्टि से भी अत्यधिक हानिकार होगी। आपकी **दीर्घावधि** योजनाएँ क्या है ? ये तो केवल **अल्पावधि** सुझाव हैं।

7. हम ये **शर्तें** स्वीकार नहीं करेंगे। वे किसी भी **शर्त** पर इस क्षेत्र को नहीं छोड़ेंगे।

8. वित्त-व्यवस्था/अर्थ-प्रबंध हमारे विचारणीय **विषयों** में शामिल नहीं था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

8-ए. विपक्ष ने जाँच-पड़ताल का स्वागत किया, हालाँकि उन्होंने इस जाँच पड़ताल के विचारणीय **विषयों** को विस्तृत बनाए जाने की माँग की।

9. तुम्हें उससे मित्रतापूर्ण **संबंध** रखने चाहिए।

9.ए. उनके आपसी **संबंध** अच्छे रहे।

10. वे अनुचित **शर्तों** पर हमसे मुकाबला करने की कोशिश कर रहे हैं।

10-ए. उन्होंने निर्णय लिया कि सेवा में स्त्रियों की जबरन/अनिवार्य भर्ती उन्हीं **शर्तों** पर करेंगे जिन शर्तों पर पुरुषों की अनिवार्य भर्ती की जाती है।

11. उनकी आपस में **बोल-चाल** बंद है/बोल-चाल नहीं है।

यहां आपने 'Term' शब्द का विभिन्न संदर्भों में प्रयोग देखा। भाषा के संदर्भ में term के अर्थ हैं- ''शब्द'' और ''कहना'' (वाक्य 1,2,3 में)। शिक्षा के संदर्भ में इसका अर्थ है- ''सत्र'' (वाक्य 3,4)। समय के संदर्भ में इसका तात्पर्य अवधि से (वाक्य 4,5,6), जैसे मध्यावधि चुनाव, पालिसी की अवधि..मियाद, दीर्घावधि, छोटी अवधि की योजनाएँ। नीतियाँ, राजनीति, विधि, सेवा आदि के संदर्भ में इसका अर्थ है ''शर्त'' (वाक्य 7,8), समझौते की शर्तें, सेवा की शर्तें आदि। प्रशासनिक तथा औपचारिक संदर्भ में इसका अर्थ ''मुद्दे''/''विषय'' होता है (वाक्य8-ए। Terms of reference विचारणीय विषय .. वाक्य 8,8ए) पारस्परिक व्यवहार के संदर्भ में इसका अर्थ ''संबंध'' होता है (वाक्य 9,10,11)।

अनुवाद के दौरान इसके विभिन्न अर्थों में से सही अर्थ चुनने के साथ ही आपको वाक्य विन्यास भी विषयानुकूल भाषा में करना होता है। आपको सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि आप भाषा के प्रति संवेदनशील हों, उसके मर्म को पहचानें, कुशलता और स्पष्टता से, फालतू शब्दों का प्रयोग किए बिना, भाषा का अच्छी तरह उपयोग कर सकें। किस विषय क्षेत्र में कैसी शब्दावली और शैली का प्रयोग उचित है यह विवेक आप अपने भीतर पैदा करें। सही शब्दों का सटीक उपयोग करने की सामर्थ्य आप में होनी ही चाहिए।

बोध प्रश्न 4

अनुवाद में भाषा प्रयुक्ति के महत्त्व पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.7 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि भाषा प्रयुक्ति से क्या तात्पर्य होता है। प्रयुक्ति के निर्धारक तत्त्व कौन से होते हैं तथा प्रयुक्तियाँ किन आधारों पर निर्मित होती हैं। इसके अलावा इस इकाई में आपके सामान्य बोलचाल, साहित्यिक, वैज्ञानिक, वाणिज्य-व्यापार संबंधी, प्रशासनिक, सामाजिक विज्ञान संबंधी, विधिक, संचार माध्यम संबंधी और विज्ञापन संबंधी प्रयुक्तियों

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

संवर्ग-3 : अनुवाद समस्याएँ एवं उपकरण

इकाई - 7 अनुवाद की समस्याएं

संरचना

7.0 प्रस्तावना

7.1 उद्देश्य

7.2 विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुवाद

7.3 वाणिज्य के क्षेत्र में अनुवाद

7.4 प्रशासनिक अनुवाद

7.5 विधि के क्षेत्र में अनुवाद

7.6 जनसंचार माध्यमों में अनुवाद

7.7 विज्ञापनों का अनुवाद

7.8 सारांश

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में आप भाषा-प्रयुक्ति के विविध क्षेत्रों के विषय में पढ़ चुके हैं और भाषा-प्रयुक्ति की अवधारणा को भली-भाँति जान गए हैं। आपने यह भी जान लिया है कि भाषा-प्रयुक्ति का प्रमुख आधार शब्दावली और शैली होता है। अनुवाद के संदर्भ में प्रयुक्ति के महत्त्व के विषय में भी आपने जानकारी हासिल की है। अब आपको यह जानना चाहिए कि अनुवाद की प्रक्रिया को भाषा प्रयुक्ति किस तरह प्रभावित करती है।

जब यह कहा जाता है कि अनुवादक को दो भाषाओं का ज्ञान अपेक्षित है तो इसका तात्पर्य है कि उसे स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के विविध प्रयोग क्षेत्रों की जानकारी हो। कोश से सही पर्याय वह तभी चुन सकेगा जब वह भाषा प्रयोग क्षेत्रों का विवेक रखेगा। प्रयोग क्षेत्र के अनुरूप अभिव्यक्ति शैली अपनाए बिना उसका अनुवाद सफल नहीं हो सकता। स्रोत भाषा में प्रस्तुत सामग्री जिस विषय क्षेत्र अथवा भाषा प्रयुक्ति से संबंधित हो उसी के अनुरूप अनुवाद उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना होगा। तभी वह अनुवाद उस विषय विशेष का बन सकेगा।

प्रस्तुत इकाई में भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों की विशेषताओं के अनुरूप उनके अनुवाद की अपेक्षाओं और विशेषताओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। हर प्रयुक्ति की भाषिक विशिष्टता के अनुरूप उसकी शब्दावली और शैली को लक्ष्य भाषा में खोजने का प्रयास विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से किया गया है।

7.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

विभिन्न प्रयुक्ति क्षेत्रों के अनुवाद की बारीकियों को समझ सकेंगे,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अलग-अलग प्रयुक्ति क्षेत्रों में अनुवाद की अलग-अलग अपेक्षाओं के विषय में बता सकेंगे।

7.2 विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुवाद -

मूलभूत विज्ञान के अंतर्गत मोटे रूप से चार विषय आते हैं- भौतिकी, गणित, रसायन और प्राणिविज्ञान। वनस्पतिविज्ञान, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी, कंम्प्यूटर विज्ञान, कृषि आदि विषय इन्हीं से निकले हैं। विज्ञान प्रणाली के तीन प्रमुख गुण माने जाते हैं - तर्क, प्रामाणिकता और वस्तुनिष्ठता।

1. वैज्ञानिक नियम तर्क पर आधारित होते हैं। उनमें कार्य-कारण संबंध होता है। दूसरे वैज्ञानिक नियम प्रमाण-साक्ष्य पर आधारित होते हैं। ये वास्तविक तथ्यों, प्रयोगों और विश्लेषण पर आधारित होते हैं। इसीलिए वैज्ञानिक निष्कर्ष प्रमाणिक माने जाते हैं, व्यक्तिनिष्ठ नहीं। तीसरे, वैज्ञानिक निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ होते हैं, व्यक्तिनिष्ठ नहीं। ये देश-काल से बाधित नहीं और न ही ये वैज्ञानिक के व्यक्तिगत दृष्टिकोण अथवा पसंद पर आधारित होते हैं। इसी से वैज्ञानिक नियमों में एक प्रकार की सार्वभौमिकता का गुण आता है।

2. विज्ञान-प्रणाली के ये तीनों गुण किसी न किसी वैज्ञानिक भाषा-रूप, शैली शब्दावली में प्रतिबिंबित होते हैं। जहाँ तक भाषा-रूप और शैली का प्रश्न है, वैज्ञानिक भाषा के वाक्यों में अधिक कसाव होता है, शब्दों का चयन बहुत सावधानी से किया जाता है जिससे किसी प्रकार के अनावश्यक या दोहराव वाले शब्दों का प्रयोग न हो। लाक्षणिक के बजाय अभिधात्मक तथा एकार्थी अभिव्यक्तियों का प्रयोग होता है। फलस्वरूप वैज्ञानिक भाषा के वाक्य अर्थ-गर्भित होते हैं और उनमें बहुत अधिक परिवर्तन नहीं होता। उदाहरण के लिए,

"Mars is different from our planet in many other ways. In most places and for most of the time it is extremely cold, and the earths strongest winds would be quite calm in comparison with the winds which can blow in the atmosphere of Mars?

हिंदी अनुवाद - ''मंगल ग्रह हमारे ग्रह से कई तरह से भिन्न है। इसका अधिकांश भाग अधिकांश समय तक अत्यधिक ठंडा रहता है यहाँ पर इतनी तेज हवाएँ चलती हैं कि धरती की सर्वाधिक तेज हवाएँ भी मंगल ग्रह के वायुमंडल में चलने वाली हवाओं की तुलना में काफी धीमी और शांत होती है।''

3. विज्ञान के नियम सार्वभौम या नित्य होते हैं। इसलिए इनको व्यक्त करने के लिए भाषा में सामान्यत: नित्यतावाची क्रियाओं का प्रयोग होता है। जैसे ''है'', ''होता है'', ''ता है''। वैज्ञानिक भाषा में नियमों तथा पदार्थों के नित्य गुण-धर्मों का विवेचन करने के लिए इसी शैली का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

''इस वर्ग में कीटों का पिछला भाग प्राय: लंबा तथा अग्र भाग छोटा होता है। इनके मुँह में विष ग्रंथियाँ होती हैं। जब ये कीट किसी मनुष्य को काटते हैं तो ये विष ग्रंथियाँ क्रियाशील हो जाती है और इनसे जलन पैदा होती है।''

वैज्ञानिक विषयों का अनुवाद करते समय इस तर्कपूर्ण शैली का और नित्यवाची क्रियाओं का प्रयोग ही उपयुक्त रहता है।

4. विज्ञान अपनी विषय-वस्तु को सूक्ष्मता और स्पष्टता के साथ व्यक्त करने के लिए आरेखों, विशेष-चिह्नों तथा चित्रों का प्रयोग करता है। ये युक्तियाँ शाब्दिक व्याख्या की पूरक हैं। उदाहरण के लिए, शाब्दिक व्याख्या से एक त्रिकोण या वर्ग के बारे में जितनी सूचना मिलती है उससे कहीं अधिक इस आरेखों से इनकी अवधारणा स्पष्ट होती है। जैसे ''त्रिकोण'' और ''वर्ग'' के लिए यह आरेख -

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इसी प्रकार के कुछ अन्य चिह्न हैं:

→ :
< :.
> ~>

5. विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध विषयों का अनुवाद करते समय पहला प्रश्न उन विषयों की जानकारी के बारे में उठता है। अर्थात् चिकित्सा, वनस्पति विज्ञान, भौतिकी, रसायनिकी, इंजीनियरी जैसे विषयों का अनुवाद करने के लिए क्या अनुवादक का डॉक्टर, इंजीनियर, रासायनिक, वनस्पतिशास्त्री होना जरूरी है ? अगर ऐसा जरूरी हो तो हर विषय का अनुवादक अलग होगा। इसके अलावा, वह विषय-विशेषज्ञ आखिर अनुवाद क्यों करना चाहेगा और फिर उसकी भाषिक-क्षमता की स्थिति क्या होगी ? अनुवादक के लिए किसी विज्ञान या प्रौद्योगिकी का विशेषज्ञ होना जरूरी नहीं होता। जरूरी यह होता है कि वह उस ''पाठ'' को समझता हो और वह उस सामग्री में प्रयुक्त शब्दावली का जानकार (भले ही अस्थायी रूप से) हो।

6. विज्ञान में भाषा अवधारणा-केन्द्रित होती है और प्रौद्योगिकी में वस्तु-केन्द्रित। उदाहरण के लिए उत्पादन विषयक इंजीनियरी की सामग्री का अनुवाद करते समय .... आदि मूल शब्दों, उनके अनूदित रूपों, उनके द्वारा वाच्य वस्तुओं की बनावट, उनकी कार्य-प्रणाली और परिणामों को स्पष्ट बोध के साथ उनके कार्य-बोधक शब्दों ... (क्रियाओं) को जानना जरूरी होगा।

7. विज्ञान की भाषा के स्तर : विज्ञान की भाषा का इस्तेमाल कुछ क्षेत्रों में सामान्यत: चार स्तरों पर होता है- 1. वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्तर, 2. कार्यालयी स्तर, 3. दैनन्दिन व्यवहार का स्तर, 4. प्रचार बिक्री का स्तर।

क्षेत्र बदलने पर प्रयोग के स्तरों में भी बदलाव आ जाता है। उदाहरण के लिए, चिकित्साशास्त्र की पारिभाषिक शब्दावली मुख्यत: तीन रूपों में मिलती है -

1. शैक्षिक : जिसमें ग्रीक और लातिनी भाषा से चली आती वह शब्दावली होती है जिसका प्रयोग शैक्षिक आलेखों में किया जाता है उदाहरणार्थ Philegmasia। इस शब्दावली का लिप्यंतरण ही किया जाता है।

2. व्यावसायिक : यह विशेषज्ञों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली होती है। उदाहरण के लिए - Epidemic parotitics इनका भी लिप्यंतरण ही उपयुक्त रहता है।

3. लोक-प्रचलित : उपर्युक्त बीमारियों के नामों के समानांतर वैकल्पिक रूप लोक-व्यवहार में प्रचलित है - Chikenpox, Scarlet fever जब ऐसे शब्दों के अनुवाद का प्रश्न आता है तो अनुवाद की भाषा में इनके अपने प्रचलित नामों का उपयोग ही किया जाना चाहिए, शाब्दिक अनुवाद नहीं। कुछ उदाहरणों पर ध्यान दें तो बात स्पष्ट होगी।

चिकित्साशास्त्र की शब्दावली में प्रचलित बीमारियाँ है-

अंग्रेजी	**हिंदी**
Chiken Pox	छोटी माता

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Small Pox	बड़ी माता
Mumps	कनपेड़/गलसुआ
Typhoid	मोतीझाला
Joundice	पीलिया
Stroke	सर्दी खा जाना, दौरा पड़ना
Heat Stroke	लू लगना

जाहिर है कि इन बीमारियों से बराबर सामना पड़ने के कारण इनके समानंतर नाम हिंदी में प्रचलित हैं। कोई यह सवाल नहीं उठाता कि आखिर Small Pox 'छोटी माता' क्यों नहीं है जोकि आम आदमी को यह जानकारी होती कि अंग्रेजी के Chiken का विशेषण के रूप में प्रयोग होने पर वह छोटे का अर्थ देता है जैसे Chiken Feed.

8. चिकित्सा विज्ञान के अतिरिक्त अन्य विज्ञान शाखाओं में भी शब्द-युग्मों से बने नामों के अनुवाद विशेष जागरूकता और सही पर्याय चयन की आवश्यकता होती है, विशेष रूप से कृषि विज्ञान और जीवविज्ञान के क्षेत्र में। Silver Fishके लिए 'रजत मछली' लिखना वास्तव में जानकारी और जागरूकता की कमी दर्शाता है। वास्तव में ये आम कीड़ा है जो लकड़ी, कागज आदि में लग जाता है। इसी तरह White ants के लिए ''सफेद चींटी'' लिखना अनुवाद की शब्दानुवादक की प्रवृत्ति का सूचक हैं क्योंकि White ants दीमक है।

कृषि-विज्ञान में तो अक्सर ऐसी गलती की गुंजाइश रहती है क्योंकि कृषि क्षेत्र में संबंधित बहुत शब्दावली गाँवों में कृषि जीवन में उपलब्ध है। इनसे जुड़ी शब्दावली कोश और लोक-व्यवहार, दोनों से ग्रहण करनी पड़ती है अन्यथा। Red gram को 'अरहर' की बजाय 'लाल चना' और Green gram को 'मूँग' की बजाय 'हरा चना' लिखने की संभावना बनी रहेगी।

9. यहीं ध्यान देने की बात है कि जिन बीमारियों की जानकारी परंपरागत जीवन-शैली में नहीं थी या कम से कम उन्हें नाम नहीं दिए गये थे, उनका अनुवाद करने के बजाय उन्हें ज्यों का त्यों लिप्यंतरित कर दिया जाता है। जैसे ''कैंसर'', ''टिटनस'', ''ब्रेन हैमरेज'' आदि।

यह प्रवृत्ति चिकित्साशास्त्र के बारे में ही नहीं, सामान्य लोक-व्यवहार में आने वाली वस्तुओं के बारे में भी सही है। ''रेफ्रिजरेटर'', ''डीप फ्रीजर'', ''माइक्रो वेव'', ''कुकिंग रेंज'' ऐसे ही शब्द हैं जो कुछ समय बाद हिंदी में ''बटन'' और ''कमीज'' और अंग्रेजी में Dhoti और Kurta की तरह खप कर अभिन्न हो जाएँगे। ऐसे शब्दों के अनुवाद असंभव तो नहीं होते पर कष्टसाध्य होते हैं और इसीलिए आसानी से प्रचलित भी नहीं होते। कोई ''टेलीविजन'' और ''टेलीफोन'' के अनूदित शब्दों ''दूरदर्शन'' और ''दूरभाष'' का प्रयोग बोलचाल में शायद ही करता हो- वैसे ही, जैसे Engineer के लिए ''अभियन्ता'' का प्रयोग केवल दफ्तरों के नामपट्ट पर या सरकारी फाइल के अलावा शायद ही कहीं होता हो।

कभी-कभी कुछ शब्दों के सहज अनुवाद लोक-व्यवहार के आधार पर प्रचलित हो जाते हैं। ऐसे शब्दों के लिए कोशगत पर्याय खोजने या शब्द गढ़ने के बजाए प्रचलित रूपों को स्वीकार कर लेना ही अनुवादक के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

हित में होता है। उदाहरण के लिए Fire Engine के लिए ''दमकल'' और बिजली के Positive और Negative तारों के लिए ''ठंडों..गर्म'' तार।

यह भी जरूरी नहीं होता कि कोशगत अर्थ हमेशा सही ही हो। शब्द के स्रोत के साथ उसका अर्थगत् अनुषंग जुड़ा रहता है। ऐसी स्थिति में व्यवहार ही प्रमाण होता है। अंग्रेजी भाषा के शब्द Cheese का सही अर्थ ''पनीर'' नहीं होता। जिसे हम ''पनीर'' कहते हैं उसके लिए अंग्रेजी शब्द Cottage Cheese अर्थात् Unprocess Cheese है और Unprocess Cheese का अभिप्राय है Processed Cheese। यह जानकारी कोश से नहीं, व्यवहार से ही हालिस होती है।

10. दूसरे प्रकार के अनुवादों से प्रौद्योगिकी अनुवाद की पहचान मुख्य रूप से उसकी परिभाषिक शब्दावली के कारण होती है।

प्रौद्योगिकी की पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद करते समय एक बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। ऐसे अनेक शब्द हैं जिनका विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अलग-अलग अर्थों में प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए Force, Power, Strength, thrust आदि।

प्रौद्योगिकी विषयों के अनुवाद में एक समस्या और आती है। कभी-कभी लेखक किसी तकनीकी वस्तु के लिए पारिभाषिक शब्द के स्थान पर वर्णनात्मक पद का प्रयोग करता है। ऐसा प्राय: तीन स्थितियों में होता है- 1. वस्तु नई हो, और उसे कोई नाम न दिया गया हो- इस स्थिति में अनुवाद में कोई समस्या नहीं होगी, 2. पारिभाषिक शब्दावली की पुनरावृत्ति बचाने के लिए अथवा 3. किसी अन्य पारिभाषिक शब्द से अंतर के लिए वर्णनात्मक पद का प्रयोग किया गया हो। इन दोनों स्थितियों में, यदि पारिभाषिक शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में कोई शब्द उपलब्ध हो तो भी अनुवादक को अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने के लिए वर्णनात्मक पद के स्थान पर पारिभाषिक शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

11. **शैली भी महत्त्वपूर्ण है :** वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद के बारे में कभी-कभी यह भी कहा जाता है कि इस प्रकार के अनुवाद में विषय-वस्तु ही सर्वोपरि है, भाषा-शैली का महत्त्व गौण है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं लगाना चाहिए कि वैज्ञानिक अनुवाद तकनीकी शब्दों के पर्याय प्रस्तुत कर देना मात्र है। वास्तव में विषय-वस्तु को सर्वोपरि मानने का मतलब है तथ्यात्मक प्रामाणिकता। ध्यान देने की बात है कि तथ्यों को प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उन्हें विषयानुरूप शैली में प्रस्तुत करना आवश्यक है अन्यथा अनूदित पाठ महज शब्द-जाल मात्र बन कर रह जाएगा। जाहिर है कि वैज्ञानिक तथ्यों को सहज, स्पष्ट और सम्प्रेषणीय ढंग से प्रस्तुत किया जाए। इसलिए जब कहा जाता है कि वैज्ञानिक लेखन अथवा वैज्ञानिक अनुवाद में शैली पर उतना ध्यान देना अपेक्षित नहीं जितना तथ्यों की प्रामाणिकता पर, तो तात्पर्य यह होता है कि साहित्य की ललित, व्यंजना-प्रधान अथवा व्यंग्य प्रधान शैली यहाँ अपेक्षित नहीं हैं, लेकिन विज्ञान की सहज शैली जरूर अपेक्षित है। इस बात को एक उदाहरण से समझा जा सकता है। पहले हम अंग्रेजी का एक पैराग्राफ देंगे, फिर उसका अनुवाद और उस अनुवाद पर टिप्पणी। तत्पश्चात उसका बेहतर अनुवाद दिया जाएगा-

'The World Health Organisation had defined drug dependence as a state of psychic (mental) or physical (bodily) dependence or both, on a drug arising in a person at a

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

periodic or continuous basis. Drug dependence can be substituted for addiction since it covers all the drugs which give rise to a desire or need for repeated administration.'

हिंदी अनुवाद -

'विश्व स्वास्थ्य संगठन ने औषधि-निर्भरता को मानसिक अथवा शारीरिक अवस्था अथवा दोनों की निर्भरता के रूप में परिभाषित किया है जो एक व्यक्ति को आवधिक अथवा लगातार आधार पर औषधि लेने को बाध्य करती है। औषधि निर्भरता व्यसन के लिए प्रतिस्थापित हो सकती है क्योंकि यह उन सभी औषधियों का आवरण करती है जो आवृत्तिजन्य आचरण की इच्छा अथवा आवश्यकता को बढ़ावा देती है।'

उपर्युक्त अनुवाद क्यों ठीक नहीं है ?

इस अनुवाद में अनुवादक की समस्या पारिभाषिक शब्दावली समझने की नहीं है। वस्तुतः यहाँ कोई खास पारिभाषिक शब्द इस्तेमाल नहीं हुए हैं। यहाँ समस्या कथ्य को भली-भाँति समझने और उसे लक्ष्य भाषा में विज्ञान विषय के उपयुक्त शैली में प्रस्तुत करने की है। परिणामस्वरूप इस अनुवाद को पढ़कर कुछ भी समझ नहीं आता। कथन की स्पष्टता और संप्रेषणीयता के अभाव में कथ्य की तथ्यात्मकता धूमिल हो गई है। इस अनुच्छेद का ठीक अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है-

'विश्व स्वास्थ्य संगठन ने औषधि-निर्भरता को परिभाषित करते हुए कहा कि औषधि-निर्भरता वह स्थिति है जब कोई व्यक्ति किसी औषधि को समय-समय पर अथवा लगातार लेने रहने के कारण मानसिक अथवा शारीरिक रूप से उस औषधि पर निर्भर हो जाता है। औषधि निर्भरता को व्यसन कहा जा सकता है क्योंकि इसके अंतर्गत वे सभी औषधियाँ आ जाती हैं जो बार-बार लिए जाने की इच्छा या जरूरत उत्पन्न करती है।'

12. **सदैव शब्दानुवाद नहीं होता :** वैज्ञानिक लेखन में तथ्यात्मकता की प्रधानता के बावजूद ऐसी स्थितियाँ भी होती है जहाँ अभिव्यक्ति और शैली का महत्त्व होता है। ये विषय अक्सर लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखन के होते हैं। इनमें विज्ञान की सूचनाओं को जन-सामान्य के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह की सामग्री के अनुवाद में तथ्यों की प्रामाणिकता के साथ-साथ समुचित सरसता और प्रभावोत्पादकता होनी चाहिए। आगे इस तरह का एक उदाहरण और उसका अनुवाद दिया जा रहा है। आप देखेंगे कि अनुवाद विचारों और भावों का किया गया है, शब्दों का नहीं।

In the days when the world was supposed to have endured for only a few thousand years, it was believed that the different species of plants and animals were fixed and final; they had all been created exactly as they are to-day, each species by itself. But as men began to discover and study the Record of the Rocks this belief gave place to the suspicion that many species had changed and developed slowly through the course of ages, and this again expanded into a belief in what is called organic evolution, a belief that all species of life upon earth, animals and vegetable alike are descended by slow continous process of change from some very simple ancestral from of life, some almost structureless living substance, far back in so-called Azoic seas.

हिंदी अनुवाद -

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सृष्टि की उत्पत्ति के कुछ हजार वर्षों तक यह माना जाता था कि विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और प्राणियों के स्वरूप निश्चित और अपरिवर्तनशील हैं। यह समझा जाता था कि प्रत्येक प्रजाति के जीव और वनस्पति उसी रूप में उत्पन्न हुए थे जैसे वे आज दिखाई दे रहे हैं। लेकिन जैसे-जैसे मनुष्य चट्टानों के इतिहास की खोज और अध्ययन करता गया वैसे-वैसे उपर्युक्त धारणा के स्थान पर यह धारणा बनने लगी कि बहुत-सी प्रजातियाँ युग-युगांतरों में धीरे-धीरे परिवर्तित और विकसित होती गई। कालांतर में इस धारणा ने जैव-विकासवाद के सिद्धांत का रूप ले लिया। इस सिद्धान्त के अनुसार भूमंडल के समस्त जीवजंतु और वनस्पतियाँ तथाकथित निर्जीव-युगीन समुद्रों में रहने वाले किसी अत्यन्त सरल और प्राय: आकृतिहीन जीवधारी से युग-युगांतरों में शनै:शनै परिवर्तित और विकसित हुए हैं।

13. विज्ञान के अनुवाद में भी देश-काल का परिप्रेक्ष्य भी अनुवादक के हाथ से छूटना नहीं चाहिए। बहुत सी ऐसी विज्ञान की पुस्तकें अथवा लेख हो सकते हैं जिनमें स्थान-विशेष के संदर्भ हों और वे उस देश से संबंधित हों जहाँ वह पुस्तक/लेख आदि लिखा गया हो। मान लीजिए पक्षियों के प्रवास के बारे में ही चर्चा की जा रही हो और उत्तर के किसी देश से लिखी गई पुस्तक में चर्चा हो कि खंजन पक्षी सर्दियों में दक्षिण की ओर चले जाते हैं। यदि भारत में उसका हिंदी अनुवाद करते समय लिखा जाएगा कि ''हमारे प्रवासी पक्षी खंजन शीत ऋतु में दक्षिण की ओर चले जाते हैं।'' तो भाषिक रूप से सही होते हुए भी यह अनुवाद गलत हो जाएगा (क्योंकि उत्तरी भारत में ये पक्षी सर्दियों में ही आते हैं और पाठक को भ्रम हो जाएगा कि खंजन भारत से सर्दियों में चले जाते हैं।

14. वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद करते समय Personal Pronoun (we, our आदि) के प्रयोग पर विशेष गौर करना चाहिए। यह देखने के लिए, संदर्भ किसी देश अथवा किसी स्थान विशेष का तो नहीं। रसायन विज्ञान अथवा भौतिक आदि में इस तरह के देशीय प्रयोग अक्सर नहीं होते लेकिन कृषि, जीवविज्ञान, वानिकी आदि में इनके होने की संभावना है।

7.3 वाणिज्य के क्षेत्र में अनुवाद -

वाणिज्य एवं व्यापार के क्षेत्र जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके अंतर्गत लेखा, लेखा-परीक्षा, बैंकिंग, व्यापार आदि जैसे क्षेत्र आते हैं। साथ ही इसका विस्तार अर्थशास्त्र, कंपनी, निगम, प्रबंधन आदि तक होता है। इसमें विधिक प्रकृति का कार्य भी शामिल होता है। वाणिज्य के क्षेत्र की काफी परंपरागत शब्दावली भारतीय भाषाओं में मौजूद है। ''शुक्रनीति'', ''अर्थशास्त्र'', ''मनुस्मृति'' आदि ग्रंथों में अर्थ-संबंधी विवेचन होने के कारण राजस्व, कृषि-कर्म, मुद्राओं के टंकण, अर्थदंड, राजकोष आदि विषयक शब्दावली संस्कृत में उपलब्ध है। मध्यकाल में भी उद्योग और व्यापार का व्यापक प्रसार होने के कारण भारतीय भाषाओं में महाजनी, राजस्व, बाजार, बही खाता आदि से संबंधित प्रचुर शब्दावली प्रचलन में रही है। आधुनिक युग में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अर्थशास्त्र, वाणिज्य, बैंकिंग आदि क्षेत्रों का भारी विस्तार राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ है। प्रशासनिक और औद्योगिक क्षेत्र में अंग्रेजी के व्यापक प्रयोग के चलते वाणिज्य-व्यापार आदि क्षेत्रों में भी अंग्रेजी का व्यापक प्रचलन हुआ है। इन विषयों का संबंध आम आदमी और वाणिज्य से सम्बद्ध लोग, दोनों से होता है। वाणिज्य व्यापार की भाषा की आवश्यकता व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर तो होती ही है सरकारी कार्यकलाप का भी बड़ा हिस्सा अर्थ जगत से संबंध रखता है। जनसंचार के क्षेत्र में भी आर्थिक समाचारों और आर्थिक विवरणों-विश्लेषणों का पर्याप्त महत्त्व होता है। अनेक त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र-पत्रिकाएँ इन विषयों पर प्रकाशित होती है। इनमें से कुछ के तो बहुभाषी संस्करण

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

भी निकलते हैं। इन विषयों की प्रचुर सामग्री के प्रकाशन के साथ ही इनके अनुवाद का महत्त्व भी बढ़ा है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में भी वाणिज्य विषयों के अनुवाद का व्यापक महत्त्व है।

जैसा कि चर्चा की जा चुकी है, अर्थशास्त्र, वाणिज्य और व्यापार की पर्याप्त शब्दावली संस्कृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। 'मूल्य', 'व्यय', 'धन', 'अर्थ', 'चक्रवृद्धि', 'कालिक वृद्धि', 'कायिक वृद्धि' ,'ब्याज', 'खाता', 'जमा', 'नामे', 'जोखिम', 'उठाव', 'उछाला', 'जब्ती', 'सौदा', 'दिवाला' आदि जैसे बहुत से शब्द मौजूद हैं। इन शब्दों को संबंधित विषयों के अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय रूप में मानकीकृत कर दिया गया है। अत: अनुवाद में इनका पर्याप्त प्रचलन है।

Price	मूल्य	Undertaking	उपक्रम
Wealth	धन	Corporation	निगम
Capital	पूँजी	Inverstment	निवेश
Ledger	खाता	Outlay	परिव्यय
Deposit	जमा	Potential	संभाव्य
Debit	नामे	Return	प्रतिफल
Risk	जोखिम	Tender	निविदा
Offtake	उठाव	Contract	संविदा
Spurt	उछाला	Commission	कमीशन
Forfeiture	जब्ती	Rebate	छूट
To write off	दिवाला	Mortgage	बंधक
become	बट्टे खते डालना	Pledge	गिरवी

वाणिज्य-व्यापार, बैंकिंग आदि विषयों की सामग्री अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दावली के साथ इन विषयों की शैली का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए 'charge the bill against his account' वाक्य का अनुवाद 'बिल को उसके खाते विरुद्ध प्रभारित करें' किया जाए तो गलत हो जाएगा। 'बिल उसके खाते में से प्रभारित करें' भी ठीक नहीं रहेगा क्योंकि यह शब्दश: अनुवाद है। इसका सही और आर्थिक क्षेत्र की शब्दावली के अनुरूप अनुवाद होगा- 'बिल की रकम उसके खाते में डाल दें।'

इसी प्रकार, एक और वाक्य है-

'The rupee value against dollar had been stable for quite some time'.

'डॉलर के मुकाबले रुपए का मूल्य काफी समय तक स्थिर रहा।'

यह अनुवाद शाब्दिक है। अर्थशास्त्र की भाषा के अनुरूप इसका सही अनुवाद होगा-

'रुपए और डॉलर की विनियम दर काफी समय तक स्थिर बनी रही।'

आगे अंग्रेजी के कुछ पैराग्राफ और उनका हिंदी अनुवाद दिया गया है-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Control over capital expenditure or acquision of fixed assets is exercised through the system of evaluation of projects and ranking of projects on the basis of their importance, generally on the basis of their earning capacity. A capital budget is prepared for the business as a whole. The budget is reviewed by the budget committee or appropriation committe. For effective control over capital expenditure, there should be a plan to identify the realisation of benefits from capital expenditure and to make comparison with anticipated results. Such comparison is important in the sense that it serves as an important guide for future capital budgeting activities.

Budgetary control which follows budget preparation serves the purposes of controlling income, expenses, costs and profits. It is also a device whereby cash and liquidity as well as the amount of capital provided by owners and lenders can be regulated by management. Or particular significance is the budgetary control of costs and expenses. When budgets are drawn, managers concerned are required to justify their requirements. The budget provision of expenses become standrards which set the limits of expenditure. The actual expenses and performance are compared with the budget standards at specified intervals. Difference, if any, have to be explained by the managers responsible for the same.

हिंदी अनुवाद -

पूँजीगत व्यय या स्थायी परिसम्पतियों की सम्प्राप्ति पर नियंत्रण परियोजनाओं के मूल्यांकन और श्रेणीकरण की प्रणाली द्वारा किया जाता है। मूल्यांकन और श्रेणीकरण का यह कार्य परियोजनाओं के महत्त्व के आधार पर किया जाता है। यह आधार प्राय: उनकी अर्जन क्षमता होती है। पूँजी बजट समग्र व्यवसाय के लिए बनाया जाता है। इस बजट की समीक्षा बजट समिति या विनियोजन समिति करती है। पूंजीगत व्यय पर सही ढंग से नियंत्रण के लिए योजना का होना आवश्यक होता है। जिससे पूँजीगत व्यय से होने वाले लाभों को जाना जा सके और प्रत्याशित परिणामों से लाभों की तुलना की जा सके। ऐसी तुलना भावी पूँजीगत बजट तैयार करने के कार्यकलाप के लिए महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शिका का काम करती है।

बजट तैयार करने के बाद बजट नियंत्रण करना होता है। बजट नियंत्रण से आय-व्यय, लागतों और लाभों को नियंत्रित किया जाता है। बजट नियंत्रण ऐसा साधन है जिससे प्रबंधन, नकदी और स्वामियों तथा ऋणदाताओं द्वारा प्रदत्त पूँजी की राशि को नियंत्रित करता है। लागत और व्यय का बजट नियंत्रण विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। बजट तैयार करते समय सम्बद्ध प्रबंधकों को अपनी जरूरतों का औचित्य सिद्ध करना पड़ता है। व्यय का बजट प्रावधान व्यय की सीमा का मानक (मानदण्ड) बन जाता है। वास्तविक खर्चों और निष्पादन की बजट मानकों से समय-समय पर तुलना की जाती है। यदि दोनों के बीच अंतर पाये जाते हैं तो उनके लिए जिम्मेदार प्रबंधकों को उनके बारे में स्पष्टीकरण देना पड़ता है।

इस अनुवाद में आर्थिक और व्यापार जगत की तकनीकी शब्दावली के समुचित पर्याय इस्तेमाल किए गए हैं- पूँजीगत, परिसम्पत्ति, बजट, लागत, लाभ, विनियोजन, नकदी आदि। शैली मूल कथ्य की भाँति वर्णन-विश्लेषण की ही रखी गई है। व्यय और बजट नियंत्रण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए अनुवाद में भी कर्मवाच्य प्रयुक्त हुए हैं। हिंदी में सामान्य बोलचाल में कर्तृवाच्य की ही प्रधानता होती है लेकिन प्रक्रिया का विश्लेषण करते समय कर्मवाच्य ही उपयुक्त रहता है। वाणिज्य के अंतर्गत विधिक प्रकृति के काम-काज भी शामिल होते हैं। आगे जो अंश अनुवाद के उदाहरण के रूप में दिया जा रहा है, वह विधिक प्रकृति का ही है।

अंग्रेजी उदाहरण

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

The 'Holder of a promissory note or bill of exchange of cheque means a persons entitled in his own name to the possession of that instrument. He also has the right to receive or recover the amount due thereon from the parties to the instrument. Where the note or bill or cheque is lost or, destroyed, its holder is the person who was entitled to be so at the time of such loss or destruction (section 8). The term 'Holder' does not include a person who, though in possession of the instrument, has not the right to recover the amount due there from the parties there to. It is, therefore, clear that in order to be a holder a person must satisfy the following two conditions:

(a) He must be entitled to the possession of the instrument in his own name.

(b) He must be entitled to recover the amount due on the instrument from the parties liable under the instrument.

The holder of a negotiable instrument can give title to any person honestly acquiring it. It is the very essence of a negotiable instrument that the person in possession of it may be treated as having authority to deal with it, unless something is known to the contrary.

A benamidar is a person who has simply lent his name as the real owner. The Act does not recognise such as a practice and therefore, the person whose name is mentioned, whether real or benami, is to be held the holder.

The significance of the 'holder' also lies in the fact that the Act sates that payment of the amount due on a negotiable instrument must, in order to discharge the maker or acceptor, be made to the 'holder' of the instrument (section 78). The holder, therefore, is the only person who can sue upon the instrument, and can give a valid discharge for it.

हिंदी अनुवाद -

प्रतिज्ञा पत्र या विनिमय पत्र या चैक का धरक वह व्यक्ति होता है, जो उस प्रपत्र को अपने नाम में रखने का हकदार है। वह उस प्रपत्र पर देय राशि प्रपत्र के पक्षकारों से प्राप्त करने या वसूल करने का भी हकदार होता है। जब प्रतिज्ञा पत्र, विनिमय पत्र या चैक खो जाता है या नष्ट हो जाता है तो इसका धारक वह व्यक्ति है जो ऐसे खोने या नष्ट होने के समय धारक होने का हकदार था (धारा 8)। "धारक" शब्द में वह व्यक्ति शामिल नहीं होता जिसके कब्जे में प्रपत्र है, लेकिन जिसे उसके पक्षकारों से उस पर देय राशि वसूल करने का अधिकार नहीं है। इसलिए यह स्पष्ट है कि धारक होने के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित शर्तें पूरी करनी होगी :

क. उसे प्रपत्र को अपने नाम में रखने का अधिकार होना चाहिए।

ख. उसे प्रपत्र पर देय राशि को उसके देनदार पक्षकारों से प्राप्त या वसूल करने का अधिकार होना चाहिए।

किसी विनियम साध्य प्रपत्र का धारक किसी भी ऐसे व्यक्ति को स्वामित्व दे सकता है जो इसे ईमानदारी से प्राप्त कर रहा है। विनिमयसाध्य प्रपत्र की यही असली विशेषता है कि यह जिस व्यक्ति के कब्जे में है उसके पास इसके लेन-देन करने का अधिकार माना जाता है, जब तक कि इसके विपरीत कुछ पता न हो।

बेनामीदार वह व्यक्ति है जिसने वास्तविक स्वामी के रूप में केवल अपना नाम प्रदान किया है। अधिनियम ऐसे चलन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

को मान्यता नहीं देता और इसलिए वह व्यक्ति जिसके नाम का उल्लेख किया गया है, चाहे वे वास्तविक या बेनामी हो, धारक माना जाता है।

धारक का महत्त्व इस तथ्य में भी है कि अधिनियम यह कहता है कि लिखने वाले या स्वीकर्त्ता को उन्मोचित करने के लिए विनिमय साध्य प्रपत्र पर देय राशि का भुगतान प्रपत्र के धारक को किया जाए (धारा 78)। इसलिए धारक ही एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जो प्रपत्र के आधार पर मुकदमा चला सकता है और इसके लिए वैद्य उन्मोचन दे सकता है।

उपर्युक्त अनुच्छेद में प्रयुक्त विधिक शब्दावली पर ध्यान दीजिए - Holder धारक, Promissory note प्रतिज्ञा-पत्र, Bill of Exchange विनिमय-पत्र, Instrument प्रपत्र, आदि। ध्यान देने की बात है कि अनुवाद में तकनीकी पर्याय विधिक शब्दावली से ही चुने गए हैं। यही कारण है कि Party के लिए 'पक्षकार' और Title के लिए 'स्वामित्व' जैसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

7.4 प्रशासनिक अनुवाद -

प्रशासनिक अनुवाद का संबंध विशेष रूप से भारतीय प्रशासन व्यवस्था से है। प्रशासनिक अनुवाद के संबंध में ध्यान देने की बात यह है कि इसकी आवश्यकता किसी अंत:प्रेरणा अथवा बौद्धिक आवश्यकता अथवा शैक्षिक जरूरत के तहत नहीं पड़ी बल्कि सरकारी नीति के तहत पड़ी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्वभाषा के माध्यम से स्वशासन की बात उठी और हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाने के लिए ब्रिटिश कानून, कार्यविधि साहित्य और दस्तावेज का हिंदी अनुवाद आवश्यक हुआ। लेकिन बाद में नीति बनी कि राजभाषा के स्तर पर हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग तब तक जारी रखा जाए जब तक अहिंदी-भाषी राज्य इसके लिए सहमति न दे दें। इस नीति के तहत लगभग हर प्रशासनिक कागजात का अनुवाद लगातार करना पड़ता है।

प्रशासनिक अनुवाद करने के लिए अनुवाद अधिकारियों कर्मचारियों की व्यवस्था है। वे रोजगार के रूप में अनुवाद को अपनाते हैं और अपने पदीय दायित्व के रूप में अनुवाद कार्य करते हैं। इसलिए साहित्य के अनुवाद में जिस प्रकार का सृजनात्मक सुख अनुवादक अनुभव करता है वैसा प्रशासनिक क्षेत्र का अनुवादक नहीं करता। हाँ, विषय को भली-भाँति प्रस्तुतकर देने, उसे सहज ढंग से सम्प्रेषणीय बना देने के दायित्व को पूरा करने का संतोष उसे अवश्य मिलता है।

पीछे हम प्रशासनिक प्रयुक्ति की चर्चा कर चुके हैं और यह उल्लेख भी किया गया है कि प्रशासनिक हिंदी के स्वरूप निर्माण में अनुवाद की प्रमुख भूमिका रही है। हिंदी की साहित्यिक तथा अन्य ज्ञानपरक प्रयुक्तियों की भाँति इस प्रशासनिक प्रयुक्ति की विशिष्ट ऐतिहासिक परंपरा नहीं रही। अत: आज इस क्षेत्र में अनूदित शब्दावली और अनूदित भाषा में वैसी रवानगी नहीं दिखाई देती जैसी हिंदी की अन्य प्रयुक्तियों अथवा लोकभाषा में दिखाई देती है।

प्रशासनिक क्षेत्र की तकनीकी शब्दावली को समेकित कर संकलित कर दिया गया है। उसके हिंदी पर्याय निर्धारित कर दिए गए हैं। प्रशासनिक क्षेत्र में उसका व्यवहार भी होता है। लेकिन प्रशासनिक क्षेत्र की भाषा को लेकर आपत्तियाँ भी उठाई जाती हैं। प्रशासनिक अनुवादक की मुश्किल यह होती है कि वह इस शब्दावली का प्रयोग करने के लिए बाध्य है क्योंकि तकनीकी शब्दों के लिए तकनीकी पर्याय रखना ही पड़ता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक अधिक से अधिक इस शब्दावली और अभिव्यक्ति शैली की पठनीयता और सहजता बनाए रखने का प्रयास ही कर सकता है।

शब्दावली के आधार पर इस अनुवाद को कठिन कहना एक हद तक गलत भी हैं क्योंकि शब्दावली तभी तक कठिन होती है जब तक प्रचलन में न आए। प्रचलित हो जाने पर उसकी आदत पड़ जाती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रशासन-तंत्र की कार्य-विधि -

आप पढ़ चुके हैं कि भारतीय कार्यालयों का प्रशासनिक ढाँचा मूलत: ब्रिटिश शासन से विरासत में मिला है। नौकरशाही का यह समस्त ढाँचा तीन प्रमुख सिद्धातों पर आधारित है-

क. अधिकारियों के बीच पदानमुक्रम : प्रशासन-तंत्र में उच्च और निम्न अधिकारियों के बीच क्रमिक श्रृंखला होती है जिसमें उच्च अधिकारी अपने अधीनस्त अधिकारी को आदेश देता है और अधीनस्थ अधिकारी अपने से उच्च अधिकारी से आदेश प्राप्त करता है। यह व्यवस्था मूलत: आदेशों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया और नयाचार (प्रोटोकोल) की परंपरा पर आधारित है।

ख. सत्ता का विकेंद्रीकरण : प्रशासन-तंत्र में शासनकीय सत्ता किसी एक व्यक्ति में केंद्रित न होकर विभिन्न अधिकारियों के बीच बँटी होती है। वास्तविक शासन सत्ता अमूर्त है। अत: हर अधिकारी किसी अमूर्त सत्ता की ओर से या उसके प्रतिनिधि के रूप में अधिकारों का उपयोग करता है, निर्णय लेता है और शासकीय कार्य सम्पन्न करता है। अत: शासकीय सत्ता या कर्त्ता की अमूर्तता शासन-तंत्र का प्रमुख लक्षण है।

प्रशासन-तंत्र के ये तीनों लक्षण किस प्रकार प्रशासन की भाषा को प्रभावित करते हैं, आइए तब इसकी भी कुछ चर्चा कर ली जाए।

1. वस्तुनिष्ठता : कार्यालयों में निर्णयों का आधार व्यक्ति नहीं, नियम होता है। इसीलिए प्रशासन में नियमों, अधिनियमों, कार्यविधियों, पूर्व-दृष्टांतों, दस्तावेजों, फाइलों, मैनुअलों और हर तरह के विधि-विधानों का एक पूर्ण भंडार मौजूद रहता है। अत: मामलों पर निर्णय व्यक्ति की इच्छा से नहीं, इन्हीं नियमों के विधान से होता है। ऐसी स्थिति में कार्यालय की भाषा में भी वस्तुनिष्ठ औपचारिकता होती है।

2. औपचारिक भाषा-रूप : चूँकि समस्त प्रशासनिक ढाँचा नयाचार (प्रोटोकॉल) तथा पदों की क्रमिक श्रृंखला पर आधारित है, इसलिए कार्यालय की भाषा अत्यंत औपचारिक होती है जिसमें सर्वत्र शिष्टाचार का ध्यान रखा जाता है। यह औपचारिकता और शिष्टाचार आपको टिप्पणियों, पत्रों तथा अन्य दस्तावेजों में जगह-जगह दिखाई देगा। उदाहरण के लिए, पत्रों के आरंभ और अंत में कई प्रकार की औपचारिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे,

Dear Sir	प्रिय महोदय
Dear Dr. Singh	प्रिय डॉ. सिंह
Sir	महोदय
To	सेवा में
With regard	सादर
With compliments	सद्भावनाओं के साथ
Yours faithfully	भवदीय
Yours sincerely	आपका
P.S.	पुनश्च:
Copy to	प्रतिलिपि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

3. कर्मवाच्य में वाक्य रचना : चूँकि प्रशासन में अधिकार व्यक्ति में नहीं, पद में निहित होता है और कोई भी अधिकारी व्यक्तिगत स्तर पर निर्णय नहीं लेता इसलिए प्रशासन की भाषा में कर्त्ता-रहित, कर्मवाच्य वाक्यों की संख्या बहुत अधिक होती है जिनमें कार्य करने वाला लुप्त या अप्रत्यक्ष रहता है। उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित वाक्य देखिए-

1. Order may be issued to reinstate him.
   उसे बहाल करने के आदेश जारी कर दिए जाएँ।
2. Suggestions may be accepted
   सुझाव मान लिए जाएँ।
3. Nothing in this case shall be constructed as
   इस बात का यह अर्थ न निकाला जाए.....
4. Mr. Ramesh Kumar is appointed as (Admn.) with effect from August 5, 1997.
   श्री रमेश कुमार 5 अगस्त, 1997 से प्रबंधक .प्रशासन नियुक्त किए जाते हैं।

हिंदी अनुवाद के संदर्भ में यह ध्यान रखने की बात है कि अंग्रेजी के कर्मवाच्य (पैसिव) वाक्य हिंदी में भी कर्मवाच्य हों यह जरूरी नहीं। अंग्रेजी भाषा में पैसिव वाक्यों के प्रयोग की प्रवृत्ति बहुत अधिक है। हिंदी में कर्तृवाच्य (एक्टिव) के प्रयोग की प्रवृत्ति अधिक सहज है, कर्मवाच्य . पैसिव की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम है, विशेषकर तब जब कर्मवाच्य वाक्यों को सहज हिंदी कर्तृवाच्य में अनूदित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए-

1. All the papers have been checked by the auditors.
   लेखा-परीक्षकों ने सारे कागजात की जाँच कर ली।
2. About thirty books were published by the Department during this year.
   इस वर्ष विभाग ने लगभग 30 पुस्तकें प्रकाशित की।
3. Orders have been issued by the Director.
   निदेशक ने आदेश जारी कर दिए हैं।

4. आदेशात्मक रूप : चूँकि प्रशासन तंत्र में उच्च और अधीनस्थ अधिकारियों के बीच आदेशों का आदान-प्रदान होता है। इसलिए आदेशात्मक वाक्यों के रूप में शासकीय नोटों तथा टिप्पणियों में मिलते हैं। जैसे,

Please discuss/speak	कृपया चर्चा/बात करें।
May be discussed	चर्चा की जाए।
Issue today	आज ही भेजें/जारी करें।
Out to day	आज ही प्रेषित करें।

जिस तरह विज्ञान के अनुवादक को विज्ञान की सामान्य जानकारी अपेक्षित होती है, उसी तरह प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद करने वालों को भी प्रशासन व्यवस्था का प्राथमकि ज्ञान होना चाहिए। साथ ही कार्यालय की सामान्य कार्य-पद्धति का परिचय भी होना चाहिए। कार्यालय पद्धति के साथ ही अनुवादक को प्रशासनिक भाषा के प्रति भी जागरुक होना चाहिए। हिंदी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं की प्रशासनिक प्रयुक्ति की वाक्य रचना पद्धति और मुहावरे की सही पहचान होने पर वह सहज और स्पष्ट भाषा में अनुवाद कर सकेगा।

प्रशासनिक अनुवाद के अंतर्गत केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/कार्यालयों, अधीनस्थ कार्यालयों, स्वामित्वाधीन निगमों, उपक्रमों, कंपनियों, बैंकों आदि की सामग्री का अनुवाद आता है। इसमें प्रमुख रूप से अंग्रेजी से हिंदी और गौण रूप से हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद शामिल हैं। यह सामग्री मूल रूप से अंग्रेजी में तैयार अवश्य की जाती है और इसमें तकनीकी भाषा की प्रधानता होती है, किन्तु इसका मुहावरा अंग्रेजी भाषा का वर्तमान मुहावरा नहीं होता। अंग्रेजी प्रशासन व्यवस्था से विरासत में मिली अंग्रेजी भाषा का भारतीयकरण इस अंग्रेजी में मिलता है। ऐसे में अनुवादक से अपेक्षाएँ और ज्यादा बढ़ जाती हैं। उससे जटिल सामग्री को सरल-सहज ढंग में प्रस्तुत करने की उम्मीद की जाती है। इतना ही नहीं, कभी-कभी अंग्रेजी में लिखित सामग्री में अस्पष्टता और त्रुटियाँ भी होती हैं। ऐसी स्थिति में गलती का पता लगाने, सुधारने और प्रस्तुति शैली को सुधारने की जिम्मेदारी भी अनुवादक पर आ जाती है। प्रशासनिक सामग्री के अंतर्गत प्रशासनिक पत्रों, फार्मों, रिपोर्टों, नियम पुस्तकों, संविदाओं, करारों आदि का अनुवाद आ जाता है। प्रशासनिक भाषा की औपचारिकता, वर्णनात्मकता, अभिधापरकता आदि को अनुवाद में कायम रखना जरूरी होता है।

विभिन्न प्रकार के सूचनापरक और कार्यविधि साहित्य की जानकारी के अलावा अनुवादक को अन्य क्षेत्रों की भी थोड़ी-बहुत जानकारी अपेक्षित होती है क्योंकि प्रशासन का संबंध जीवन के विविध क्षेत्रों से होता है। सामान्य प्रशासन के अतिरिक्त, मंत्रालय के विभाग-विशेष का कार्य अन्य विषय क्षेत्रों से जुड़ा होता है। जैसे, वाणिज्य मंत्रालय का वाणिज्य से, शिक्षा-संस्कृति विभाग का शिक्षा और संस्कृति से जुड़े विभिन्न विषयों से इन विभागों की रिपोर्टों में इन विषयों से सम्बद्ध कार्य का ब्यौरा भी प्रस्तुत होता है। इसके अनुवाद में अनुवादक की इन विषयों के प्रति सामान्य जागरूकता काम आती है।

वैसे तो विधि का क्षेत्र एक अलग क्षेत्र है, लेकिन प्रशासन में विधि का कार्यान्वयन किया जाता है। अत: भाषा पर विधि की शब्दावली और प्रकृति का प्रभाव होता है। इसलिए प्रशासनिक भाषा में शर्तसूचक कथनों और वाक्यों का प्रयोग अधिक होता है। अनुवाद में शर्त का स्वरूप बनाए रखना चाहिए। उदाहरण के लिए -

Persons already in Government service, whether in a permanent or temporary capacity or as work charged employees other than casual or daily rated employees or those serving under Public Enterprises are, however, required to submit an undertaking that they have informed in writing their head office/Department that they have applied for the examination.

एक प्रधान उपवाक्य और दो आश्रित उपवाक्यों वाले इस जटिल वाक्य में सरकारी सेवारत व्यक्तियों के लिए निर्देश है कि वे वचनबद्धता-पत्र दें कि उन्होंने अपने आवेदन के विषय में अपने कार्यालय प्रधान.विभाग को सूचित कर दिया है।

हिंदी अनुवाद -

जो लोग पहले से सरकारी सेवा में हैं, भले ही वे स्थायी या अस्थायी हैसियत में या अनियत मजदूरी अथवा दैनिक मजदूरी पर काम करने वाले कर्मचारियों से भिन्न कार्य प्रभारित कर्मचारी हों या सार्वजनिक उपक्रमों के अधीन कार्यरत हों, उन्हें एक वचनबद्धता-पत्र प्रस्तुत करना होगा कि उन्होंने अपने कार्यालय प्रधान/विभागाध्यक्ष को लिखित रूप से सूचना दे दी है कि उन्होंने परीक्षा के लिए आवेदन किया है।

इस अनुवाद में वाक्य इतना लंबा हो गया है कि समझने में काफी देर लगती है। साथ ही, यह भी स्पष्ट नहीं है कि विभिन्न प्रकार के सरकारी कर्मचारियों में से किन-किन को यह सूचना देनी है। इस वाक्य का अनुवाद यदि दो वाक्यों में किया

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जाए तो अपेक्षाकृत स्पष्ट होगा। जैसे,

जो व्यक्ति पहले से ही सरकारी सेवा में कार्यरत हैं उन्हें यह वचनबद्धता पत्र प्रस्तुत करना जरूरी है कि उन्होंने अपने कार्यालय प्रधान/विभागाध्यक्ष को इस बात की लिखित सूचना दे दी है कि उन्होंने परीक्षा के लिए आवेदन किया है। यह वचनबद्धता-पत्र स्थायी और अस्थायी सरकारी कर्मचारियों के अतिरिक्त कार्य-प्रभारित कर्मचारियों वे कर्मचारी जिन्हें कार्य के आधार पर वेतन दिया जाता है) सार्वजनिक उपक्रमों के अधीन सेवारत व्यक्तियों को भी प्रस्तुत करना होगा। उपर्युक्त कार्य प्रभारित कर्मचारियों में अनियत अथवा दैनिक अदायगी की दर पर कार्य करने वाले कर्मचारी शामिल नहीं हैं।

हम चर्चा कर चुके हैं कि सरकारी कार्य पद्धति में अधिकारी कर्मचारी वर्ग के बीच एक खास तरह का पदानुक्रम होता है। इस पदानुक्रम का प्रभाव सरकारी भाषा पर भी पड़ता है। अनुवाद में भाषा की इस औपचारिकता को कायम रखना पड़ता है। उदाहरण के लिए, अधिकारी अपने अधीनस्थ व्यक्ति से कोई कागजात माँगते हुए लिखता है The file may be submitted यहां May का अर्थ 'सकते हैं' नहीं लिखा जाएगा क्योंकि यह वाक्य आदेशात्मक है। यद्यपि इसकी शैली आदेशात्मक नहीं है, अत: इसका हिंदी अनुवाद होगा - ''फाइल प्रस्तुत करें।''

पदानुक्रम की इसी शैली के अनुरूप कोई अधिकारी/कर्मचारी अपने से ऊपर के अधिकारी को कागजात ''प्रस्तुत'' करता है उससे कोई कागजात माँगता नहीं।

कार्यालय में रोज के काम-काज में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न अभिव्यक्तियों के लिए हिंदी में भी अभिव्यक्तियाँ निर्धारित कर दी गई हैं। उन्हें प्रशासनिक शब्दावली के साथ संकलित कर दिया गया है। अनुवाद में उन्हीं का प्रयोग बेहतर रहता है। उदाहरण के लिए -

Action may be taken as proposed	यथा-प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
Early order are solicited	प्रार्थना है कि शीघ्र आदेश दिए जाएँ।

संक्षिप्तियाँ/संक्षिप्ताक्षर (Abbreviation)

प्रशासनिक भाष में संक्षिप्तियों का खूब प्रयोग होता है। संक्षिप्ति (Abbreviation) अक्सर किन्हीं शब्दों या पदों के प्रथमाक्षरों से बनती हैं जैसे WHO- World Health Organisation कभी-कभी प्रथम अक्षरों के अतिरिक्त अन्य कुछ अक्षर भी संक्षिप्ति में शामिल होते हैं जैसे Wg. Cdr. (Wing Commander) । संक्षिप्ति के अनुवाद की यहाँ अलग से चर्चा करना इसलिए आवश्यक है कि इसमें दो चीजों का विशेष रूप से ध्यान रखना पड़ता है-

1. संक्षिप्ति के पूर्ण रूप शब्दों को पहचानना : इसका अभिप्राय: यह पता लगाना है कि संक्षिप्ति किन शब्दों से बनी है। किसी संक्षिप्ति का अनुवाद तभी हो सकता है जब यह पता चल जाए कि संक्षिप्ति किन शब्दों का संक्षिप्त रूप है। कुछ संक्षिप्तियाँ बहुत अधिक प्रचलन में होती है। अत: लगभग सभी जानते हैं कि वे किन शब्दों से बनी हैं। लकिन सभी संक्षिप्तियाँ बहुत-प्रचलित नहीं होती। संक्षिप्ति निर्माण के पीछे कोई खास नियम या सिद्धांत नहीं होता- भाषा प्रयोक्ता व्यक्ति/संस्था उन्हें अक्सर अपनी जरूरत के हिसाब से बना लेता है/लेती है और वे चल पड़ती है। इसलिए अक्सर नई-नई संक्षिप्तियाँ भी देखने में आती हैं।

किसी विभाग/संस्था के व्यक्ति उस संस्था/विभाग से जुड़ी संक्षिप्तियों को भली-भाँति समझते हैं क्योंकि वे अक्सर उन्हीं के द्वारा बनी होती हैं और उनका प्रयोग उनके रोजमर्रा के कामकाज में होता है। उदाहरण के लिए,

O.I.G.S.	On India Government Service
OSD	Officer on Special Duty
D.D.	Deputy Director/Doordarshan

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

D.S.	Deputy Secretary
J.S.	Joint Secretary
L.T.C.	Leave Travel Concession
E.L.	Earned Leave

2. संदर्भ के अनुसार संक्षिप्ति का सही अर्थ ग्रहण करना : यह आवश्यक नहीं होता कि एक संक्षिप्ति किसी एक नाम/पदबंध से ही सबंधित हो। उदाहरण के लिए 'C.R.' Central Railways भी हो सकता है और Confidential Report भी। इसी तरह 'B.S.P. Bahujan Samaj Party भी हो सकती है और Bhilai Steel Plan भी। 'C.P. Central Proviance भी हो सकता है और Confidential भी। इस तरह संक्षिप्तियाँ काफी भ्रम पैदा कर सकती हैं और अनर्थ भी कर सकती हैं क्योंकि यदि अनुवादक संक्षिप्ति को गलत शब्दों से जोड़ देता है तो उसका अनुवाद भी गलत हो जाएगा। उदाहरण के लिए Copy to Shri ..... for n.a. में यदि अनुवादक n.a. का तात्पर्य Not Applicable समझ लता हौ तो वह सही अनुवाद नहीं कर सकता। उसे समझना होगा कि यहां n.a. का मायने necessary action है। इसलिए आवश्कय होता है कि संक्षिप्ति का सही-सही स्रोत (Full Form) पता लगाया जाए। प्रश्न यह उठता है कि कैसे पता लगाया जाए। इसमें दो चीजें सर्वाधिक मददगार होती हैं। जिस सामग्री में संक्षिप्ति प्रयुक्त हुई है उसके विषय और संदर्भ पर ध्यान दिया जाए और समझने की कोशिश की जाए कि इस विषय के संदर्भमें कौन-से शब्द प्रयुक्त हुए होंगे। कहने का तात्पर्य है कि सदैव यह देखने का प्रयास करना चाहिए कि कथ्य के संदर्भ विशेष में संक्षिप्ति किन शब्दों की सूचक हो सकती है। उदाहरण के लिए CAT संक्षिप्ति को लें। यदि अनूद्य सामग्री शिक्षा संबंधी है तो यह संक्षिप्ति परीक्षा संबंधी हो सकती है और इसका पूण रूप Combined Admission Test होगा। लेकिन यदि अनूद्य सामग्री प्रशासनिक एवं न्याय संबंधी है तो इस संक्षिप्ति का प्रयोग Central Administrative Tribunel के संदर्भ में हो सकता है।

संक्षिप्ति का पूर्ण रूप पहचानने में अनूद्य सामग्री से भी सहायता मिलती है। अनूद्य सामग्री को ध्यान से पढ़ा जाए और देखा जाए कि संक्षिप्ति से संबंधित शब्द/पद इस सामग्री में ही तो मौजूद नहीं है। अखबार पढ़ते हुए आपने देखा होगा कि किसी संस्था, समिति, निकाय आदि का पूरा नाम एकाध बार देने के बाद प्रथमाक्षरों के आधार पर उसका संक्षिप्त नाम इस्तेमाल कर दिया जाता है जैसे एक बार Joint Consultative Committee लिखने के बाद JCC लिखा जाता है। इससे स्थान की काफी बचत होती है। प्रशासनिक अनूद्य सामग्री में भी इस तरह का प्रयोग कई बार होता है।

अब प्रश्न उठता है कि संक्षिप्ति का अनुवाद संक्षिप्ति के रूप में ही किया जाए अथवा किसी और तरह से। ध्यान देने की बात है कि अंग्रेजी भाषा में संक्षिप्ति का प्रचलन खूब है। इतना है कि प्रयोक्ता कई बार स्वयं भी संक्षिप्ति गढ़ लेता है। लेकिन हिंदी भाषा की स्वाभाविक प्रवृत्ति संक्षिप्ति निर्माण की नहीं है। पत्रकारिता में तो कभी-कभी संक्षिप्तियाँ गढ़ ली जाती है जैसे ''दक्षेस'', ''इंका'', ''जद'', ''सपा''। मगर उसकी भी सीमा है। अंग्रेजी के P.M.C.M. को 'प्र.मं' और 'मु.मं' नहीं कहा जा सकता।

ऐसी स्थिति में संक्षिप्ति का अनुवाद करते समय यदि हिंदी में संक्षिप्ति गढ़ी जाएगी तो भाषा न केवल अटपटी हो जाएगी बल्कि पढ़ने की समझ में भी नहीं आएगी। M.M.T.C. के लिए ''ख.धा.व्या.नि. लिखना समझ में नहीं आएगा। इसलिए विस्तार से ''खनिज एवं धातु व्यापार निगम'' लिखना ही उपयुक्त होगा। जब तक कि कोई संक्षिप्ति हिन्दी में खूब प्रचलन में न आ गई हो उससे संबंधित शब्दों का पूर्ण अनुवाद ही बेहतर रहता है।

बोध प्रश्न-1

1. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विषयों के अनुवाद के विषय में 15 पंक्तियाँ लिखिए।

.....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. वाणिज्य के क्षेत्र में अनुवाद पर छह-सात पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3. प्रशासनिक अनुवाद पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

3.5 विधि के क्षेत्र में अनुवाद -

विधि की भाषा में भी प्रशासनिक भाषा की काफी विशेषताएँ मिलती हैं लेकिन विधि की भाषा के निम्नलिखित लक्षण खास ध्यान देने योग्य हैं :

क. **भाषा की संवेदनशीलता :** विधि की भाषा अत्यंत संवेदनशील होती है जिसमें शब्द या क्रम का थोड़ा-सा भी परिवर्तन अर्थ का अनर्थ कर सकता है। विधि की शब्दावली प्राय: सामान्य कोशीय अर्थ नहीं व्यक्त करती। इसका अर्थ अत्यंत सूक्ष्म और विशिष्ट होता है। उदाहरण क लिए अति-सामान्य से दिखने वाले शब्द intention, intent और motive या फिर admission और confession कानूनी संदर्भ में विशिष्ट तथा भिन्न अर्थ व्यक्त करते हैं। संविधान के निर्माण के समय निम्नलिखित वाक्य में 'may' के स्थान पर 'shall' के प्रयोग को लेकर एक बहुत बड़ा विवाद खड़ा हो गया।

English language may, as from the appointed day, continue to be used in addition to Hindi.

इस तरह की संवेदनशीलता के कारण ही किसी भी कानूनी दस्तावेज को जब तक अंतिम या प्रामाणिक नहीं माना जाता जब तक कोई कानून विशेषज्ञ उसका पुनरीक्षण न कर लें। ये विशेषज्ञ (जो ड्राफ्ट्समेन कहलाते हैं।) कानूनी दस्तावेजों में उपयुक्त स्थान पर उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली या अभिव्यक्तियाँ डालकर दस्तावेजों को अंतिम रूप देते हैं। इसीलिए कानूनी दस्तावेजों में कई तरह के पारिभाषिक शब्दों या उक्तियों की बार-बार आवृत्ति होती है, जैसे-

Here in after provided	-	इसमें इसके पश्चात् उपबंधित
Here under	-	इसक अधीन
Here to before	-	इससे पूर्व
Hereby	-	इसके द्वारा

ख. **न्यायालय द्वारा अर्थ व्याख्या :** सामान्यत: किसी भी प्रयुक्ति क्षेत्र में लिखे हुए शब्दों की व्याख्या उनके पाठक करते हैं, लेकिन कानूनी दस्तावेजों की व्याख्या पाठक नहीं अदालत करती है। अर्थ की व्याख्याओं को वकील चुनौती देते हैं, न्यायाधीश उपयुक्त निर्णय देते हैं। कभी-कभी अदालत पुराने अर्थों को भी संशोधित या परिवर्तित कर देती है। इन नई व्याख्याओं को कानून की पुस्तिकाओं में बाकायदा दर्ज कर दिया जाता है।

ग. **राजपत्र में अधिसूचना :** कोई भी कानूनी दस्तावेज तभी प्रामाणिक माना जाता है जब राजपत्र (गजट) में उसकी अधिसूचना हो जाती है। अदालत केवल राजपत्र में अधिसूचित दस्तावेज को ही स्वीकार करता है। यहाँ तक कि किसी दस्तावेज का अनुवाद भी तब तक अदालत द्वारा मान्य नहीं होता जब तक वह राजपत्र में अधिसूचित न हो। उदाहरण के लिए, भारतीय संविधान के अंग्रेजी और हिंदी दोनों संस्करण अधिसूचित हो चुके हैं और अब उनकी भाषा में बिल्कुल परिवर्तन नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार, अनेक महत्त्वपूर्ण सरकारी नियुक्तियाँ राजपत्रों में अधिसूचित होने पर भी प्रभावी होती हैं।

घ. **अर्थ की संक्षिप्तता और निश्चितता :** कानूनी भाषा की इस प्रकार की असामान्य विशिष्टता के कारण स्वाभाविक है कि कानूनी दस्तावेजों के वाक्य अत्यंत सारगर्भित और जटिल होते हैं चाहे वह अंग्रेजी हो या

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

हिंदी। इसमें जो कुछ कहा जाता है उसका वही और उतना ही अर्थ निकलता है जितना अभिष्ट है। शब्दावली में एकार्थकता तथा सुनिश्चितता होती है और वाक्य शैली रूढ़ होती है जिसका प्रयोग करना अनिवार्य होता है। वाक्य शैली बदलते ही अर्थ या आशय के भी बदल जाने की संभावना होती है। यही कारण है कि कानून की भाषा सामान्य व्यक्ति की समझ में आसानी से नहीं आती।

इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए विधि के क्षेत्र में अनुवाद में कुछ खास बातों का ध्यान रखा पड़ता है :

1. **शाब्दिक अनुवाद :** वैज्ञानिक या अन्य प्रकार के तकनीकी अनुवाद में हम बोधगम्यता के लिए शाब्दिक अनुवाद से हटकर कभी-कभी थोड़ा-बहुत भावानुवाद भी करते हैं और अंग्रेजी के वाक्यों को तोड़कर हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार उन्हें अनूदित कर देते हैं। कानूनी दस्तावेज के अनुवाद में हम सामान्यत: ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि हर शब्द का उतना ही अर्थ निकलना चाहिए जितना मूल कथ्य में वांछित है। इसलिए अंग्रेजी पाठ की भाषा-शैली और वाक्य-विन्यास को यथासंभव वैसा ही रखने का प्रयास किया जाता है ताकि किसी प्रकार की अर्थ-हानि या अर्थ-परिवर्तन न हो। यदि कभी शैली और अर्थ में से किसी एक को चुनना हो तो अर्थ को ही प्राथमिकता दी जाती है। इसक लिए लंबे जटिल वाक्यों का प्रयोग भी खूब किया जाता है इस बात की परवाह किए बगैर कि ऐसा हिंदी का मूल प्रकृति के अनुकूल नहीं है। नीचे भारतीय संविधान के अंग्रेजी-हिंदी संस्करण से दो वाक्यों के उदाहरण के दिए जा रहे हैं जिसमें आप देखेंगे कि हिंदी अनुवाद में अंग्रेजी के वाक्य-गठन और शब्दावली का यथासंभव अनुकरण किया गया है:

1. The Indian Independence Act, 1947 and the Government of India Act_ 1935 together with all enactments amending or supplementing the latter Act, but not including the abolition of Privy Council Jurisdiction Action 1949, are hereby repleaded.

   भारत स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 और भारत शासन अधिनियम 1935 का, पश्चात् कथित अधिनियम की संशोधक या अनुपूरक सभी अधिनियमितियों के साथ, जिनके अंतर्गत प्रिवि काउन्सिल अधिकारिता कार्य अधिनियम 1949 शामिल नहीं है, इसके द्वारा निरसन किया जाता है।

2. AND it is hereby further agreed and declared by the between the parties hereto the said A.B. ..... shall keep the fidelity bond issued by the said company in the full force by payment of premia as and when they fall due and by otherwise confirming to the rules of the said company relating thereto.

इसके पक्षकारों द्वारा घोषणा की जाती है और उनके बीच यह करार भी किया जाता है उक्त क, ख ..... उक्त कम्पनी द्वारा किए गए उक्त विश्वस्तता बंधपत्र के प्रीमियम का, जैसे-जैसे वे शोध्य होते जाएँ, संदाय करके और उक्त कम्पनी के उससे संबंधित नियमों का पालन करे, बंधपत्र को पूर्णत: प्रवृत्त रखेंगे।

इस उदाहरण में गौर कीजिए कि वाक्य काफी लंबा है लेकिन उसका अनुवाद एक ही वाक्य में किया गया है। वाक्य के आरंभ में पक्षकार घोषित करते हैं न कह कर कर्म वाच्य 'पक्षकारों द्वारा घोषणा की जाती है' रखा गया है।

विधि की भाषा में छोटे से छोटे शब्द के अर्थ का महत्त्व होता है। अत: अनुवाद में प्रत्येक शब्द आना चाहिए। इस दृष्टि से 'agreed and declared by and between' का अनुवाद 'द्वारा घोषणा की जाती है' 'उनके बीच यह करार किया जाता है' करके संपूर्ण अर्थ लाने का प्रयास किया जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

'Payment, 'due', 'in full force' के लिए क्रमश: 'संदाय', 'शोध्य' और 'पूर्णत: प्रवृत्त' के प्रयोग पर गौर कीजिए। ये पर्याय विधिक क्षेत्र में ही प्रयुक्त होते हैं अन्यथा 'भुगतान/अदायगी', 'देय', पूर्णत: लागू होगा जैसे पर्यायों का प्रयोग होता है।

2. **सरलीकरण बहुत सीमित स्थितियों में :** चर्चा की जा चुकी है कि विधि के क्षेत्र में भावानुवाद नहीं होता। शब्दानुवाद की प्रक्रिया में लक्ष्य भाषा की जरूरतों के अनुसार कभी-कभी थोड़ा-बहुत हेर-फेर शैली में किया जा सकता है लेकिन बहुत सीमित स्थिति में।

भारत के अधिकांश कानूनी दस्तावेज, करार, लीज आदि अंग्रेजी शासन काल से चले आ रहे हैं जिनमें कई निरर्थक या अनावश्यक शब्दावली तथा उक्तियाँ भी हैं। इन्हें कुछ हद तक सरलीकृत किया जा सकता है। कई विभागों ने कुछ सामान्य कानूनी दस्तावेजों (जैसे करार आदि में थोड़ा-बहुत) परिवर्तन कर उन्हें अपेक्षाकृत सरल बना दिया है। अनुवाद करते समय यह ध्यान रखने की बात है कि मूल के किसी अर्थ की हानि न हो। नीचे के उदाहरण में आप पाएँगें कि अनूदित पाठ मूल की तुलना में अधिक सहज और बोधगम्य है:

> I ....., the member of the Commission appointed by the Govt. of India, having received a sum of Rs. ..... (Rupees in words .....) s advance from the President of India for performing certain journey connected with my duties hereby agree to that ..... .
>
> मैं .... भारत सरकार द्वारा नियुक्त ..... आयोग का सदस्य हूँ। मुझे ऐसे सदस्य के रूप में अपने कर्तव्यों के संबंध में कतिपय यात्रा करने के लिए भारत के राष्ट्रपति से .....रु. .....शब्दों में ..... की रकम प्राप्त हुई। मैं यह करार करता हूँ कि .....

3.6 जनसंचार माध्यमों में अनुवाद -

क. **जनसंचार माध्यमों के अंतर्गत तीन माध्यम शामिल हैं :** रेडियो, टेलीविजन और पत्रकारिता। रेडियो और टेलीविजन मौखिक माध्यम है, रेडियो श्रव्य और टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यम है और पत्रकारिता लिखित। इन तीनों ही माध्यमों की दो समान विशेषताएँ हैं- तात्कालिकता और सहज-बोधगम्यता। मौखिक अभिव्यक्ति में तात्कालिकता की मात्रा अधिक होती है विशेषकर जब चर्चा-परिचर्चा हो या समाचार आदि का तुरंत प्रसारण करना हो। इसके अलावा, अगर किसी दूसरी भाषा में आए समाचार का अनुवाद करना हो तो वहाँ तत्काल अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है और पारिभाषिक शब्दों के लिए भी तत्काल पर्याय ढूँढ़ने पड़ते हैं।

ख. इन जनसंचार माध्यमों का लक्ष्य-वर्ग सामान्य श्रोता या पाठक होता है। इस वर्ग का भाषा-ज्ञान, शैक्षिक पृष्ठभूमि और विषय ज्ञान भी साधारण होता है, इसलिए किसी भी तथ्य को गैर-तकनीकी और बोधगम्य ढंग से पाठक या श्रोता तक पहुँचाना वक्ता या लेखक का ध्येय होता है। अत: सहज-बोधगम्यता इन जनसंचार माध्यमों की भाषा एवं प्रणाली का विशिष्ट लक्षण होता है।

ग. इन तीनों माध्यमों में टेलीविजन का विशेष महत्त्व है। दृश्य-श्रव्य होने के कारण इसमे केवल शब्द ही नहीं बल्कि वक्ता के हाव-भाव तथा आंगिक संकेत भी भाषा-अभिव्यक्ति के पूरक होते हैं। दृश्य-विधान की रोचकता और चित्रात्मकता के कारण वह विद्या अन्य सभी माध्यमों से अधिक शक्तिशाली या प्रभावी सिद्ध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

होती है।

सहज-बोधगम्यता जनसंचार माध्यमों की भाषा का प्रमुख लक्षण है। यही कारण है कि इनमें तकनीकी विषयों को भी गैर-तकनीकी और सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। यथासंभव बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाता है। हिंदी के संदर्भ में विषय के अनुसार बोलचाल की मिश्रित शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। देखिए :

- खोजी पत्रकार
- औंधे मुँह गिरा मुंबई शेयर बाजार सूचकांक जैसे ही चढ़ना शुरू हुआ बाजार का विश्वास डोलने लगा।
- यह यकीनन इस सदी की सबसे बड़ी लूट थी।
- चुनौतियाँ और उम्मीदें दोनों ही इस झोली में हैं।

जनसंचार माध्यमों में (विशेषकर पत्रकारिता के क्षेत्र में) आज इतनी प्रतिद्वंद्वता है कि हर संपादक अपनी पत्रिका को अधिक से अधिक आकर्षक बनाकर पाठक-वर्ग बढ़ाना चाहता है। पाठकों का ध्यान विशेष रूप से खींचने के लिए पत्रकार या लेखक अपनी भाषा को रोचक और चुटीला बनाता है। रोचकता या चुटीलापन आज के जनसंचार माध्यमों का एक प्रमुख लक्षण बन गया है। देखिए :

- टोपी के नीचे क्या है ?
- यदि हँसिया टूटेगा तो चक्र भी नहीं बचेगा।
- रोजी छिनी पर रोटी मिलेगी।
- दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों और होटल मालिकों की आपसी समझदारी से मजे में निबट रहे इस मामले में झोल जाने कैसे पड़ा कि 15 सितंबर 1994 को होटल की सज्जा के बाद 'सीसी' के लिए आया आबंटन खारिज हो गया।

पत्रकारिता में शीर्षकों (Heading) की भाषा का अपना विधान होता है। इसमें रोचक शब्दों का भी प्रयोग होता है, मुहावरों का भी और उल्टे-पुल्टे शब्दक्रम का भी। उद्देश्य केवल होता है पाठक का ध्यान खींचना और उसे उस समाचार को पढ़ने के लिए प्रेरित करना। देखिए :

- शब्द रहेंगे साक्षी
- बड़ों के बड़े दाँत
- महारथियों के पतन का साल
- गड़बड़ है दिल का मामला
- चुकता जाता जादू

हमारे यहाँ भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता का अधिकांश अनुवाद पर आधारित है क्योंकि समाचार एजेंसियाँ अंग्रेजी में समाचार देती हैं और फिर उन्हें विभिन्न भाषाओं में अनूदित किया जाता है। क्षेत्रीय एजेंसियों द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं में दिए गए समाचारों को अंग्रेजी में अनूदित किया जाता है, फिर अन्य भाषाओं के लिए उनका अंग्रेजी से अनुवाद होता है। लेकिन ऐसे अनुवाद की मात्रा बहुत कम है।

जनसंचार माध्यमों की भाषा अनुवाद-आश्रित होने के बावजूद उसमें अनुवाद से काफी छूट ली जाती है। जब तक कि सूचना अत्यधिक तकनीकी न हो, मुक्त अनुवाद का सहारा लिया जा सकता है। उसे आवश्यकतानुसार संक्षेप अथवा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विस्तार दिया जा सकता है। अखबार और इलैक्ट्रानिक मीडिया दोनों का ही प्रयास रहता है कि भाषा और प्रस्तुति में मौलिकता और रोचकता दिखाई दें। डेडलाइन्स की भाषा को अक्सर काफी रोचक और ध्यानाकृष्ट करने वाली बनाई जाती है। उदाहरण के लिए 'Precious metals loose their shine' अथवा 'राजनीतिक अस्थिरता से शेयर लुढ़के'। पत्रकारिता के अनुवाद में भावानुवाद का महत्त्व अधिक होता है क्योंकि सभी पत्रों के पास समान स्थान नहीं होता। हिंदी अखबारों का आकार आपने गौर किया होगा कि अपेक्षाकृत छोटा होता है। अत: समाचार का विवरण अखबार के स्थान के अनुसार रखा जाता है।

जनसंचार के क्षेत्र में विशेष रूप से समाचारों के अनुवाद का महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह अनुवाद अक्सर जल्दी में किया जाता है। खबर मिलते ही तुरंत अनूदित करके उसे प्रकाशित या प्रसारित किया जाता है। ऐसी स्थिति में अनुवादकों को अधिक विचार करने का समय नहीं होता। यह भी कारण है कि वे कथ्य के मूल भाव पर अधिक ध्यान रखते हैं। लेकिन इसके मायने यह नहीं है कि पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद में अर्थ की दृष्टि से छूट ली जाती है। ऐसा करने से तो समाचार अथवा रिपोर्ट की विश्वसनीयता ही खत्म हो जाएगी। कथ्य को सही प्रस्तुत करना जनसंचार माध्यमों का दायित्व होता है। अत: जल्दी-जल्दी अनुवाद के बाजवूद तथ्यों की प्रमाणिकता सुनिश्चित रखी जाती है। विभिन्न क्षेत्रों की तकनीकी शब्दावली का भी अनुवाद यथासंभव सही-सही प्रयुक्त किया जाता है। साथ ही, अनवुाद की भाषा में बोलचाल की रवानी और लोकभाषा का मुहावरा लाने का भी प्रयास किया जाता है। लेकिन इसके बावजूद जनसंचार माध्यमों की भाषा में अंग्रेजी की छाया मौजूद रहती है। उदाहरण के लिए ''बस में सवार सभी पैंतीस यात्री डूबकर मर गए।'' यह ''सभी पैंतीस'' अंग्रेजी के all thirty five का अनुवाद है। स्वतंत्र हिंदी वाक्य में इसे पैंतीसों कहा जाएगा, 'दोनों', 'चारों', 'दसों' की भाँति।

पत्रकारिता की भाषा की एक अन्य विशेषता है संक्षिप्ताक्षरों /संक्षिप्तियों का प्रयोग। हिंदी में संक्षिप्ताक्षरों की परंपरा नहीं रही है लेकिन अंग्रेजी के अनुकरण में कई संक्षिप्ताक्षर मौलिक रूप से बने हैं, जैसे भाजपा, रामो-वामो, इंका, दक्षेस, सपा आदि। हिंदी अखबारों में अंग्रेजी के संक्षिप्ताक्षरों के लिए दोनों लिप्यंतरित और अनूदित रूप प्रचलित हैं। जैसे-

डब्ल्यू.टी.ओ.	World Trade Organisation (WTO)
डी.टी.सी.	Delhi Transport Corporation (DTC)
डेसू	Delhi Electric Supply Undertaking (DESU)
डी.डी.ए.	Delhi Development Authority (DDA)

इनके अनूदित रूप संक्षेप में होकर पूर्ण शब्द / शब्दों के रूप में होते हैं जैसे विश्व व्यापार संगठन, दिल्ली परिवहन निगम, दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान, दिल्ली विकास प्राधिकरण।

हिंदी में कुछ संक्षिप्तियाँ बनी तो हैं लेकिन हिंदी की मूल प्रकृति संक्षिप्ति की न होने के कारण और अंग्रेजी संक्षिप्ति काफी प्रचलित हो जाने के कारण काफी अंग्रेजी संक्षिप्तियाँ ही हिंदी में अपना ली गई हैं या फिर उनका पूर्ण रूप प्रचलित है जैसे WHO के लिए हिन्दी में ''विश्व स्वास्थ्य संगठन'' ही लिखा जाता है।

जनसंचार माध्यमों में विज्ञापन की भाषा का एक प्रमुख स्थान है। विज्ञापन में कई तरह के भाषिक प्रयोग किए जाते हैं। इसमें चुटीलापन दिखाई देता है तो कहीं काव्य का रंग, कहीं भाषा की रवानगी दिखाई देती है।

7.7 विज्ञापनों का अनुवाद -

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विज्ञापनों का संबंध विशेष रूप से जनसंचार माध्यमों से होता है क्योंकि ज्यादात्तर विज्ञापन इन्हीं के माध्यम से प्रकाशित, प्रसारित या प्रदर्शित किए जाते हैं। अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन के अतिरिक्त होर्डिंग, पोस्टर, पैम्प लेट द्वारा भी विज्ञापन प्रस्तुत किए जाते हैं। विज्ञापन की भाषा में सहजता, रोचकता और मौलिकता तीनों ही अपेक्षित होती हैं ताकि पढ़ने या देखने वाला उसे तुरंत समझे, उसकी और आकृष्ट हो और उसके उपयोग की दिलचस्पी उसमें पैदा हो। विज्ञापन की भाषा की एक और विशेषता होती है संक्षिप्तता और वाक्य रचना/पद रचना की कसावट। यहाँ विस्तार से कहने की गुंजाइश नहीं होती। यों तो सभी विज्ञापनों का उद्देश्य सूचना देना होता है फिर भी विज्ञापन कई तरह के होते हैं - व्यापारित, प्रचारपरक और कार्यपरक। व्यापारिक विज्ञापन अक्सर उपभोक्ता वस्तुओं की जानकारी देने और ग्राहक बनाने के लिए होते हैं। प्रचारपरक विज्ञापन प्रशासनिक स्तर पर जन-सामान्य की सूचना के लिए होते हैं तथा निजी संस्थाओं/व्यक्तियों द्वारा सूचना के लिए भी होते हैं। कार्यपरक विज्ञापनों में रोजगार संबंधी विज्ञापन तथा वर्गीकृत विज्ञापन आते हैं।

जहां तक अनुवाद का संबंध है, यह यद्यपि तीनों प्रकार के विज्ञापनों का होता है लेकिन दूसरे और तीसरे प्रकार के विज्ञापनों का ज्यादा होता है। पहले प्रकार यानी व्यापारिक विज्ञापनों को अक्सर मूल रूप से दूसरी भाषा में तैयार कर लिया जाता है ताकि उनका आकर्षण पैदा हो और भाषा में जयादा चुटीलापन और प्रभावपूर्णता रहे। आगे हम अखबार में छपे ऐसे विज्ञापन उदाहरण के तौर पर दे रहे हैं।

राजस्थान

पत्रिका

थावर

लोक-रंजन का बहुरंगी शनिवारीय

18 फरवरी 1995

मुगल बादशाहों से लेकर आधुनिक युग तक मरु-क्षेत्रों में ऊँट की महिमा बराबर बनी हुई है। 'आईने अकबरी' में अबुल फजल ने सम्राट अकबर की उष्ट्रशाला का जो विस्तृत विवरण दिया है, वह जहाँ ऊँटों के प्रति तत्कालीन शासन और समाज में गहरी रुचि का परिचायक है, वहाँ राजस्थान में फली-फूली ऊँटों को सजाने-सँवारने की अलंकरण कला और गोरबन्द जैसे लोकप्रिय गीत की रचना इस भू-भाग में व्याप्त उष्ट्र-प्रेम को चित्रित करती है। इन्हीं बिन्दुओं को विस्तार दे रही हैं इस बार की आमुख कथाएँ-

सम्राट अकबार की उष्ट्रशाला

तथा

साक्षात् ऊँटों के शृंगार-विशेषज्ञों से

साथ ही जन-मानस में रमा लोकगीत

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

गोरबन्द

अन्य आकर्षण

* दक्षिण से आई नायिकाएँ, * बुलन्दी पर है शाहरूख, * काजोल को विरासत में मिला है अभिनय, * 'टू लाइज' का सच, * 'रावण हत्था' का नन्हा कलाकार, * 'आस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस-वरीयताएँ खिताब को तरसीं', * नौकायन की परम्परा

तथा

अन्य पठनीय सामग्री

पाठकों के ध्यानाकर्षण के लिए समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ प्राय: आगामी अंकों की विषय-वस्तु की ऐसी रूपरेखा अक्सर प्रस्तुत करती हैं। इनकी भाषा मनमोहक और सजीव होती है। इसके अनुवाद में सौष्ठव बनाए रखने के लिए अनुवादक को अपने शब्दों, शब्द-समूहों, वाक्याशों को तौल-तौल कर नपे-तुले तरीके से प्रस्तुत करना होता है तभी उद्देश्य विशेष की पूर्ति संभव है। ऊपर दिए गए हिंदी विज्ञापन का अंग्रेजी में अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके शब्दों के सौष्ठव और नपे तुले प्रयोग पर ध्यान दीजिए।

Rajasthan

Patrika

Thavar

Multi coloured saturday supplement folk-entertainment

18 Feburary, 1995

From the days of Mughal Emperors to the Modern period, the glory of Camels is intact in the desert-areas. The detailed description of Camel-shed of the Emperor Akbar as described by Abul Fazl in 'Aaine-Akbari' is, on the one hand, indicative of deep interest of the then Administration and Society towards Camels, on the other hand the well established art of Camel-ornamentation in Rajasthan and the composition of famous 'GORBAND' song illustrates love towards camel prevalent in this part of the earth. These points are being described in detail in the front-page stories:

Camel - Shed of Emperor Akbar

AND

Interviews with specialists in

Camel-Ornamentation

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Other Attractions

* Heronies from the South * Shahrukh on the tp

* Kajol a EHeritage of Acting * Truth of 'Ture Lies'

* Infant Artists of 'Rawan Hatha' * Australian Open

Tennis : Seedings Crave for the Title * Traditions of Nagitation.

And

Other readable material

दूसरी ओर, वर्गीकृत विज्ञापन तथा रोजगार संबंधी विज्ञापन होते हैं, वर्गीकृत विज्ञापन विभिन्न विषयों/कार्यों से संबंधित होते हैं। इन्हें विषय के आधार पर वर्गों में रखा जाता है। जैसे व्यक्तिगत सूचना, संस्थागत सूचना, शिक्षा संबंधी, किराए के भवन आदि संबंधी। इनकी भाषा सूचनापरक और औपचारिक होती है। निविदा सूचनाएँ Tender Notice भी निविदा वर्ग के विज्ञापन ही होते हैं। रोजगार संबंधी विज्ञापन का भी अपना वर्ग होता है। इनकी भाषा में औपचारिकता और स्पष्टता तो होती ही है। इनका संबंध प्रशासन से होने के कारण इनमें प्रशासनिक भाषा की विशेषताएँ भी होती हैं।

बोध प्रश्न 2

1. विधि विषयक अनुवाद की विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

2. जनसंचार माध्यमों में अनुवाद की भूमिका और स्वरूप पर 10 पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

3. विज्ञापनों के अनुवाद पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

7.8 सारांश -

इस इकाई में आपने विभिन्न प्रयुक्तियों की भाषागत विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करते हुए उनकी अनुवादगत विशेषताओं के विषय में पढ़ा है। विज्ञान-प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, प्रशासन, विधि, जनसंचार, विज्ञापन आदि की भाषा एक-दूसरे

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इकाई 8 : अनुवाद के उपकरण

संरचना

8.0 प्रस्तावना

8.1 उद्देश्य

8.2 ''कोश'' से तात्पर्य

8.3 अनुवाद में कोश की उपयोगिता

8.4 कोशों के प्रकार

8.4.1 एकभाषिक कोश

8.4.2 द्विभाषिक कोश

8.4.3 उपभाषा कोश

8.4.4 अपभाषा कोश

8.4.5 विविध विषयों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली/कोश/शब्द संग्रह

8.4.6 परिभाषा कोश

8.4.7 विषय कोश

8.4.8 अभिव्यक्ति कोश

8.4.9 मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश

8.4.10 थिसॉरस

8.4.11 पर्याय कोश

8.4.12 उच्चारण कोश

8.4.13 नाम कोश

8.4.14 साहित्य कोश

8.4.15 विश्व कोश

8.4.16 पुराण एवं मिथक कोश

8.5 सारांश

8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 प्रस्तावना

अनुवाद का कार्य मात्र एक भाषा में उपलब्ध सामग्री का दूसरी भाषा में शब्दांतर नहीं है। अनुवाद में शब्दों के अर्थ के साथ कथन के आशय का समुचित रूप से वहन होना चाहिए। इसके लिए अनुवादक को केवल अपनी मेधा या स्मरण शक्ति पर ही निर्भर न रहकर विभिन्न साधनों का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा एक प्रमुख साधन है... शब्द कोश। इस इकाई में आपको शब्दकोश एवं अन्य कोशों के विषय में बताया जा रहा है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अनुवाद वह माध्यम है जिसके द्वारा एक भाषा की बात दूसरी भाषा में प्रकट की जाती है। वह बात साहित्य, संगीत, कला-कौशल, विज्ञान या अन्य किसी भी विषय से संबद्ध हो सकती है। अनुवाद की पहली शर्त है, अनुवादक की कुशलता-स्रोत और लक्ष्य, दोनों भाषाओं पर उसका समान अधिकार और दूसरी शर्त है जिस विषय की सामग्री का अनुवाद किया जा रहा हो, उस विषय के बारे में पर्याप्त जानकारी। भाषा पर अधिकार का एक पक्ष है, दोनों भाषाओं के शब्दार्थ का ही नहीं विभिन्न संदर्भों में उन शब्दों के निहितार्थ का भी ज्ञान। आप जानते हैं कि परम विद्वान व्यक्ति से भी किसी भाषा के एक-एक शब्द के अर्थ और प्रयोग की जानकारी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। किसी विशेष स्थिति में उसे किसी शब्द का उपयुक्त प्रतिशब्द ध्यान में नहीं भी आ सकता है या अनेक प्रतिशब्दों में से सही विकल्प चुनने में उसे दुविधा भी हो सकती है। ऐसे में जो उपकरण उसके लिए सबसे अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है वह है शब्द कोश। विभिन्न प्रकार के शब्द कोशों के अतिरिक्त ''थिसॉरस'' और ''पर्याय कोश'' भी उसकी सहायता कर सकते हैं।

विषय का समुचित ज्ञान होने पर भी कई बार कुछ विशेष प्रयोगों या संकल्पनाओं की अवधारणा उसके सामने स्पष्ट नहीं होती है। ऐसे में अनेक प्रकार के विषय कोश, साहित्य कोश, पुराण कोश, विश्व कोश आदि की सहायता लेकर वह विषय को और अच्छी तरह समझने में सक्षम हो सकता है। प्रस्तुत इकाई में इन भिन्न प्रकार के कोशों का परिचय देते हुए उनके उपयोग-प्रसंगों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

8.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

* शब्दकोशों सहित अन्य अनेक प्रकार के कोशों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
* इन कोशों के स्वरूप, प्रकृति तथा प्रकार्य से परिचित हो सकेंगे और
* अनुवाद के संदर्भ में उनकी उपयोगिता से परिचित होकर उनका सही इस्तेमाल सीख सकेंगे।

8.2 ''कोश'' से तात्पर्य

आइए, पहले भाषा तथा अनुवाद के संदर्भ में कोश के अर्थ पर विचार करें। कोश भाषिक भी होते हैं और भाषिकेतर भी। भाषिक कोशों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के शब्दकोश, अभिव्यक्ति कोश ''थिसॉरस'' (Thesaurus), पर्याय कोश, बोली या उपभाषा कोश, लोकोक्ति तथा मुहावरा कोश आदि आते हैं जिनमें भाषा के शब्द तथा अभिव्यक्तियाँ प्राय: अर्थ तथा प्रयोग संदर्भों के साथ दी जाती है। भाषिकेतर कोशों में विभिन्न विषयों... साहित्य, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि से संबद्ध जानकारी संकलित रहती है। साहित्य कोश, पुराण कोश, विश्वकोश आदि इस श्रेणी में आते हैं।

अनुवाद के संदर्भ में सबसे पहले भाषिक कोशों के-मुख्य रूप से शब्दकोशों के महत्त्व पर ध्यान आता है। जैसा कि नाम से ही प्रकट है, शब्दकोश का अर्थ है शब्दों का कोश अर्थात् खजाना। आम धारणा और पारंपरिक-परिभाषा के अनुसार शब्दकोश ऐसा ग्रंथ है जिसमें किसी भाषा के शब्दों का वर्णक्रम से संकलित करके उनके अर्थ-अर्थों और प्रयोगों का ब्योरा दिया जाता है। स्तरीय शब्दकोशों में इन सबके अतिरिक्त शब्दों की व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, पर्याय और प्रयोग संदर्भों का भी उल्लेख होता है। संस्कृत के ''निरुक्त'' तथा ''निघंटु'' ऐसे कोश हैं जिनमें शब्दों के साथ उनकी व्युत्पत्ति भी दी गई है। आज भी किसी भाषा के मानक शब्दकोश में शब्द के अर्थ के साथ उसके स्रोत का भी उल्लेख रहता है और अगर उसके रूप में परिवर्तन आया हो तो स्रोत वाले मूल शब्द का भी उल्लेख रहता है।

कई आधुनिक शब्दकोशों में केवल प्रचलित या परंपरा और प्रयोग से सिद्ध शब्दों के अतिरिक्त ऐसे शब्द भी होते हैं जो नई वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक प्रगति की आवश्यकताओं से जन्मे हैं। शब्दों के विशिष्ट प्रयोग तथा मुहावरों को भी इसमें शामिल किया जाता है किन्तु किसी भी सामान्य शब्दकोश में दर्शन, शिल्प, प्रशासन आदि से संबद्ध विशिष्ट शब्दावली को समाहित करना संभव नहीं है। व्यवहार के अतिरक्त इन विषयों से संबद्ध विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का भी उस चर्चा में प्रयोग होता है। इसलिए हर समृद्ध भाषा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

में ऐसे कोश भी होते हैं जिनमें विशिष्ट ज्ञान क्षेत्रों या व्यवहार क्षेत्रों से संबद्ध शब्दावली उपलब्ध हो। ये शब्दकोश एक-भाषिक (Monolingual) होते हैं।

शब्दकोश का कार्य केवल एक भाषा के शब्दों का अर्थ या परिचय देने तक ही सीमित नहीं है। आपने ऐसे अनेक शब्दकोश देख होंगे, जिनमें एक भाषा के शब्दों का अर्थ तथा परिचय दूसरी भाषा में दिया जाता है। इस प्रकार के अंग्रेजी-हिन्दी अथवा हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोशों का उपयोग आपने स्वयं भी कई बार किया होगा। अनुवाद कार्य में ऐसे द्विभाषिक या बहुभाषिक कोश बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

कोश का ही एक रूप ''थिसॉरस'' भी है जिसमें विचारों और अवधारणाओं को शब्दों तथा उनके पर्यायों को सूचीबद्ध किया जाता है और भिन्न पर्यायों की अवधारणाओं का सूक्ष्म विवेचन करते हुए उनके सटीक अर्थ को इंगित किया जाता है। इससे लेखक को संदर्भ के अनुसार सही शब्द चुनने में सहायता मिलती है। इसी से मिलते-जुलते होते हैं पर्याय कोश, जिनमें प्राय: वर्णक्रम से संग्रहीत शब्दों के साथ उनके पर्यायवाची, समानार्थक और कभी-कभी विपरीतार्थक शब्दों की सूची भी दे दी जाती है।

बोली या उपभाषा कोशों में किसी भाषा से संबद्ध बोलियों की शब्दावली का अर्थ तथा व्याकरणिक जानकारी आदि के साथ संग्रह रहता है। अपभाषा कोशों में अमानक भाषा प्रयोग अर्थ सहित संग्रहीत होते हैं। अभिव्यक्ति कोश विशिष्ट भाषा के प्रयोगों या भाषाई मुहावरों के संग्रह होते हैं तो लोकोक्ति तथा मुहावरा कोश भाषा में प्रचलित लोकोक्तियों तथा मुहावरों के अर्थ तथा प्रयोग का परिचय देते हैं। ये सभी कोश एकभाषिक भी हो सकते हैं और द्विभाषिक भी।

भाषा के अर्थ तथा प्रयोग में संबद्ध इन कोशों के अतिरिक्त अनेक प्रकार के भाषिकेतर कोश भी होते हैं जिनमें विभिन्न विषयों से जुड़ी अनेक प्रकार की जानकारी रहती है। आपने विश्वकोश या Encyclopenadia अवश्य ही देखे होंगे जिनमें विषयों को वर्णक्रम में रखते हुए ज्ञान क्षेत्रों से संबद्ध जानकारी एकत्रित की जाती है। पुराण तथा पुराकथा कोश, जैसा कि नाम से ही जाहिर है, विभिन्न पुराणों, पुराकथाओं तथा इनमें आई हुई संकल्पनाओं तथा चरित्रों का परिचय देते हैं। संस्कृति कोश देश या क्षेत्र विशेष की संस्कृति के विभिन्न पक्षों को समझने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार साहित्य कोश, संदर्भ कोश, परिभाषा कोश और सूक्ति तथा उद्धरण कोश आदि अनेक प्रकार के कोश होते हैं जिनकी लेखन तथा अनुवाद के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

8.3 अनुवाद में कोश की उपयोगिता

विभिन्न प्रकार के कोशों के सामान्य परिचय के बाद हम अनुवाद के संदर्भ में इनकी उपयोगिता पर विचार कर सकते हैं। हम पहले ही बात कर चुके हैं कि भाषाओं के अच्छे जानकार से भी भाषा के तमाम शब्दों के अर्थ और प्रयोगों की जानकारी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त कभी-कभी अनूद्य विषय की कुछ संकल्पनाएं अनुवादक के लिए अस्पष्ट हो सकती है जिससे सटीक अनुवाद में बाधा उत्पन्न होती है। अनुवाद के क्रम में उसके सामने और भी कई कठिन स्थितियां आ सकती हैं। उनसे निपटने के लिए विभिन्न प्रकार के कोशों से उसे बहुत सहातया मिलती है। उदाहरण के लिए-

1. हो सकता है कि अनुवादक को स्वयं स्रोत भाषा के शब्द के ही सटीक अर्थ का ज्ञान न हो। कई बार साहित्यिक कृतियों में अपेक्षाकृत अप्रचलित शब्द का प्रयोग होता है। उनके अनुवाद के लिए उनका सही-सही अर्थ जानना बहुत आवश्यक होता है। ऐसे में स्रोत भाषा के एक-भाषिक शब्दकोश की आवश्यकता पड़ती है।

2. किसी शब्द के सामान्य अर्थ का ज्ञान तो प्राय: सबको होता है, पर विशेष संदर्भ में उनका अर्थ कुछ और भी हो सकता है। ऐसे में भी उसका समुचित अर्थ सुनिश्चित करने के लिए एकभाषिक कोश उपयोगी होता है।

3. सामान्य रूप से भी स्रोत भाषा के शब्द का लक्ष्य भाषा में प्रतिशब्द(समकक्ष शब्द equivalent) ज्ञात न होने पर अनुवादक को द्विभाषिक कोश की सहायता लेनी पड़ती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

4. व्यावसायिक और तकनीकि विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के लिए तो इन विशिष्ट क्षेत्रों से संबद्ध द्विभाषिक कोशों की आवश्यकता पड़ती ही है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक, दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय लेखन के अनुवाद में भी इन क्षेत्रों से संबद्ध कोश अथवा पारिभाषिक शब्द संग्रह उपयोगी होते है। कई बार एक ही वस्तु या अवधारणा के लिए एक से अधिक शब्दों का प्रयोग होने के कारण अनुवादक के लिए स्थिति अस्पष्ट हो जाती है। ऐसे में उसे प्रामाणिक कोशों से मानक शब्द का चुनाव करने में सहायता मिलती है।

5. कई रचनाओं में स्रोत भाषा के मानक रूप के स्थान पर या फिर मानक रूप के साथ ही उपभाषाओं या उपभाषा (slang) का प्रयोग भी होता है। ऐसे प्रयोगों का अर्थ सुनिश्चत करने के लिए इनसे संबद्ध उपभाषा अथवा बोली कोशों का अध्ययन उपयोगी ही नहीं, अनिवार्य भी होता है।

6. विभिन्न भाषा क्षेत्रों की संस्कृति में भिन्नता होने के कारण एक भाषा में व्यक्त अवधारणा को दूसरी भाषा तक पहुँचना बहुत सरल नहीं होता है। स्वयं अनुवादक के लिए भी कई बार स्रोत भाषा की रचना का सांस्कृतिक संदर्भ बहुत स्पष्ट नहीं रहता। कई बार कुछ मुहावरों तथा भाषा प्रयोगों के पीछे सुदीर्घ सांस्कृतिक परंपरा रहती है और अनुवाद में उसका परिचय देना जरूरी होता है। इन सब स्थितियों में स्रोत भाषा के क्षेत्र से संबद्ध कोश से अनुवादक को सहायता मिल सकती है। विभिन्न क्षेत्रों की पुराकथाओं से जुड़े हुए या उनके संदर्भ से युक्त लेखन के अनुवाद में पुराकथा कोश बहुत सहायता होते हैं।

7. किसी शब्द के अनेक पर्यायों में अर्थ का सूक्ष्म अंतर रहता है। इसी प्रकार स्रोत भाषा के एक शब्द के लिए कई बार लक्ष्य भाषा में अनेक प्रति-शब्द मिलते हैं। ऐसे में स्रोत भाषा के शब्द का सटीक तथा सूक्ष्म अर्थ समझने के लिए और लक्ष्य भाषा में उसके लिए उपयुक्त प्रतिशब्द का चुनाव करने के लिए थिसॉरस तथा पर्याय कोश बहुत उपयोगी होते हैं।

यहाँ अनुवाद कर्म में भिन्न-भिन्न प्रकार के कोशों की उपयोगिता का संकेत मात्र दिया गया है। आइए, अब हम इन भिन्न-भिन्न प्रकार के कोशों की प्रकृति और प्रकार्य को समझने की कोशिश करें और उदाहरणों के माध्यम से देखें कि व्यावहारिक रूप में ये किस प्रकार उपयोगी सिद्ध होते हैं।

8.4 कोशों के प्रकार

1 भाषिक कोश - इस श्रेणी में उन कोशों को रख सकते है जिनका सरोकर भाषा और शैली के विभिन्न पक्षों से होता है। इनके अंतर्गत केवल शब्द ही नहीं, पर्यायों, विशिष्ट शब्द तथा भाषा प्रयोगों, विशिष्ट अभिव्यक्तियों तथा लोकोक्तियों और मुहावरों से संबद्ध कोश भी आ जाते हैं। इनमें प्राथमिक स्तर पर आता है शब्दकोश, और उसमें भी एकभाषिक और द्विभाषिक कोश।

2 अन्य कोश - हमने अब तक कोशों पर विचार किया जो भाषा-शब्द, शब्दार्थ, पर्यायवाची शब्द, शब्द प्रयोग, मुहावरों, प्रयुक्तियों, अभिव्यक्ति आदि—से जुड़े हैं। वैसे तो अनुवाद भाषा का ही व्यापार है और इससे जुड़ी हर बात कहीं न कहीं भाषा से जुड़ती है। किंतु इस अनुभाग में हम कुछ ऐसे कोशों पर बात करेंगे जो सीधे-सीधे भाषा प्रयोग की अपेक्षा कुछ अन्य बातों से जुड़े हैं। इन बातों का महत्व भी अनुवाद में कम नहीं है।

8.4.1 एकभाषिक कोश - एकभाषिक कोश में किसी एक भाषा के शब्दों का वर्णक्रमानुसार संग्रह होता है और उसी भाषा में उनके अर्थ भी दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए:

कड़ाह- संज्ञा पु. (सं.) 1. कड़ाह बड़ी कड़ाही। 2. कछुए की खोपड़ी। 3. कुआँ। 4. नरक। 5. झोपड़ी। 6. भैंस का बच्चा। 7. ढूह। ऊँचा टीला। 8. सूप।

अच्छे कोश में किसी दिए गए शब्द के विभिन्न अर्थों के अतिरिक्त उनकी व्याकरणिक कोटि, वे संज्ञा हों तो उसका लिंग,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

वचन, शब्द का स्रोत तथा विभिन्न प्रयोग भी दिए जाते हैं। कहीं-कहीं उपयुक्त उद्धरणों के माध्यम से शब्द के अर्थ को और अधिक स्पष्ट भी कर दिया जाता है। शब्द के साथ इतनी जानकारी विस्तार से देने में अध्येता का ध्यान भटक सकता है और अर्थ-बोध में उलझन हो सकती है। अत: शब्दकोश के आरम्भ में ही कुछ संकेत तालिकाएँ दे दी जाती हैं, जिनमें विभिन्न सूचनाओं के लिए संक्षिप्त संकेत निर्दिष्ट कर दिए जाते हैं। इन संकेतों के माध्यम से चर्चाधीन शब्द की श्रेणी, प्रकृति, प्रकार्य, संदर्भ, स्रोत, प्रयोग आदि के विषय में अधिक से अधिक जानकारी दे दी जाती है। आपको कोशों में इस प्रकार की सूचियों का भी अध्ययन करना चाहिए। शब्दकोशों के उद्देश्य तथा उनकी पद्धति को समझने के लिए उनकी भूमिकाओं और प्रस्तावनाओं का भी अध्ययन करना चाहिए।

आम धारणा है कि अनुवाद में द्विभाषिक कोश उपयोगी होता हैं क्योकि उसमें एक भाषा के शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में दिए जाते हैं किंतु, अनुवादक को एकभाषिक कोश की आवश्यकता भी अक्सर पड़ती है। स्रोत भाषा के किसी अप्रचलित, अल्प-प्रचलित या अपरिचित शब्द का अर्थ जानने के लिए यह अपरिहार्य है। आप कह सकते हैं कि यह कार्य तो द्विभाषिक कोश से भी सिद्ध हो सकता है। किंतु एक तो एकभाषिक कोश में शब्दों पर अधिक संख्या में और अधिक गहराई तथा विस्तार से विचार होता है और दूसरे उसमें शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग के अनेक विकल्पों पर प्रकाश डाला जाता है जिससे उसका अर्थ-बोध अधिक स्पष्ट तथा सुनिश्चित हो जाता है।

ऐसा कई बार सरल शब्दों के साथ भी होता है कि किसी संदर्भ में उनका सीधा अर्थ संगत नहीं लगता। उदाहरण के लिए चिड़ियाघर के सूचनापट पर Big cats का उल्लेख हो तो उसका अर्थ बड़ी बिल्लियाँ निश्चय ही नहीं होगा। अंग्रेजी शब्दकोश में अर्थ देखें तो पता चलेगा कि इस शब्द का उल्लेख बाघ, तेंदुआ आदि बिल्ली जातीय वन्य प्राणियों के लिए भी होता है और दिए हुए संदर्भ में यही अर्थ संगत है। इसी प्रकार यदि किसी स्त्री के लिए कहा जाए- She is cat. तो इसका सीधे-सीधे अनुवाद वह बिल्ली है नहीं होगा। यह अनुवाद अपने आप में हास्यास्पद भी है और अस्पष्ट भी क्योंकि इससे लेखक वक्ता का आशय स्पष्ट नहीं होता। अंग्रेजी शब्दकोश में cat का एक अर्थ Spiteful woman भी है। इसके आधार पर इस वाक्य में cat का अनुवाद द्वेषपूर्ण या द्वेषी हो सकता है।

लक्ष्य भाषा के एक-भाषिक शब्दोश की भी इसी प्रकार आवश्यकता पड़ती रहती है। स्रोत भाषा के किसी शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में एकाधिक प्रतिशब्द हो सकते हैं। संभव है अधिक प्रचलित प्रतिशब्द किसी संदर्भ विशेष में अधिक उपयुक्त न हो। ऐसे में शब्दकोश जो अनेक विकल्प सुझाता है उनमें अर्थच्छाया वाला शब्द चुना जा सकता है। नीचे कुछ उपयोगी एक भाषा कोशों का उल्लेख किया जा रहा है:-

कोश:-

1. **हिन्दी शब्दसागर संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर,** संपा. रामचन्द्र वर्मा, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. **बृहत् हिन्दी कोश,** संपा कालिका प्रसाद तथा अन्य, ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी।
3. The Concise Oxford Dictionary, ed. H.W. Fowler &F. Co. oxford Universiity press.
4. Chambers's Twentieth century Dictionary, ed. William Ceddie, Ceddie, London, W&R Chambers Ltd.

8.4.2 द्विभाषिक कोश - द्विभाषिक कोश में एक भाषा के शब्दों के अर्थ, उच्चारण तथा प्रयोग संदर्भ दूसरी भाषा में दिए जाते हैं। अनुवाद में इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है क्योंकि ये स्रोत तथा लक्ष्य, दोंनो भाषाओं के शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग की समाहित करते हैं। स्रोत भाषा या लक्ष्य भाषा में से कोई भी इन कोशों की प्रथम भाषा हो सकती है जिसके शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग दूसरी भाषा में रहते हैं। अंग्रेजी-हिन्दी के परस्पर अनुवाद के संदर्भ में अंग्रेजी-हिन्दी और हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश इस श्रेणी में आएँगे। अनुवाद में यद्यपि स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा के शब्द पर्याय खोजने होते हैं, लेकिन दोनों ही प्रकार के कोशों की आवश्यकता होती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

स्रोत भाषा-लक्ष्य भाषा शब्दकोश की उपयोगिता तो आपके सामने स्पष्ट है, किन्तु कई बार, विशेषकर अनुवाद पुनरीक्षण के क्रम में यह देखना आवश्यक हो जाता है कि लक्ष्य भाषा का जो शब्द आपने चुना है वह स्रोत भाषा के संबद्ध शब्द का आशय सटीक रूप से दे रहा है या नहीं। उदाहरण के लिए एक वाक्य लीजिए:

- He is quite clear in his mind.

अंग्रेजी शब्द clear के अनेक अर्थ हो सकते हैं। आप कौन-सा चुनेंगे ?अंग्रेजी-हिन्दी कोश देखिए। डा. कामिल बुल्के के कोश में इस शब्द के कई अर्थ दिए गए हैं—स्पष्ट, स्वच्छ, पारदर्शक, निर्दोष, सुनिश्चिते और निर्बोध।

उपयुक्त प्रतिशब्द का चयन बहुत कुछ संदर्भ से निर्धारित होता है, किंतु वाक्य का एक सामान्य अर्थ भी होता है जिसकी दृष्टि से कुछ शब्द बिल्कुल अनुपयुक्त होंगे। अर्थ की दृष्टि से शब्द की उपयुक्तता के निर्णय के लिए आप फिर स्रोत भाषा की कसौटी अपना सकते हैं। अर्थात् हिन्दी-अंग्रेजी कोश में इन तमाम प्रतिशब्दों के अंग्रेजी प्रतिशब्द देखिए। मीनाक्षी हिन्दी-अंग्रेजी कोश में ये अर्थ इस प्रकार है:

स्पष्ट	-	Clear, evident
स्वच्छ	-	1. Clear 2. Limpid, clean and clear
पारदर्शक	-	Transparent
निर्दोष	-	1. Innocent, blameless, guiltless 2. unblemished
सुनिश्चित	-	Fimly determined, definite

अब आप देखिए कि इनमें से कौन-सा अंग्रेजी प्रतिशब्द आशय की रक्षा करते हुए मूल वाक्य में सहज भाव से लग सकता है। ऐसे शब्द हैं - Clear, Firmly determined और definite.

यह अपने मन में बिल्कुल स्पष्ट/सुनिश्चित है।

अब संदर्भ के अनुसार इनमें से उपयुक्त शब्द चुन लीजिए—

इस प्रकार आपने देखा कि अनुवाद में द्विभाषिक कोश दोनों तरह सहायक होते हैं-स्रोत भाषा के लक्ष्य भाषा पर्याय देखने में और लक्ष्य भाषा के स्रोत भाषा पर्याय देखने में भी। कुछ कोश बहुभाषिक भी होते हैं जिनमें एक ही कोश में एक भाषा के शब्दों के प्रतिशब्द एक से अधिक भाषाओं में दिए जाते है। इसी प्रकार कुछ द्विभाषिक कोश दुतरफा भी होते हैं। अर्थात् उसके पूर्वार्ध में भाषा 'क' के शब्दों के अर्थ भाषा 'ख' में दिए जाते हैं और उत्तरार्ध में भाषा ख के शब्दों के अर्थ भाषा क में। इस प्रकार के शब्दकोश सैलानियों के लिए विशेष उपयोगी होते हैं क्योंकि वे अपनी भाषा (क) के किसी शब्द का अर्थ तुरंत भाषा (ख) के ज्ञाता को बताला सकते हैं और साथ ही उसके द्वारा कही गई बात को भी साथ-साथ समझ सकते हैं। अनुवाद के लिए भी ऐसे कोश सहायक होते हैं। नीचे कुछ उपयोगी द्विभाषिक कोशों का उल्लेख किया जा रहा है-

द्विभाषिक कोश

1. अंग्रेजी-हिन्दी कोश, डॉ. कामिल बुल्के, कैथोलिक प्रेस, रॉची।
2. बृहत् अंग्रेजी-हिन्दी कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, ज्ञानमंडल, वाराणसी।
3. Oxford Hindi English Dictionary, R.S. Mc Greger, Oxford University, Press, Oxford
4. शिक्षार्थी हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोशों, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

8.4.3 उपभाषा कोश - उपभाषा कोश में मानक भाषा से जुड़ी हुई किसी बोली के शब्दों और प्रयोगों का अर्थ सहित संग्रह

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

होता है। उपभाषा में हुई किसी रचना के लिए तो ऐसे कोश उपयोगी सिद्ध होते ही हैं, पर कई बार मानक भाषा में लिखे गए साहित्य में– मुख्य रूप से कथा साहित्य में... बोलियों के शब्द तथा प्रयोग भी मिले–जुले होते हैं। हिन्दी में आपको ऐसे असंख्य प्रयोग आंचलिक कथा साहित्य में मिलेंगे। विशुद्ध आंचलिक की श्रेणी में आने वाले साहित्य में भी कई बार ऐसे अनेक शब्द मिलते हैं जो क्षेत्र विशेष की बोली तक ही सीमित होते हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी के कई कथाकारों की रचनाओं में स्कॉटिश तथा वेल्श भाषा प्रयोग मिलते हैं। कथा साहित्य तथा इतर रचनाओं में भी, क्षेत्रीय रीति–रिवाज, कृषि आदि संबंधी उपभाषा के शब्द कई बार आते हैं। उपभाषाओं के बहुचलित शब्द तो मानक भाषा के शब्दकोशों में मिल सकते हैं जैसे स्कॉटिश शब्द बच्चा। किन्तु अधिकतर शब्द बोली विशिष्ट होने के कारण केवल उपभाषा के शब्दकोश में ही मिल सकते हैं। अनुवादक को केवल संदर्भ से शब्द के अर्थ का अनुमान लगाने के स्थान पर कोश से उनका अर्थ देख लेना चाहिए। तभी अनुवाद अधिक संगत और प्रामाणिक होगा। अंग्रेजी उपभाषा शब्दों के लिए आप निम्नलिखित उपभाषा कोश की सहायता ले सकते हैं–

सहायक उपभाषा कोश

The English Dialect Dictionary, ed. Joseph Wright, Oxford University Press, Oeford.

हिन्दी के संदर्भ में हिन्दी की बोलियों (बृजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी मैथिली, भोजपुरी आदि के कोश उपयोगी होंगे।)

8.4.4 अपभाषा कोश – अपभाषा कोश सुनने में बड़ा विचित्र लगता है किन्तु बोलचाल की भाषा में कई ऐसे प्रयोग होते हैं जो मानक भाषा से बहुत भिन्न होते हैं और मात्र मानक भाषा की शब्दावली, शब्दार्थ और प्रयोगों के माध्यम से इनका मतलब नहीं समझा जा सकता। इन्हें अपभाषा या चालू भाषा के प्रयोग कहा जा सकता है। हिन्दी में देखिए ''खुंदक'', ''दुल्ला'', ''पंगा लेना'', ''फट्टे मारना'' आदि शब्द और प्रयोग मात्र मानक भाषा के माध्यम से नहीं समझे जा सकते। कई बार मानक भाषा में प्रयुक्त सहज सामान्य शब्द भी चालू भाषा में कुछ और अर्थ होते हैं, जैसे–छोड़ना या फेंकना (गप्प मारना, दूर की हाँकना आदि।) अंग्रेजी भाषाओं में भी आपको ऐसे प्रयोग मिलेंगे जिनके शब्दार्थ उनके आशय को बिल्कुल भी प्रकट नहीं करते। उदाहरण के लिए–

- pickled
- chunk of wood
- kick the bucket
- be a beauty

इनके शब्दार्थ क्रमशः इस प्रकार होंगे–

- अचार डला हुआ
- लकड़ी का टुकड़ा
- बाल्टी को लात मारना
- सुंदर (व्यक्ति/वस्तु) होना

वास्तव में इनका निहितार्थ क्रमशः इस प्रकार होगा–

- नशे में धुत
- किसी काम का न होना
- मर जाना
- फूहड़ और अविश्वसनीय व्यक्ति होना।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

एक बात पर ध्यान दीजिए। एकभाषिक कोश पर चर्चा करते समय इस बात का उल्लेख किया गया था कि कभी-कभी किसी शब्द के बहुप्रचलित पर्याय का चलन भी पूरे कथन को गलत या हास्यास्पद बना सकता है। ऐसे में कोश में दिया हुआ अन्य पर्याय काम आता है। लेकिन अपभाषा प्रयोगों के मामले में यह बात नहीं है। ऐसे प्रयोगों के जो अर्थ निकाले जाते हैं, वे उनके कोशीय अर्थ नहीं होते। दूसरे शब्दों में ऐसे किसी भी शब्द या प्रयोग के अनके कोशीय अर्थों में से कोई भी अर्थ ऐसे आशय का वहन नहीं करता।

सामान्यत: शिष्ट और शालीन भाषा में इस प्रकार के चालू प्रयोग नहीं होते। ऐसे कई प्रयोग फूहड़ और अभद्र भी होते हैं पर किसी विशेष वर्ग द्वारा या किसी विशेष स्थिति में उनका प्रयोग होता भी है। कथा साहित्य में भी किन्हीं विशेष चरित्रों, परिवेश या स्थितियों के यथार्थ चित्रण के क्रम में इस प्रकार की भाषा का प्रयोग होता है। स्रोत भाषा की रचना में इस तरह के प्रयोग हों तो अनुवाद में दो बातें आवश्यक हैं-1. इन प्रयोगों के स्पष्ट और सही अर्थ समझें और 2. लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव को बनाए रखने की चेष्टा करें।

सहायक अपभाषा कोश

A Dictionary of Slang and Unconventional, English. Erik. Partridge, Routledge & Kegan Paul Limited, London.

8.4.5 विविध विषयों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली/कोश/शब्द संग्रह- विविध विषयों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली/कोश/शब्द संग्रह भी उपभाषा कोशों की ही भाँति अनुवादक के लिए सामान्य भाषा कोशों के पूरक का कार्य करते हैं। ज्ञान-विज्ञान के विविध विषयों की विशिष्ट शब्दावली और विशिष्ट प्रयुक्तियाँ होती हैं। मानक भाषा का कोश कितना ही विराट क्यों न हो, सामान्य रूप से उसमें विविध ज्ञान क्षेत्रों- इतिहास, भूगोल, दर्शन, ज्योतिष, वाणिज्य, प्रबंधन, गणित, भौतिक, रसायन शास्त्र, अंतरिक्ष विज्ञान, प्रशासन आदि असंख्य विषयों- से संबद्ध तकनीकि शब्दावली को समविष्ट करना संभव नहीं होता। इसलिए किसी विशेष विषय से संबद्ध सामग्री का अनुवाद करते समय उस विषय से संबद्ध शब्दावली के कोशों का सहारा लेना आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य है। ऐसे एक भाषिक कोश भी हो सकते है जिनमें शब्दों के अर्थ तथा आशय को स्पष्ट किया जाता है। अनुवाद के लिए विषयों से संबद्ध द्विभाषिक या बहुभाषिक कोश और अधिक सहायक होते हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने मानषिकी, विज्ञान, चिकित्सा से संबद्ध ''बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह'' प्रकाशित किए गए हैं जिनमें से अंग्रेजी के हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के भी प्रतिशब्द दिए गए हैं। इनके माध्यम से अंग्रेजी के संकल्पनात्मक तथा तकनीकी शब्दों के मानक प्रतिशब्द आसानी से मिल सकते हैं। विभिन्न सरकारी विभागों तथा मंत्रालयों द्वारा भी अपने क्षेत्र से संबद्ध शब्दावली तथा शब्द प्रयोगों के कोश प्रकाशित किए जाते हैं और संबद्ध विषय के अनुवाद में वे बहुत उपयोगी सिद्ध होता हैं। ऐसे कुछ द्विभाषिक सहायक कोश निम्नलिखित हैं-

1. बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह (मानषिकी), 2 खंड भारत सरकार, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली।
2. बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह (विज्ञान), 2 खंड, भारत सरकार, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली।
3. आकाशवाणी शब्दकोश, भारत सरकार, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. विधि शब्दावली भारत सरकार, विधि मंत्रालय, नई दिल्ली।
5. समेकित प्रशासन शब्दावली, भारत सरकार, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली।

8.4.6 परिभाषा कोश - ये परिभाषा कोश अथवा पारिभाषिक कोश मात्र पारिभाषिक शब्दावली कोशों संग्रहों से भिन्न होते हैं। शब्दावली संग्रहों में विभिन्न विषयों तथा अनुशासनों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली दी जाती है। पारिभाषिक शब्दाकोश भी विषय विशेष की पारिभाषिक शब्दावली से ही जुड़े हुए होते हैं। ऐसे द्विभाषिक शब्द कोशों में एक भाषा में दी हुई पारिभाषिक शब्दावली के प्रतिशब्द दूसरी भाषा/भाषाओं में दिए जाते हैं। किन्तु परिभाषा को समझाया भी जाता है। इसी प्रकार ये विषय कोशों की श्रेणी में होते हुए

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

भी उनसे कुछ भिन्न हैं। विषय कोशों में विषय से संबद्ध सिद्धांतों, अवधारणाओं आदि की जानकारी दी जाती है। इस क्रम में पारिभाषिक शब्द तथा संबद्ध अवधारणाएं दी जाती हैं किन्तु परिभाषा कोश मूलत: शब्दकोश हैं और इनका पूरा बल विषय की जानकारी कराने पर नहीं बल्कि पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और उसके अभिधेय पर रहता है।

आप पूछ सकते हैं कि पारिभाषिक शब्द की अवधारणा को समझना क्यों आवश्यक है जबकि शब्दों का अर्थ देना ही काफी है पर यह बात आपके सामने कई बार आ चुकी है और अनुवाद अभ्यास के क्रम में स्वयं आपने भी कई बार महसूस किया होगा कि शब्दरूपी किसी ध्वनिसमूह का कोई निर्विकल्प अर्थ नहीं होता। वास्तविक अर्थ पूरे संदर्भ में ही निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद के क्रम में ध्वनि का अर्थ आप क्या देंगे? सामान्य अर्थ है Sound किन्तु काव्यशास्त्रीय संदर्भ में यह अर्थ असंगत होगा। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद की कविता 'काली आंखों का अंधकार' की पंक्ति अत्यंत तिरस्कृत अर्थ सदृश का अनुवाद like extremely disclaimed meaning निश्चय ही नहीं होगा। 'अत्यंत तिरस्कृत वाच्य' भारतीय काव्यशास्त्र की अवधारणा है। इसके विपरीत अंग्रेजी प्रतिशब्द के चुनाव के लिए आपके आगे इस अवधारणा का स्पष्ट रहना जरूरी है।

यहां आप फिर प्रश्न उठा सकते हैं कि इसके लिए कोश देखना क्यों जरूरी है? काव्यशास्त्र या इसी प्रकार अन्य विषयों के ग्रंथ भी इसमें सहायक हो सकते हैं। ठीक है किन्तु ध्यान रखें कि अनुवादक को हर विषय का ज्ञान होना जरूरी है। इसलिए किसी भी विषय के सही ग्रंथ को उठाकर उसमें संबद्ध अवधारणा के बारे में पढ़ लेना इतना आसान नहीं है। पहले तो उसे आवश्यकतानुसार उपयुक्त ग्रंथ का पता लगाना होगा फिर अवधारणा से संबद्ध भाग को पढ़ना होगा जिसमें स्वाभाविक रूप से ही बहुत-सी ऐसी जानकारी भी शमिल होगी जो वर्तमान प्रसंग में उसके लिए इतनी आवश्यक नहीं भी हो सकती है। अनुवाद कार्य की समय-सीमा को देखते हुए उसके लिए ऐसे ग्रंथ अधिक सहायक होंगे जिनमें अधिक समय या शक्ति नष्ट किए बिना यह आवश्यक अनिवार्य जानकारी पा सके। इसी दृष्टि से बहुत मददगार होते हैं।

परिभाषा कोशों में भी शब्दों का वर्णक्रमानुसार संयोजन होता है ये एकभाषिक भी हो सकते हैं जिनमें जिस भाषा का शब्द होता है उसी भाषा में उसके विषय की जानकारी (उच्चारण, इतिहास, अर्थ, प्रयोग संदर्भ तथा आवश्यकतानुसार विभिन्न विद्वानों के मतामत तथा विवेचन आदि) रहती है। अनुवादक के लिए और भी उपयोगी ऐसे द्विभाषिक कोश होता हैं जिनमें एक भाषा के पारिभाषिक शब्द के साथ उसका प्रतिशब्द तथा अन्यान्य जानकारी दूसरी भाषा में रहती है। उदाहरण के लिए-

Hypochondria (हाइपोकॉन्ड्रिया) : स्वकाय दुश्चिंता।

अपने स्वास्थ्य के बारे में विस्तृत चिन्ता-रोगी का यह भाव कि वह शरीर के रोग से पीड़ित है। दृष्टांत के लिए यह सोचना कि उसे अनीमिया या क्षयरोग हो गया है इत्यादि। यह कारण और अधारहीन होता है। वस्तुत: व्यक्ति शरीर से स्वस्थ होता है और यह उसकी कोरी कल्पना मात्र रहती है। एडलर के अनुसार यह अवस्था हीनत्व ग्रंथि के कारण होती है। इस मानसिक विकृत लक्षण को हटाने में मुक्त साहचर्य और संसूचन (Suggestion) की विधियां विशेष सफल सिद्ध होती है। (मानविकी पारिभाषिक कोश, 'मनोविज्ञान खंड')

एपिग्राफ : पुरालेख, सुभाषित।

व्युपत्ति की दृष्टि से इसका अर्थ है ''पुरालेख'' किन्तु कोई भी ऐसी उक्ति जो संक्षिप्त, सुष्ठु और चमत्कारपूर्ण हो सुभाषित कही जाएगी। इसमें और व्यंग्योक्ति में यह अंतर है कि व्यंग्योक्ति मूलत: व्यंग्यात्मक ही होनी चाहिए, इसका व्यंग्यात्मक होना अनिवार्य नहीं है। (मानविकी पारिभाषिक कोश, 'साहित्य खंड')

आप देख रहे हैं कि इन उदाहरणों में न केवल अवधारणाओं को समझाया गया है बल्कि मिलती-जुलती अवधारणाओं से इनका अंतर भी स्पष्ट कर दिया गया है। दूसरे उदाहरण में दिये हुए शब्द के दो वैकल्पिक प्रतिशब्द तथा उनके संदर्भ भी स्पष्ट कर दिए

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

गए हैं। इन सब बातों से अनुवादक के लिए इनकी उपयोगिता स्पष्ट है।

पुस्तकालयों में आपको दर्शन, साहित्य, धर्म, कला, विज्ञान आदि सभी विषयों से संबद्ध परिभषा कोश/पारिभाषिक कोश मिल जाएंगे। सभी विषयों के ऐसे कोशों का उल्लेख इस पाठ की सीमा में संभव नहीं है। आपकी सुविधा के लिए यहां सामान्य रूप से उपयोगी कुछ कोशों का सुझाव दिया जा रहा है।

सहायक कोश

1-3. Encyclopaedia of Humanities संपादक डॉ. नगेन्द्र, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (दर्शन खंड, साहित्य खंड, मनोविज्ञान खंड)।

4. साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, राजेन्द्र द्विवेदी, दिल्ली, आत्माराम एंड संस।

5. भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, राजेन्द्र द्विवेदी, दिल्ली, आत्मारांम एंड संस।

6. साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश, प्रो. महेन्द्र चतुर्वेदी तथा डॉ. ताकरनाथ बाली, दिल्ली, बुक्स एंड बुक्स।

8.4.7 विषय कोश- विषय कोश मात्र भाषिक ही नहीं भाषिकेतर संदर्भ में भी जुड़े होते हैं किन्तु भाषिक स्तर पर उनकी भूमिका के कारण इस भाग में उनका उल्लेख भी किया जा रहा है। विषय कोशों में संबद्ध विषय की शब्दावली संकल्पनाओं आदि की जानकारी रहती है। जब तक आप किसी विशेष विषय का अनुवाद करते हैं तो सही अनुवाद पर्याप्त नहीं होता। जब तक आपके सामने हर संकल्पना शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में उपयुक्त शब्द नहीं मिलता। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय भी यह कठिनाई हमारे सामने कई बार आती है। जिन विज्ञानों और अनुशासनों पर अब तक हिन्दी में कुछ विशेष लिखा नहीं गया है या जो पश्चिम में अभी उभरने की प्रक्रिया में हैं उनसे संबद्ध शब्दावली हिन्दी में या तो अभी बनी नहीं है या फिर लगभग अप्रचलित है। ऐसे में आपको संदर्भ से अर्थ समझकर उपयुक्त शब्द खोजना या बनाना होगा। समझने की इस प्रक्रिया के लिए आपको विषय कोश की सहायता लेनी पड़ेगी।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक ही शब्द अलग-अलग विषयों में अलग-अलग अर्थों में व्यवहृत होता है। यह सही है कि द्विभाषिक शब्दकोश में उस शब्द के विभिन्न प्रतिशब्द भी मिल जाते हैं किन्तु उससे यह स्पष्ट नहीं होता कि विषय विशेष में आपको कौन-सा प्रतिशब्द चुनना है या कौन-सा प्रतिशब्द अधिक उपयुक्त होगा। उदाहरण के लिए Unity शब्द लीजिए। सामान्य बोलचाल में इसका अर्थ ''एकता'' होता है किन्तु संख्या के संदर्भ में यह ''इकाई'' नाटक के संदर्भ में ''अन्विति'' और अभिकल्पन के संदर्भ में ''सुसंगति'' का अर्थ देता है। दार्शनिक संदर्भ में यह कभी-कभी ''अद्वैतता'' का अर्थ भी दे सकता है। इसी प्रकार Voice का अर्थ सामान्य बोलचाल में एक होता है और व्याकरण में कुछ और।

The voice of a sentence is important in determining its meaning का अर्थ

किसी वाक्य का अर्थ निर्धारित करने में उसकी आवाज/वाणी बहुत महत्त्वपूर्ण होती है- न होकर

किसी वाक्य का अर्थ निर्धारित करने में उसका वाक्य बहुत महत्त्वपूर्ण होता है-होगा- राजनीति विज्ञान में इसका अर्थ ''ध्वनि'' हो सकता है-जैसे (ध्वनि मत) सरीखे प्रयोग से।

हिन्दी में भी आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे। ''लीला'' शब्द को ही लीजिए-''बाल लीला'', ''रसलीला'', ''प्रणय लीला'', ''लीला कमल'', ''ब्रह्मा की लीला'', ''भगवान की लीला'' (मुहावरा) आदि अनेक संदर्भ में इस शब्द के आपको अनेक अर्थ मिलेंगे जिन्हें किसी एक प्रतिबद्ध में नहीं समेटा जा सकता। विषय कोश आपको यह बतला सकते हैं कि अमुक विषय में इस शब्द से संबद्ध अवधारणा क्या है और उसके लिए कौन-सा प्रतिशब्द उपयुक्त होगा। किसी भी अच्छे पुस्तकालय में आपको भाषा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विज्ञान, दर्शन, साहित्यशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, गणित, सांख्यिकी तथा विभिन्न विज्ञानों एवं अनुशासनों से संबद्ध इस प्रकार के अनेक विषय कोश तथा Encyclopaedia मिल सकते हैं। कुछ विषय तथा एनसाक्लोपीडिया इस प्रकार है–

-International Encucyopaedia of the Social Sciences, ed. D.L. Sills. Collier Macmillan Publishers, London.

-The McGraw Hill Dictonary of Modern Economics : A Handbook of Terms and Organizations, Greenwald, McGrae Hill, New York.

-Encyclopaedia of Religion and Ethics, ed. James Hastings, T.T. Clark. Edinburgh.

8.4.8 अभिव्यक्ति कोश– अभिव्यक्ति कोश का अर्थ संभवत: आपके सामने स्पष्ट न हो। हम विषय विशिष्ट की शब्दावली तथा अपभाषा की बात कर चुके हैं। कुछ शब्द तथ शब्द प्रयोग ऐसे भी होते हैं जो किसी विशेष विषय, प्रयुक्ति या प्रसंग से जुड़े रहते हैं हालांकि उन्हें तकनीकी शब्दों की श्रेणी में नहीं रखा जाता। उन्हें Jargon या खास बोली कहा जा सकता है। उनका अनुवाद भी खास बोली में ही होना चाहिए क्योंकि प्रयुक्ति विशेष की भाषागत संरचना भी विशेष ही होती है। उदाहरण के लिए आपने समाचार पत्रों की या सरकारी तथा कार्यालयी पत्राचार, रपटों आदि की भाषा देखी होगी जिसमें एक विशेष संरचना और मुहावरे का प्रयोग होता है। हर भाषा में अपने तरीके से उस विशिष्टता का पालन होना चाहिए। कार्यालयी भाषा के कुछ उदाहरण लीजिए–

अंग्रेजी	**हिन्दी**
Acceptance in principle	सिद्धांत रूप में स्वीकृति
You are hereby informed	आपको इस पत्र के द्वारा सूचित किया जाता है–
Tenders are invited	निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

कुछ सामान्य शब्दों के अप्रचलित रूप भी विशेष संदर्भों और प्रयुक्तियों में आते हैं। उदाहरण के लिए spoiler शब्द को ही लीजिए। अमेरिका में राजनीतिशास्त्र के संदर्भ में इसका प्रयोग ऐसे व्यक्ति के लिए होता है जो अपनी पराजय निश्चित जानते हुए भी चुनाव में इसलिए खड़ा होता है कि अपने प्रतिद्वंद्वी के वोट काट सके। राजनीतिशास्त्र के ही शब्द impossibilism का प्रयोग समाज सुधार के उन हवाई आदर्श भरे विचारों के लिए होता है जिनका यथार्थ में कार्यान्वयन असंभव होता है। दूरदर्शन के संदर्भ में एक मुहावरे inherited audience का प्रयोग होता है। यह उस स्थिति का परिचायक है जब लोग किसी अत्यंत लोकप्रिय कार्यक्रम के बाद चैनल बदलने का झँझट नहीं करते और अच्छा–बुरा, जैसा भी कार्यक्रम आता है, देखते रहते हैं। अभिव्यक्ति कोश में इस प्रकार के प्रयोगों का भी संग्रह रहता है।

इसी प्रकार कई प्रसंगों में लंबे–लंबे शब्दों या शब्द समूहों के संक्षिप्त रूप या मात्र आद्यक्षरों का प्रयोग होता है, उदाहरण के लिए ''संयुक्त विधायक दल'' के लिए ''संविद'' United Nations Organisation के लिए UNO और Child Relief and you के लिए CRY। इन बहुप्रचलित शब्दों के अलावा कई ऐसे शब्द भी है जो केवल विशेष प्रयुक्तियों में ही आते हैं, जैसे B.P. (Bill payable), RAM (Random Access Memory), MAD (Magnetic Airborne Detection) आदि। सही अनुवाद के लिए आपको इन अभिव्यक्तियों का सही अर्थ तथा प्रसंग मालूम होना चाहिए। इसमें भी अभिव्यक्ति कोश बहुत सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

8.4.9 सहायक अभिव्यक्ति कोश

1. Newspeak-A dictionary of Jargon, Jonatham Greeen, Routledge & Kegan paul Ltd. London...

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. अंग्रेजी-हिन्दी अभिव्यक्ति कोश, कैलाशचन्द्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।

मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश

मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश भी अनुवाद कर्म के लिए बहुत आवश्यक है। मुहावरे तथा लोकोक्ति हर भाषा के अनिवार्य अंग होते हैं और भाषा को चुस्त तथा व्यंजक बनाते हैं। लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के ऐसे प्रयोगों की चुस्ती तथा व्यंजकता लाने के लए मुहावरों तथा लोकोक्तियों का भी समुचित अनुवाद होना चाहिए। यहीं एक परेशानी हो सकती है। मुहावरे अपने शब्दार्थ से भिन्न अर्थ देते हैं। उदाहरण के लिए ''नौ दो ग्यारह हो जाना'' का गिनती या गणित से कोई संबद्ध नहीं है न ''रंगे हाथ'' या red handed का हाथों के रंग से। इसलिए मुहावरों का अनुवाद शब्दार्थ शब्दांतरण के माध्यम से तो हो ही नहीं सकता। उसके लिए लक्ष्य भाषा में प्रसंग के उपयुक्त मुहावरों की तलाश होनी चाहिए।

लोकोक्तियों में अपने भाषा-क्षेत्र की संस्कृति का सार तत्व अभिव्यक्त होता है इसलिए उन पर अपने क्षेत्र की संस्कृति की गहरी छाप होती है किन्तु साथ ही वे कुछ सार्वभौम मानवीय सत्यों को ही अभिव्यक्त करती हैं। अत: हर भाषा में समान आशय का वहन करने वाली लोकोक्तियां भी प्राय: मिल जाती हैं, जैसे-

अंग्रेजी	हिन्दी
The grass is greener on the other side of the fence	दूर के ढोल सुहावने
Empty vessels makes much noise	अधजल गगरी छलकल जाय

लोकोक्तियों के अनुवाद में हमेशा आपकी कोशिश यह रहनी चाहिए कि स्रोत भाषा की लोकोक्ति का भाषांतर करने के स्थान पर लक्ष्य भाषा में उसकी समानार्थक लोकोक्ति का प्रयोग करें। ऐसी समानार्थक लोकोक्तियों और मुहावरों की तलाश में द्विभाषिक मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश सहायक सिद्ध होते हैं। ऐसे एक-भाषिक कोश भी बहुत उपयोगी होता हैं। जिनमें मुहावरे/लोकोक्ति के साथ ही उनके अर्थ तथा प्रयोग भी दिए गए रहते हैं जिनसे उनके आशय आपके सामने स्पष्ट हो जाते हैं। इनकी सहायता से आपका अनुवाद अधिक प्रामाणिक हो जाता है।

सहायक कोश

1. मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश, डॉ. हरदेव बाहरी तथा डॉ. श्यामलाकांत वर्मा, विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली।
2. विचारमूलक विश्व लोकोक्ति कोश, Thesaurus of Universal Proverbs, ओ. पी. गाबा, नेशनल पब्लिशिंग हॉऊस, नई दिल्ली।
3. अंग्रेजी-हिन्दी मुहावरा लोकोक्ति कोश, भोलानाथ तिवारी तथा द्विजेन्द्र नाथ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. Oxford Dictionary of Current Idiomatic English. A. P. Cowie, R. Makin and R. Mocaig. Oxford Universisty Press, Oxford.

8.4.10 थिसॉरस - ''थिसॉरस'' तथा पर्याय कोश, भाषिक कोशों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं। ''थिसॉरस'' लैटिन शब्द है जिसका शब्दार्थ है ''खजाना'' या ''कोशागार''। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्सनरी में इसके और भी अर्थ दिए गए हैं जिनमें से एक हैं-शब्दकोश या विश्वकोश जैसा ज्ञान भंडार। दूसरा अर्थ है-A colleaction of concepts or words arranged according to sense- अर्थात् ''अवधारणा/संकल्पनाओं अथवा शब्दों का आशय के अनुसार विन्यस्त संग्रह।'' अमेरिका में इसका प्रयोग पर्याय तथा विपर्याय कोश के अर्थ में भी होता है। रॉजे के प्रसिद्ध ''थियारॉस '' का उद्देश्य है—साहित्यिक अभिव्यक्ति को सहज तथा प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त शब्दों तथा मुहावरों का सुझाव इसके लिए अवधारणाओं के अनुसार शब्दों को वर्गीकृत किया गया

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

है और एक-सा ही अर्थ देते हुए प्रतीत होने वाले अनेक शब्दों को साथ-साथ न देकर केवल उनके विभिन्न प्रयोग समझाए गए हैं बल्कि उनकी सूक्ष्म अर्थच्छायाओं पर प्रकाश डालते हुए उनके बीच का अंतर भी समझाया गया है। हर शब्द की सूक्ष्म ध्वनि का परिचय देते हुए इसमें यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द कैसे भिन्न-भिन्न अर्थ संदर्भों का वहन करते हैं और विशेष स्थिति में क्यों इनमें से कोई विशेष विकल्प ही अधिक उपयुक्त होता है।

कोई लेखक रचना के क्रम में एक कठिनाई का अनुभव अवश्य करता है। वह है दिमाग में आशय स्पष्ट होते हुए भी उसके उपयुक्त शब्द का न मिलना। शब्दाकोश ऐसे में अपर्याप्त सिद्ध होता है क्योंकि एक उपयुक्त शब्द की खातिर पूरे ग्रंथ को छान मारना संभव नहीं होता। ''थियॉरस '' में वह संबद्ध अवधारणा से जुडे शब्दों पर विचार करके सही शब्द चुन सकता है। एक शब्द के कई विकल्प उपलब्ध होन के कारण वह आवश्यकतानुसार भिन्न शब्दों का प्रयोग करते हुए दोहराव से भी बच सकता है। अनुवादक को भी ''थिसॉरस '' के प्रयोग से ये सुविधाएँ मिल सकती है। यदि ''थिसॉरस'' की भाषा अनुवाद में लक्ष्य भाषा हो तो उसमें वह विशेष अवधारणाओं के अंतर्गत आने वाले शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त तथा सटीक शब्द का चुनाव कर सकता है। यदि ''थिसॉरस '' की भाषा अनुवाद में स्रोत भाषा है तो किसी शब्द का सही और परिशुद्ध अर्थ समझने में उसे इससे सहायता मिलती है। स्रोत भाषा के शब्द का अर्थ स्पष्ट होने पर उसके लिए अधिक सटीक अनुवाद करना संभव होता है।

''थिसॉरस '' में पात्र प्रचलित और मानक शब्दों का ही नहीं चालू भाषा की शब्दावली, आद्याक्षर से बने शब्दों

(Acronym) और चर्चाधीन शब्दो से बने मुहावरों का भी विवरण रहता है। इस प्रकार यह मौलिक तथा अनुवाद, दोनों ही प्रकार के लेखन कर्म में बहुत उपयोगी रहता है।

सहायक कोश:-

Roget's International Thesaurus, Oxford& India Book House Publishing Co. Pvt. Ltd., New Delhi.

8.4.11 पर्याय कोश - पर्याय कोश भी थिसॉरस से मिलते-जुलते ही होते है। इनमें प्राय: वर्णक्रम से संग्रहीत शब्दों के विभिन्न पर्यायों या प्राय: समानार्थक शब्दों का उल्लेख होता है और साथ ही उनके बीच में अर्थ और प्रयोग के उस सूक्ष्म अंतर को भी सपष्ट कर दिया है जिसके कारण किसी विशेष प्रसंग में कोई खास पर्याय ही अधिक उपयुक्त होता है। उदाहरण के लिए ''कोमल '', ''मुलायम ''सुकुमार '', ''मृदुल '', ''नरम '' एक-सा ही अर्थ देते हुए प्रतीत होने पर भी एक ही अर्थ नहीं देते। सुमित्रानंदन पंत ने ''पल्लव '' की भूमिका में ''लहर '' के विभिन्न पर्यायवाचियों - ''वीचि '', ''ऊर्मि '', ''तरंग '' आदि का उल्लेख करते हुए उनके अंतर को स्पष्ट किया था। अनुवादक के लिए भाषा के इन संकेतों को समझना बहुत आवश्यक है।

पर्यायवाची या समानार्थक प्रतीत होने वाले कई शब्दों में सामाजिक या सांस्कृतिक संदर्भ का अंतर होता है और एक निश्चित पदक्रम होता है। यह पदक्रम आसानी से बदला नहीं जाता। बदलने पर भाषा में संगति नहीं रहती। उदाहरण के लिए हम ''जलपान '' के स्थान पर ''पानीपान '' या 'चरण स्पर्श' के स्थान पर 'पैर स्पर्श' नहीं कह सकते। इसी प्रकार जिस परिवेश या संदर्भ में 'तुम्हारे पिता' कहा जाता है, उसमें तुम्हारा बाप नहीं कहा जा सकता। अनुवादक को इन बातों का ज्ञान होना चाहिए तभी उसके लिए किसी प्रसंग में उपयुक्त भाषा का प्रयोग संभव होगा। वह स्रोत भाषा में किसी विशेष शब्द के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में भली-भांति परिचित होने के बाद लक्ष्य भाषा में भी ऐसे शब्द का प्रयोग करने की कोशिश कर सकता है जिसकी अर्थच्छाया स्रोत भाषा के शब्द के समान हो। पर्याय कोशों में प्राय: अधिक प्रचलित शब्द को मुख्य आधार मानकर अन्य शब्दों को उसके पर्याय के रूप में लिखा जाता है। शब्दों की व्याकरणिक कोटि का भी उसमें उल्लेख रहता है। अधिक विस्तृत पर्याय कोशों में शब्दों के विभिन्न प्रयोग तथा उनसे बनने वाले मुहावरों का भी समोवश होता है। कुछ हिन्दी पर्याय कोशों में मूल हिन्दी शब्दों के अतिरिक्त हाल में आगत ऐसे शब्दों (टेंशन, टैरिफ, डायरेक्ट आदि) को भी समाविष्ट कर लिया गया है जो आम बोलचाल में काफी प्रयुक्त होने लगे है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विपर्याय कोश में शब्दों के विलोम या विपर्याय दिए जाते हैं। ये भी कुछ स्थितियों में अनुवाद में सहायक होते हैं क्योंकि किसी खास प्रसंग में उपयुक्त शब्द का सुझाव इनसे भी मिलता है। कभी-कभी एक ही कोश में पर्याय तथा विपर्याय, दोनों प्रकार के शब्द सम्मिलित कर लिए जाते हैं।

सहायक कोश

1. मानक हिन्दी पर्याय कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली।

2. हिन्दी पर्यायवाची कोश, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

3. नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश-हिन्दी अंग्रेजी, डॉ. बदरीनाथ कपूर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

8.4.12 उच्चारण कोश - उच्चारण कोश वे कोश होते हैं जिनमें प्राय: अंतराष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों (International Phonetic Symbols) के माध्यम से शब्दों का सही उच्चारण दिया जाता है। आप सोच सकते हैं कि अनुवाद-मुख्य रूप से लिखित अनुवाद-में वर्तनी का महत्त्व होता है। उच्चारण का प्रश्न उसमें उठता ही कहां है ?इसके अतिरिक्त, स्रोत भाषा के शब्दों के उच्चारण की बात अगर उठाई जाए, तो वे अनूदित हो जाते हैं, अनुवाद में उनके उच्चारण का सवाल ही नहीं उठता। फिर शब्दकोशों में तो आम तौर पर उच्चारण दे ही दिए जाते है। आपको ऐसा सोचना सामान्य शब्दों के संदर्भ में सही हो सकता है पर नामों के क्षेत्र में उच्चारण की समस्या आती ही है, विशेषकर अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद के क्रम में। एक तो अंग्रेजी की वर्तनी ऐसी होती है कि उसके आधार पर कोई निर्विकल्प उच्चारण तय नहीं किया जा सकता है। दूसरे उसके लेखन में अनेक नाम अन्य विदेशी भाषाओं -फ्रेंच, जर्मन आदि- से आए हुए हैं। जिनके उच्चारण और भी अलग हैं, ऐसे में हिन्दी में उन नामों को सही-सही लिखना और भी कठिन है। उदाहरण के लिए वर्तनी के अनुसार Roget, Montpellier, Dumas, Bads और Chevrolet का उच्चारण क्रमश: रोजेट/रोगेट, मॉण्टपेलियर, डुमास, बाच और चेव्रोलेट अधिक तर्कसंगत लगेगा किन्तु इनके वास्तविक उच्चारण है, क्रमश: ''रॉजे'', ''मोंपलिए'', ''ड्यूमा'', ''बाख'' और ''शेवरले''। अत: इनका लिप्यंतरण इनके सही उच्चारण के अनुसार ही होना चाहिए। अनुवाद में व्यक्ति नामों के अतिरक्त कई बार ग्रंथों, संस्थाओं, स्थानों आदि के नाम उद्धत करने की भी आवश्कयता पड़ती है। मौखिक अनुवाद में भी इनके सही उच्चारण की जरूरत होती है। सही उच्चारण जानने के लिए उच्चारण कोश का प्रयोग करे। ग्रंथ के आरंभ में विभिन्न ध्वनियों के संकेतों की तालिका रहती ही है। ताकि पढ़ने वालों को इन संकेतों तथा इनसे द्योतित होने वाली ध्वनि का ठीक-ठीक ज्ञान हो सके। इन ग्रंथों की भूमिकाएं भी आपको पढ़ लेनी चाहिए।

अन्य भाषा भाषियों को सही उच्चारण का ज्ञान कराने वाले कोश अंग्रेजी और हिन्दी, दोनों में ही उपलब्ध है।

सहायक कोश

1. Everyman's English Pronouncing Dictionary by Daniel Jones, ed. A. C. Gimoson. The English Language Book Society.

2. हिन्दी उच्चारण कोश, डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

8.4.13 नाम कोश- नाम कोश, विषय कोश तथा उच्चारण कोश के बीच कहीं आते हैं। अनुवाद के दौरान आपके समाने कई बार ऐसे व्यक्तियों तथा स्थानों के नाम आते हैं, जिन्हें लेकर आपके सामने मुख्यत: दो प्रकार की कठिनाइयां आती हैं-परिचय संबंधी और उच्चारण संबंधी।

व्यक्ति या स्थान के नाम से उसके बारे में कुछ पता नहीं चलता। आप फिर प्रश्न उठा सकते हैं कि अनुवाद में नाम तो ज्यों का त्यों दिया जाता है व्यक्ति या स्थान के बारे में जानकारी की क्या आवश्यकता है ?इसमें कई उत्तर हो सकते हैं।

कई बार नाम से पता नहीं चलता कि उल्लिखित व्यक्ति पुरुष है या महिला। अंग्रेजी में क्रिया के रूप से भी यह पता नहीं

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

चलता। पृष्ठभूमि का ज्ञान न होने से अनुवादक के सामने कुछ इस प्रकार की समस्या आ सकती हैं कि ''Terry Egleton says.....'' का अनुवाद वह ''टेरी ईगलटन कहते हैं.....'' करें या ''.....कहती हैं.....'' करें। कुछ जगह ''.....का कहना है'' जैसे गोलमोल प्रयोगों से काम चला लिया जा सकता है किन्तु हर जगह यह संभव नहीं है। इसलिए कई बार अनुवादक बड़े हास्यास्पद ढंग से पुरुषों के लिए स्त्रीलिंग और स्त्रियों के लिए पुल्लिंग के प्रयोग कर बैठते हैं।

यदि उल्लिखित व्यक्ति या स्थान के बारे में आपको सामान्य जानकारी हो तो पूरे अनुवाद में आपको एक परिप्रेक्ष्य मिल जाता है और आप उसके अनुसार बात को प्रस्तुत करते हैं। उल्लिखित व्यक्ति दार्शनिक है, कवि, राजनेता या खिलाड़ी है, इसका अनुवाद की विषय-वस्तु पर प्रभाव पड़ता है और प्रस्तुति की भंगिमा पर भी। व्यक्ति संबंधी जानकारी आपको अनुवाद में और भी कई प्रकार के खतरों से बचाती हैं। कुछ वर्ष पूर्व एक अंग्रेजी पत्रिका में हिन्दी साहित्य संबंधी लेख में एक उद्धरण ऐसा था जिसमें सही वात्स्यायन और अज्ञेय के एक नहीं, दो अलग-अलग व्यक्ति होने का आभास मिलता था। एक अन्य स्थान पर समुचित जानकारी के अभाव में ''अज्ञेय'' और ''कामसूत्र'' के प्रणेता को अभिन्न मान लिया गया था। नाम से संबद्ध कोश उपलब्ध रहने और उनकी सहायता लेने पर इस प्रकार की भयंकर भूलें नहीं होतीं।

इसी प्रकार स्थान के नाम को लेकर भी आपके सामने कई दुविधाएं हो सकती हैं, मसलन जिस भौगोलिक नाम का उल्लेख है वह नदी है, पर्वत है, नहर है, शहर या गांव है, वह किस देश-प्रदेश में स्थित हैं यह जाने बिना उससे संबद्ध अनुवाद कठिन होता है। नामों को लेकर दूसरी कठिनाई उनके उच्चारण की है। इस विषय में उच्चारण कोश के संदर्भ में बात हो चुकी है। कई नामों का उच्चारण आपको उच्चारण कोश में मिल जाता है। पर जो कोश विशेषकर नामों के लिए ही होते हैं उनमें अधिक नाम और अधिक जानकारी के साथ आते हैं। यही इन कोशों का महत्त्व है। इनमें अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों में यथाविश्यक व्यक्ति या स्थान का नाम दिया हुआ रहता है। जिससे उस नाम का उच्चारण आपके सामेन बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। इनके अलावा उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए अन्य भी कई प्रतीकों का सहारा लिया जाता है और कोश के आरम्भ में ही इन प्रतीकों के बारे में पूरी जानकारी दी जाती है। उदाहरण के लिए Webster's Biographical Dictionary से इस जानकारी का कुछ अंश देख सकते हैं। व्यक्ति के जीवन, वंश, शिक्षा, कृतित्व आदि से संबंधित और स्थान की प्रकृति, क्षेत्र, इतिहास तथा अन्य विशेषताओं से संबंधित जानकारी भी इसमें रहती है। यह सारी जानकारी किसी भी अध्येता के लिए उपयोगी होती है और अनुवादक के लिए भी इसका विशेष महत्त्व होता है।

उदाहरण के लिए Webster's के New Biographical Dictionary का निम्नलिखित उद्धरण देखिए-

Goe-Jelgti-yc Jan de, in full Michael Jan de, 1836-1909. Dutch scholar, Professor at Leiden 1866-1906 ; edited and translated many Arabic works, esp. Description de Afrique et de Espangan (with R. P. Dozy, 1866 after idrisi; also wrote Memories' histoire et de geographic orientales 1866

Goer-de-ler/goer-de-lar/Carl-Friedrich. 1884-1945. German politician, Second mayor of Konigsberg (1922-30); majyor of Leipzig (1930-37); federal commissioner for price control (1931-32); dismissed from Leipzig post by Nazi party; joined resistance; active in planning attempt to assassinate Hitler (1944). to be followed by coup; arrested (1944) executed by Gestapo.

8.4.14 साहित्य कोश- साहित्य कोश में एक या अधिक भाषाओं के साहित्य, साहित्यकारों, विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा धाराओं और साहित्यिक रचनाओं के विषय में जानकारी दी जाती है। जब आप साहित्यिक अनुवाद करते हैं तो संबद्ध विषय के प्रति आपको अवधारणा स्पष्ट होनी चाहिए अन्यथा कई बार बड़ी हास्यास्पद भूलें हो सकती है। उदाहरण के लिए Romanticism का अनुवाद यदि आप ''रोमानवाद'' कर देते हैं तो इसमें इस शब्द से संबद्ध अधिकतर अवधारणाएं छूट जाएंगी। आप इसके विषय में पढ़ेंगे तो पला चलेगा कि इससे अभिहित रोमान का स्वरूप सामान्य प्रचलित धारणा से भिन्न है। इसीलिए इसके लिए हिन्दी में ''स्वच्छंदतावाद'' नाम का प्रयोग होता है (हालांकि यह नाम भी पूरी तरह पर्याप्त नहीं है)। कई बार किसी शब्द के लिए आपको लक्ष्य

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

भाषा में उपयुक्त प्रतिशब्द नहीं मिलता। नई अवधारणाओं के संदर्भ में प्राय: ऐसा होता है। तब आपको अपनी तरफ से शब्द गढ़ना पड़ेगा। इसके लिए भी अवधारणाओं और संदर्भों का स्पष्ट होना आपके लिए आवश्यक है। साहित्य कोश इसमें सहायक होते हैं।

सहायक कोश

1. भारतीय साहित्य कोश, संपा. डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
2. Dictionary of world Literary terms, Joseph T. Shipley, George Allen & Unwin, London.
3. साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश, डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी तथा डॉ. तारकनाथ बाली, बुक्स एंड बुक्स, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1 और 2 ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस।

8.4.15 विश्वकोश - विश्वकोश Encyclopaedia में विश्व के अनेक विषयों-धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, इतिहास, भूगोल, ज्ञान-विज्ञान आदि से संबद्ध जानकारी दी जाती है जिसे विषय के अधिकारी विद्वानों से लिखवाया जाता है। शीर्षकों को इसमें विषयानुसार न रखकर वर्णक्रम से रखा जाता है ताकि अध्येता किसी भी शब्द को आसानी से ढूंढ सके-यह किस विषय से संबद्ध शब्द है, यह पता न होने पर भी। Encyclopaedia Brittanica, American Encyclopaedia, Cllin's Encyclopaedia आदि/ हिन्दी में भी डॉ. नगेन्द्रनाथ वसु द्वारा प्रस्तुत ''हिन्दी विश्व विश्वकोश'' पचीस खंडो में उपलब्ध है।

8.4.16 पुराण एवं मिथक कोश- ''पुराण एवं मिथक कोश'' किसी संस्कृति से संबद्ध पुराण, पुराकथाओं, मिथक, पौराणिक एवं मिथकीय चरित्रों एवं घटनाओं का परिचय देते है। पुराण संबंधी के संदर्भ में तो यह जानकारी आवश्यक होती ही है।, सर्जनात्मक साहित्य में भी इस जानकारी का बड़ा महत्व होता है। किसी भी भाषा के साहित्य में अपनी संस्कृति से जुड़े अनेक संदर्भ तथा बिंब होते हैं जिनकी समझ सही अनुवाद के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए यदि किसी अंग्रेजी वाक्य में कहा जाए--This is his Achille's heel--तो क्या इसका अनुवाद ''यह उसकी एकिलीज वाली एड़ी है'' होगा ?यदि आपको यह पता रहे कि ट्रॉय युद्ध के अन्यतम वीर और अजेय योद्धा एकिलीज के शरीर में एक मात्र कमजोर स्थल उसकी एड़ी थी जहाँ तीर मारकर उसे पराजित किया जा सकता था तो आपको सही अनुवाद---''यह उसकी घातक कमजोरी है'' -- करने में कोई असुविधा नहीं होगा। इसी प्रकार का Herculean effort सही अनुवाद ''भगीरथ प्रयत्न'' आप तभी कर सकेंगे। जब आपको पता हो कि महाशक्तिशाली हरक्यूलिस ने अनेक असाध्य कार्य सिद्ध किए थे। हिन्दी में ही ही देखिए, यदि किसी व्यक्ति को ''नारद मुनि'' या ''विभिषण'' कहा जाता हैं''--- का अनुवाद यदि He is an absolute Narad Muni कर दिया जाए तो भारतीय संस्कृति और पुराकथाओं से अनभिज्ञ व्यक्ति इनका क्या आशय समझेगा ?ऐसे में अनुवाद में यह स्पष्ट करना होगा कि उन्हें लोगों के परस्पर लड़ाने-भिड़ाने में मजा आता है। अत: इसका उपयुक्त अनुवाद होगा-- He enjoys/taken pleasure in setting people against each other.

इस प्रकार के संदर्भ को समझने के लिए पुराण एवं मिथक कोशों की सहायता लेना आवश्यक हो जाता है। यदि आप हिन्दी भाषी भारतीय, हैं तब भी आपको कई बार हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद के क्रम में भारतीय पुराकथाओं आदि संबंधी को स्पष्ट समझने की आवश्यकता हो सकती है। ऐसे में भी इस प्रकार के कोश उपयोगी हो सकते हैं।

सहायक कोश:-

1. Puranic Encyclopaedia, Veltam Mani, Motilal Banarsidass, Delhi.
2. पौराणिक कोश, राणाप्रसाद शर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी।
3. भारतीय मिथक कोश, डा. उषा विद्यावाचस्पति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. ग्रीस पुराण कथा कोश, कमल नसीम, नेशनल पब्लिलिंग हाउस, नई दिल्ली।

प्र.1. सही वाक्यों पर √ तथा गलत वाक्यों पर × चिह्न लगाएँ:-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

1. अनुवादक केवल अपनी जानकरी के आधार पर ही सटीक अनुवाद कर सकता है।
2. संपूर्ण अर्थग्रहण तथा समुचित प्रस्तुति के लिए अनुवादक को विभिन्न प्रकार के कोशों का सहारा लेना चाहिए।
3. अनुवाद में सहायता के लिए द्विभाषिक कोश ही पर्याप्त है।
4. शब्दकोश का एकमात्र कार्य है, किसी भाषा के शब्दों को संग्रहीत करके उनका अर्थ देना।
5. लोकोक्तियों में अपने भाषा-क्षेत्र की संस्कृति का सार तत्व अभिव्यक्ति होता है, अत: उनका अनुवाद संभव नहीं है।
6. ''थिसॉरस'' लेखक या अनुवादक के सामने संदर्भानुसार शब्दों के उपयुक्त तथा सटीक विकल्प रखता है।
7. अनुवादक का स्रोत भाषा के शब्दों का सही उच्चारण जानने की जरूरत नहीं है क्योंकि इसका कार्य केवल लेखन से संबद्ध होता है।
8. अनूद्य सामग्री के सांस्कृतिक तथा पौराणिक संदर्भ को जानने के लिए पुराण तथा मिथक कोश उपयोगी होते है।
9. अनुवादक का कार्य केवल शब्दार्थ के ज्ञान तथा प्रस्तुति से चल जाता है, अत: विषय का ज्ञान उसके लिए आवश्यक नहीं है।
10. पर्यायवाची शब्द एक-दूसरे के स्थान पर अनवार्यत: प्रयुक्त नहीं हो सकते।

प्र. 2. अनुवाद में स्रोत भाषा का कोश किस प्रकार सहायक होता है ?

.....

.....

.....

प्र. 3. अच्छे शब्दकोश में शब्द के अर्थ के अतिरिक्त और किस प्रकार की जानकारी दी जाती है ?

.....

.....

.....

.....

प्र. 4. अनवाद में उच्चारण कोश की आवश्यकता किन प्रसंगों में पड़ती है ?

.....

.....

.....

.....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

8.5 सारांश

कोशों के अन्य भी कई प्रकार है जो विभिन्न संदर्भों में आपके ज्ञान को बढाते हैं और इस प्रकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आपके लेखन तथा अनुवाद कौशल में भी वृद्धि करते है। इस इकाई में कुछ ऐसे कोशों का उल्लेख किया गया है जिनका उपयोग अनुवादक के लिए लगभग अपरिहार्य है। अनुवाद प्रक्रिया के दो स्तर होते हैं-- समझना और समझाना या प्रस्तुत करना। अनुवादक के लिए स्रोत भाषा के शब्दों के अर्थ तथा अभिव्यक्तियों को समझना बहुत आवश्यक है। कथन से संबद्ध अवधारणाएँ तथा संकल्पनाएँ भी उसके सामने पूरी तरह स्पष्ट होनी चाहिए। दूसरी ओर उसका अभिव्यक्ति पक्ष भी सबल होना चाहिए ताकि वह मूल तथ्य को, उसके आशय तथा प्रभाव को यथांसभव सुरक्षित रखते हुए, लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर सकें। इसके लिए भाषा पर तो उसका अधिकार होना ही चाहिए, उसकी समझ भी स्पष्ट होनी चाहिए। हमने देखा कि भिन्न-भिन्न प्रकार के कोश अनुवाद की प्रक्रिया के दोनों ही स्तरों पर किस प्रकार सहायक होते हैं। अलग-अलग प्रकार के कोशों की प्रकृति तथा उपयोगिता का परिचय देते हुए उस श्रेणी के कुछ उपलब्ध कोशों का सुझाव भी यहाँ साथ ही साथ दे दिया है ताकि हर ग्रंथ का उपयोग-संदर्भ आपके सामने स्पष्ट रहे। इन श्रेणियों के अन्य अच्छे कोश भी उपलब्ध है किंतु सभी ग्रंथों का उल्लेख एक पाठ की सीमा में संभव नहीं है। इनके महत्व से परिचित होकर आप स्वयं अन्य ग्रंथों का उपयोग का सकते हैं। इस इकाई में आपने ''कोश'' शब्द का अर्थ समझते हुए अनुवाद कार्य में कोशों की उपयोगिता का अध्ययन किया। आपने यह भी देखा कि कुछ कोश भाषा, अर्थात् शब्दों के अर्थ, प्रयोग, विशिष्ट प्रयुक्तियों तथा संदर्भों से संबद्ध शब्दावली, विशिष्ट अभिव्यक्ति आदि के स्तर पर सहायक होते हैं और कुछ कोश संदर्भ, विषय तथा अवधारणाओं की समझ में। अनुवादक को अर्थग्रहण तथा अर्थप्रेषण में इन सभी बातों की आवश्यकता होती है।

8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. 1. × 2. √ 3. × 4. × 5. × 6. √ 7. × 8. × 9. √ 10. × 11. √

2. अनूद्य सामग्री में किसी अपरिचित, अप्रचलित या अल्प-प्रचलित शब्द का अर्थ जानने के लिए अनुवादक को स्रोत भाषा के कोश की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त अनुवाद पुनरीक्षण में भी इसका उपयोग होता है। जहां स्रोत भाषा के दिए हुए शब्द के लक्ष्य भाषा में कई विकल्प हों वहां सही शब्द के चयन के लिए स्रोत भाषा में फिर से उन विकल्पों के प्रतिशब्दों को देखा जा सकता है और जिस विकल्प का प्रतिशब्द स्रोत भाषा में अर्थ की दृष्टि से सटीक हो, उसका प्रयोग अनुवाद में किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में द्विभाषिक कोश की आवश्यकता भी होती है किन्तु स्रोत भाषा के शब्द की अर्थ संबंधी सटीकता के निश्चय के लिए स्रोत भाषा का शब्दकोश उपयोगी होता है।

3. शब्दकोश का प्रारंभिक कार्य शब्दार्थ की जानकारी देना है। अच्छे शब्दाकोश में इसके अतिरिक्त शब्दों की व्याकरणिक कोटि तथा लिंग आदि, उनके भिन्न अर्थ, प्रयोग-संदर्भ उनसे बनने वाले अन्य शब्द तथा मुहावरे तथा शब्दों का मूल स्रोत भी दिया जाता है। कई स्थानों पर उद्धरणों के माध्यम से शब्द के अर्थ तथा प्रयोग को भी स्पष्ट किया जाता है। अंग्रेजी जैसी भाषाओं के शब्दकोश में शब्द का उच्चारण भी स्पष्ट किया जाता है।

4. अनुवाद में अन्य सब शब्दों का तो भाषातंर हो जाता है किन्तु किसी व्यक्ति, संस्था, स्थान आदि के नाम, अर्थात् व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को ज्यों का त्यों देना पड़ता है। इसलिए उनके सही उच्चारण की जानकारी आवश्यक होती है

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

संवर्ग-4 : अनुवाद सम्पादन एवं मशीनी अनुवाद

इकाई - 9 : अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन

संरचना

9.0 प्रस्तावना

9.1 उद्देश्य

9.2 पुनरीक्षण क्या है ?

9.3 पुनरीक्षण कैसे होता है ?

- 9.3.1 मूल पाठ और अनुवाद को पढ़ना
- 9.3.2 अनुवाद और मूल पाठ का मिलान/तुलना
- 9.3.3 कथ्यगत गलतियों का सुधार
- 9.3.4 भाषागत गलतियों का सुधार
- 9.3.5 अनूदित पाठ की लक्ष्यभाषा संस्कृति की दृष्टि से जांच
- 9.3.6 फॉर्मेट संपादन

9.4 पुनरीक्षण कौन करता है ?

9.5 पुनरीक्षक प्रशिक्षक भी होता है

9.6 पुनरीक्षण का महत्त्व

9.7 पुनरीक्षण का अभ्यास

9.8 आइए अभ्यास कीजिए

9.9 सारांश

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 प्रस्तावना

पिछले खंड़ों की विभिन्न इकाइयों में आप अनुवाद के अर्थ और उसके विभिन्न रूपों के बारे में पढ़ चुके हैं। अनुवाद में तुलना और पुन: सृजन की प्रक्रिया को भलीभांति समझने के बाद अनुवाद की विभिन्न भाषागत संदर्भगत और सांस्कृतिक बारीकियों की व्यवहारजन्य जानकारी प्राप्त की है। इसके अलावा आपने कोशों तथा उनके उपयोग के विषय में भी आपने पढ़ा है। विभिन्न प्रकार के कोशों का अनुवाद में इस्तेमाल करना भी आपने सीखा है। भाषांतरण के साथ-साथ लिप्यांतरण की प्रक्रिया को भी आपने जाना-समझा है। अनुवाद में इसकी आवश्यकता एवं महत्त्व से भी आप परिचित हुए हैं। इस सबके अतिरिक्त अनुवाद के अत्यानुधिक रूप मशीनी/कम्प्यूटर अनुवाद के विषय में भी पढ़ेंगे। प्रस्तुत इकाई में आप अनुवाद के अगले चरण पुनरीक्षण के विषय में पढ़ेंगे। हो सकता है पुनरीक्षण से आप पहले से परिचित थे और यह भी हो सकता है कि आपने इसका नाम भी न सुना हो।

अनुवाद से जुड़े हर व्यक्ति को पुनरीक्षण और उसके महत्त्व के बारे में जानकारी अपेक्षित है। प्रस्तुत इकाई में हम आपको बताएंगे कि पुनरीक्षण क्या होता है ? यह कैसे होता है और किस-किस स्तर पर होता है। इसे कौन करता है तथा कौन कर सकता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

पुनरीक्षण के बारे में ये सब बातें बताने के पश्चात् हम आपको पुनरीक्षण का अभ्यास भी कराएंगे।

9.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप–

0 बता सकेंगे कि पुनरीक्षण क्या होता है और इसे कौन करता है।

0 पुनरीक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डाल सकेंगे।

0 पुनरीक्षण के विभिन्न पहलुओं की चर्चा कर सकेंगे और

0 अनूदित सामग्री के पुनरीक्षण का प्रयास कर सकेंगे।

9.2 पुनरीक्षण क्या है ?

पुनरीक्षण अनुवाद की जांच और सुधार की प्रक्रिया है जो अनुवाद पूरा हो जाने के बाद की जाती है अंग्रेजी में इसके लिए Vetting शब्द इस्तेमाल होता है। पुनरीक्षण करने वाला व्यक्ति पुनरीक्षक कहलाता है। जैसा कि पुनरीक्षण नाम से ही स्पष्ट है यह अनुवाद को फिर से देखने, मूलपाठ से मिलाने, दोनों की परस्पर तुलना करने और अनुवाद में अपेक्षित सुधार संशोधन का कार्य है। इसमें अनुवाद की विभिन्न स्तरों पर और कोशों से जांच की जाती है तथा जहां भी आवश्यक हो उसमें सुधार किया जाता है। इस दृष्टि से इसे अनुवाद को संवारना और उसका संपादन करना भी कहा जा सकता है। मूल और अनुवाद की तुलना तथा अनुवाद की उपयुक्तता–अनुपयुक्तता की जांच परख करने के कारण इसे अनुवाद की समीक्षा करना भी कहा जाता है। समीक्षा की बजाए पुनरीक्षण शब्द अधिक उपयुक्त है क्योंकि किसी पाठ अथवा कृति की समीक्षा करते समय उसकी गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाता है। उसकी सीमाओं और संभावनाओं पर समीक्षक अपनी राय देता है। लेकिन पुनरीक्षण की प्रक्रिया में पुनरीक्षक अपनी राय या टिप्पणी नहीं देता, अनुवाद में ही सुधार संशोधन–संपादन करता है और उसे बेहतर बनाने का प्रयास करता है।

अंगेजी का Revision शब्द भी दोबारा अवलोकन और जांच के संदर्भ में उपयुक्त होता है। इस दृष्टि से Vetting और Revision काफी निकट अर्थ रखते हैं। लेकिन अनुवाद के संदर्भ में Vetting शब्द ही उपयुक्त होता है। यह अनुवाद प्रक्रिया का तकनीकी पारिभाषिक शब्द है जो सूचनात्मक साहित्य के अनुवाद से विशेषरूप से संबंद्ध है। वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, विधिक तथा अन्य सूचना प्रधान विषयों के अनुवाद में इसका विशिष्ट महत्त्व है। साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में पुनरीक्षण शब्द अक्सर नहीं चलता है। कारण, साहित्यिक अनुवाद प्राय: स्वप्रेरणा से और सर्जनात्मक इच्छा की पूर्ति के लिए किया जाता है। इसमें अनुवादक भाव–विधान तथा शिल्प संबंधी छूट लेने का अधिकारी होता है अत: ऐसे अनुवादों के पुनरीक्षण की अपेक्षा नहीं होती। उनकी तो समीक्षा या मूल्यांकन होता है।

हां संस्थागत स्तर पर जब साहित्यक अनुवाद कराया जाता है–साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट या ऐसी ही अन्य संस्थाएं जब किसी कृति का अनुवाद कराती है तो उस अनुवाद की जांच क्षेत्र–विशेष के किसी विद्वान द्वारा कराती है, लेकिन यह जांच भी मूल्यांकनपरक ही होती है।

9.3 पुनरीक्षण कैसे होता है ?

पुनरीक्षण की प्रक्रिया में निम्नलिखित कार्य शामिल है–

9.3.1 मूल पाठ और अनुवाद को पढ़ना– पुनरीक्षण अनुवाद और मूलपाठ को पंक्ति–दर–पंक्ति पढ़ता है। इसमें ऐसा नहीं होता है कि हर बार मूलपाठ को पूरा पढ़ लिया जाए फिर अनुवाद को पूरा पढ़ा जाए। ऐसा करने से तो केवल यह पता लगाया जाएगा के मूल कृति/पाठ में निहित समस्त भाव अनूदित पाठ में आ पाया है अथवा नहीं। पुनरीक्षण में मूलपाठ की प्रत्येक पंक्ति को अनूदित पाठ की प्रत्येक पंक्ति के साथ पढ़ा जाता है। इससे यह पता लग जाता है कि कोई अंश अनुवाद किए बगैर छूटा तो नहीं है। यदि छूटा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

है तो क्यों छूटा है ?भूलवश अथवा जानबूझकर। यदि जानबूझकर छूटा है तो छोड़ने का कारण भी पता लग जाता है। यह भी पता लगाया जाता है कि वह अंश छोड़ने लायक है या नहीं। यदि भूलवश छूटा है तो पुनरीक्षण उस अंश का अनुवाद करता/कराता है। सूचनापरक साहित्य में अक्सर कथ्य का कोई अंश छोड़ा नहीं जाता क्योंकि वहां भावानुवाद नहीं होता। लेकिन यदि किसी अंश को अनुवाद में प्रस्तुत किए बगैर भी बात पूरी हो गई हो या कोई अंश लक्ष्य भाषा के मुहावरे के प्रतिकूल हो तो उसे रखना अनिवार्य नहीं होता।

9.3.2 अनुवाद और मूलपाठ का मिलान/तुलना– मूलपाठ और अनुवाद को पंक्ति–दर–पंक्ति पढ़ते हुए दोनों की तुलना की जाती है। यह तुलना कथ्य और भाषा शैली दोनों के स्तर पर होती है। तुलना की इस प्रक्रिया में पुनरीक्षक जांच करता है कि अनुवाद में कोई भूल तो नहीं रह गई। उसमें वही कहा गया है जो स्रोत भाषा पाठ में निहित है। कहीं दोनों का आशय अथवा निहितार्थ अलग–अलग तो नहीं जा पड़ा है। दोनों के कथन के ढंग से कोई ऐसा अंतर तो नहीं है कि दोनों की भिन्न–भिन्न ध्वनि निकलती हो। इस प्रक्रिया में पुनरीक्षक अनुवाद की गलतियों का पता लगाता है।

9.3.3 कथ्यगत गलतियों का सुधार– मूलपाठ और अनुवाद की तुलना करने पर पुनरीक्षक को अनुवाद में जो भी कथ्यगत भूलें अथवा अशुद्धियां मिलती हैं उनका सुधार करता है। वह देखता है कि अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूलपाठ का निकलता हैं। जहां कहीं भी दोनों के अर्थ में भेद होता है वहीं वह अनूदित पाठ में सुधार करके उसे मूल पाठ के निकट लाने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए एक अंगेजी पंक्ति और उसका अनुवाद है।

''I have no reservation about this point.''

''मेरे पास इस मुद्दे पर कोई आरक्षण नहीं है।''

ऐसी स्थिति में पुनरीक्षक मूल वक्ता के कथन का निहितार्थ प्रस्तुत करके अनुवाद को सुधारता है।

इस अनुवाद में मूल वक्ता का आशय बिल्कुल भी नहीं आया है।

मूल वक्ता कहना चाह रहा है कि ''इस विषय पर मेरा कोई मतभेद/असहमति नहीं है।''

9.3.4 भाषागत गलतियों का सुधार– कथ्यगत और अर्थगत गलतियों के सुधार के पश्चात् पुनरीक्षक अनुवाद की भाषा संबंधी भूलों का पता लगाता है। वह देखता है कि अनुवाद की भाषा कथ्य के अनुरूप है कि नहीं यानी मूलपाठ के विषय के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग लक्ष्यभाषा में किया गया है अथवा नहीं। आप जानते होंगे कि विभिन्न विषयों की अपनी–अपनी शब्दावली होती है जैसे विज्ञान, विधि और साहित्य के क्षेत्र की शब्दावली में पर्याप्त अंतर होता है अनुवादक स्वयं ध्यान रखता है कि विषयानुकूल शब्दावली प्रयुक्त हो। फिर भी पुनरीक्षक की जांचना होता है कि कहीं अनुवाद की शब्दावली अनूद्य विषय से दूर तो नहीं जा पड़ी। उदाहरण के लिए Plant के मायने ''पौधा'' और ''संयंत्र'' दोनों है। उद्योग संबंधी अनुवाद में उसे देखना है कि आशय किस ''प्लांट'' से है किसी औद्योगिक इकाई से अथवा उन पौधों से जिनसे उद्योग के लिए कच्चा माल मिलता है। उदाहरण के लिए दो वाक्यों को देखिए। इसमें रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए पहले वाक्य में Plant आशय संयंत्र से है और दूसरे में पेड़–पौधे से–

(a) Mother dairy plant has been installed.

(b) Eucalyptus plants have been provided to the vllagers.

इसके अलावा पुनरीक्षक को यह भी देखना होता है कि कहीं अटपटी भाषा तो नहीं प्रयुक्त हुई है। वाक्य विन्यास सहज है कि नहीं। अनुवाद की भाषा लक्ष्यभाषा की प्रवृत्ति और मुहावरे के अनुकूल है कि नहीं। निम्नलिखित उदाहरण भारत सरकार के मंत्रालय द्वारा जारी विज्ञापन से है। आप इसे पढ़ते ही समझ जाएंगे कि यह मूल भाषा में न लिखा होकर अनुवाद है और कैसा हू–बहू शब्दानुवाद है।

''एक प्रदूषित आकाश आपे जीवन को कम बना देता है

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

मोटर वाहनों के प्रदूषण पर नियंत्रण कीजिए''

अंग्रेजी में कहा गया होगा–

''A polluted sky reduces your life.
Control motor vehicle pollution.''

अब हिन्दी में यह जरूरी नहीं है कि आप 'a' के स्थान पर 'एक' अवश्य लिखें। फिर आसमान दो चार नहीं होता इसलिए भी एक लिखना बेमाने है। इसी तरह आपके जीवन को कम बना देता है हिन्दी मुहावरे के अनुकूल नहीं। इसकी जगह लिखना चाहिए। प्रदूषित आकाश आपकी उम्र घटाता अथवा प्रदूषित आकाश से आपकी आयु क्षीण होती है। इसी तरह 'मोटर वाहनों का प्रदूषण' नहीं 'मोटर वाहनों से होने वाला प्रदूषण' लिखा जाना चाहिए।

इस प्रकार अनुवाद की भाषा संबंधी भूलों का पता लगाकर पुनरीक्षक उपयुक्त शब्दावली प्रयोग करता है तथा वाक्य विन्यास में अपेक्षित संशोधन और सुधार करता है। साथ ही देखता है कि भाषा वाक्य के स्वभाव के अनुकूल तो है। कहने का तात्पर्य है कि गंभीर, सरल, हास्यप्रधान आदि विषयों के अनुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है या नहीं, यह देखना पुनरीक्षक का दायित्व है।

9.3.5 शैलीगत सुधार – हर विषय और स्थिति के अनुरूप लेखन की विशिष्ट शैली होती है जिससे भाषा में प्राजंलता और सौष्ठव आता है। अनुवाद में विषयानुकूल शैली का प्रयोग हुआ है अथवा नहीं इसकी जांच पुनरीक्षक करता है और जहां कहीं आवश्कता होती है वहां सुधार करता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित अनुवादों को देखिए–

उदाहरण–1 The Municipal Committee will suppy eggs to the schools.
म्यूनिसिपल कमेटी स्कूल को अंडे देगी।

उदाहरण–2 Free treatment for the eyes.
मुफ्त आंखों का इलाज।

उदाहरण–3 Jai Prakash Narayan has gone again into a state of unconsciouness.
जय प्रकाश नारायण फिर बेहोशी की हालत में चले गए।

उदाहरण–1 के अनुवाद से ऐसा प्रतीत होता है कि नगर पालिका एक मुर्गी है और वह स्कूलों को अंडे देगी। दूसरे उदाहरण में, अनुवाद से ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे आंखें मुफ्त है न कि इलाज। इसी प्रकार तीसरे उदाहरण से यह प्रतीत होता है कि जय प्रकाश नारायण अपनी इच्छा से बेहोश हो गए हैं।

जबकि ऊपर दिए गए तीनों उदाहरणों का सही अनुवाद निम्न प्रकार होना चाहिए।

1. नगरपालिका स्कूलों में अंडों की आपूर्ति करेगी।
2. आंखों का मुफ्त इलाज।
3. जयप्रकाश नारायण फिर से बेहोश हो गए।

उदाहरण–4 It was good-bye to Rajiv and hello to V.P. Singh.

ऊपर दिए गए वाक्य में good-bye तथा hello दो मुख्य शब्द हैं। किसी व्यक्ति को good-bye ''अलविदा'' कहने में यह बात अंतर्निहित है कि व्यक्ति आपके पास से तब तक के लिए विदा ले रहा है जब तक कि दोनों एक–दूसरे को दुबारा मिलना नहीं चाहते हों। कहना इस बात की ओर संकेत करता है कि सौहार्द, सत्कार–भाव से अंदर आने का निमंत्रण देना। इसलिए एक अनुवाद इस प्रकार भी हो सकता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

''यह राजीव को अलविदा कहना और वी. पी. सिंह को गले लगाना था।''

लेकिन यह अनुवाद भी संदर्भ और प्रसंग को प्रस्तुत नहीं करता है। इसमें एक ऐतिहासिक संदर्भ निहित है। सन् 1989 के चुनाव में वी. पी. सिंह प्रधानमंत्री बने थे, इससे पहले राजीव भंधी प्रधानमंत्री थे। प्रस्तुत मूलपाठ वाक्य सत्ता परिवर्तन की इस घटना को सूत्र रूप में प्रस्तुत करता है। इसके अनुवाद में भी यही ध्वनित होना चाहिए। इस दृष्टि से सही अनुवाद होगा।

''चुनाव के माध्यम से जनता ने प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी को विदा देते हुए वी.पी. सिंह का स्वागत किया।''

उदाहरण-5 : The dacoit succeeded in escaping.

डाकू भागने में सफल हो गया।

उदाहरण-6 : The work is in progress.

कार्य प्रगति पर है।

ये फिर शब्दानुसार के उदाहरण हैं। उदाहरण 5 के अनुवाद में डाकू के भागने की बात प्रशंसा वाले से कही गई प्रतीत होती है। जबकि अर्थ को दृष्टि से यह अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए, ''**डाकू बचकर भाग गया**'' अथवा डाकू निकल भागा''।

इसी प्रकार उदाहरण 6 के अनुवाद में ''**यहाँ काम हो रहा है**'' लिखना अधिक उपयुक्त होगा।

छोटे से छोटे पाठ का यहाँ तक कि किसी निमंत्रण पत्र का अनुवाद है और उसकी भाषा में अपेक्षित विनम्रता एवं शिष्टता नहीं है तो पुनरीक्षक उसमें अपेक्षित सुधार करेगा। यहाँ एक निमंत्रण पत्र का उदाहरण दिया गया है-

The Ministry of Defence
requests the pleasure of the presence of
---
at the
Republic Day Ptade on
Fridau, the 26th January 1996 (Magha 6, 1917 at 10.00 a.m.
on Rajpath, New Delhi.
the president Will take the salute.

इसके निम्नलिखित अनुवाद को पढ़िए:-

रक्षा मंत्रालय
---------- की
उपस्थिति का हर्ष पाने का अनुरोध करता है।
गणतंत्र दिवस परेड
पर
शुक्रवार, 26 जनवरी,1996, 6 माघ 1917 को
10 बजे प्रात:
राजपथ, नई दिल्ली पर राष्ट्रपति सलामी लेंगे।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

यह अनुवाद शाब्दिक रूप से गलत न होने पर भी हिंदी में लिखे जाने वाले निमंत्रण पत्र की शैली में नहीं प्रस्तुत हुआ है। पुनरीक्षक उसे हिंदी में निमंत्रण के ढंग से प्रस्तुत करेगा।

इसका सही अनुवाद निम्नलिखित होगा।

रक्षा मंत्रालय

---------- को

शुक्रवार,26 जनवरी, 1996, 6 माघ 1917 को

10 बजे प्रात: नई दिल्ली में राजपथ पर आयोजित

गणतंत्र दिवस परेड में सादर आमंत्रित करता है।

राष्ट्रपति सलामी लेंगे।

पुनरीक्षक यह भी देखता है कि कहीं गम्भीर अथवा पांडित्ययपूर्ण विषय को बहुत अधिक सरलीकृत शैली में तो नहीं कहा गया अथवा अत्यंत सरल विषय को जटिल शैली में तो प्रस्तुत नहीं किया गया तथा मूलकथ्य के मनोभावों एवं स्थितियों के अनुकूल शैली अपनाई गई है अथवा नहीं।

इसी प्रकार पुनरीक्षक देखता है कि अनूद्य सामग्री किन लोगों द्वारा पढ़ी जानी है उन लोगों की अपेक्षाओं के अनुरूप सुधार और संशोधन भी वह अनुवाद में करता है। मान लीजिए कोई अनूदित सामग्री विदेशी लोगों द्वारा पढ़ी जानी है तो पुनरीक्षक को देखना होगा कि अनुवाद कुछ ऐसा तो नहीं है जो विदेशियों को संस्कार अथवा परिवेश की भिन्नता के कारण समझ में न आ सके।

9.3.6 अनूदित पाठ की लक्ष्यभाषा संस्कृति की दृष्टि से जाँच- प्रत्येक भाषा किसी संस्कृति विशेष से जुड़ी होती है। जिस समाज और संस्कृति को यह भाषा अभिव्यक्त करती है, उस समाज और संस्कृति का अपने में वहन भी करती है।

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दो भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी समाजों का प्रतिनिधित्व करती है। कभी-कभी यह भिन्नता बहुत अधिक होती है और कभी-कभी बहुत कम। उदाहरण के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं में काफी सांस्कृतिक एकता है लेकिन विदेशी भाषाओं से उनकी वैसी सांस्कृतिक समानता नहीं है। अनुवाद की प्रकिया में किया जाने वाला भाषांतरण एक हद तक सांस्कृतिक अंतरण भी होता है। कथ्य की स्रोतभाषा की सुस्कृति से लक्ष्य भाषा की संस्कृति में अंतरित किया जाता है।

पुनरीक्षक करते समय पुनरीक्षक को यह तो देखना ही पड़ता है कि अनुवाद में वही कहा गया है जो स्रोत भाषा में मौजूद है। लेकिन इसके साथ ही यह भी देखना पड़ता है कि लक्ष्य भाषा संस्कृति में वह बात ग्राह्य है अथवा नहीं। कुछ बातें कुछ समाजों में स्वीकार्य होती है लेकिन दूसरे समाजों में नहीं। उदाहरण के लिए अंग्रजी का वाक्य है। ''He is as humble as a sheep.''

अब यदि हिंदी में अनुवाद कर दिया गया है, ''वह भेड़ की तरह विनम्र भला है।'' तो यह सर्वथा अनुपयुक्त है। पुनरीक्षक को विनम्रता की ऐसी उपमा देनी होगी जो हिंदी भाषा संस्कृति में मान्य है। उदाहरण के लिए वह लिख सकता है ''वह तो बिल्कुल गऊ है।''

9.3.7 फार्मेट संपादन- अन्य सब तरह के भूल सुधार और संशोधन के पश्चात् अनुवादक अनुवाद का मुल पाठ के फार्मेट के अनुरूप संपादन करता है। प्रत्येक पाठ्य सामग्री का एक बाहरी ढाँचा होता है जिसमें पाठ के विभिन्न अध्यायों -अनुच्छेदों के विभाजन, पैराग्राफ विभाजन, अंकन, विभिन्न खंडों के लिए अलग-अलग अंकों अथवा वर्णक्षरों का प्रयोग, चित्र आलेख आदि के निर्धारित स्थान आदि की जाँच करता है और उनमें अपेक्षित सुधार करता है। ऐसा करते समय वह स्रोत भाषा पाठ का अनुपालन करते हुए भी आवश्यकतानुसार लक्ष्यभाषा की प्रकृति का अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए विभिन्न खंडो के लिए वर्णांकित संख्याओं a, b, c, d, e, f, g, h, i, j आदि के लिए यदि हिंदी में अ, ब, स, द, ----- संख्याएँ प्रयुक्त की जाएँ तो उपयुक्त नहीं रहतीं। न ही अ,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

आ, इ, ई------स्वरों का वर्णानुक्रम इस उद्देश्य के लिए स्वीकार्य हैं। हिंदी वर्ण का गिनती के लिए प्रयोग करना क, ख, ग, घ, के क्रम में चलता हैं। चूँकि यह हिंदी में मान्य पद्धति है अत: अनुवाद में इसी को अपनाना अपेक्षित होता है।

पुनरीक्षक को देखना यह होता है कि जहाँ मूल में संख्यांक 1, 2, 3, 4 है वहाँ अनुवाद में संख्यांक ही रहें, जहाँ रोमन अंक है वहाँ उन्हीं को रखा जाए यानी i, ii, iii, iv, को इसी ढंग से लिखा जाए वर्णो द्वारा अंकन है वहाँ क, ख, ग वर्ण प्रयुक्त हों।

9.4 पुनरीक्षण कौन करता है ?

पुनरीक्षण की प्रक्रिया में क्या-क्या कार्य किए जाते हैं यह जानने के बाद आपके मन में सहज सवाल उठा होगा कि पुनरीक्षण किसका कार्य है। उसे कौन करता है। पुनरीक्षण की प्रक्रिया का अध्ययन करते समय आपने देखा कि यह अनुवाद का अगला चरण है। यानी अनुवाद हो जाने के बाद उसमें सुधार-संशोधन का कार्य है। इस दृष्टि से पुनरीक्षण यही कर सकता है जो अनुवाद कर सकता है यानी अनुवादक ही पुनरीक्षण कर सकता है तो क्या अनुवादक स्वयं अपने अनुवाद का पुनरीक्षण करता है ?अनुवादक द्वारा अपने अनुवाद के मूल से मिलान और सुधार को जांच तो कहा जा सकता है, पुनरीक्षण नहीं।

इससे यह स्पष्ट है कि पुनरीक्षक अनुवादक स्वयं न होकर अन्य व्यक्ति होता है। यह अन्य व्यक्ति कौन है ?

संस्थागत स्तर पर कराये गए अनुवाद के लिए औपचारिक रूप से पुनरीक्षक की व्यवस्था होती है। अनुवादकों द्वारा अनुवाद कर लिए जाने के बाद वह अनुवाद पुनरीक्षक को सौंपा जाता है जो पुनरीक्षक करके अनुवाद को अंतिम रूप देता है। विभिन्न सरकारी कार्यालयों तथा स्वयात्त संस्थाओं में पुनरीक्षण के लिए बाकायदा नियुक्ति होती है और इस पद पर कार्य करने वाला अधिकारी अनुवाद अधिकारी अथवा हिंदी अधिकारी या सहायक निदेशक होता है। अनुवाद से संबद्ध अन्य संस्थाएं जो अनुवाद कराती है वे अपना पुनरीक्षण कार्य वरिष्ठ विद्वानों अथवा अनुवाद के क्षेत्र के वरिष्ठ और जाने-माने लोगों से कराती है।

वैयक्तिक स्तर पर किए गए अनुवाद को भी अनुवादक विषय और भाषा के जानकार व्यक्ति को पढ़ने के लिए देता है और उसके सुझावों पर विचार करता है। दोनों ही स्थितियों में पुनरीक्षक अनुवाद के क्षेत्र का अनुवादक से अधिक जानकार, अनुभवी और वरिष्ठ व्यक्ति होता है। कहा जा सकता है कि पुनरीक्षक बेहतर और उच्चतर श्रेणी का अनुवादक होता है जिसमें स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की गहन जानकारी के अलावा गम्भीर विवेक और आत्मविश्वास होता है। मूलपाठ और अनूदित पाठ की तुलना वह बहुत बारीकी से कर लेता है। किसी प्रकार की भ्रांति का शिकार हुए बगैर वह उपयुक्त-अनुपयुक्त की पहचान करता है। उसमें शब्द के सही प्रयोग के विषय में निर्णय की क्षमता होती है और अनुवाद को लेकर वह किसी प्रकार की दुविधा में नहीं रहता।

अपनी इन क्षमताओं से यह अनुवाद को संवारता और अधिक सुगढ़ बनाता है।

9.5 पुनरीक्षक प्रशिक्षक भी होता है

आप पढ़ चुके हैं कि पुनरीक्षक अनुवाद की जांच सुधार और संपादन करता है। इसके अलावा भी वह एक और महत्त्वपूर्ण दायित्व वहन करता है वह दायित्व है अनुवाद प्रशिक्षक का। इसके लिए पुनरीक्षक कोई कक्षा अथवा कार्यशाला नहीं चलाता। अनुवाद के पुनरीक्षण के दौरान वह जो सुधार और परिवर्तन करता है उन्हें अनुवादक को दिखाया जाता है। अनुवादक अपने अनुवाद और उसमें किए गए संशोधनों की तुलना करता है। ये संशोधन एक तरह से अध्यापकीय टिप्पणियों का कार्य करते हैं। अनुवादक दोनों की तुलना करने पर समझ जाता है कि उसने कहां समझने या प्रस्तुत करने में चूक की है अथवा कहाँ बात को और बेहतर ढंग से या प्रभावशाली ढंग से कहा जा सकता है। जिन संस्थाओं में पुनरीक्षक औपचारिक ढंग से नियुक्त है वहां तो अनुवाद उनकी ही देखरेख में होता है। अनुवादक को जहां कहीं भी समझने, उपयुक्त पर्याय तलाशने अथवा अभिव्यक्त करने में कठिनाई होती है वहीं एक पुनरीक्षक से संपर्क करता है। पुनरीक्षक उसकी समस्या का समाधान देता है। अपने अनुभव और बेहतर जानकारी के आधार पर वह अनुवादक का मार्गदर्शन करता है। संदेह की स्थितियों में वह सही समाधान देकर न केवल अनुवादक का संदेह निवारण करता है बल्कि उसे सही-गलत की पहचान का आत्मविश्वास प्रदान कराने की कोशिश करता है। अच्छे पुनरीक्षक के मार्गदर्शन में अनुवादक अपनी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

ग्रहणशीलता और अभिव्यक्ति क्षमता को पर्याप्त ढंग से परिमार्जित कर पाता है। वह पुनरीक्षित सामग्री का पुन:गठन करके अपनी भूलों को समझता है और भविष्य में उन भूलों से बचता है। इतना ही नहीं जब कभी अनुवादक महसूस करता है कि वह पुनरीक्षित संशोधन से सहमत नहीं है तो वह पुनरीक्षक से उस विषय पर विचार-विमर्श करके अपनी शंका का समाधान कर सकता है।

इस तरह पुनरीक्षक अनुवादकों की अनुवाद सीखने की प्रक्रिया में उनके प्रशिक्षक का कार्य करा है।

9.6 पुनरीक्षण का महत्त्व

अनुवाद एक व्यावहारिक कार्य है, इसलिए इसमें त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। इन्हें अनुवाद दोष भी कहा जा सकता है। मूल पाठ और अनूदित पाठ के बीच जो संबंध निहित होता है वह संदेश (अर्थ) पर आधारित होता है। इस संदेश में गड़बड़ी होने पर अनूदित पाठ में निष्पन्न संदेश में दोष आने की संभावना रहती है। संदेश भाषा और विषय-वस्तु में से किसी एक में दोष आ जाने से अन्विति बिगड़ जाती है और संदेश असंप्रेषणीय हो जाता है। इसकी जांच पड़ताल के लिए पुनरीक्षण की आवश्यकता रहती है।

अनूदित पाठ में विभिन्न भाषायी स्तरों पर कई दोष मिल जाते हैं। ध्वनि, वर्तनी, रूप, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य और प्रोक्ति आदि संरचनागत इकाइयों के अतिरिक्त शैलीगत दोष भी पाए जाते हैं। भाषा की प्रकृति के अनुवाद कई बार वाक्यों में उदाहरण के लिए ''The explanation furnished by Shri Sudhir Kumar is not found satisfactory.'' का अनुवाद ''श्री सुधीर कुमार द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं पाया गया'' हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। पुनरीक्षक इसमें सुधारकर लिख देता है कि ''श्री सुधीर कुमार ने जो स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है वह संतोषजनक नहीं पाया गया'' तो वह वाक्य हिंदी की प्रकृति के अनुकूल अधिक स्वाभाविक और सहज लगता है। इसी प्रकार no enclosure allowed का अनुवाद ''संलग्नकों की अनुमति नहीं है'' किया जाए तो यह न तो संप्रेषणीय होगा और न ही बोधगम्य। पुनरीक्षक इसे संप्रेषणीय और बोधगम्य बनाने के लिए ''इस पत्र में कुछ न रखें'' वाक्य से संशोधित कर देता है तो यह वाक्य अधिक सरल और सहज लगता है। इस प्रकार अनेक भाषायी दोषों के निराकरण की संभावना पुनरीक्षक के दौरान होती है। विषयवस्तु के स्तर पर विषय और पाठक दोनों का संदर्भ निहित रहता है। मूलपाठ का विषय प्रशासनिक, विधिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक विज्ञान अथवा विज्ञापन संबधी हो सकता है। अनुवाद करते समय उसमें कई बार शब्दावलीपरक और संरचनागत दोष आ जाते हैं जो विषय के अनुकूल नहीं होते। उदाहरण के लिए ''Company Director'' के लिए 'कंपनी निदेशक' या 'कंपनी संचालक' में से किसी एक पर्याय का निर्धारण करना है। अनुवादक द्वारा दिए गए पर्यायों को पुनरीक्षक संदर्भ के अनुसार तौलकर देखता है कि वह पर्याय उपयुक्त है अथवा नहीं, उपयुक्त न प्रतीत होने पर वह सही पर्याय निर्धारण करता है। मान लीजिए अनुवादक venom और poison के लिए एक ही शब्द ''विष'' का प्रयोग करता है किन्तु दोनों की अलग-अलग संकल्पनाएं होने के कारण पुनरीक्षक उन दोनों में अंतर करेगा।

विषय-वस्तु की प्रकृति के अनुसार भाषा विशिष्ट होती है। साहित्यिक रचना के अनूदित पाठ की भाषा को परखते समय इस विवेक से काम लिया जाता है कि उसमें कितनी संप्रेषणीयता, सर्जनात्मक और प्रभावोत्पादकता है और आवश्कयता पड़ने पर उसमें कितना सुधार किया जा सकता है। लेकिन साहित्येतर अनुवाद को यथातथ्य, सहज, सुबोध और प्रवाहशील बनाने के लिए पुनरीक्षक पर्यवेक्षक की भूमिका अदा करता है।

अनुवाद करते समय अनुवादक कई बार यह भूल जाता है कि मूलकृति का अनुवाद किसके लिए किया जा रहा है। पुनरीक्षण के समय पुनरीक्षक इस बात की ओर ध्यान रखकर संशोधन करता है। उदाहरण के No admission के लिए तीन वैकल्पिक अनुवाद मिलते है-1. प्रवेश निषेध 2. अंदर जाना मना है 3. अंदर न आइए। अब यहां पुनरीक्षक यह देखेगा कि यह अनुवाद किस वर्ग के लिए किया गया है। उसी के अनुरूप अनुदित पाठ का निर्धारण करेगा और आवश्यकतानुसार संशोधन करेगा। इसीलिए अनुवाद को एक लचीली अवधारणा माना जाता है। क्योंकि इसमें संदर्भगत कारण काम करते हैं और वही उसे सफल अनुवाद की श्रेणी में ले जाते हैं। इसी बिन्दु पर पुनरीक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

कई बार किसी मूल पाठ का अनुवाद कई अनुवादकों से कराया जाता है। प्रत्येक अनुवादक की अपनी शैली होती है। किसी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

की शैली तत्सम-प्रधान होती है तो किसी की शैली सामान्य बोलचाल की। कोई अनुवादक संयुक्त और मिश्र वाक्यों का अधिक प्रयोग करता है तो कोई सरल वाक्यों का। इस शैलीगत भिन्नता से अनूदित पाठ सहज और सुबोध नहीं हो पाता। पुनरीक्षक के दौरान उस पाठ में शैलीगत एकरूपता लाने का प्रयास करता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अनुवादक के पास स्रोतभाषा के शब्द के कई वैकल्पिक पर्याय होते हैं और उन्हें अपने विवेक और रुचि से प्रयुक्त करता है। इससे अनूदित कृति की बोधगम्यता और संप्रेषणीयता को आघात पहुंचता है अत: पुनरीक्षक की भूमिका यहां महत्त्वपूर्ण है कि वह इन वैकल्पिक पर्यायों में एकरूपता लाए ताकि अनूदित पाठ में, विशेषकर तकनीकी साहित्य में बोधगम्यता और संप्रेषणीयता में कोई आघात न पहुंचे। यहां पुनरीक्षक का महत्त्व अनूदित पाठ में समन्वय और समरूपता लाने में है।

यह बात ध्यान योग्य है कि पुनरीक्षक अनुवाद से अलग विधा नहीं है। यह अनुवाद-प्रक्रिया का अंतिम सोपान माना जा सकता है जो लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुसार अनूदित पाठ को मूल पाठ का सहपाठ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें शब्दावली, संरचना और शैली की एकरूपता तो रहती है साथ में अनूदित पाठ में प्रामाणिकता, संप्रेषणीयता, स्वाभाविकता और प्रभावोत्पादकता लाने का कार्य भी करता है। इस प्रकार पुनरीक्षक में मूल निष्ठता को ध्यान में रखकर अनुवाद को सफल और अच्छा बनाने का प्रयास रहता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि पुनरीक्षक द्वारा अनुवाद की जांच, सुधार और साज-संवार की जाती है। इससे अनुवाद की अशुद्धियां तो सुधारती ही हैं उसका अनगढ़ापन भी दूर होता है और उसमें परिष्कृति और सौष्ठव आता है। वैसे तो अच्छा अनुवादक स्वयं ही अपने अनुवाद को मूल के मिलाकर एक बार दोहराता है और भूल सुधार तथा भाषा शोधन करता है। लेकिन किसी अन्य कुशल एवं सिद्धहस्त अनुवादक द्वारा पुनरीक्षक करने से अनुवाद में वस्तुनिष्ठता आने की संभावना अधिक रहती है। अनुवादक का स्वयं अपने अनुवाद के प्रति एक तरह का सर्जनात्मक राग हो जाता है। जो स्वाभाविक ही है। ऐसे में कई बार वह अपने अनुवाद के दोषों को देख पाने में सक्षम नहीं हो पाता लेकिन जब अन्य कुशल पुनरीक्षक मूल और अनुवाद को पढ़ते समय तटस्थ दृष्टि अपनाता है तो मूल और अनुवाद की तुलना काफी बारीकी से कर पाता है और गलतियों को सहजता से पकड़ पाता है।

पुनरीक्षण का महत्त्व न केवल मनुष्य द्वारा किए गए अनुवाद में ही है बल्कि कम्प्यूटर द्वारा किए गए अनुवाद में तो यह एक तरह से अनिवार्य ही है। पूर्व संपादन, पश्च संपादन आदि प्रक्रिया में अनुवादक वास्तव में पुनरीक्षक की भूमिका ही अदा करता है। कम्प्यूटर द्वारा किए गए अनुवाद को जांचता और सुधरता है।

बोध प्रश्न-1

1. पुनरीक्षण किसे कहते हैं? पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

   .....

   .....

2. पुनरीक्षण की प्रक्रिया के विभिन्न कार्यों का उल्लेख कीजिए।

   .....

   .....

3. पुनरीक्षण करने वाला क्या कहलाता है? अनुवादक से वह किस तरह भिन्न होता है?

   .....

   .....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4. पुनरीक्षक में प्रशिक्षक किस प्रकार निहित होता है ?

.....

.....

5. पुनरीक्षण के महत्त्व पर पांच पंक्तियां लिखिए-

.....

.....

9.7 पुनरीक्षण का अभ्यास

नीचे मूलपाठ और उसके साथ अनुवाद के कुछ उद्धरण दिए गए हैं उसके बाद पुनरीक्षित अनुवाद किया गया है। पहले मूल पाठ और अनुवाद को ध्यान से पढ़िए और अनुवाद की गलतियों का पता लगाइए, उसके बाद पुनरीक्षित पाठ को पढ़िए।

अभ्यास (क)

अंग्रेजी वाक्य

Why is infant mortality rate considered a good measure for the development?

अनुवाद

शिशु मरणता दर को विकास के स्तर के मानदंड के रूप में क्यों उपयुक्त माना जाता है ?

सुधार के बिंदु

1. मरणता

2. विकास के स्तर के मानदण्ड

पुनरीक्षित पाठ

शिशु मत्यु दर को विकास का स्तर मापने का उपयुक्त मानदंड क्यों माना जाता है ?

अंग्रेजी पाठ

Let us see method of estimating the duration of each activity in the package; Collect data on each activity duration from a number of project Managers(a fairly large number is suggested to get a more realistic picture) who have undertaken a similar project under more or less identical conditions.

First of all, let us look at the activity: project plan approval. The data collected from say 32 project Managers, presented below, indicates the number of weeks taken by each to obtain the project plan approval in the process of establishing milk chilling plants under similar conditions

Note:- Figure in parenthesis gives the serial number. The figure below each parenthesis gives the number of weeks taken by a project Manager.

In the above sample, two project Managers have taken two weeks each; none have taken less than that duration to get their project plan approved. One of them has taken 22 weeks; no one has

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

taken more than that duration. Majority of the project managers in the sample(i.e. twelve) have taken six weeks. The maximum (longest duration) in the sample (22 weeks) is Know as the pessimistic time; minimum in the sample (two weeks) is called the optimistic times; and the majority in the sample (six weeks) is know as the most likely time. using the three numbers from the sample, we follow the formula given belew to arrive at the time estimate:

हिन्दी अनुवाद

आइए, हम पैकेज में प्रत्येक कार्यकलाप की कालवधि का अनुमान लगाने के लिए तरीके को देखें। कुछ परियोजना प्रबंधकों से प्रत्येक कार्यकलाप की समयावधि के आँकड़े एकत्रित करें। अधिक वास्तविक स्थिति प्राप्त करने के लिए

अधिक से अधिक आँकड़े एकत्र करने का सुझाव दिया जाता है जिसमें कमोवेशी समान परिस्थितियों के अधीन ऐसी ही परियोजना शुरू की हो।

सबसे पहले, आइए,, हम कार्यकलाप– परियोजना योजना स्वीकृति देखें। माना कि 32 परियारेजना प्रबंधकों से एकत्र किए गए आँकड़े नीचे दिए गए है। यह इसी प्रकार की दशाओं के अधीन दुग्ध शीतलन संयंत्र को स्थापित करने की प्रक्रिया में परियोजना योजना की स्वीकृति प्राप्त करने में प्रत्येक कार्य में लगाए गए सप्ताहों की संख्या दर्शाते हैं।

टिप्पणी:– कोष्ठकों में दिए गए अंक क्रमानुसार हैं। प्रत्येक कोष्ठक के नीचे अंक परियोजना प्रबंधक द्वारा लिए गए सप्ताहों की संख्या है।

उपर्युक्त नमूने में दो परियोजना प्रबंधकों ने दो–दो सप्ताह लिए हैं। किसी ने भी अपनी परियोजना योजना की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए इसमे कम अवधि नहीं ली है। उनमें से एक ने 22 सप्ताह लिए हैं किसी ने भी इस अवधि से कम समय नहीं लिया है। नमूने में अर्थात बारह अधिकांश परियोजना प्रबंधकों ने 6 सप्ताह लिए हैं। नमूने 22 सप्ताह में अधिकतम दीर्घतम अवधि निराशात्मक समय के रूप में जाना जाता है, नमूने 2 सप्ताह में न्यूनतम आशापूर्ण समय माना जाता है, और नमूना 6 सप्ताह में अधिकांश संभावित समय के रूप में जाने जाते हैं। नमूने से 3 अंकों का प्रयोग करते हुए समय अनुमान तक पहुंचने के लिए नीचे दिए गए फार्मूले का अनुसरण करते हैं।

टिप्पणी

मूल पाठ और अनुवाद को मिलाइए।

उपर्यक्त अनुवाद में रेखांकित अंशो पर ध्यान दीजिए। ये वे बिंदु हैं जहाँ सुधार संशोधन अपेक्षित है। आइए, अनुवाद का पुनरीक्षित रूप देखें।

पुनरीक्षित पाठ

आइए, हम पैकेज के हरेक कार्यकलाप की कालावधि का अनुमान लगाने का तरीका देखें। इसके लिए हम ऐसे कुछ परियोजना प्रबंधकों से, जिन्होनें कामोवेश समान परिस्थितियों में ऐसी ही परियोजना शुरू की, परियोजना के प्रत्येक कार्यकलाप में लगे समय के आँकड़े इकठ्ठे करते हैं। जितनी ज्यादा परियोजनाओं से संबंधित आंकड़े हो सकेंगे उतनी ही सही तस्वीर उभरकर सामने आएगी।

सबसे पहले हम जिस कार्यकलाप पर विचार करेंगे, वह है– परियोजना की योजना की स्वीकृति। उदाहरण के लिए हमने 32 परियोजना प्रबंधकों से इकठठे किए गए आंकड़े दिए हैं। इनमें दिखाया गया है कि दुग्ध शीतलन संयंत्र लगाने की परियोजना की योजना की स्वीकृति पाने में प्रत्येक को समान परिस्थितियों में कितना समय लगा।

उपर्युक्त उदाहरण में 2 परियोजना प्रबंधकों को दो–दो सप्ताह का समय लगा। यह परियोजना –योजना स्वीकृति में लगने वाला न्यूतम समय है। एक परियोजना प्रबंधक ने स्वीकृति पाने में 22 सप्ताह लगाए, जबकि अधिकांश ने 6 सप्ताह में स्वीकृति

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्राप्त कर ली। ऊपर के उदाहरण में दिखाई गई दीर्घतम अवधि 22 सप्ताह को निराशाजनक समय और न्यूनतम अवधि 2 सप्ताह को आशाजनक समय कहा जाएगा। अधिकांश परियोजना प्रंबधकों द्वारा लिए गए समय 6 सप्ताह को संभावित समय कहा जाएगा। उपर्युक्त उदाहरण में दी गई तीन प्रकार की संख्याओं से निम्नलिखित फार्मूले के अनुसार के आधार पर समय अनुमान निकाल सकते हैं:-

अभ्यास (ग) **अंग्रेजी पाठ**

Cultural anthropology, on the other hand, has a far wider breadth of interest than related fileds in the social sciences and humanities, each of which takes up some one segment of human activity. The cultural anthropologist generally studies peoples who are outside the stream of european cultural history and attempts, as far as he can, to investigate a given body of custom as a whole, or, if he concentrates on any one aspect of a culture, he takes a primary objective, the analysis of the interrelation of that aspect with other phases of the life of the people. He analyses these aspects not only as to which is to be distinguished from the others, but as all a functioning, system that adapts the people to setting. In this, the anthropologist differs from the economist, the political scientist, the sociologist, the student of comparative religitions or of art or literature.

अनूदित पाठ

दूसरी ओर सांस्कृतिक मानवशास्त्र का अन्य संबंधित सामाजिक विज्ञानों और मानव विज्ञानों की तुलना में अभिरुचि का विस्तार कहीं अधिक है, जिनमें से प्रत्येक किसी एक विभाग से संबंधित मानवक्रिया का अध्ययन करता है। सांस्कृतिक मानवशास्त्री सामान्यत: उन जनसमूहों का अध्ययन करता है जो कि यूरोपीय सांस्कृतिक इतिहास की धारा से बाहर है और वह यथासंभव किसी विशेष रीति-रिवाज का समग्र रूप में अध्ययन करने का प्रयत्न करता है या यदि वह संस्कृति के किसी एक पहलू पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है तो उसका प्रमुख लक्ष्य उस पहलू के अन्त: संबंधों का विश्लेषण होता है जो कि लोगों के जीवन के अन्य पहलुओं से वह इन पहलुओं का विश्लेषण केवल इसलिए नहीं करता कि उसे औरों से पृथक् दिखाया जाये, बल्कि चूंकि वह सब मिलकर एक कृत्यात्मक पद्धति बनाती है जो जनता को अपने वातावरण के अनुकूल बनाती है। इसमें मानवशास्त्री 'अर्थशास्त्री', राजनीति-शास्त्री, समाजशास्त्री एवं कला तुलनात्मक धर्म या कला या साहित्य के विद्यार्थी से पृथक् है।

पुनरीक्षित पाठ

दूसरी ओर सांस्कृतिक नृविज्ञान का विषय क्षेत्र सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी के अन्य संबंधित विषयों से अपेक्षाकृत कहीं विस्तृत होता है जिनमें मानवीय प्रक्रिया के किसी एक खंड का अध्ययन किया जाता है। सांस्कृतिक नृविज्ञानी प्राय: यूरोपीय सांस्कृतिक इतिहास की धारा के बाहर मानव समुदायों का अध्ययन करता है। उसका प्रयास होता है कि वह किसी विशिष्ट रीति-रिवाज के समग्र रूप का अध्ययन करे अथवा यदि वह संस्कृति के किसी एक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करता है तो उसका मुख्य उद्देश्य जन-जीवन के अन्य पहलुओं के साथ उसी पहलू के अंत-संबंधों का विश्लेषण करना है। वह इन पक्षों का विश्लेषण केवल इसलिए नहीं करता कि प्रत्येक को एक दूसरे से पृथक रूप में पहचाना जा सके। वरन् उन सब से मिलकर एक ऐसी प्रकार्यात्मक प्रणाली निर्मित होती है जो लोगों को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेती है। इस संबंध में नृविज्ञानी का मत अर्थशास्त्री, राजनीतिशास्त्री, समाजशास्त्री तथा तुलनात्मक धर्म, कला या साहित्य के अध्येता पुनरीक्षण से भिन्न होता है।

उपर्युक्त पुनरीक्षण पर टिप्पणी

उपर्युक्त अनूदित और पुनरीक्षित पाठों में हम देखते हैं कि anthropology और functioning system के लिए क्रमश: ''मानवशास्त्र'' और ''कृत्यात्मक पद्धति'' के स्थान पर ''नृविज्ञान और प्रकार्यात्मक प्रणाली'' शब्द प्रयुक्त किये गये हैं। ये मानक शब्द माने गये हैं। यहां setting के लिए ''वातावरण'' के स्थान पर ''परिवेश'' का प्रयोग सटीक होगा। भाषा में विभिन्न संरचनागत संशोधन भी किए गए हैं। पुनरीक्षित पाठ में वाक्यों का संयोजन हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल है और अधिक बोधगम्य है।

आइए अभ्यास कीजिए

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

नीचे दिए गए अंग्रेजी पाठ और उसके अनुकूल को मिलाइए। देखिए अनुवाद में क्या सुधार किया जा सकता है। सुधार करते हुए पुनरीक्षण कीजिए।

अभ्यास – 1

1. मूल पाठ

Security personnel on duty have instructions to verify the identity of the invitees. All invitees are therefore requested to bring, also with them the invitation card, some documents to establish their identity e.g. Department photo identity Card/Passport/Driving Licence/Weapon Licence etc. This may cause some inconvenience. However in the interest of security, kind cooperation of the invitees is solicited.

As the available parking is limited. invitees are requested to shares vehicles, as far as possible, to avoid inconvenience.

अनूदित पाठ

ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा कार्मिकों को आदेश है कि वे आमंत्रित व्यक्तियों की पहचान करें। अत: सभी आमंत्रित व्यक्तियों से अनुरोध है कि वे अपने निमंत्रण–पत्र के साथ अपनी पहचान के लिए अपना विभागीय फोटो पहचान–पत्र/पासपोर्ट/ड्राइविंग साइसेंस/हथियार लाइसेंस आदि अपने साथ लाने का कष्ट करें। स्वाभाविक है कि इससे कुछ असुविधा होगी परन्तु सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए आमंत्रित महानुभावों से सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

वाहनों को पार्क करने के लिए जगह सीमित है इसलिए अनुरोध है कि जहां तक संभव हो, एक दूसरे के वाहनों में बैठकर आएं।

पुनरीक्षित पाठ

.....

.....

अभ्यास–2

The Industrial Revolution brought the big machines into the world. It ushered in the Machine Age or the Mechanical Age. Of course there had been machines before, but none had been so big as the new machine. What is a machine? It is a big tool to help man to do his work. Man has been called a tool-making animal, and from his earliest days he has made tools and tried to better them. His supremacy over the other animals, many of was an extension of his hand, or you may call it a third hand. The machine was the extension of the tool. The tool and the machine raised man above the brute creation. They freed human society from the bondage of nature.

विश्व में औद्योगिक घूर्णन से बड़े यंत्र आए। इससे यंत्र आयु अथवा यांत्रिक आयु की शुरूआत हुई। यह सही है कि इससे पूर्व–यत्र थे लेकिन इतने बड़े नहीं थे जितने बड़े औद्योगिक घूर्णन में थे। यंत्र क्या है ?यह बड़ा औजार है जो मनुष्य को उसके काम में मदद देता है। मनुष्य को औजार–निर्माण–पशु कहा जाता है, और अपने शुरूआती दिनों में उसने औजार बनाए और उनमें सुधार करने का प्रयास किया। अन्य पशुओं पर उसका अधिकार, कई उससे अधिक शक्तिशाली थे, उसके औजारों के कारण निर्मित हुआ। औजार उसे हाथ को फैलाता है अथवा तुम उसको तीसरा हाथ कह सकते हो। यंत्र, औजार को फैलाता है। औजार और यंत्र, मनुष्य को पशु

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सृजन से बढ़ाते हैं, वे मनुष्य समाज को प्रकृति की बंदिश से मुक्त कराते हैं।

अभ्यास-3

मूलपाठ

However. the assistance from the Guide will gradually lessen over this period of 20 to 30 days. So that towards the end of the second phase you are by and large, able to plan and carry out activity sessions independently and handle children on your own.

अनूदित पाठ

फिर भी, इन 20 से 30 दिनों के समय में पथ-प्रदर्शक से मिलने वाली सहायता धीरे-धीरे कम होती जाएगी इसलिए, दूसरे दौर के अंत में खुलकर योजना बनाने एवं स्वतंत्रतापूर्वक अपनी गतिविधयां जारी रख सकेंगे और बच्चों को अपने तरीके से नियंत्रित करेंगे।

पुनरीक्षित पाठ

.....

.....

.....

अभ्यास-4

मूलपाठ

This is the person who will help you to translate into practice the principles and acknowledge that you would have acquired through the first three courses of this Diploma.

अनूदित पाठ

यह वह व्यक्ति होता है जो इस डिप्लोमा के पहले तीन कोर्सों के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान एवं सिद्धान्तों के अनुवाद में अभ्यास के दौरान आपकी सहायता करेगा।

9.9 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि पुनरीक्षक अनुवाद पूरा हो जाने के बाद उसकी जांच और सुधार कार्य है। पुनरीक्षण के दौरान अनुवाद को मूल पाठ से मिलकर पढ़ा जाता है और उसकी कथ्यगत तथा भाषागत गलतियों का सुधार किया जाता है। अनूदित पाठ को लक्ष्य भाषा की शैली की आवश्यकतानुसार संशोधित किया जाता है। फिर अनूदित पाठ का समग्रता में फार्मेट संपादन किया जाता है।

इस इकाई में आपने यह भी पढ़ा है कि पुनरीक्षक वास्तव में सिद्धहस्त अनुवादक ही होता है जो पुनरीक्षण के साथ-साथ अनुवादकों को अनुवाद का कौशल भी सिखाता है। इस तरह वह प्रशिक्षक की भूमिका भी निभाता है। अनुवाद के पुनरीक्षण के महत्त्व की जानकारी भी आपने इस पाठ में प्राप्त की।

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई-10 मशीनी अनुवाद

संरचना

10.0 प्रस्तावना

10.1 उद्देश्य

10.2 मशीनी अनुवाद का आरंभ

10.3 मशीनी अनुवाद कैसे होता है ?

10.4 कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश

10.5 मशीनी अनुवाद की प्रमुख प्रविधियां

10.5.1 सीधे अनुवाद पद्धति

10.5.2 अंतरण अनुवाद पद्धति

10.5.3 अंतर्भाषिक मशीनी अनुवाद पद्धति

10.6 मशीनी अनुवाद में व्याकरण तथा पद-व्याख्या

10.7 उपभाषाएं

10.8 निरूपादन और मूल्यांकन

10.9 मशीनी अनुवाद में गुणवत्ता

10.10 मनुष्य-मशीन सहयोग

10.10.1 अनुवाद सहायिकाएं

10.10.2 अनुवादोत्तर संपादन/पश्च संपादन

10.10.3 पूर्व संपादन

10.10.4 ज्ञान-आधरित मशीनी अनुवाद प्रणली

10.10.5 मनुष्य-मशीन पारस्परिक सहयोग प्रणली (इंटरएक्टिव प्रणली)

10.11 अनुवाद के विविध विषय-क्षेत्र और मशीनी अनुवाद

10.12 सारांश

10.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 प्रस्तावना

अनुवाद व्यवहार संबंधी इस पाठ्यक्रम की पिछली इकाइयों में आप अनुवाद के स्वरूप और उसकी प्रक्रिया को समझ चुके हैं तथा अनुवाद के विभिन्न पहलुओं और साधन-उपकरणों के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। हिन्दी-अंग्रेजी की शब्दावली, वाक्य रचना, अर्थ-विधान, निहितार्थ आदि विभिन्न स्तरों पर दोनों भाषाओं की तुलना करते हुए लक्ष्य भाषा में पुनर्प्रस्तुति को विभिन्न संदर्भों में आपने जाना है। साथ ही दोनों भाषाओं की बारीकियों, सूक्ष्म भेदों और कथन के विशिष्ट ढंगों को एक से दूसरी भाषा में अंतरित करना सीखा है। इसके अतिरिक्त अनुवाद की विभिन्न समस्याओं का परिचय भी आपने प्राप्त किया है। अनुवाद की प्रक्रिया में कोशों के महत्व के बारे में आपको पता लग चुका है तथा आप यह भी जान चुके हैं कि कोश कितने तरह के होते हैं और अनुवाद के दौरान कब किस

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कोश की सहायता ली जानी चाहिए। इसके अलावा लिप्यंतरण और अनुवाद में कोश के उपयोग के बारे में भी आपने जानकारी प्राप्त की है। प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद के एक नए स्वरूप से आपका परिचय कराएंगे। अब तक आपने जो भी अनुवाद-रूप देखे-पढ़े हैं उनमें मानवीय मस्तिष्क की प्रमुख भूमिका होती है। शब्दकोश शब्दावलियां आदि उसके साधन-उपकरणों के रूप में उपयोग में आते हैं लेकिन आज विज्ञान के युग में विभिन्न कार्य-क्षेत्रों में मनुष्य का काम मशीनों द्वारा होने लगा है। ऐसी स्थिति में अनुवाद के हर क्षेत्र में भी मशीन ने प्रवेश किया है और मनुष्य का काम करने में सक्षम हुई है। आज कम्प्यूटरीकरण के युग में जहां हर काम में कम्प्यूटर का प्रवेश हुआ है। वहां अनुवाद जैसा क्षेत्र इससे अछूता कैसे रह सकता था ?इसलिए इस दिशा में भी पर्याप्त प्रयास, अनुसंधान और प्रयोग हुए हैं तथा मशीन का उपयोग मनुष्य के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। अनुवाद की गति एवं मात्रा विस्तार में इसने अभूतपूर्व सफलता पाई है।

अनुवाद के क्षेत्र में कम्प्यूटर के उपयोग की यह चर्चा निश्चय ही आपको काफी रोचक और विस्मयकारी लग रही होगी। आपके मन में कुछ सवाल भी हो सकते हैं, जैसे कम्प्यूटर अनुवाद कब से शुरू हुआ ?यह कैसे होता है ?कहां और किन कार्यों के लिए होता है ?इसकी क्या विशेषताएं हैं ?मानवीय अनुवाद और कम्प्यूटर अनुवाद में क्या भेद है ?आदि-आदि

10.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप बता सकेंगे कि-

0 मशीनी अनुवाद क्या है और इसका आरंभ कब हुआ,

0 कम्प्यूटर से अनुवाद किस तरह किया जाता है,

0 इससे अनुवादक को कितनी सहायता मिलती है,

0 किस हद तक यह स्वतंत्र रूप से अनुवाद कर सकता है,

0 इस क्षेत्र में अब तक कहां तक प्रगति हुई है।

10.2 मशनी अनुवाद का आरम्भ

मशीनी अनुवाद को आरंभ हुए आज लगभग शताब्दी बीत चुकी है। किसी भी वैज्ञानिक कार्यकलाप के लिए यह काफी लंबा समय है। इसीलिए मशीनी अनुवाद का क्षेत्र अपने आप में पर्याप्त लंबा और वैविध्यपरक गतिविधियों से पूर्ण इतिहास समेटे हुए हैं। अनुवाद के लिए मशीन के उपयोग के संदर्भ में वास्तव में कहा जा सकता है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। 1940 के दशक में विशेष रूप से 1945 के लगभग विश्व युद्ध के दौरान इसकी शुरूआत हुई।

युद्ध में विभिन्न राष्ट्रों के सैनिक एक ही मोर्चे पर लड़ते थे। भिन्न-भिन्न भाषाओं को बोलने वाले सैनिकों के लिए जारी की जाने वाली सूचनाओं और आदेशों के अनुवाद के लिए विज्ञान के उपकरणों की सहायता ली गई ताकि संदेश शीघ्रातिशीघ्र अनूदित होकर सही लोगों तक पहुंच सके। यह व्यवस्था नितांत आवश्यक थी क्योंकि इतने बड़े पैमाने पर लड़ी जाने वाली लड़ाई में अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले सैनिकों तक बेतार और रेडियो द्वारा संदेश पहुंचाने का यह सबसे सहज उपाय हो सकता था।

इस तरह अनुवाद कार्य के लिए मशीन का उपयोग एक तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए हुआ था लेकिन यह उपयोग यहीं तक सीमित न रहा। कम्प्यूटर विज्ञान तथा भाषा विज्ञान और अनुवाद के क्षेत्र में यह एक युगांतकारी घटना सिद्ध हुई। इससे वैज्ञानिकों तथा भाषाविदों को नई दिशा और कार्य-क्षेत्र मिला। इससे बहुभाषिक अनुवाद तुरंत कर सकने की संभावनाएं खुलीं और कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान और प्रयोगों का नया सिलसिला शुरू हुआ। जैसे-जैसे विज्ञान के विकास की गति बढ़ी और उसका क्षेत्र विस्तार होता गया अनुवाद की जरूरतें भी बढ़ती गई और अनुवाद में त्वरित गति अनिवार्य बनती गई। इसके साथ ही, बहुत व्यापक तादाद में सूचनाओं का अनुवाद अपेक्षित होता गया। कहना चाहिए कि यह जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया। ऐसी स्थिति में मशीन के ज्यादा से ज्यादा उपयोग की जरूरत पड़ी और यह महसूस किया गया कि ऐसी मशीनें विकसित की जाएं जो जल्दी,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अधिक से अधिक सामग्री को अनूदित कर सकें। अत: इस क्षेत्र में लगातार सक्रियता और प्रयोग होते गए। जैसे-जैसे कम्प्यूटर विज्ञान में सूक्ष्म से सूक्ष्मतर विकास होते गए वैसे-वैसे अनुवाद के क्षेत्र में उनके इस्तेमाल की संभावनाएं बेहतर होती गई। कम्प्यूटर के विकास के इतिहास की पांच पीढ़ियां (First generation से fifth generation तक) यानी हार्डवेयर से लेकर सॉफ्टवेयर में भी अत्याधुनिक प्रयोगों तक कम्प्यूटर के भाषायी उपयोग और क्षमता विकास से जुड़े रहे हैं। आरंभ से ही वैज्ञानिकों को इस दिशा ने प्रयोग की ओर आकृष्ट किया। शुरू में सूचनाओं के लिए गैर-संख्यात्मक (non-numerical) पद्धति अपनाई जाती थी। धीरे-धीरे अनुवाद को स्वचालित प्रक्रिया में ढालने की ओर प्रयास हुए।

आरंभ में मशीनी अनुवाद संबंधी अनुसंधान को मूलतया कम्प्यूटर इंजीनियरों का ही कार्य समझा जाता था लेकिन भाषायी सिद्धांतों के विकास के साथ दृष्टिकोण में भी बदलाव आया और महसूस किया गया कि मात्र इंजीनियरी विज्ञान इस दिशा में लक्षित उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सकता। कम्प्यूटर विज्ञान और भाषा-विज्ञान दोनों के समन्वित प्रयास मिलकर इस प्रौद्योगिकी क्षेत्र की नई संभावनाएं और पद्धतियां तलाश सकते हैं।

10.3 मशीनी अनुवाद कैसे होता है ?

प्रश्न यह उठता है कि अनुवाद की प्रक्रिया में निहित एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने का कार्य मशीन/कम्प्यूटर किस प्रकार करता है ? जब कोई व्यक्ति अनुवाद करता है तब तो यह स्रोत भाषा कथ्य का अर्थ ग्रहण करता है और फिर उसे लक्ष्य भाषा की शैली में प्रस्तुत करता है। कम्प्यूटर किस तरह वाक्य में शब्दों का क्रम पहचानते हुए उनका संबंध पता लगाता है ?फिर कैसे उनसे निकलने वाले अर्थ को पहचानता है और कैसे उस अर्थ को दूसरी भाषा का जामा पहनाता है ?शब्दों के पर्याय कहां खोजता है ?उपयुक्त पर्याय कैसे चुनता है ?

यदि आपका कम्प्यूटर से थोड़ा बहुत परिचय होगा तो आप जानते होंगे कि कम्प्यूटर ऐसी मशीन है जिसके पास मस्तिष्क भी होता है और स्मृति (memory) भी। उसमें और मनुष्य में फर्क यही है कि मनुष्य अपने मस्तिष्क और स्मृति का इस्तेमाल स्वयं और स्वेच्छा से कर सकता है जबकि कम्प्यूटर को मस्तिष्क और स्मृति के इस्तेमाल के लिए आदेश (command) मिलना चाहिए। उसके मस्तिष्क में क्या रखा जाना है यह मनुष्य तय करता है यानी मनुष्य कम्प्यूटर की मेमोरी को फीड (feed) करता है और अपनी आवश्यकतानुसार उसका इस्तेमाल करता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि कम्प्यूटर से अनुवाद करने के लिए मनुष्य को उसमें अपेक्षित फीडिंग करनी पड़ती है तथा समुचित आदेश देने पड़ते हैं। यह कार्य कई स्तरों पर किया जाता है। इसके बारे में आप आगे पढ़ेंगे।

बोध प्रश्न-1

1. अनुवाद के लिए मशीन का उपयोग सर्वप्रथम कब हुआ ?

   .....

   .....

   .....

   .....

2. मशीनी उपयोग का इतिहास कितना पुराना है ?

   .....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

.....

.....

.....

3. मशीनी अनुवाद ने किन लोगों की जिज्ञासा तथा सक्रियता में वृद्धि की ?

.....

.....

.....

.....

4. मशीनी अनुवाद कैसे होता है ?

.....

.....

.....

.....

10.4 कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश

अनुवाद के लिए द्विभाषिक शब्दकोश की आवश्यकता होती है। जब कोई व्यक्ति अनुवाद करता है तो वह अपेक्षित शब्दकोश/कोशों की सहायता लेता है। कम्प्यूटर में शब्दों के पर्याय फीड कर दिए जाते हैं और वह अपनी स्मृति में उन पर्यायों को संचित कर लेता है। जिन दो भाषाओं के बीच अनुवाद होना है उनके परस्पर पर्याय कम्प्यूटर अथवा वर्ड प्रोसेसर के अंतर्गत सुरक्षित रहते हैं। दिलचस्प बात यह है कि दोनों भाषाओं के पर्यायों को स्रोत एवं लक्ष्य भाषा के रूप में फीड करना होता है क्योंकि कम्प्यूटर के पास स्मृति तो होती है विचार नहीं होता। वह स्वयं नहीं सोच सकता कि कब कौन-सी भाषा स्रोत भाषा है और कौन-सी लक्ष्य भाषा। उदाहरण के लिए उसे बताया जाता है कि हिन्दी से अंग्रेजी पर्याय ढूंढना है या अंग्रेजी से हिन्दी। आदेश मिलने पर वह वांछित पर्याय प्रस्तुत कर देता है। इतना ही नहीं, यदि उससे एक से अधिक भाषाओं में पर्याय मांगे जाएं तो उन्हें भी तुरंत प्रस्तुत कर सकता है, बशर्ते उन भाषाओं के पर्यायों को उसकी स्मृति में फीड किया गया हो।

शब्दों के पर्याय कम्प्यूटर में फीड करने के लिए कम्प्यूटर में शब्द सूचियां तैयार की जाती है। इन्हें कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश भी कहा जाता है। कम्प्यूटर आधारित इन शब्दकोशों का इस्तेमाल दो उद्देश्यों के लिए किया जाता है-कम्प्यूटर अनुवाद में तो इनका उपयोग होता ही है। व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले अनुवाद में भी इनका उपयोग किया जाता है। इनमें व्यक्ति को शब्दकोशों को खोलने की जरूरत नहीं पड़ती। कम्प्यूटर को जिस शब्द का अर्थ/पर्याय बताने के लिए आदेश दिया जाता है उसका पर्याय कम्प्यूटर के पटल पर आ जाता है। किसी शब्द विशेष के विभिन्न पर्याय कम्प्यूटर पेश कर देता है। इस तरह बार-बार कोश देखने अथवा भिन्न-भिन्न

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कोश देखने का परिश्रम और समय बच जाता है।

कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश वास्तव में शब्दावली निर्माण प्रक्रिया का ही विकसित रूप है जिसकी मुद्रित कोशों की तुलना में कई दृष्टियों से अधिक उपयोगिता है। उदाहरणार्थ,

1. वैज्ञानिक प्रगति के आधुनिक युग में शब्दावली का बहुत अधिक तेजी से विस्तार हो रहा है। हर रोज बड़ी संख्या में नए शब्द विकसित होते हैं, प्रौद्योगिकीय क्रांति के साथ नई भाषा विकसित हो रही है, उसकी नई शब्दावली को कम्प्यूटर पर बहुत शीघ्रता से स्टोर किया जा सकता है। इस शब्दावली के अर्थ, संकल्पना और भिन्न-भिन्न भाषाओं में पर्याय कम्प्यूटर पर उपलब्ध हो सकते हैं।

2. समय के बदलाव तथा वैज्ञानिक, सामाजिक परिवर्तनों के साथ-साथ शब्दों के अर्थ में बदलाव आता रहता है। इस दृष्टि से शब्दकोशों में संशोधन-परिवर्तन अब पहले की तुलना में अधिक अपेक्षित हो गया है। कम्प्यूटर आधारित कोशों का संशोधन-परिवर्तन और संपादन मुद्रित कोशों की तुलना में आसान और समय बचाऊ होता है।

3. मुद्रित कोश कुछ समय के बाद पिछड़ जाते हैं क्योंकि नए शब्दों और उनकी संकल्पनाओं को उनमें तभी शामिल किया जा सकता है जब शब्दकोश पुनर्मुद्रित हों लेकिन कम्प्यूटर कोश में प्रस्तुत शब्द-सूची में इनको लगातार बढ़ाया जा सकता है। इस तरह ये कोश निरंतर अद्यतन बनाए रखे जा सकते हैं।

4. बहुभाषिक अनुवाद की दृष्टि से मुद्रित शब्दकोश की सीमाएं होती हैं। द्विभाषिक, त्रिभाषिक, चतुर्भाषिक शब्दकोश हो सकते हैं। परन्तु कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश में बड़ी तादाद में भाषाओं के पर्याय रखे जा सकते हैं।

वास्तव में कम्प्यूटर शब्द सूचियां, मशीनी अनुवाद का आधार होती हैं। विश्व के सभी उन्नत देशों में इन सूचियों को बनाने की और इन्हें निरतर अद्यतन बनाए रखने की पर्याप्त व्यवस्था है। विज्ञान, उद्योग, व्यापार, सेना, राजनीति, प्रशासन आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में इनका व्यापक इस्तेमाल होता है। जो देश जितना अधिक विकसित है उसमें अनुवाद कार्य भी उतना ही ज्यादा और त्वरित गति से होता है। परिणामत: कम्प्यूटर शब्दकोशों की भी उसे उतनी ही अधिक आवश्यकता है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं के पर्यायों के अलावा कम्प्यूटर शब्दावली भारतीय भाषाओं के परस्पर आदान-प्रदान की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है।

10.5 मशीनी अनुवाद की प्रमुख प्रविधियां

आप पढ़ चुके हैं कि मशीनी अनुवाद का इतिहास 50 वर्ष पुराना हो चुका है। इस दौरान कम्प्यूटर विज्ञान और भाषायी कम्प्यूटरों के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के अनुसंधान और विकास हुए हैं। पुरानी प्रौद्योगिकी के स्थान पर नई से नई प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ कम्प्यूटर अनुवाद की पद्धतियों में भी नए विकास हुए हैं। हर पद्धति की अपनी संभवनाएं और सीमाएं हैं। यहां हम कुछ प्रमुख पद्धतियों की चर्चा करेंगे।

सीधे अनुवाद पद्धति (Dirct Machine Translation Strategy)- इस पद्धति में पाठ के प्रत्येक वाक्य को करीब 10 अवस्थाओं से गुजारा जाता है। प्रत्येक अवस्था का ''आउटपुट'' अगली अवस्था का ''इनपुट'' होता है। इस पद्धति में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के पर्यायों को शामिल किया जाता है। इस प्रत्यक्ष अनुवाद में पद व्याख्या सिद्धांतों अथवा भाषायी सैद्धांतिक विश्लेषण आदि की कोई खास आवश्यकता नहीं होती। यह प्रणाली कम्प्यूटर में विकसित शब्दकोश रूपात्मक विश्लेषण (Morphological analysis) और पाठ संसाधक सॉफ्टवेयर पर आधारित होती है। जिन अवस्थाओं से वाक्य गुजरता है। वे प्रमुख रूप से ये हैं—

1. स्रोत भाषा पाठ के लिए कोश देखना और रूपात्मक विश्लेषण

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. समरूपों अथवा समलेखों की पहचान
3. यौगिक संज्ञाओं की पहचान
4. संज्ञा पदबंधों एवं क्रिया पदबंधों की पहचान
5. मुहावरों के लिए सही पर्यायों की तलाश
6. पूर्वसर्गों अथवा संबंध बोधकों के लिए सही पर्यायों की तलाश
7. उद्देश्य एवं विधेय का संकेत
8. वाक्यपरक द्वियर्थकता/अनेकार्थकता की पहचान
9. पाठ का लक्ष्य भाषा में संश्लेषण और रूपात्मक संरचना
10. लक्ष्य भाषा में शब्दों और पदबंधों को सही क्रम में प्रस्तुत करना।

इस पद्धति से अनुवाद के लिए विकसित किए गए कम्प्यूटरों में ''सिस्ट्रान सिस्टम'' और ''जार्जटाउन सिस्टम'' प्रमुख हैं। विभिन्न सिस्टमों में प्रत्येक अवस्था के उपयोग में थोड़ा बहुत अंतर होता है। सीधे अनुवाद पद्धति का महत्व ऐतिहासिक अधिक है। इसमें नई कम्प्यूटर प्रणालियों का अब बहुत अनुसंधान विकास नहीं हो रहा है।

10.5.2 अंतरण पद्धति (Transfer Machine Translation Strategy)

अंतरण पद्धति में पहले स्रोत भाषा वाक्य की अमूर्त रूप में पद व्याख्या (Parsing) की जाती है। फिर उसे लक्ष्य भाषा के अनुरूप शाब्दिक और संरचनात्मक धरातल पर अंतरित किया जाता है। फिर स्क्रीन पर अनुवाद प्रस्तुत हो जाता है। अंतरण पद्धति से अनुवाद के लिए तीन शब्द सूचियों की जरूरत पड़ती है–1. स्रोतभाषा शब्द सूची 2. द्विभाषिक अंतरण शब्द–सूची 3. लक्ष्यभाषा शब्द सूची। यह पद्धति सीधे अनुवाद पद्धति से अधिक बेहतर परिणाम उपलब्ध कराती है क्योंकि सीधे अनुवाद पद्धति में संरचनात्मक जानकारी का उपयोग नहीं किया जाता। अनुवाद शाब्दिक होता है। विश्लेषण–व्युत्पादन के आधार पर बेहतर प्रस्तुति का प्रयास नहीं होता। अंतरण अनुवाद पद्धति को नीचे दिए गए आरेख चित्र से आसानी से समझा जा सकता है—

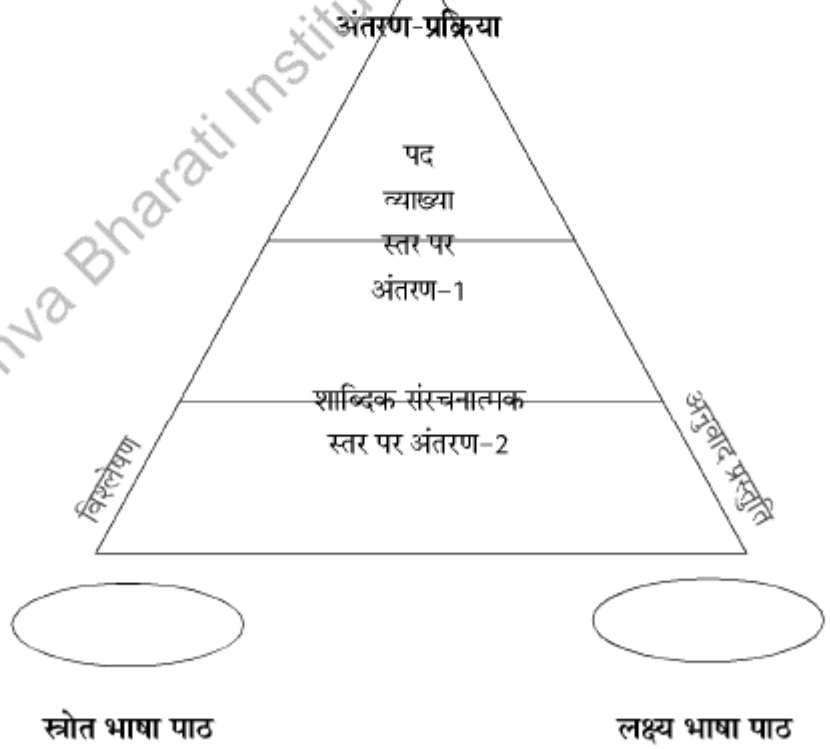

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यह पद्धति काफी लोकप्रिय हुई है। इसमें नई-नई कम्प्यूटर प्रणालियां भी विकसित हुई जिनमें गेटा, ससी आदि प्रमुख हैं।

10.5.3 अंतर्भाषिक मशीनी अनुवाद पद्धति (Interlingua Machine Translation System) - अंतर्भाषिक मशीनी अनुवाद पद्धति का विकास अंतरण मशीनी अनुवाद पद्धति के विकल्प के रूप में हुआ है। इसके अंतर्गत पाठ की एक विश्वजनीन भाषा प्रस्तुति का प्रावधान किया जाता है। इसमें तीन अवस्थाओं-विश्लेषण, अंतरण, व्युत्पादन की बजाए दो ही अवस्थाएं रखी जाती हैं-विश्लेषण और व्युत्पादन। इस पद्धति की विशेषता यह है कि इसमें द्विभाषिकता से छुटकारा मिल जाता है। यह पद्धति 1960 के दशक में आरंभ की गई थी और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण पर आधारित थी। बाद में इसमें एक नया और महत्वपूर्ण आयाम जुड़ा, जिसका नाम है-''कृत्रिम बौद्धिकता''। माना गया है कि अंतर्भाषिक कम्प्यूटर को अनूद्य पाठ के अर्थ की व्याख्या करने में सक्षम होना चाहिए। इस दिशा में हुए अनुसंधानों में कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटैलीजैंस) का उपयोग किया जाता है। इस तरह 1960 के दशक में मशीनी अनुवाद की संकल्पनाओं में भाषा विज्ञान का आधार ग्रहण करने की शुरूआत हुई। यह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण चरण था।

इसमें अनुवाद की प्रक्रिया इस प्रकार है-

1. सबसे पहले स्रोत भाषा की व्याख्या कर उसके भाषा मुक्त संकल्पनात्मक प्रस्तुति में व्यवस्थित कर लिया जाता है।
2. उसके बाद संदर्भजन्य ज्ञान का इस्तेमाल इस प्रस्तुति को विभिन्न प्रकार से व्याख्यायित करने और पाठ में निहित संदर्भों को जोड़ते हुए उनके आधार पर अपेक्षित निष्कर्ष निकालने के लिए किया जाता है।
3. अंत में एक स्वाभविक भाषा व्युत्पादक (natural language generator) भाषा मुक्त प्रस्तुति के विभिन्न भागों को लक्ष्य भाषा में व्यवस्थित करके प्रस्तुत करता है।

इस पद्धति के प्रवक्ताओं का मत है कि यह कम्प्यूटर प्रोग्राम संपूर्ण अनुवाद करने की बजाए स्रोत भाषा पाठ का लक्ष्य भाषा में सार प्रस्तुत कर देता है।

बोध प्रश्न-2

1. कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश क्या होता है ?

   .....

   .....

2. अनुवाद की प्रक्रिया में कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश का महत्व बताइए।

   .....

   .....

3. मशीनी अनुवाद की कितनी प्रविधियां हैं ? उनके नाम बताइए।

   .....

   .....

10.6 मशीनी अनुवाद में व्याकरण तथा पद-व्याख्या (Grammar and Parsing)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

आरंभ में ही यह बात भली-भांति समझ ली गई थी कि जिस पाठ को अनुवाद के लिए कम्प्यूटर में डाला जाना है उसका सुव्यवस्थित विश्लेषण मशीनी अनुवाद का अनिवार्य अंग है। व्याख्यात्मक विश्लेषण से अनूद्य पाठ के वाक्य संघटक को पहचानना और उस पर आश्रित संरचना का विश्लेषण शामिल है। हालांकि इस संबंध में किस दृष्टिकोण को अंतिम माना जाए, इस बात को लेकर अभी सहमति नहीं हो पाई है।

स्वाभाविक भाषा की पद-व्याख्या देना 1968 से 1978 तक भाषा विज्ञान के सर्वाधिक व्यापक अनुसंधान विषयों में से एक रहा है। व्यापक रूप से प्रयुक्त जिन व्याकरणिक रूपों **(formalism)** पर वर्तमान पद व्याख्या प्रणालियां आधारित हैं, उनमें सामान्यीकृत पदबंध संरचनात्मक व्याकरण, विभिन्न प्रकार्यात्मक व्याकरण और वे ''स्थिति प्रकार्य नियम'' पद्धतियां शामिल हैं जिन्हें व्याकरण में पारंपरिक भाषायी या संकल्पनात्मक अर्थ में इस्तेमाल नहीं किया जाता।

इस समय अधिकांश मशीनी अनुवाद कम्प्यूटर प्रणालियों में स्रोत भाषा पाठ की पद-व्याख्या एक ऐसी संरचना के रूप में की जाती है जिसमें दो चीजों को देखा जाता है-

1. वाक्य के प्रमुख घटक संबंधी जानकारी
2. क्रियाओं और संज्ञाओं की कारक संबंधी जानकारी।

इस प्रक्रिया में व्याख्यात्मक तथा गैर-अनुमानाश्रित अर्थपरक नियमों का समानांतर प्रयोग होता है। विभिन्न कम्प्यूटर प्रणालियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के पद व्याख्यात्मक अथवा पद परिचायक लगे होते हैं। हालांकि उनकी संगठनात्मक विशिष्टताओं का उल्लेख कम्प्यूटरों में नहीं होता।

10.7 उपभाषाएं (Sub-Languages)

सामान्यतया कम्प्यूटर प्रणालियों में अनुवाद के विषय-क्षेत्र की सीमा निर्धारित होती है। यानी कम्प्यूटर प्रणाली विशेष भाषा प्रयुक्ति के कुछेक विषय-क्षेत्रों का ही अनुवाद करती है। उदाहरण के लिए विदेशों में प्रयुक्त टॉम मेटो प्रणाली का प्रयोग केवल मौसम संबंधी रिपोर्टों के लिए ही होता है। इसलिए इसमें बहुत सीमित शब्दावली ही फीड की गई है। इस प्रकार जॉर्जटाउन प्रणाली का इस्तेमाल केवल नाभिकीय भौतिकी के लिए ही किया जाता है। इसी भांति कुछ कम्प्यूटरों को सुपरिभाषित और उच्चतर विशेषज्ञता क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया है। जैसे ऑटो वाहन मरम्मत मेनुअलों के लिए अथवा कम्प्यूटर विज्ञान प्रकाशन के लिए या ऐसे ही अन्य क्षेत्रों के लिए।

एक ही विषय के अनुवाद पर केन्द्रित करने से कम्प्यूटरों द्वारा सही अनुवाद करने की अधिक संभावना बन जाती है। विषय के क्षेत्र विशेष में अति विशेषीकृत और समग्र शब्दावली सूचों विकसित करके फीड कर देने से कम्प्यूटर अनूद्य पाठ में प्रस्तुत सामग्री को प्रभावी रूप से विश्लेषित करके उसका लक्ष्य भाषा में बेहतर अनुवाद प्रस्तुत कर देता है। एक ही विषय के पाठों में तकनीकी शब्दों की बहुलता तो होती है लेकिन इन शब्दों का अर्थ एक निश्चित होता है। इनमें अर्थ की बहुलता नहीं होती न ही भाषा में कठिन शैली का प्रयोग होता है। अतः उनके अर्थपरक विधान को कम्प्यूटर सहजता से समझ पाता है। इस तरह मशीनी अनुवाद को विषय क्षेत्र विशेष की उपभाषाओं तक ही सीमित रखा जाता है। यह अभी देखना बाकी है कि कम्प्यूटर प्रणाली में कितनी और समझ डाल देने से अनुवाद के विषय क्षेत्र का विस्तार किया जा सकता है।

10.8 निष्पादन और मूल्यांकन

कम्प्यूटर प्रणालियों द्वारा अनुवाद निष्पादन के मूल्यांकन के दो आधार हैं : इस अनुवाद को अक्सर प्रति 1000 शब्दों पर आई लागत के आधार पर आँका जाता है। आकलन का दूसरा आधार यह है कि इस अनुवाद को पोस्ट-एडिकर कितने पृष्ठ प्रति घंटे की दर से एडिट कर पाता है और इस पर कितनी लागत आती है। दोनों ही तुलना मनुष्य द्वारा किए गए अनुवाद से की जाती है लेकिन अधिकांश विद्वान इस तरह मानवीय और मशीनी अनुवाद की तुलना को उपयुक्त नहीं मानते। उनका मत है कि दोनों अनुवादों में तुलना

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

की बजाए कार्य-विभाजन अपेक्षित हैं। मानवीय अनुवाद उच्च सुजनात्मक कार्य है, जबकि कम्प्यूटर नैमित्तक सामग्री (routine material) के अधिक मात्रा में अनुवाद के लिए उपयुक्त है।

जिस बात पर अधिक जोर देना अपेक्षित है, वह है-अनुवाद की गुणवत्ता। यानी अनुवाद की स्रोत भाषा पाठ के प्रति ईमानदारी और अनूदित पाठ की सुपाठ्यता और सरसता। गुणवत्ता की पर्याप्त चर्चा के बवजूद कोई प्रभावी, सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य और वस्तुनिष्ठ मानदंड न तो मानवीय अनुवाद के क्षेत्र में मौजूद है और न ही मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में। अधिकांश कम्प्यूटरों में मूल्यांकन की व्यवस्था नहीं है, कुछेक में ही इसकी व्यवस्था है। ऐसी व्यवस्था वाले कम्प्यूटरों में से एक जापान सरकार की कम्प्यूटर अनुवाद प्रणाली है।

वास्तव में आवश्यकता मशनी अनुवाद और मानवीय अनुवाद के तुलनात्मक मूल्यांकन की उतनी नहीं है जितनी कि विभिन्न कम्प्यूटरों प्रणालियों के द्वारा किए जाने वाले अनुवादों की गुणवत्ता के तुलनात्मक मूल्यांकन की है।

10.9 मशीनी अनुवाद में गुणवत्ता

मशीनी अनुवाद प्रणालियों के विकास के आरंभ से ही यानी 1950 के दशक से ही अनुवाद की यथात्मकता और गुणवत्ता की बात जोर-शोर से होती रही है। कहा गया है कि कम्प्यूटर अनुवाद को 95 प्रतिशत यथातथ्य होना चाहिए। यानी मूल पाठ के प्रति निष्ठा और लक्ष्य भाषा पाठ की सरसता और बोधगम्यता दोनों ही अनिवार्य माने गए हैं। इस यथातथ्यता और गुणवत्ता के कई धरातल है-

- अर्थपरक (Semantic)
- निहितार्थपरक (Pragmantic)
- संरचनात्मक (Structural)
- शाब्दिक (Lexical)
- आयामात्मक (Spatial)

आरंभिक कम्प्यूटर प्रणालियों में शाब्दिक धरातल पर अधिक जोर था। माना जाता था कि अन्य धरातल स्वतः ही रक्षित रहेंगे लेकिन आधुनिक दृष्टिकोण अधिक यथार्थपरक है। आज अर्थपरकता पर अधिक जोर दिया जाता है। कहना चाहिए कि अर्थपरक मानदण्डों से अनुवाद की गुणवत्ता परखी जाती है। गुणवत्ता के अन्य धरातलों को समुचित अर्थ के प्रेषण की दृष्टि से ही सुरक्षित रखा जाता है। इस तरह 95 प्रतिशत यथातथ्यता की पुरानी अवधारणा अब बेमानी प्रतीत होती है।

प्रश्न यह भी उठाया गया है कि क्या अनुवाद की कम्प्यूटर प्रणालियां अनूदित पाठ की गलतियों का पता लगा सकती है अथवा क्या ऐसी गलतियों का पता लगाने के लिए किसी अनुवादक को स्रोत भाषा पाठ और लक्ष्य भाषा की तुलना करते हुए पुनरीक्षण करना संभव होगा। मौजूदा कम्प्यूटर प्रणालियां खूब गलतियां करती हैं। ये छोटी-छोटी गलतियां भी होती है और गंभीर गलतियां भी। लेकिन ये प्रणालियां स्वयं गलतियों का पता नहीं लगा सकतीं।

बोध प्रश्न-3

1. मशीनी अनुवाद में व्याकरण का इस्तेमाल किस प्रकार होता है ?

   .....

   .....

2. मशीनी अनुवाद में पद व्याख्या पर प्रकाश डालिए-

   .....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

.....

3. मशीनी अनुवाद में उपभाषाओं का क्या महत्व है ?

.....

.....

4. मशीनी अनुवाद के निष्पादन के मूल्यांकन के आधार क्या है ?

.....

.....

5. मशीनी अनुवाद के मूल्यांकन का सर्वोपयुक्त आधार क्या हो सकता है ?

.....

.....

10.10 मनुष्य-मशीन सहयोग

यथातथ्य सही अनुवाद तभी हो सकता है जब अनूद्य पाठ को भली-भांति समझ लिया जाए। इस दृष्टि से कम्प्यूटर अनुवाद को ज्ञान पर आधारित करने की प्रक्रिया का विकास हुआ। पूर्णतया स्वचालित मशीनी अनुवाद को यथार्थ लक्ष्य मानते हुए व्यावहारिक उद्देश्य अपनाया गया। इसके परिणामस्वरूप ऐसी कम्प्यूटर प्रणालियां विकसित की गई जो मनुष्य की अनुवाद क्षमता से वृद्धि करें। इसके साथ ही मशीन की कार्य-क्षमता को मनुष्य की सहायता से परिवर्धत किया गया। इस प्रकार मशीनी अनुवाद में मानवीय सहायता की अवधारणा को प्रबल पुष्टि मिली। हालांकि पूर्णतया मशीनी अनुवाद की आकांक्षा अब भी बरकरार है और इस दिशा में प्रयास सक्रिय है।

मौजूदा मशीनी अनुवाद प्रणालियां वैविध्यपरक हैं। कुछ मानवीय कार्य-कुशलता के सहायक उपकरण के रूप में है तो कुछ ऐसे कुशल कम्प्यूटर प्रोग्राम हैं जिनमें स्वचालित अनुवाद हो जाता है फिर इस अनुवाद की गलतियों खोजने में और उनके सुधार के लिए मानवीय सहायता अपेक्षित होती है। इस प्रकार मनुष्य को मशीन का सहयोग दो तरह से प्राप्त होता है।

1. मनुष्य (अनुवादक) की सहायक मशीन तथा
2. मशीन का सहायक मनुष्य (अनुवादक)

आगे हम मनुष्य कम्प्यूटर अनुवाद में मनुष्य-मशीन सहयोग संबंधी विभिन्न दृष्टिकोणों और उन पर आधारित कम्प्यूटर प्रणालियों की चर्चा करेंगे।

10.10.1 अनुवाद सहायिकाएं-अनुवाद की प्रक्रिया में मनुष्य का बहुत-सा समय कोशों में पर्याय तलाशने, अनूदित पाठ के संपादन और उसे सही रूप अथवा फार्मेट में प्रस्तुत करने में बीतता है। इन कार्यों को मशीनी सहायता से बहुत सुविधापूर्वक स्वचालित ढंग से किया जा सकता है। इसके लिए कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश, व्याकरण जांच प्रोग्राम, संपादन तथा फार्मेट संपादन सहायक रेखांकन विन्यास मापक (graphic layout modules) आदि जैसे उच्च-शक्ति संगठनात्मक साधन जुटाए जा सकते हैं और अनुवादक की कार्य-कुशलता में तीव्र गति लाई जा सकती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अनुवादक को भाषा विशेष में स्वीकृत तकनीकी शब्दावली की तुरंत और नितांत आवश्यकता होती है। इसके लिए कम्प्यूटर पर ऑन-लान डिक्शनरी उपलब्ध कराई जाती है। अपेक्षा संदर्भजन्य कोश की रहती है। यानी शब्द के बहुत से अर्थों को संदर्भानुसार देने की होती है। जो कम्प्यूटर आधारित कोश तकनीकी पर्यायों को बहुलता से और संदर्भानुसार प्रस्तुत कर लेते हैं, वे ज्यादा उपयोगी होते हैं।

तकनीकी कोश की एक अन्य विशेषता यह है कि यह कोश पूरा तैयार नहीं होता। यह सदैव निर्माण की प्रक्रिया में रहता है। सामान्य भाषा की विकास गति की तुलना में तकनीकी भाषा विकास गति बहुत तीव्र होती है। तकनीकी शब्दावली निरंतर विकसित होती रहती है। कम्प्यूटर आधारित कोश में नए तकनीकी शब्दों के निरंतर समावेश से अनुवादक को व्यापक सहायता पहुंचाई जा सकती है।

शब्दों के रूपपरक विश्लेषण के लिए सहायक उपकरण भी कम्प्यूटर पर उपलब्ध हो सकते हैं। इसके लिए हर एक भाषा का अपना रूपात्मक ढांचा कम्प्यूटर पर उपलब्ध होना चाहिए।

इन सभी अनुवादक सहायिकाओं के बीच मनुष्य की भूमिका केन्द्रीय होती है क्योंकि अनुवाद प्रक्रिया उसके ही हाथों पूरी होती है। स्वचालित उपकरण इस प्रक्रिया में उसकी सहायता करते हैं और उसकी कार्य-कुशलता बढ़ाते हैं।

10.10.2 अनुवादोत्तर संपादन/पश्च संपादन

इस पद्धति को पश्च-संपादन पद्धति भी कहा जाता है। इस पद्धति के अंतर्गत मशीनी अनुवाद में कम्प्यूटर से अधिकाधिक काम लिया जाता है। इसमें स्रोत भाषा पाठ का अनुवाद कम्प्यूटर करता है, उसके बाद इस अनुवाद की अनुवादक जांच करता है। इस पद्धति की प्रक्रिया इस प्रकार है-

1. सर्वप्रथम स्रोत भाषा पाठ को कम्प्यूटर की कोडीकृत भाषा में प्रस्तुत कर दिया जाता है।
2. फिर यह पाठ बैच प्रोसेसिंग कम्प्यूटर प्रणाली में डाल दिया जाता है। यहां कम्प्यूटर इस पाठ का रफ अनुवाद कर देता है।
3. मूल (स्रोत भाषा) पाठ और यह कच्चा अनुवाद अनुवादक को सौप दिया जाता है। अनुवादक इसका संपादन करते हुए इसकी गलतियां सुधारता है। पाठ की दुरूहता सुधर कर उसके सहज भाषा में प्रस्तुत करता है।

पश्च-संपादन में अनुवाद की तुलना में कम समय लगता है। अत: इससे मानवीय कुशलता में वृद्धि होती है, बड़ी तादाद में जल्दी काम संभव होता है। लेकिन इसके लिए सुयोग्य और जानकार अनुवादक की आवश्यकता होती है। कुछ समय पहले इस पद्धति को सर्वश्रेष्ठ पद्धति माना जाता था।

10.10.3 पूर्व संपादन-पूर्व संपादन पद्धति में अनुवाद से पहले स्रोत भाषा पाठ का संपादन किया जाता है। अनुवाद करने से पहले ही सभी कठिनाइयों को दूर कर दिया जाता है। जटिल व्याकरणिक संरचनाओं संदिग्ध शब्दों और समस्यापरक वाक्यगत विशिष्टताओं को सुलझा लिया जाता है।

व्यावहारिक रूप से मशीनी अनुवाद यथातथ्यता और दक्षतापूर्ण संपादन का कार्य है। इस पद्धति में मानवीय कार्य-कुशलता को मशीनी कार्य-कुशलता से अधिक महत्व दिया जाता है। पूर्व संपादन पद्धति को लेकर कम्प्यूटर अनुवाद विशेषज्ञों में मतभेद रहा है। पश्च संपादन पद्धति के प्रणेता पूर्व संपादन पद्धति को यह कह कर अस्वीकार करते हैं कि इसमें बहुत अधिक समय लगता है। इसके अलावा पूर्व संपादक अनुवादक चाहे तो स्रोत भाषा पाठ के अर्थ और आशय को बड़ी सूक्ष्मता से परिवर्तित कर सकता है।

पूर्व संपादन और पश्च-संपादन की तुलना में काफी लोग पश्च-संपादन को बेहतर मानते हैं। यद्यपि विशिष्ट सूचनात्मक क्षेत्रों में अनुवाद में जैसे मौसम रिपोर्टों के अनुवाद में पूर्व संपादन पद्धति काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। विशिष्ट क्षेत्रों की सादगी के कारण इसमें

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अर्थ बदल जाने की संभावना नहीं होती है।

10.10.4 ज्ञान-आधारित मशीनी अनुवाद प्रणाली- यह प्रणाली अनुवाद में अर्थपरकस्थिरता को मानदंड मानती है और अर्थ को कम्प्यूटर के ज्ञान-आधार में संसाधित करती है। इसके अन्तर्गत-

1. स्रोत भाषा पाठ को भाषा मुक्त अर्थ रिप्रेजेंटेशन में प्रस्तुत कर लिया जाता है। स्रोत भाषा के पाठ के अर्थ को कोडीकृत किया जाता है, वाक्यात्मक संरचना अथवा शब्दावली को नहीं।
2. स्रोत भाषा पाठ में निहित स्थितिपरक विवरणों को प्रस्तुत करने के लिए क्षेत्र विशेष अनुमानक को चलाया जाता है।
3. फिर अर्थपरक रिप्रेजेंटेशन को एक अथवा अधिक स्रोत भाषाओं में पुनरुत्पादित कर लिया जाता है।

ज्ञान आधरित कम्प्यूटर अनुवाद को ''स्क्रिप्ट एप्लाइंग मैकेनिज्म'' नामक प्रणाली के द्वारा कार्यान्वित किया गया था। यह कम्प्यूटर प्रणाली एक बहुदेशीय कम्प्यूटर प्रणाली है। यह स्रोत भाषा के आंतरिक अर्थ को कई भाषाओं में प्रस्तुत कर सकती है। उदाहरण के लिए वाहनी की दुर्घटना के विवरणों को कई अखबारों के लिए यह कई भाषाओं में एक-साथ प्रस्तुत कर देता है, जैसे- अंग्रेजी में दी गई सूचना को स्पैनिश, रूसी, फ्रांसीसी, मंडारिन, चीनी तथा डच भाषाओं में साथ-साथ अनूदित कर देता है। इस तरह ज्ञान आधरित अनुवाद ने मशीनी अनुवाद की संभावनाएं पैदा की है। इस पद्धति में निहित भाषा-मुक्त अर्थ रिप्रेजेंटेशन के लिए अपेक्षित अर्थ विश्लेषण के लाभ-हानि दोनों हैं।

लाभ-पिछली प्रणालियों से यह इस दृष्टि से उपयोगी है कि अंतरण व्याकरण के त्याग और सुव्यवस्थित पद व्याख्या तथा व्युत्पादन तकनीकों को अपनाकर इसने सही अर्थ में बहुभाषी अनुवाद की संभावनाएं खोली है। साथ ही इसमें अर्थ की स्थिरता रहती है।

सीमा-इस पद्धति की सीमा यह है कि यह स्रोत भाषा पाठ का लक्ष्य भाषा में भावानुवाद करती है, यथातथ्य अनुवाद नहीं। तात्पर्य यह है कि यह शाब्दिक अथवा वाक्यात्मक आधार को बिल्कुल छोड़ देती है।

इसके अतिरिक्त यह अर्थपरक ज्ञान आधार के अनुपात में सामान्य अर्थपरक सूचना तथा क्षेत्र विशेष के ज्ञान की अपेक्षा करती है। यह ज्ञान अनुवादक के पास ही होता है।

10.10.5 मनुष्य-मशीन पारस्परिक सहयोग प्रणाली (इंटरएक्टिव प्रणाली)- इस प्रणाली को Interactive approach कहा जाता है। इस प्रणाली में व्यक्ति स्वयं कम्प्यूटर को अनूद्य सामग्री का इनपुट देता है। वह अपनी भाषा में वाक्य/पाठ टाइप करता है। कम्प्यूटर, जहां कहीं जरूरत होती है, वहां अपनी भाषा में प्रश्न पूछता है। उहारण के लिए कम्प्यूटर पूछता है, party शब्द का अनुवाद क्या किया जाए-दावत या पक्ष ?व्यक्ति उसको उतर देता है। अंत में कम्प्यूटर उस वाक्य/पाठ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर देता है। इस प्रणाली में अनुवादोत्तर संपादन की जरूरत नहीं पड़ती ।

इस प्रणाली के लिए अत्याधुनिक इंटरएक्टिव कम्प्यूटरों की आवश्यकता होती है। इंटरएक्टिव प्रणाली की खास जरूरत तक पड़ती है जब-

0 पाठ बहुत छोटा हो, लेकिन तुरंत अनुवाद अपेक्षित हो,

0 पाठ का बहुत-सी भाषाओं में अनुवाद करना हो,

0 पाठ इतना ज्यादा तकनीकी हो कि व्यावसायिक अनुवादक को भी क्षेत्र-विशेष के विशेषज्ञों की मदद की जरूरत पड़े।

इस पद्धति की विशेषताएं हैं-

1. इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति के लिए लक्ष्य भाषा जानना जरूरी नहीं है।
2. उसे भाषा-विज्ञान, कम्प्यूटर तकनीक अथवा अनुवाद कार्य का विशेष ज्ञान अपेक्षित नहीं है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

3. इस प्रणाली से किए गए अनुवाद में अनुवादोत्तर संपादन (पश्च संपादन) आवश्यक नहीं है।

4. हर कोई इस प्रणाली का इस्तेमाल कर सकता है और लक्ष्य भाषा पाठ प्राप्त कर सकता है।

5. अनुवादक अथवा पश्च-संपादक की जरूरत नहीं है।

बोध प्रश्न-4

1. अनुवाद सहायिका से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

2. अनुवाद के पश्चात संपादन कैसे होता है ?

.....

.....

3. अनुवाद-पूर्व संपादन किसका और कैसे किया जाता है ?

.....

.....

4. कम्प्यूटर में ज्ञान को आधार किस प्रणाली में बनाया जाता है ? यह कैसे कार्य करती है ?

.....

.....

5. मनुष्य और मशीन के पारस्परिक सहयोग पर आधारित प्रणाली का उल्लेख कीजिए-

.....

.....

10.11 अनुवाद के विविध विषय-क्षेत्र और मशीनी अनुवाद

मशीनी अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों और संभावनाओं का अध्ययन करने के बाद भी एक प्रश्न जो हमारे मन में लगातार बना रहता है वह यह है कि क्या मशीनी अनुवाद मानवीय अनुवादकों का स्थान ले सकता है अथवा यह केवल मनुष्य का सहायक ही बन सकता है। अब तक विकसित कम्प्यूटर प्रणालियों तथा कम्प्यूटर इंजीनियरिंग और संगठनात्मक भाषाविदों के अनुभव बताते है कि अभी तक कोई मशीन ऐसी नहीं जो मानवीय मस्तिष्क का स्थान ले सके। हर पाठ/विषय का पूर्ण स्वचालित अनुवाद अभी भी एक स्वप्न ही है।

अनुवाद विनिर्देश मशीनी अनुवाद का एक महत्वपूर्ण घटक है। कुछ क्षेत्रों में ये बहुत उपयोगी होते हैं जैसे मौसम संबंधी अनुमानों के प्रसारण में। मौसम रिपोर्टों का अनुवाद लगभग पूरा ही कम्प्यूटर पर कर लिया जाता है। अनुवादक द्वारा संपादन बहुत ही थोड़ा-बहुत अपेक्षित होता है लेकिन सभी विषयों/क्षेत्रों में ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए व्यावसायिक विज्ञापन सामग्री के अनुवाद को ही लें। वहां मशीनी अनुवाद की मांग बहुत ही कम है। कारण, वहां शाब्दिक अथवा वाक्यपरक पर्यायों को प्रतिस्थापित करने से काम नहीं चलता। ध्यानाकृत करने वाला सृजनात्मक अनुवाद अपेक्षित होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इसी तरह तकनीकी, विधिक, साहित्यिक अनुवादों में भी मशीनी अनुवाद की स्थिति भिन्न-भिन्न है। तकनीकी अनुवाद में पाठ अक्सर सूचनात्मक होते हैं। इनमें शब्दावली की स्थिरता तथा वाक्य-विन्यास की सरलता होती है।

विधिक अनुवाद में केवल शब्दों और पदबंधों के पर्याय प्रस्तुत कर देना पर्याप्त नहीं होता, वाक्यांशों और वाक्यों के पर्याय सुनिश्चित और स्थिर करने होते हैं। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की विधि-व्यवस्थाओं के बीच भेदों का संतुलन भी अनुवाद के दौरान करना होता है। साहित्यिक अनुवाद में कथ्य के साथ-साथ कथन का ढंग और शैली बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। साथ ही इसमें कोई एक निश्चित अनुवाद नहीं हो सकता। हर अनुवाद एक नया सृजन होता है। फिर स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा संस्कृतियों और जीवन-स्थितियों में पर्याप्त अंतर होता है। अत: स्रोत भाषा पाठ को लक्ष्य भाषा के अनुरूप अंतरित किया जाता है। काव्यानुवाद में छंद निर्वाह अथवा छंद से मुक्ति का भी प्रश्न होता है।

अनुवाद की इन विशिष्टताओं की दृष्टि से मनुष्य और मशीन के पारस्परिक सहयोग के स्तर और सीमा में तो अंतर आता ही है, कुछ क्षेत्रों में मशीनी अनुवाद की बजाए मनुष्य द्वारा अनुवाद ही वांछित होता है। साहित्य ऐसा ही क्षेत्र है, विज्ञापन में भी मशीनी अनुवाद की भूमिका नगण्य सी है। विधिक क्षेत्र इतना सुनिश्चित और यथातथ्य तथा सूक्ष्म प्रभेदों वाला होता है कि वहां भी मनुष्य द्वारा अनुवाद ही बेहतर माना जाता है। हां सूचनात्मक और उसमें भी सुनिश्चित तथा कम से कम वैविध्यपरक क्षेत्रों से संबंधित सामग्री के अनुवाद में कम्प्यूटर से पर्याप्त सहायता मिलती है।

मशीनी अनुवाद का उद्देश्य वास्तव में मनुष्य की अनुवाद क्षमता में वृद्धि करना है। कम्प्यूटर उसे त्वरित गति से शब्दावली पर्याय प्रदान करके उसका श्रम बचा सकता है। उसे बड़ी मात्रा में अनुवाद करके दे सकता है जिसके अनुवादोत्तर संपादन में अनुवाद की तुलना में कम समय लगता है। यदि वह कम्प्यूटर पटल पर अनुवाद सामग्री प्रस्तुत करे तो उसका अनूद्य रूप दे सकता है। लेकिन कम्प्यूटर मनुष्य को विस्थापित कर स्वयं कुशल अनुवादक नहीं बन सकता। वह विभिन्न विषय क्षेत्रों में भेद करके स्वयं विषयानुकूल अनुवाद नहीं कर सकता।

बोध प्रश्न-5

1. विविध विषय क्षेत्रों में मशीनी अनुवाद की क्षमताओं पर प्रकाश डालिए-

.....

.....

.....

.....

10.12 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने अनुवाद की एक नई और विशिष्ट पद्धति के बारे में पढ़ा है। अब आप जान गए है कि मशीनी अनुवाद क्या होता है और यह कैसे किया जाता है। आपने इस इकाई में मशीनी अनुवाद के इतिहास के बारे में पढ़ा है। आप जान गए है कि कम्प्यूटर आधारित शब्द-सूचियां मशीनी अनुवाद में किस प्रकार उपयोगी होती हैं। इनका इस्तेमाल कम्प्यूटर अनुवाद में तो किया ही जाता है, व्यक्ति द्वारा अनुवाद में भी ये शब्दकोश बहुत उपयोगी होते हैं। अनुवादक को बार-बार कोश देखने या बहुत से कोश देखने के कार्य के मुक्ति मिली रहती है।

इस इकाई में आपने मशीनी अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों की जानकारी भी प्राप्त की है तथा उन प्रविधियों की उपयोगिता और सीमाओं का परिचय प्राप्त किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

मशीनी अनुवाद में कम्प्यूटर और भाषा-विज्ञान के संबंध का भी परिचय आपने प्राप्त किया है। कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद की प्रक्रिया में व्याकरण और पद व्याख्या के उपयोग की जानकारी भी आपको इस इकाई में मिली है।

इसके साथ ही आपने विषय क्षेत्र में भाषा प्रयोग की विशिष्टताओं के महत्व को समझा है तथा कम्प्यूटर द्वारा किए जाने वाले अनुवाद में उपभाषाओं की भूमिका का परिचय आपको मिला है।

कम्प्यूटर द्वारा किए गए अनुवाद के मूल्यांकन से भी आपका परिचय हुआ है तथा मशीनी अनुवाद की गुणवत्ता के विषय में जानकारी हासिल हुई है।

इस इकाई में आपने मशीनी अनुवाद में मनुष्य और मशीन के सहयोग यानी मनुष्य द्वारा मशीन के उपयोग के विषय में भी पढ़ा है। आपको पता चला है कि किस प्रकार पिछले पचास वर्षों में कम्प्यूटर से अनुवाद का अधिक से अधिक काम लेने के प्रयास हुए हैं लेकिन अब भी कम्प्यूटर पूर्ण अनुवादक नहीं बन सका है। वह अनुवाद के क्षेत्र में सहायता तो प्रदान करता है, बड़ी तादाद में अनुवाद भी प्रस्तुत करता है लेकिन वह मनुष्य का स्थान नहीं ले पाया है। मानव-मशीन सहयोग के स्वरूप और सीमा में विभिन्न प्रकार की कम्प्यूटर प्रणालियों में विविधता रही है। मनुष्य इसमें किस-किस तरह की भूमिका निभाता है। यह भी आपने पढ़ा है।

अंत में अपने विविध विषय-क्षेत्रों के अनुवाद में कम्प्यूटर के उपयोग के बारे में भी पढ़ा है।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

Machine Translation (Linguistic characteristics of MT systems and general methodology of Evaluation); John Lehrtenger & Laurent Bombean; John Benjamine Publishing Company: Amsterdam/Philadelphia.

10.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. देखें, भाग 10.2
2. 20 वर्ष से अधिक पुराना
3. वैज्ञानिकों तथा भाष्य वैज्ञानिकों की
4. देखें, भाग 10.3

बोध प्रश्न-2

1. देखें भाग 10.4
2. देखें भाग 10.4
3. देखें, भाग 10.5

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

संवर्ग-5 : अनुवाद के गुण एवं उपयोगिता

इकाई-11 अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगकिता एवं व्यावसायिक परिदृश्य

संरचना

11.0 प्रस्तावना

11.1 उद्देश्य

11.2 अनुवाद क्यों ?

11.3 अनुवादक की हैसियत

11.4 राष्ट्रीय एकता में अनुवाद का महत्त्व

11.5 सामसिक संस्कृति के विकास में अनुवाद का महत्त्व

11.6 भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्त्व

11.7 अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में अनुवाद का महत्त्व

11.8 तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्त्व

11.9 व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व

11.10 प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व

11.11 जन-संचार माध्यमों में अनुवाद का महत्त्व

11.12 शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

11.13 सारांश

11.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में आप पढ़ चुके हैं कि अनुवाद क्या है उसे कैसे परिभाषित किया जा सकता है तथा उसकी परंपरा क्या और कैसी रही है। प्रस्तुत इकाई अनुवाद के महत्व एवं प्रसंगिकता के बारे में हैं। आप पढ़ चुके हैं कि अनुवाद बहुत प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। अनुवाद की परंपरा जानने के बाद आप को उसके महत्व के विषय में जानना आवश्यक है। वैसे तो जो चीज इतने समय से होती चली आ रही है उसका महत्व स्वयंसिद्ध ही है। लेकिन वह महत्व किस रूप में और कैसा है, यह जानना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इसके अलावा जो चीज पुराने समय से चली आ रही है उसकी वर्तमान समय में या भविष्य में प्रासंगिकता जानना भी जरूरी है। प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद की प्रासंगिकता की भी चर्चा करेंगे। यह प्रासंगिकता वास्तव में अनुवाद के विभिन्न संदर्भों और क्षेत्रों के महत्व में ही निहित है।

11.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

0 बता सकेंगे कि अनुवाद की जरूरत क्यों पड़ती है,

0 अनुवादक की सामाजिक हैसियत का उल्लेख कर सकेंगे,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

0 विभिन्न जीवन संदर्भों और क्षेत्रों में अनुवाद का महत्त्व समझा सकेंगे।

11.2 अनुवाद क्यों ?

किसी कार्य के महत्त्व का मूल्यांकन करते समय यदि पहले इस बात पर विचार कर लिया जाए कि वह कार्य क्यों किया जाता है तो उस कार्य के महत्व के कई पहलू खुद-ब-खुद सामने उभर कर आ जाते हैं। इस दृष्टि से यदि हम इस बात पर विचार करते हैं कि अनुवाद की आवश्यकता क्या है या अनुवाद क्यों किया जाता है तो अनुवाद के महत्व संबंधी कई पहलू स्वयं सामने आ जाएंगे। मनुष्य के भाषा ज्ञान की सीमा है वह कितनी भाषाएं सीख सकता है-दो, चार, छ, आठ, दस ?लेकिन वह भाषा ज्ञान की सीमा को अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों की सीमा नहीं बनाना चाहता। वह उन लोंगों से संपर्क में आता है जिनकी भाषा नहीं जानता। उनके साथ सामाजिक, सांस्कृतिक , राजनीतिक, व्यापार एवं वाणिज्यिक संबंध स्थापित करता है। इन कार्यो में वह दुभाषिए और अनुवादक की सहयता लेता है। ज्ञान- विज्ञान के क्षेत्र में वह अपनी जानकारी सीमित नहीं रखना चाहता। देश-विदेश में हुए अनुसंधान एवं विकास की निरंतर जानकारी पाना चाहता है। दूसरी भाषाओं की ऐतिहासिक , सांस्कृतिक धरोहर की गहनता एवं व्यापकता का अध्ययन करना चाहता है और यह सब अुनवाद के माध्यम से ही संभव होता है।

दूसरी ओर वह एक तरह की सर्जनात्मक प्रेरणा से भी अनुवाद की ओर प्रेरित होता है। अन्य भाषाओं में जो कुछ नया और विशिष्ट उसे दिखाई देता है उसे अपनी भाषा के लोगों तक पहँचाने का माध्यम बनने में उसे एक विशिष्ट प्रकार का सर्जनात्मक सुख प्राप्त होता है जो किसी हद तक मौलिक सृजन के सुख से कम नहीं होता। इस सृजनात्मक प्रेरणा के कारण ही साहित्यिक कृतियों के अनुवाद प्राचीन काल से होते चले जा रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। जो कृति जितनी अधिक श्रेष्ठ होती है उतनी ही अधिक अनुवाद की प्रेरणा देती है। विभिन्न भाषाओं के लोग उसका अनुवाद करते है। इतना ही नहीं एक ही भाषा में उस कृति के अनेक अनुवाद देखने को मिलते हैं। कहना चाहिए हर युग में उसका अनुवाद होता रहता है। कालिदास, शेक्सपियर, वाल्मीकि आदि की रचनाएँ और अनुवाद इसका उदाहरण हैं।

विज्ञान के विकास के साथ-साथ सूचना का महत्व बढ़ा है। विज्ञान के क्षेत्र में खोंजो की जानकारी वैज्ञानिक तुरंत पाना चाहते हैं। जिस भाषा में वह उपलब्ध है उसे तुरंत अपनी भाषा में पाने के लिए उन्हें अनुवादकों की जरूरत पड़ती है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिक के विकास के साथ आज दुनिया भर के लोगों का आपसी संपर्क बढ़ा है। ज्ञान के क्षेत्र के अतिरिक्त व्यापार, उद्योग, पर्यटन आदि के क्षेत्र में दुनिया सिमट कर काफी छोटी हो गई है। भूमंडलीकरण (Globalization) के जमाने में जब मनुष्य एक दूसरे की आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति में ज्यादा और निकट का साझीदार हुआ है तब अनुवाद की जरूरत और ज्यादा बढ़ गई है। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रसार है और इन कंपनियों के माल के बाजार दुनिया भर में फैले हैं। इन बाजारों में माल की खपत के लिए अनुवाद अपने ढंग से जरूरी हो गया है। कम्पनियों के उत्पाद भाषा की सीमाओं को लाँघते हुए सब जगह पहुँच रहे हैं।

इसलिए आज के युग को अनुवाद का युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। सोच और व्यवहार के हर स्तर पर हम अनुवाद पर आश्रित हैं, अनुवाद के आग्रही हैं। शायद ही जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र हो, जिसमें अनुवाद की उपादेयता प्रमाणित न की जा सके। अपरिहार्य तौर पर अनुवाद एक व्यापार और प्रासंगिक स्थिति है। इसलिए यह सर्वथा स्वाभाविक ही है कि नए संसाधनों के विकास और व्यापकतर मानवीय सम्पर्कों के संदर्भ में अनुवाद के महत्व, प्रासंगिकता और भविष्य का अनुशीलन किया जाए। संसार भर में प्रयुक्त पाँच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक सर्जनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम बन गया है।

11.3 अनुवादक की हैसियत-

प्रश्न यह है कि अनुवाद कार्य को मौलिक सृजन के समकक्ष महत्व मिल सकता है। इस प्रश्न को लेकर दो तरह के मत रहे हैं जहाँ एक बड़ा वर्ग अनुवाद और अनुवादक को मानव जीवन की अनिवार्यता मानते हुए उसे अपेक्षित महत्व देता रहा है वहीं दूसरी ओर ऐसा वर्ग रहा है जो अनुवाद को मूल रचना के प्रति गैर वफादार और गद्दार घोषित करते हुए यह सिद्ध करता रहा है कि अनुवाद

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

चूँकि कभी मौलिक लेखन की बराबरी नहीं कर सकता इसलिए यह दोयम दर्जे का काम है। इस वर्ग के लोग मानते रहे है कि मौलिक लेखन के लिए प्रथम श्रेणी की प्रतिभा अपेक्षित है जबकि अनुवाद बी-क्लास प्रतिभा भी कर सकती है। वे अनुवाद को एक बोतल में भरे आसव को दूसरी बोतल में पलटने से बड़ा काम नहीं मानते। लेकिन इस मत को व्यापक स्तर पर स्वीकार नहीं किया गया और यह माना गया कि अनुवाद कार्य के लिए भी मौलिक सर्जन जैसी सृजनक्षमता और कल्पनाशीलता अपेक्षित है। इसके बिना अच्छा अनुवाद संभव ही नहीं। अनुवादक को चूँकि दूसरे के भावों और विचारों में पैठकर उनका सार ग्रहण करना होता है इसलिए उसका कार्य ज्यादा जटिल होता है। अब से कुछ समय पहले अनुवाद-कार्य और इससे जुड़े लोगों को दोयम दर्जे का स्थान प्राप्त था लेकिन आज अनुवाद की बहुआयामी उपादेयता ने सारा नक्शा ही बदल दिया है। अनुवाद समकालीन जीवन की अनिवार्यता है, युगानुरूप पदृश्यों में बेहद उपयोगी एवं सघन संभावनापूर्ण है। संस्कृत में अनुवाद शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरू की बात के दुहराए जाने पुन: कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया जाता है। लेकिन आज अनुवाद शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुन: प्रस्तुति के संदर्भ में किया जाता है। वास्तव में अनुवाद भाषा के इन्द्रधनुषी रूप की पहचान का समर्थन मार्ग है। अनुवाद की अनिवार्यता को किसी भाषा की मौलिक सृजन शक्ति की समृद्धि का शोर मचा कर टाला नहीं जा सकता और न ही अनुवाद की बहुकोणीय उपयोगिता से इन्कार किया जा सकता है। अनुवाद को परिभाषित करने की अनेक कोशिशें हुई हैं और हर कोशिश में यही लक्ष्य किया गया है कि अनुवाद का मूल उद्देश्य स्रोत भाषा की विचार-सामग्री को अपनी भाषा में यथासंभव मूल रूप में उपस्थित करना है। अनुवाद की परिकल्पना एक ऐसे संयंत्र के रूप में की गई है, जिससे होकर स्रोत भाषा की सामग्री लक्ष्यभाषा में रूपांतरित होती है। इसीलिए अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का समान जानकार हो। उभय भाषा-ज्ञान के समानान्तर अनुवादक को विषय का ज्ञाता भी होना चाहिए अर्थात् विषय की अंतरंग पैठ के बिना अनुवादक स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य-भाषा में सही अनुवाद नहीं कर सकता। सच तो यह है कि अनुवाद कार्य के तीव्र और व्यापक उपयोग ने इस क्षेत्र में अनुवाद के महत्व ने इसे व्यापक विस्तार दिया है। आने वाले दिनों में अनुवाद और अधिक सूच्य, भेदक एवं लक्ष्यकेन्द्रित होंगे।

अनुवाद की प्रासंगिकता और विलक्षणताओं के आलोक में संसार भर की भाषाओं में अनुवाद की कई शैलियां और प्रविधियां अपनाई गई है। यदि अनुवादक सावधानीपूर्वक शब्द और अर्थ की आत्मा का स्पर्श करते हुए स्रोत भाषा की प्रकृति के अनुरूप कहा गया है जो बोतल में रखी दवा को अपनी सीरिज के द्वारा रोगी के शरीर तक यथावत् पहुंचा देता है। सभ्यता के मौजूदा दौर में अनुवाद की अपरिहार्यता का अनुभव इसी कारण तीव्रता से किया जा रहा है कि संसार के किसी भी देश, भाषा और व्यक्ति के लिए शेष विश्व की तमाम उपलब्धियों से जुड़ने के लिए अनुवाद से बेहतर कोई माध्यम नहीं है। भाषाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान से मनुष्य के वैचारिक तथा अभिव्यंजनात्मक स्वरूप में परिवर्तन द्वारा अनुवाद ने अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। राष्ट्रीय एकता से लेकर अंतर्राष्ट्रीय समीपता तक अनेक सामाजिक सूत्रों का नियमन अनुवाद से संभव होता है। ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में संसार की प्रगति और उपलब्धियों की अद्यतन जानकारी के लिए भी मनुष्य अनुवाद पर निर्भर है। नए तकनीकी संसाधानों और अधुनातन अनुसंधानों से परिचित होने के लिए अनुवाद ही सर्वसुलभ माध्यम है। शेष विश्व के सामने अपनी पहचान सुरक्षित रखने और अनवरत विकासमान सभ्यता की दौड़ में पिछड़ने से बचने के लिए अनुवाद के बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। अनुवाद की उपादेयता आज की जरूरत है और अनुवाद आने वाले कल का स्वाभविक विकास-उपकरण होगा। अनुवाद की इस अपरिहार्य आवश्यकता ने अनुवादक के महत्व को बढ़ाया है।

11.4 राष्ट्रीय एकता में अनुवाद का महत्व

एकता की अनिवार्य कड़ी के रूप में भाषा की भूमिका से भला कौन इन्कार कर सकता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा की यह भूमिका कुछ अधिक ही भास्वर है, क्योंकि अनेकता के बीच एकता के मंत्रों का उच्चार भाषा के स्तर पर करने का संकल्प अनुवाद के सहयोग से ही पूरा हो सकता है। भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टियों से हमारा देश बहुकोणीय है। एक साथ कई धर्मों, कई सम्प्रदायों, कई जातियों, कई भाषाओं और कई आचार-व्यवहारों के समन्वय से बना है भारत का मानचित्र। इतनी सारी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)

विचारधाराओं, परंपराओं और ज्ञान सम्पदा के उपकरणों को मिला कर भारत की तस्वीर बनती है कि इन सबके सम्यक् परिज्ञान के बिना न तो भारतवर्ष के इतिहास और भूगोल की सही जानकारी मिल सकती है और न ही भारत की एकता की पहचान हो सकती है। इस कार्य में अनुवाद की उपादेयता सर्वाधिक उल्लेखनीय है।

भारत की राष्ट्रीय पहचान के विविध तत्व कश्मीर से कन्याकुमारी तक इस देश के विभिन्न भाषा-भाषी लोगों के बीच बिखरे हुए हैं। मध्ययुग के भक्ति-आंदोलन से लेकर उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी के स्वाधीनता संग्राम तक पारस्परिक संपर्क और सम्प्रेषण में अनुवाद ने अपनी विशिष्ट भूमिका कर संवहन किया है। भारत की भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता के विभिन्न सूत्र इस देश के विशाल ज्ञान भंडार और चिन्तन की सरणियों में बिखरे हुए हैं। देश भर में फैली भाषाओं, बोलियों और लिपियों का पार्थक्य अपरिचय के कई ऐसे विंध्याचलों को जन्म देता है, जिनसे राष्ट्रीय एकता कहीं-न-कहीं बाधित होती है। लेकिन भारतीय साहित्य का अद्यतन इतिहास साक्षी है कि जिस प्रकार के स्वर हिन्दी भाषी जनता की हृदयवीणा से निकलते रहे हैं, वैसे ही स्वर सारी भारतीय भाषाओं में भी गूंजते रहे हैं। अनुवाद के विस्तार ने अब यह बतला दिया है कि हजार वर्षों के लम्बे इतिहास में भारतीय साहित्य की परम्परा एक ही दिशा में प्रवाहित होती रही है। अनुवाद के प्रयास न होते तो चिंतन और सर्जना के स्तर पर व्याप्त अभूतपूर्व राष्ट्रीय एकता के तथ्य उजागर नहीं होते। अनुवाद के प्रयत्नों ने ही यह प्रमाणित किया है कि जब गोस्वामी तुलसीदास अपने ''रामचरितमानस'' में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व को साकार कर रहे थे, उसी तरह बंगाल में कृतिदास, उडिया में बलरामदास, असमिया में शंकरदेव, मराठी में एकनाथ, तमिल में कम्बन, मलयालम में एषुत्तच्छन और नेपाली में भानुदत्त भी रामकाव्य रच रहे थे। सूरदास की कृष्ण भक्ति के साथ ही साथ तेलुगु में पोतन्ना, गुजराती में नरसी मेहता, बंगला में चंडीदास, मलयालम में नम्पूतिरि, कन्नड़ में कनकदास और उडिया में जगन्नाथ दास भी कृष्णकाव्य के प्रणयन में व्यस्त थे। हिन्दी में कबीर, पंजाबी में नानकदेव, तेलुगु में वेमना, मराठी में नामदेव और कश्मीरी में लल्लेश्वरी ने एक साथ निर्गुण ईश्वर की उपासना का संदेश दिया। अनुवाद के विस्तार ने ही यह सूचित किया कि भारत में ब्रिटिश शासन के जमाने के बाद जब पुनर्जागरण की लहर राष्ट्रीय परिदृश्य में आई, तब अकेले भारतेन्दु हरिशचन्द्र ही अधुनिक युग के पुरोधा नहीं बने। तेलुगु में वीरेशलिंगम पंतुलु, मराठी में विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, गुजराती में नर्मद, उडिया में फकीर मोहन सेनापति असमिया में लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ, मलयालम के केरल वर्मा आदि ने भी आधुनिकता की दिशा में ऐसे ही प्रयास किए। बाद में जिस तरह हिन्दी में छायावादी कविताओं का युग आया, उसी तरह मलयालम और तेलुगु में भी स्वच्छंदतावादी भाव की कविता लिखी गई। अनुवादों ने बताया कि निराला की विद्रोही कविताओं के समानान्तर ही बंगला में नजरुल इस्लाम और तमिल में सुब्रह्मण्यम भारती की राष्ट्रवादी कविताएं रणभेरी बजा रही थी। जिस प्रकार बंगला में द्विजेन्द्र लाल राय अपने ऐतिहासिक नाटक लिख रहे थे, उसी प्रकार जयशंकर प्रसाद हिन्दी में नाट्यरचना में प्रवृत्त थे।

प्रेमचन्द के हिन्दी उपन्यासों और शरतचन्द्र के बंगला उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के प्रति स्वीकृत समानधर्मिता का परिज्ञान अनुवाद ही देते हैं। अनुवाद की सुविधा के बिना लोग कैसे जान पाते कि सुमित्रा नन्दन पंत के काव्य और जी. शंकर कुरूप की मलयालम कविता में कहीं कोई तालमेल है अथवा हिन्दी के शरद जोशी और गुजराती के विनोद भट्ट ने विसंगतियों का समान व्यंग्य शैली में निदर्शन किया है। निश्चय ही भारत की सभी भाषाओं में एक मूलभूत भावात्मक एकता विद्यमान रही है। एकता के इन तन्तुओं को अधिकाधिक सुदृढ़ करने में अनुवाद की भूमिका अप्रतिम कही जा सकती है। जिस राष्ट्रीय एकीकरण की आवाज देश के विस्तृत मानचित्र पर गूंज रही है उसके अपेक्षित पल्लवन में अनुवाद की सार्थकता नि:संदिग्ध है।

वास्तव में अनुवाद वह सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा भारत जैसे राष्ट्र की एकसूत्रता को सही दिशा मिलती है। अनुवाद की सुविधा के अभाव में हम अपने विशाल बहुभाषीराष्ट्र में ही अपरिचित जैसे रह जाते। अनुवाद ने सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के बंधन में बांध रखा है और राष्ट्रीयता के सूत्रों को बिखरने से रोका है।

11.5 सामाजिक संस्कृति के विकास में अनुवाद का महत्व

संस्कृति अपने वृहत्तर अर्थ में पूरी मानव सभ्यता की उपलब्धियों का साक्षा कोष है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा था कि मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाओं का ही दूसरा नाम संस्कृति है। भारत जैसे बहुभाषी, बहुजातीय, देश में एक साथ इतनी संस्कृतियों, धर्मों

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

और आचार-विचारों का समन्वय हुआ है कि इस देश में संस्कृति का एक समन्वित और मिश्रित स्वरूप अब स्थिर हो गया है। जिस तरह सागर अनंत नदियों की जलराशि को समाहित कर विशालता अर्जित करता है उसी तरह भारतीय संस्कृति ने भी कई चिंतनधाराओं, कई विचारशैलियों और न जाने कितनी व्यवहारगत असमानताओं को अपने भीतर पचा कर अनूठी समन्वयात्मकता का परिचय दिया है। भारत की इस बहुआयामी संस्कृति को ही सामाजिक कहा गया है जिसमें चिन्तन, सृजन भाषा, कल्पना और आचरण की तमाम विभिन्नताओं के बावजूद एक अद्भुत सामासिकता लक्षित होती है। भारतीय जनजीवन में व्याप्त अनेकता में विद्यमान सांस्कृतिक समीकरण ही इस सामासिक संस्कृति की मूलभूत विशिष्टता है। भारतीय संस्कृति में भारत की विविधताएं अपनी सम्पूर्ण मौलिकता के साथ गुंथी हुई हैं। सामसिक संस्कृति की इस समन्वयात्मक चेतना का पल्लवन करने में अनुवाद का महत्व अधिक है। अनुवाद के बिना हम कैसे जान पाते कि मौजूदा भारतीय साहित्य और चिंतन किन दिशाओं में अग्रसर है। राष्ट्रीय स्तर पर सोच और अभिव्यक्ति की दशा-दिशा की जानकारी अनुवाद के बिना संभव ही नहीं।

मध्यकालीन पुनर्जागरण से लेकर बीसवीं सदी के नवजागरण तक भारतीय संस्कृति की सामसिकता अधिक तीव्र हुई है। आर्य-अनार्य, देशी-विदेशी संस्कृतियों का घोर समन्वयात्मक चरित्र ही मौजूदा भारतीय संस्कृति में परखा जाए। आज हम भारत के किसी स्थान विशेष की आचार-व्यवहारगत आदतों तक सीमित नहीं रह सकते हैं। व्यवहार की विविधता, चिंतन की स्वतंत्रता, सामाजिक संघर्ष और उदारवादी दृष्टिकोण के कारण सामसिक संस्कृति का लगातार विस्तार हुआ है। भारतीय संस्कृति की सामसिक अस्मिता को अनुवाद के अनगिनत प्रयासों ने सौष्ठव प्रदान किया है। अनुवाद-कार्य भारत की बहुआयामी सांस्कृतिक परम्पराओं और उपलब्धियों पर विचरण करने वाली विभिन्न धार्मिक-वैचारिक सम्प्रदायों, आचार-दर्शनों और सांस्कृतिक सरणियों का संगम हुआ है। समूचे देश की भौगोलिक सीमा में बिखरी सांस्कृतिक विरासतों और जीवनमूल्यों की सामाजिक छवि को अनुवाद-प्रक्रिया ने सही दिशा दी है।

11.6 भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व

भारतीय साहित्य का इतिहास विश्व भर में सर्वाधिक प्राचीन, प्रौढ़ और कलामय है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के वैदिक काल से लेकर अब तक भारत की अनगिनत भाषाओं और बोलियों में चिन्तन और सृजन की सुदीर्घ परम्परा उपलब्ध है। लेकिन भारतीय साहित्य का तात्पर्य केवल विविध भाषाओं का रचनात्मक समुच्चय नहीं हैअपितु भारतीय साहित्य इस बहुभाषी और वैविध्यपूर्ण देश की सामसिक संस्कृति का समेकित प्रयास भी है। इसी कारण अब साहित्य का इतिहास मात्र हिन्दी या बंगला या मराठी या तेलुगु की साहित्यिक उपलब्धियों के विवरण से नहीं तैयार हो सकता है। साहित्य के इतिहास को अब वृहत्तर भारतीय साहित्य के समेकित इतिहास के रूप में ही सही पहचान दी जा सकती है। अकेले सूरदास की चर्चा अब अपर्याप्त होगी। सूरदास के साथ गुजराती के नरसी मेहता तेलुगु के पोतना, उड़िया के जगन्नाथदास, असमिया के शंकरदेव, कन्नड़ के पुरन्दरदास और बंगला के चंडीदास आदि कृष्णभक्त कवियों की प्रासंगिक चर्चा अपरिहार्य होगी। हिन्दी में जैसी छायावादी कविताएं लिखी जा रही थीं, बंगला, मलयालम, पंजाबी, सिंधी, उर्दू, गुजराती, तेलुगु, मराठी आदि तमाम भारतीय भाषाओं में उससे मिलते-जुलते भाव और सौन्दर्य पर आधारित स्वच्छंदतावादी काव्य रचा जा रहा था लेकिन मलयालम से अपरिचित काव्य रसिक के लिए कठिन है कि वह कुमारन आशान् की भाववादी कविताओं से जुड़े। जो मराठी नहीं जानता, वह विजय तेंदुलकर के नाटकों और कुसुमाग्रज की कविताओं का रसास्वादन नहीं कर सकता। जो हिन्दी नहीं जानता, वह प्रेमचंद की कहानियों और हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों से अनभिज्ञ ही रह जाएगा। भाषा-ज्ञान के बिना भारत की विभिन्न भाषाओं में शताब्दियों में रचित साहित्य की उपलब्धियों से परिचित होना असंभव है। इसी असंभव को संभव बनाने में अनुवाद की उपादेयता कारगर होती है। अन्य भाषा के ज्ञान की कमी अनुवाद से पूरी होती है। सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं के साहित्य की विचार सामग्री और कलात्मक गरिमा का परिबोध अपनी ही भाषा में मिल जाए यह अनुवाद का चमत्कार है। अनुवाद के ही कारण तुलसी और कम्बन, प्रेमचंद और शरतचन्द्र, कबीर और वेमना, मीरा और अण्डाल, कालिदास और वाल्मीकि, भारतेन्दु और नर्मद, दिनकर और इकबाल, वृंदावन लाल वर्मा और हरि नारायण आप्टे, उमाशंकर जोशी और अज्ञेय आदि भारतीय रचनाकारों से सारा हिन्दुस्तान परिचित है। अनुवाद के ही कारण वल्लतोल पर मलयालम भाषियों को ही गर्व नहीं, रवीन्द्रनाथ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ठाकुर केवल बंगला के रचनाकार ही नहीं, कबीर केवल हिन्दी के विद्रोही कवि नहीं और गालिब पर केवल उर्दू शायरी के प्रेमी ही मुग्ध नहीं हैं। भारतीय साहित्य की अनमोल उपलब्धियां अनुवाद के कारण भाषा और देश-काल की सीमा में बंधी हुई नहीं हैं। स्वभावत: भारतीय संस्कृति के अध्ययन और आस्वादन में अनुवाद की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

इधर भारतीय साहित्य के समेकित इतिहास का अध्ययन लोकप्रिय हुआ है। सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययन और अनुसंधान अनुवाद के बिना संम्भव नहीं। अनुवाद ने ही भारतीय साहित्य के समेकित अध्ययन और अध्यापन को व्यापकता दी है तथा सुगम बनाया है। भारतीय साहित्य को उसकी समग्रता और विविधता में जानने और आंकने का सारा मौजूदा व्यापार अनुवाद पर ही अवलम्बित है। अनुवाद ने भारतीय साहित्य के अध्येताओं को एक दूसरे के निकट लाने का सम्यक् प्रयास किया।

बोध प्रश्न-1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 पंक्तियों में दीजिए।

1. अनुवाद की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2. विविधता में एकता की स्थापना में अनुवाद के प्रयास का भारतीय सदर्भ में मूल्यांकन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3. सामासिक संस्कृति के विकास में अनुवाद के अवदान का विवेचन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4. भारतीय साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में अनुवाद की भूमिका का वर्णन कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

.....

.....

.....

.....

11.7 अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में अनुवाद का महत्व-

भारत में ब्रिटिश राज की स्थापना के बाद भारतीय मनीषा का व्यापक सम्पर्क पश्चिमी चिन्तन और सृजन के साथ हुआ। इसके पूर्व सूफियों ने अरब देशों की दार्शनिक अभिव्यक्तियों से भारतीय साहित्य को जोड़ना चाहा था, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि और रूचि का व्यापक समाहार भारत में यूरोपीय शक्तियों के आगमन के बाद ही हुआ। पहले ईसाई धर्म प्रचार के बहाने और फिर शैक्षणिक तथा प्रशासनिक कार्यों के लिए यूरोपीय भाषाओं से भारतीय भाषाओं में अनुवाद का उपयोग प्रारम्भ हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य काल तक लोग अनुभव करने लगे कि यूरोपीय, विशेषत: अंग्रेजी साहित्य का अनुवाद भारतीय सोच और लेखन के लिए अपरिहार्य है। कहा जाने लगा कि जिस भारतीय भाषा में अच्छे अनुवादक न हों, उसमें नए और मौलिक ग्रंथो के लेखक कहाँ मिलेंगे। एक श्रेष्ठ और मानक अनुवाद पर पचास नि:सार मौलिक पुस्तकें न्यौछावर करने की मानसिकता पनपने लगी। परिणामत: हिन्दी और समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में अंग्रेजी साहित्य के संचित ज्ञान और कला का अनुवाद होने लगा। 'ग्रंथकारों से निवेदन' शीर्षक अपनी कविता में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अनुवाद का आग्रह किया है-

'इंग्लिश का ग्रंथ-समूह बहुत भारी है,
अति विस्तृत जलधि समान देहाधारी है।
संस्कृत भी इसके लिए सौख्यकारी है,
उसका भी ज्ञानागार हृदयकारी है।
इन दोनों में से अर्थरत्न ले लीजै,
हिन्दी के अर्पण उन्हें प्रेमयुत कीजै।

अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद का सिलसिला इस निवेदन के बहुत पहले से चला रहा था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1880 में विलियम शेक्सपीयर के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद 'दुर्लभ बन्धु' के रूप में किया और श्रीधर पाठक ने 1886 में ऑलिवर गोल्डस्मिथ की काव्यकृति 'हरमिट' का अनुवाद 'एकांतवासी योगी' के नाम से किया। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से हिन्दी एवं उसकी सहवर्ती भारतीय भाषाओं में अनुवाद के पिछले लगभग सवा सौ वर्षो के इतिहास में अंतर्राष्टीर्य साहित्य के साथ भारतीय लेखकों, पाठकों एवं अध्येताओं का रिश्ता प्रगाढ़ हुआ।

यह अनुवाद का ही चमत्कार है कि अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन भारतीय भाषाओं में सम्भव हुआ है। अनुवाद के कारण ही हम टॉल्सटॉय के उपन्यासों और शेक्सपियर के नाटकों से परिचित हुए हैं। अनुवाद के माध्यम से कामू, सार्त्र और बैकेट से लेकर पाब्लो नेरूदा और नादीना गार्डिनर तक ही रचनाओं से भारतीय पाठक लाभान्वित हैं।

अनुवाद ने न केवल पाठकीय रूचि को अंतर्राष्ट्रीय आस्वाद प्रदान किया है, बल्कि अध्ययन और अनुसंधानों को नई दिशाएँ भी दी है। अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन हमें अतीत और वर्तमान के विश्व से परिचित करता है। सारे संसार की विभिन्न भाषाओं में विभिन्न विधाओं में रचे जा रहे साहित्य के अध्ययन में संलग्न अध्येताओं के शिक्षण में भी अनुवाद की अप्रतिम भूमिका लक्षित होती है। वास्तविकता तो यह है कि अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन और अध्यापन अनुवाद के बिना सम्भव नहीं है। अनुवाद के कारण ही अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का समग्र स्वरूप किसी भी भाषा में साकार हुआ है। ऐसा विश्व की किसी भी भाषा के साहित्य के संदर्भ में स्वीकार जा सकता है। 'अभिज्ञान शाकुन्तल्' को पढ़कर जर्मन कवि गेटे अनुवाद के कारण ही चमत्कृत हो सके थे। अनुवाद के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आधार पर ही शापेनहावर और टी. एस. इलियट के सामने भारतीय उपनिषदों का संसार उजागर और गतिमयता आई है।

11.8 तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व-

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभाजन और अनास्थ के इस दौर में एकता और सामासिकता की कड़ियों को जोड़ने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन। तुलना की प्रवृत्ति ने मनुष्य के ज्ञान और कौशल को सर्वदा ही हर क्षेत्र में विस्तार दिया है। साहित्य के अध्ययन की तुलनात्मक प्रविधि भी मनुष्य के चिन्तन और सृजन की एक विशिष्ट प्रक्रिया है। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा साहित्य की ऐसी विशेषताओं का उद्घाटन हो जाता है, जो सामान्य अध्ययन द्वारा प्रकाश में नही आ पाता। तुलनात्मक अध्ययन एकाधिक भाषाओं और साहित्यों के परस्पर सम्पर्क को बढ़ाता है। विभिन्न सर्जनात्मक इकाइयों के निकट आने की संभावनाओं को प्रोत्साहित करने के साथ तुलनात्मक अध्ययन विविधता में एकसूत्रता के अंतर्दर्शन को उजागर करता है। दो भाषाओं के साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन करते समय लगातार ऐसा प्रतीत होता है कि भाषाओं के माध्यम से वस्तुत: एक ही सोच, एक ही संस्कृति को दो अभिव्यक्ति- माध्यमों से प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न भाषाओं के आचरण में एक ही वैचारिक धरातल या एक ही जीवन-मूल्य का साक्षात्कार इंगित करता है कि इनके बीच भिन्नता केवल रामायण, भारतेन्दु और वीरेश लिंगम पन्तुलु, हिन्दी और मराठी उपन्यास, दिनकर और इकबाल, फणीश्वरनाथ रेणु और सातीनाथ भादुड़ी हिन्दी और पंजाबी सन्तकाव्य, केशवदास और श्रीनाथ, हिन्दी और कन्नड़ भक्ति आन्दोलन का विस्तार वर्मा और बालमणि अम्मा जैसे न जाने कितनी ही दिशाओं में तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान का विस्तार हुआ है। ऐसे तमाम अध्ययनों से यही प्रमाणित हुआ है कि विभिन्न राज्यों की भाषा-भूमियों पर प्रवाहित होने वाली भावधारा और विचार-सरिता एक ही है । इस निष्कर्ष पर पहुँच पाना अनुवाद के बिना सम्भव नहीं। वास्तविकता तो यह है कि अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन की आधारभूत धुरी हैं। अनुवाद के सहारे ही एक भाषा को जानने वाले अन्य भाषा की साहित्य उपलब्धियों से परिचित होते हैं। अनुवाद की सुविधा न होती तो हिन्दी भाषी लोग शरतचन्द्र तुकाराम, वेमना, अकबर, इलाहाबादी, वसवेश्वर, के.पी.पुटप्पा. ज्योतीन्द्र दये, खांडेकर आदि अनगिनत भारतीय रचनाकारों की सर्जना से अपरिचित ही रह जाते। ठीक यही बात अन्य भारतीय भाषा-भाषिओं की हिन्दी साहित्य सम्बन्धी जानकारी के संदर्भ में कही जा सकती है अनुवाद के प्रसार ने तुलनात्मक अध्ययन को राष्ट्र की सीमा से बाहर निकालकर विश्व फलक तक पहुँचाया है। परिणामत: भारत के कबीर और फ्रांस के रैबले, हिन्दी के प्रेमचंद और रूसी के मैक्सिम गोर्की, अज्ञेय और टी.एस. इलियट, निराला और एजरा पाउंड, जयशंकर प्रसाद और विलियम शेक्सपियर आदि के तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद की सुविधा से व्युत्पन्न अंतर्राष्ट्रीय प्रयास ही है।

तुलनात्मक अनुशीलनों से विभिन्न भाषाभाषियों का यह दंभ और भ्रम भी टूटता है कि उनकी भाषा का साहित्य ही अन्यतम है। समानताओं और विषमताओं का तुलनात्मक विवेचन यही स्थापित करता है कि किसी भी भाषा के साहित्य की खूबियां और खामियां वैचारिक एवं सर्जनात्मक स्तर पर कितनी भास्वर, कितनी सामसिक है। यह सब अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो सका है। अनुवाद के सहारे ही एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की परिकल्पना साकार हुई है। अनुवाद के कारण जो कुछ भी तुलनीय है, वह तुलनात्मक अध्ययन का विषय बन जाता है। अनुवाद की सुविधा से अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान के करण मानव के सीमित ज्ञान क्षेत्र का विस्तार होता है। अनुवाद ने तुलनात्मक अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान को निश्चय ही व्यापक परिपेक्ष्य प्रदान किया है।

11.9 व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

व्यवसाय एवं रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व बहुत ही व्यापक और अपरिहार्य है। व्यापार में जहां वह अंतर्भाषायी क्षेत्र में व्यापार की दृष्टि से अपेक्षित होता है वहीं उद्योग के क्षेत्र में तकनीकी और औद्योगिक जानकारी को प्राप्त करने और उसके उपयोग की दृष्टि से अपेक्षित होता है। किसी उद्योग विशेष से संबंधित नई जानकारी दुनिया की जिस किसी भाषा में उपलब्ध हो उससे जब तक अपनी भाषा में न लाया जाए तब तक उसका औद्योगिक इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। मान लीजिये चीनी उद्योग से संबंधित कोई नई खोज जर्मनी में की जाती है, अब अमेरिका में उसका प्रयोग करने के लिए उसे अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध कराना आवश्यक है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अनुवाद की इस अपरिहार्यता को देखते हुए बड़े औद्योगिक संस्थान तुरंत अनुवाद कराने की व्यवस्था अपने पास रखते हैं। ये संस्थान अपने बनाए माल को विभिन्न देशों तथा प्रदेशों के बाजार में बेचने के लिए जो प्रचार साहित्य तैयार कराते हैं उसको भी कई भाषाओं में अनूदित कराते हैं। यद्यपि आज दुनिया भर में अंग्रेजी भाषा का व्यापक प्रचलन है लेकिन विनिर्माता अपना माल उन लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं जो अंग्रेजीभाषी नहीं है। जो चीजें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए बनाई जाती है उनके प्रचार साहित्य का तो अनुवाद होता ही है। जो विशेष रूप से देश के भीतर व्यापार के लिए होती है उनके प्रचार साहित्य को भी देश की विभिन्न भाषाओं में छापा जाता है। आपने कई बार किसी दवाइयों अथवा अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के साथ उस वस्तु के विषय में जानकारी की पर्ची देखी होगी जिसे पांच-सात भाषाओं में मुद्रित किया गया है। ऐसा विभिन्न भाषा-भाषियों द्वारा उन वस्तुओं के उपयोग को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

पर्यटन को भी आजकल उद्योग का दर्जा मिल गया है। इस क्षेत्र में अनुवाद का अत्यधिक महत्व है। पर्यटन का संबंध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों से होता है। इसमें यात्रा, आवास, मनोरंजन, मार्गदर्शन तथा पर्यटन स्थल संबंधी सूचना, प्रसार आदि शामिल होते हैं। इस क्षेत्र में अनुवाद के लिखित और मौखिक दोनों रूपों की आवश्यकता एवं उपयोगिता रहती है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए परिवहन सुविधाओं में और होटल तथा यात्री निवास आदि पर जो अनुवादकों की आवश्यकता होती है। पर्यटकों के साथ जाने वाले गाइडों को कई भाषाओं में पर्यटन संबंधी जानकारी देनी पड़ती है। इसके साथ ही विशिष्ट पर्यटन स्थलों के बारे में छपी पुस्तिकाओं आदि को भी पर्यटकों की सुविधा के लिए कई भाषाओं में उपलब्ध कराना पड़ता है। रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों, मोटर वाहन स्थलों आदि पर अपेक्षित सूचना नई भाषाओं में प्रकाशित अथवा प्रसारित कराई जाती है ताकि पर्यटकों को असुविधा न हों। वास्तव में पर्यटन ऐसा उद्योग है जो निरंतर अनुवाद के सहारे चलता है।

11.10 प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

स्वतंत्र भारत को प्रशासन व्यवस्था का ढांचा ब्रिटिश राज से मिला है। अंग्रेजों के बनाए नियम कानून आदि सभी अंग्रेजी में थे। साथ ही प्रशासनिक कार्य में लगे अधिकारी-कर्मचारी वर्ग को भी अंग्रेजी में ही काम करने की आदत थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया तो प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता पड़ी। इसके लिए व्यापक स्तर पर व्यवस्था की गई। हिन्दी में शब्दावली निर्माण, अनुवादकों की भर्ती तथा अनुवाद कार्य के प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था की गई। सरकार द्वारा विभिन्न मंत्रालयों, कार्यालयों तथा नियमों से संबंधित कार्यविधि साहित्य का अनुवाद शुरू कराया गया।

हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किए जाने के बावजूद प्रावधान यह है कि अंग्रेजी को सह राजभाषा के रूप में तब तक उपयोग में लाया जा सकता है जब तक कि सभी कार्यालयों के अधिकारी व कर्मचारी हिन्दी नहीं सीख लेते। ऐसी स्थिति में प्रशासनिक स्तर पर द्विभाषिक स्थिति चल रही है। द्विभाषिकता के कारण नए बनने वाले नियम कानून तथा आदेश, परिपत्र, संधि, करार, रिर्पोट आदि द्विभाषिक प्रस्तुत किए जाते हैं। अंग्रेजी में पहले तैयार करके उनका हिन्दी अनुवाद किया जाता है। इस तरह अनुवाद प्रशासनिक क्षेत्र की अनवरत प्रक्रिया बन गया है। हर एक दस्तावेज द्विभाषिक तैयार होना है इसलिए उसका अनुवाद करना अपेक्षित होता है।

सरकारी कार्यालयों के अलावा सार्वजनिक क्षेत्र में प्रतिष्ठानों, निगमों, कंपनियों, बैंकों आदि को भी अपने प्रशासनिक कार्यों में सरकारी भाषा नीति का पालन करना आवश्यक है अत: वहां भी अनुवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती है। केन्द्र और राज्य सरकार के बीच प्रशासनिक कार्यों के लिए भी अनुवाद की जरूरत पड़ती है विशेष रूप से अहिन्दी राज्यों के मामले में।

प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद प्रमुख रूप से अंग्रेजी से हिन्दी में होता है। आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत अनुवाद हिन्दी से अंग्रेजी में भी किया जाता है। इस क्षेत्र में अनुवाद का महत्व यही है कि वर्तमान परिस्थितियों में यह एक अनिवार्यता बना हुआ है।

11.11 जन-संचार माध्यमों में अनुवाद का महत्व

तकनीकी अविष्कारों ने इक्कसवीं शताब्दी के द्वार पर दस्तक दे रहे विश्व को जनसंचार माध्यमों के विलक्षण मायालोक में खड़ा कर दिया है। पत्रकारिता, विज्ञापन, आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र, कम्प्यूटर, दूरभाष, कृत्रिम उपग्रहों और नव्यतम संचार

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तकनीकों ने मनुष्य को सूचनाओं से अधिकाधिक लैस करने के साथ ही संसार की बहुमुखी प्रगति में अपनी नई भूमिका तय की है। जीवन की गति को प्रमाणित करने वाले सबसे जीवंत और कारगर साधन ये संचार माध्यम ही है। विज्ञान, वाणिज्य, उद्योग, शिक्षा, प्रशासन और आर्थिक गतिविधियों में सर्वत्र ही संचार सक्रिय है। देश और काल की दूरियों को समाप्त करते हुए इन संचार माध्यमों ने सम्पूर्ण विश्व को एक दूसरे के निकट पहुंचाने का कार्य किया है।संचार माध्यमों के अंतर्गत दोनों तरह के माध्यम आते हैं प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। संचार माध्यमों की कार्य प्रणाली में अनुवाद का अपरिहार्य महत्व है। दुनिया के कोने-कोने से एकत्र सूचना को पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों तक उनकी भाषा में पहुंचाने में अनुवाद ही माध्यम बनता है। समाचार एजेंसियां कुछ प्रमुख भाषाओं में समाचार प्रस्तुत करती है। अखबार, रेडियो और टेलीविजन उन्हें अपनी जरूरतों के अनुसार भाषांतरित कराते हैं। इन माध्यमों के अपने अनुवाद विभाग होते हैं जो बहुत त्वरित गति से अनुवाद प्रस्तुत करते हैं। समाचारों के अतिरिक्त सुचनाओं, विज्ञापनों, संदेशों आदि के अनुवाद भी प्रस्तुत किए जाते हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में संचार माध्यमों को विभिन्न प्रदेशिक भाषाओं में समाचार तथा महत्वपूर्ण सूचनाओं का अनुवाद कराना पड़ता है। कहना चाहिए कि इन माध्यमों का तंत्र काफी कुछ हद तक अनुवाद पर आश्रित होता है। लिखित अनुवाद के अलावा बहुत से कार्यक्रमों में रूपांतर आशु अनुवाद भी चलता है। उदाहरण के लिए चुनाव के उपरांत परिणाम आते समय दूरदर्शन द्वारा प्रस्तुत चुनाव विश्लेषण में विदेशी मेहमानों के समय उनके स्वागत कार्यक्रम को प्रस्तुत करते समय। इन माध्यमों पर होने वाले अनुवाद की विशेषता यह है कि इसमें स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की भूमिका समय-समय पर बदलती रहती है कभी अंग्रेजी स्रोत भाषा होती है तो कभी लक्ष्य भाषा। कभी-कभी यह अनुवाद एक से अधिक भाषाओं में साथ-साथ प्रस्तुत किया जाता है।

11.12 शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व अपरिहार्य है। हम चर्चा कर चुके हैं कि देश-विदेश के ज्ञान-विज्ञान से परिचय प्राप्त करने के लिए अनुवाद की जरूरत पड़ती है और पड़ती रहेगी। इसके साथ ही विभिन्न देशों और समाजों के प्राचीन ज्ञान-उन भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान जो अब बहुत प्रचलन में नहीं है-तक पहुंचने के लिए अनुवाद वाहक का कार्य करता है। प्राचीन संस्कृति ग्रीक आदि लेखकों की कृतियों को हम अनुवाद के माध्यम से ही पढ़ते हैं।

अनुवाद का महत्व शिक्षा माध्यम की दृष्टि से बहुत व्यापक है विशेष रूप से उन देशों में जहां शिक्षा एक से अधिक भाषाओं के माध्यम से दी जाती है। भारत में विभिन्न प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम है। हिन्दी अंग्रेजी के अलावा उड़िया, बंगला, असमिया, तमिल, तेलुगु आदि के माध्यम में अनुवाद की जरूरत पड़ती है क्योंकि इसके माध्यम से पाठ्य सामग्री का स्तर समानांतर रखा जा सकता है तथा सामग्री जल्दी तैयार की जा सकती है। भाषा शिक्षण में भी अनुवाद विशेष महत्व रखता है। जो भाषा छात्र को सीखनी है उसे छात्र की अपनी मातृभाषा के साथ तुलनात्मक रूप में रखते हुए दोनों भाषाओं के बीच अनुवाद कराया जाता है। इस प्रक्रिया में छात्र भाषा के नियमों को भली भांति सीख लेता है और धीरे-धीरे उस भाषा को स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल करने में लगता है। अधिक प्रयास के बाद स्थिति यह आती है कि छात्र दूसरी भाषा को भी मातृभाषा के समान बोलने और लिखने लगता है।

बोध प्रश्न-2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 पंक्तियों में दीजिए।

1. तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद का महत्व बताइए-

.....

.....

.....

2. व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालिए-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

.....

.....

.....

3. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए–

.....

.....

.....

4. जनसंचार माध्यमों में अनुवाद के महत्व को रेखांकित कीजिए–

.....

.....

.....

5. शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका बताइए–

.....

.....

.....

11.13 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि अनुवाद क्यों किया जाता है और इसका क्या महत्व है। अनुवाद के महत्व के विषय में जानकारी हासिल करते हुए अब आप जान गए हैं कि अनुवाद मात्र एक साहित्यिक कार्य नहीं है अपितु उसकी पहचान जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिय साधन के रूप में उभरी है। प्रशासन, चिकित्सा, कला, संस्कृति, विज्ञान, प्रतिरक्षा, विधि, प्रौद्योगिकी, तकनीकी अनुसंधान, व्यवसाय, पत्रकारिता, जनसंचार आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के बिना कुछ नहीं हो सकता। भारत जैसे बहुभाषी और विविधताओं से भरे देश में राष्ट्रीय एकता के सूत्रों को समेटने में भी अनुवाद की अपनी विशिष्ट भूमिका है। भारत की सामसिक संस्कृति के अवगाहन में भी अनुवाद कारगर है। भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन–अध्यापन में अनुवाद की उपादेयता संदिग्ध है। इसी तरह, साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान की विभिन्न दिशाएं अनुवाद से ही नियंत्रित होती हैं। क्रमशः अनुवाद एक स्वतंत्र व्यवसाय एवं आजीविका का साधन बन गया है। ज्ञान–विज्ञान, औद्योगिक लोकप्रिय बनाया है। अंतरिक्ष में घूमते कृत्रिम उपग्रहों से लेकर समूची धरती पर फैले अनेकानेक संचार माध्यमों तक अनुवाद का कमाल फैला हुआ है। बहुभाषी देश भारत में बहुभाषी शिक्षा प्रणाली की संभावनाओं के साथ भी अनुवाद का गहरा रिश्ता है। इन सबने मिलकर अनुवाद की विश्वव्यापी, उपादेयता, प्रासंगिकता और भविष्य को रेखांकित किया है। अनुवाद में पांडित्य की अनावश्यक चमक के लिए बहुत अधिक गुंजाइश नहीं होती, लेकिन अनुवाद के बहुआयामी चरित्र और संकल्प के बारे में कोई संदेह नहीं। जीवन की हर दशा में अनुवाद की प्रासंगिकता प्रमाणित हो चुकी है। आने वाले दिनों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फलक पर अनुवाद का महत्व उत्तरोत्तर विस्तृत होगा। अनुवाद की आवश्यकता है और भविष्य की अपरिहार्यता के रूप में अनुवाद की संभावनाएं असीम है।

11.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई – 12 अनुवाद के गुण

संरचना

12.0 प्रस्तावना

12.1 उद्देश्य

12.2 उपयुक्त पयार्य–चयन की समस्या

12.3 क्रिया–विशेषण तथा विशेषण शब्दों के अनुवाद

12.4 क्रिया–पद का अनुवाद

12.5 कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य

12.6 प्रत्यक्ष और परोक्ष कथन

12.7 मिश्र वाक्यों का अनुवाद

12.8 मुहावरे और कहावतें

12.9 सफल अनुवाद की पहचान

12.10 सारांश

12.0 प्रस्तावना

इस इकाई को पढ़कर आप सफल अनुवाद के गुणों के लक्षण जान सकेंगे। कथ्य में तथ्य तथा विचार की प्रधानता और कथन प्रक्रिया में भाषा–शैली की ऋजुता के कारण ज्ञान के साहित्य का अनुवाद, ललित साहित्य के अनुवाद की अपेक्षा सरल होता है। फिर भी ज्ञान के साहित्य अथवा सामान्य वाङ्मय का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने पर अनेक प्रकार की समस्याएं सामने आती हैं। उनका संक्षेप में उल्लेख और समाधान इस पाठ में देने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही सफल अनुवाद के गुणों के बारे में पर्याप्त जानकारी हासिल करने की कोशिश भी है।

12.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद छात्र

अनुवाद में उपयुक्त पर्याय चयन कर सकेंगे।

सफल अनुवाद के गुणों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

12.2 उपयुक्त पर्याय–चयन की समस्या

अनुवादक जब अपने कार्य में प्रवृत्त होता है तो उसके सामने सबसे पहले उपयुक्त पर्याय के चयन की समस्या आती है। शब्दों को मोटे तौर पर दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। एक, सामान्य शब्द और दूसरे परिभाषिक शब्द। अंग्रेजी के सामान्य शब्दों के प्रामाणिक पर्याय फा. कामिल बुल्के तथा डॉ. हरदेव बाहरी आदि के द्विभाषिक कोशों में आसानी से मिल जाते हैं। अनुवादक के सामने प्रश्न आता है कि उनमें से किसका चयन करे। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का कर सीधा सा शब्द है फाइन (Fine) इसके अनेक अर्थ हैं, सुंदर, अच्छा, उत्तम, सुसंस्कृत, सूक्ष्म, बारीक आदि। व्यक्ति का विशेषण होने पर फाइन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

के लिए उपयुक्त पर्याय होगा, अच्छा या सुसंस्कृत। ''ही इज ए फाईन मैन''- वह अच्छा आदमी है या सुसंस्कृत पुरूष है। भाषण आदि के संदर्भ में सही पर्याय होगा सुंदर : It was a fine speech. कपड़े के लिए प्रयुक्त होने पर बारीक पर्याय ही ग्राह्य हो सकता है। ये तीनों पर्याय अर्थ की दृष्टि से प्राय: संबद्ध है। किंतु 'फाइन' का एक अर्थ होता है जुर्माना। भाषा वैज्ञानिक जानता है कि इस अर्थ में फाइन शब्द एक धातु से उत्पन्न हुआ है। किंतु सामान्य प्रयोक्ता न इस तथ्य को जानता है और न उसे इसकी आवश्यकता है। ''ही हैज टु पे ए फाइन फॉर कमिंग लेट' (He has to pay a fine for coming late) - देर से आने की वजह से उसे जुर्माना देना पड़ेगा।

अपेक्षाकृत कठिन शब्दों के संदर्भ में अनुवादक को सूक्ष्म दृष्टि से विचार करना पड़ता है। अंग्रेजी का एक शब्द है ''एक्सप्लायट'' (Exploit)। इसका प्रचलित अर्थ है शोषण (करना)। ''दी रिच हैव आलवेज एक्सप्लायटेड दी पुअर'' - अमीर लोगों ने सदा गरीबों का शोषण किया है। लेकिन ''एक्सप्लायट'' का एक अन्य अच्छे अर्थ में भी प्रयोग होता है। ''वी शुड एक्सप्लायट ऑल ऑवर रिसोर्सेज'' - हमें अपने सभी संसाधनों का पूरा-पूरा उपयोग करना चाहिए। वास्तव में यह दूसरा अर्थ पहले अर्थ का ही विस्तार या लाक्षणिक प्रयोग है। शोषण का मूल अर्थ है पूरी तरह निचोड़कर सुखा देना। पहले संदर्भ में इसका बुरे अर्थ में प्रयोग किया गया है और दूसरे में अच्छे अर्थ में। किंतु दोनों में पूरी तरह या नि:शेष रूप से कार्य करने की अवधारणा निहित है। पारिभाषिक शब्द सूक्ष्म छायाभेद के कारण अपेक्षाकृत कठिन होते हैं। आज से लगभग 50 वर्ष पहले अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय निश्चित करने का कोई विशेष प्रयास नहीं हुआ। इसलिए एक ही शब्द के विभिन्न पर्यायों का मुक्त प्रयोग हो रहा था। आधुनिक युग में राज्यतंत्र का अत्यंत प्रसिद्ध शब्द रहा है 'डेमोक्रेसी'। स्वतंत्रता से पूर्व इसके लिए हिंदी में एक साथ अनेक शब्दों का प्रयोग हो रहा था : जनतंत्र, प्रजातंत्र तथा लोकतंत्र। यहाँ तक तो कोई विशेष बाधा नहीं थी लेकिन कभी-कभी दोनों की मूलवर्ती अवधारणा की उपेक्षा ही चिंत्य था। केंद्र सरकार द्वारा स्थापित वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने डेमोक्रेसी के लिए लोकतंत्र पर्याय स्थिर कर दिया है, फिर भी जनतंत्र तथा प्रजातंत्र शब्द भी बराबर चल रहे हैं और इसमें कोई बड़ी आपत्ति भी नहीं। लेकिन रिपब्लिक के लिए गणतंत्र पर्याय प्रयोग ही मान्य है।

इसी प्रकार का एक शब्द 'स्टेट' जो सामान्य भी है, पारिभाषिक भी। सामान्य अर्थ में, यह संज्ञा रूप में स्थिति का वाचक है और क्रिया रूप में इसका अर्थ होता है कहना, वर्णन करना या बयान करना। पारिभाषिक रूप में स्टेट का अर्थ है राज्य, शासन, सरकार। स्वतंत्रतापूर्व भारत प्रांतों में विभक्त था और 1947 के बाद भी कई वर्षों तक यह व्यवस्था चलती रही, किंतु भाषा के आधार पर जब देश को विभिन्न इकाइयों में बाँटा गया तो (प्रांत) के स्थान पर स्टेट शब्द का प्रयोग होने लगा जिसका पर्याय हुआ 'राज्य'। सामान्यत: अब राज्य का ही प्रयोग हो रहा है, लेकिन संदर्भ के अनुसार कभी-कभी शासन या सरकार शब्द के प्रयोग में भी किसी प्रकार की बाधा नहीं होती।

उपर्युक्त विवेचन का निष्कर्ष यह है कि पर्याय-निर्धारण का प्रमुख और मौलिक आधार है संदर्भ। संदर्भ के द्वारा ही शुद्ध और उपयुक्त पर्याय का निर्णय संभव होता है। पर्याय निर्धारण का दूसरा आधार है अनुवाद भाषा की प्रकृति और प्रायोगिक स्तर।

हिंदी की अपनी प्रकृति है। यद्यपि आधुनिक हिंदी की गद्य-शैली पर अंग्रेजी का स्पष्ट प्रभाव रहा है फिर भी उसके वाक्य-विन्यास, शब्द-योजना, वर्ण-मैत्री आदि का पृथक वैशिष्ट्य है। संस्कृत और अंग्रेजी से भिन्न इसका अपना मुहावरा है जो उसके स्वरूप को रेखांकित करता है। इसलिए अंग्रेजी के वाक्यांशों, मुहावरों और पर्यायों को भी उसकी इसी प्रकृति के अनुरूप ढालना आवश्यक होता है। प्रायोगिक स्तर से अभिप्राय है भाषिक संरचना या शैली का स्तर। यदि विषय के अनुरूप शैली शास्त्रीय है तो संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग ही वांछित होता है। किंतु यदि उसका विषय सामान्य जीवन-व्यवहार से संबद्ध है तो आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग ही अधिक उपयुक्त है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के लॉ (law) जज (judge) तथा कोर्ट (court) शब्दों के हिंदी में विधि (कानून, जज), (न्यायाधीश, अदालत) न्यायालय आदि पर्यायों का प्रयोग मुक्त

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

रूप से होता है। इनमें से कौन सा पर्याय अधिक उपयुक्त है, इसका निर्णय भाषिक रचना के स्तर के आधार पर ही करना होगा। सामान्य व्यवहार तथा समाचार-पत्र आदि से कानून, जज, अदालत शब्दों का प्रयोग अधिक संगत है, किंतु संस्कृतनिष्ठ शैली युक्त विधि-शास्त्र आदि गंभीर विषयों के अनुवादों में विधि, न्यायाधीश आदि पर्याय ही ग्राह्य हो सकते हैं।

12.3 क्रिया-विशेषण तथा विशेषण शब्दों के अनुवाद

विशेषण प्राय: दो प्रकार के होते हैं- भावात्मक और अभावात्मक। अंग्रेजी में अभावात्मक विशेषणों का निर्माण सामान्यत: 'अन' (un) 'इन' (in) उपसर्गों के योग से होता है। हिंदी में भी संस्कृत के प्रभाव से ''अ'' और ''अन्'' उपसर्ग यही कार्य सिद्ध करते हैं। ''फेअर'' (fair) उचित, ''अन्फेअर'' (unfair) अनुचित, कंप्लीट (complete) पूर्ण, इनकंपलिट (incomplete) अपूर्ण। कुछ अंग्रेजी प्रयोगों के शाब्दिक हिंदी अनुवाद भी चल पड़े हैं जैसे not very far का अनतिदूर या not very different का अनतिमिल या नातिमिल। किंतु इस प्रकार के प्रयोग करना सामान्य: उचित नहीं है। इनकी संगति केवल अत्यधिक समास शैली के साथ ही बैठ सकती है। अंग्रेजी के अनेक शब्दों का प्रयोग अच्छे-बुरे दोनों अर्थों में होता है। उदाहरण के लिए, फैन्टास्टिक (fantastic) शब्द लिया जा सकता है। अगर इस शब्द का प्रयोग किसी की प्रशंसा में किया जाए तो सही पर्याय होगा अद्भुत और यदि तिरस्कार के लिए किया जाए तो सही पर्याय होगा अनर्गल, बेहूदा, बेतुका आदि। इसका निर्णय संदर्भ के अनुसार ही हो सकता है।

लोक-प्रयोग में अंग्रेजी के कुछ क्रिया-विशेषणों का प्रयोग प्राय: असाधारण लाक्षणिक अर्थ में किया जा सकता है : टेरिबली अपसेट (terribly upset) का अनुवाद ''बेहद परेशान'', ''अत्यधिक व्यग्र'' हो सकता है- ''भयानक रूप से परेशान'' नहीं। जबकि विशेषण रूप से ''टेरिबल'' का पर्याय भयानक सर्वथा संगत होगा जैसे 'ही इज ए टेरिबल फैलो' (He is a terrible fellow) वह भयानक आदमी है।

अंग्रेजी के कुछ विशेषणों के शाब्दिक अनुवाद व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध होने पर भी पूर्व-प्रचलित अर्थ से भिन्न या विपरीत अर्थ के वाचक हो जाते हैं। 'रेलवेन्ट' (relevant) इसी प्रकार का शब्द है। इसका शाब्दिक अनुवाद ''प्रासंगिक'' हिंदी में प्रयुक्त होने लगा है। व्याकरण की दृष्टि से इसका आधिकारिक के विपरीत प्रासंगिक अर्थ ही मान्य रहा है- आधिकारिक कथावस्तु, प्रासंगिक कथावस्तु : यहाँ प्रासंगिक का अर्थ है प्रसंगति। अत: ''रेलेवेन्ट'' का अधिक उपयुक्त अनुवाद सार्थक ही हो सकता है लेकिन अब ''प्रासंगिक'' ही प्रचलित हो गया है। इसलिए उसका बहिष्कार नहीं किया जा सकता क्योंकि व्याकरण की अपेक्षा लोक-प्रयोग की शक्ति अधिक है।

12.4 क्रिया-पद का अनुवाद

क्रिया-पद वाक्य का मूल आधार होता है। अंग्रेजी के अनेक क्रिया-पद ऐसे हैं जिनका यथातथ्य अनुवाद करना हिंदी में कठिन हो जाता है। अंग्रेजी के दो शब्द प्राय: समानार्थ हैं टेल् (tell) और से (say) किंतु उनकी अर्थच्छाया में सूक्ष्म अंतर है। टेल (tell) में व्यक्तिगत रूप से कहने की व्यंजना है और से (say) में सामान्य रूप से कहने की। ही टोल्ड मी (He told me) का सही अनुवाद है उसने मुझे बताया जबकि ही सेड टु मी (He said to me) का अनुवाद है उसने मुझसे कहा। अंग्रेजी के कई क्रिया पद ऐसे हैं जिनके लिए किसी निश्चित हिंदी पर्याय का प्रयोग प्राय: नहीं हो सकता - जैसे ऐसर्ट (assert) और रिमार्क (remark)। ऐसर्ट (assert) के लिए कहीं ''जोर देकर कहना'' और कहीं ''आग्रह पूर्वक कहना'' पदावली का प्रयोग किया जाता है। रिमार्क (remark) के लिए शब्दावली आयोग ने ''अभ्युक्ति'' पर्याय का निर्माण किया है, लेकिन क्रिया-पद के रूप से संदर्भ के अनुसार कहीं प्रतिक्रिया व्यक्त करना और ''कहीं प्रत्युत्तर देना'' जैसी शब्दावली का प्रयोग करना

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

आवश्यक होता है।

12.5 कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के अनुवाद को काफी सावधानी बरतनी होती है। कर्मवाच्य का जिस तरह अंग्रेजी और संस्कृत में मुक्त प्रयोग होता है, उस तरह हिंदी में नहीं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :

1. आई हैव बीन अप्सेट (I have been upset) का शाब्दिक अनुवाद है ''मुझे परेशान कर दिया गया है'', लेकिन सही अनुवाद है – ''मैं पेरशान हो गया हूँ''।

2. दी ट्रेन हैज बीन डिलेड (The train has been delayed) का सही अनुवाद है ''रेलगाड़ी देर से आ रही है'' न कि रेलगाड़ी देर कर दी गई है।

आई एम ओबलाइज्ड (I am obliged)

''मैं आभारी हूँ'', न कि – मैं आभारी कर दिया गया हूँ।

हिंदी की इसी प्रकृति की उपेक्षा करने के कारण आकाशवाणी और दूरदर्शन से हैवबीन किल्ड (Have been Killed) का बराबर गलत अनुवाद होता रहता है।

Ten persons were killed in the riot. का अनुवाद किया जाता है – ''दंगों में दस व्यक्ति मारे गए'' यह तो ठीक है। लेकिन–

Ten persons were killed in the train accident. का भी जब यही अनुवाद किया जाता है कि रेल दुर्घटना में दस व्यक्ति मारे गए, तो यह हिंदी की प्रकृति के प्रतिकूल होने से गलत है। सकर्मक क्रिया में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कर्त्ता का होना अनिवार्य है : दंगों में तो प्रयत्क्ष अथवा परोक्ष रूप से कर्त्ता की स्थिति अनिवार्य है, किंतु दुर्घटना घटित होती है चाहे उसके मूल में किसी कर्त्ता का हाथ ही क्यों न हो। इसलिए उसके संदर्भ में अकर्मक क्रिया 'करना' का प्रयोग ही उचित है।

12.6 प्रत्यक्ष और परोक्ष कथन

अंग्रेजी में प्रत्यक्ष और परोक्ष कथन के विषय में निश्चित नियम है। प्रत्यक्ष कथन का परोक्ष कथन में परिवर्तन करने पर प्रधान वाक्य के कर्त्ता कर्म के पुरुष रूप और क्रिया पद के रूप के अनुवाद उपवाक्य के कर्त्ता का पुरुष रूप और क्रिया पद का कालिक रूप परिवर्तित हो जाता है। उदाहरण के लिए– प्रत्यक्ष कथन "He said to me, You are late" परोक्ष कथन में इस वाक्य का रूप हो जाएगा "He told me that I was late" इसका यथावत हिंदी अनुवाद होगा : ''उसने मुझे बताया कि मैं देर से आया था''। इस वाक्य को पढ़ कर हिंदी के पाठक हो यह भ्रांति हो सकती है कि वक्ता पहले किसी समय देर से आया था, जबकि देर से तो संबंधित व्यक्ति आया है। इसलिए मूल अंग्रेजी वाक्य का सही अनुवाद होना चाहिए : ''उसने मुझसे कहा कि तुम देर से आए हो''। अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार उपवाक्य का मध्यम पुरुष यू (तुम) प्रधान उपवाक्य के कर्म के अनुसार प्रथम पुरुष में और वर्तमान कालिक क्रियापद भूतकालिक (था) में परिवर्तित हो गया है। हिंदी में इस प्रकार का पुरुष या काल का परिवर्तन सर्वथा भ्रामक हो जाएगा।

कहने का अभिप्राय यह है कि हिंदी में प्रत्यक्ष कथन और परोक्ष कथन की विभाजक रेखा सर्वथा निश्चित नहीं है। प्राय: ''कि'' जोड़ देने से अर्थ सिद्ध हो जाता है। फिर भी कभी–कभी इस प्रकार के अनुवाद में कुछ कठिनाई सामने आ जाती

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

है। जैसे, ही टोल्ड मी दैट यू आर लेट इन द मीटिंग (He told me that you are late in the meeting) – इस वाक्य का अनुवाद हिंदी में यही होगा – उसने मुझसे कहा कि आप बैठक में देर से आएँगे। यहाँ माध्यम पुरुष यू संबोधित व्यक्ति न होकर एक तीसरा व्यक्ति है जिससे संबोधित व्यक्ति बात कर रहा है। ऐसे प्रसंगों में अनुवादक को संदर्भ के अनुसार विवेक से काम लेना चाहिए।

12.7 मिश्र वाक्यों का अनुवाद

मिश्र वाक्य के अनुवाद की समस्या थोड़ी जटिल है। अंग्रेजी में क्रिया-पद का प्रयोग कर्म से पहले हो जाता है। इसलिए कर्म से संबद्ध विशेषण, क्रिया विशेषण आदि उपवाक्यों की दोहरी- कभी-कभी तीसरी श्रृंशला आसानी से प्रधान वाक्य के साथ जुड़ जाती है। This manuscript was discovered by Prof. Kuppooswami, who was a well known scholar of Sanskrit in the Tanjaur liberary, which had the largest collection of Sanskrit works.

इस वाक्य का यथावत अनुवाद होगा : इस पांड़लिपि की प्रो. कुप्पूस्वामी ने जो संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान थे, तन्जौर लाइब्रेरी में जहाँ उस समय संस्कृत ग्रंथों का सबसे बड़ा भंडार था, खोज की थी।

जाहिर है कि यह वाक्य न केवल उलझा हुआ है बल्कि हिंदी की प्रकृति की प्रतिकूल भी है क्योंकि हिंदी में क्रियापद के पहले कर्म का प्रयोग हो जाने से इस प्रकार की श्रृंखला नहीं बनती। उपर्युक्त वाक्य का स्वच्छ अनुवाद होगा : इस पांडुलिपि की खोज प्रो. कुप्पूस्वामी ने तंजौर लाइब्रेरी में की थी। प्रो. कुप्पूस्वामी संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान थे और तन्जौर लाइब्रेरी में उस समय संस्कृत ग्रंथों का सबसे बड़ा भंडार था।

12.8 मुहावरे और कहावतें

मुहावरे और कहावतें प्रत्येक भाषा के अपने अभिन्न अंग होते हैं, जिनका अनुवाद प्राय: नहीं हो सकता। उर्दू भाषा के 'साहबे कलाम' इस तथ्य पर अत्यधिक बल देते हुए मुहावरे के अनुवाद या रूपांतरण के प्रयास को सर्वथा अनर्गल मानते हैं। उर्दू के प्रसिद्ध शायर फिराक गोरखपुरी ने मैथिलीशरण गुप्त के 'कटि टूट गई' जैसे प्रयोगों का उपहास करते हुए लिखा है कि सही मुहावरा 'कमर टूटना है'। ''कमर'' का कोई भी पर्याय इसमें नहीं बैठ सकता। इसमें संदेह नहीं कि यह तर्क काफी हद तक संगत है, फिर भी मुहावरों के अनुवाद जाने अनजाने होते रहते हैं। पंत जैसे भाषा मर्मज्ञ कवि ने और छायावाद के अन्य कवियों ने भी अंग्रेजी के अनेक मुहावरों के अत्यंत सार्थक अनुवाद किए हैं जो हिंदी में प्रचलित हो गए हैं। ''कर्षक का उद्धार पुण्य इच्छा है केवल'' : (पंत) यहाँ 'पुण्य' इच्छा पासय विश (pious wish) का ही शाब्दिक अनुवाद है जिसकी संगति भाषा की प्रकृति के साथ सहज ही बैठ जाती है। Golden age स्वर्ण युग : Bright future उज्जवल भविष्य, Golden past स्वर्णिम अतीत – आदि इसी प्रकार के मुहावरे हैं जिनके शब्दानुवाद हिंदी के अंग बन गए हैं। किंतु ऐसे उदाहरण प्राय: कम ही मिलते हैं और समर्थ लेखकों के आर्ष प्रयोग होने के कारण ही प्रचलित हो गए हैं। नियमत: मुहावरे का शब्दानुवाद न देकर लक्ष्यभाषा में प्रचलित समानांतर मुहावरा ही देना चाहिए।

अंग्रेजी का एक सामान्य प्रयोग है – अप्सेट (upset) जो लक्षणा के आश्रित होने के कारण अनेकार्थक मुहावरों का रूप धारण कर लेता है। I am upset का अनुवाद होगा – मैं परेशान हूँ और My programme is upset का अनुवाद होगा मेरा कार्यक्रम अस्तव्यस्त या गड़बड़ हो गया है। To feel at home, to feel out to sorts, To sail in troubled waters जैसे अंग्रेजी मुहावरों के वाच्यार्थ ही देना अधिक संगत होता है। टु फील ऐट होम का सीधा अनुवाद होगा सहजता का अनुभव करना या किसी प्रकार की कठिनाई अनुभव न करना। इसी प्रकार 'टू फील आउट ऑफ सार्टस्' का सीधा अनुवाद है 'तबियत

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अच्छी न होना' या 'तबियत नाराज होना' और टु सेल इन ट्रबल्ड वाटर्स का भाषांतर होगा विषम 'परिस्थितियों में कार्य करना'। अंग्रेजी के कई एक मुहावरों के समानांतर मुहावरे हिंदी में भी प्रचलित हैं। To put the cart before the horse के वजन का आम बोलचाल में मुहावरा है 'ब्याह पीछे सगाई'। लेकिन इस प्रकार के मुहावरे की संगति शिष्ट भाषा के साथ नहीं बैठ सकती, जबकि अंग्रेजी के मुहावरे के विषय में इस प्रकार की कोई बाधा नहीं है।

कहावत के अनुवाद के विषय में भी यही नियम है। उसका शाब्दिक अनुवाद प्राय: ठीक नहीं रहता। कहावत का भी समानांतर हिंदी रूप ही दिया जा सकता है। लेकिन यहाँ भी भाषिक स्तर का ध्यान रखना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, A bad worksman quarrels with his tolls. की समानांतर कहावत है ''नाच न जाने आँगन टेढ़ा'' लेकिन यह प्रयोग भी शिष्ट भाषा के उपयुक्त नहीं है। अत: उक्त कहावत का अर्थ देना ही संगत होगा ''अनाड़ी आदमी अपना दोष दूसरे के मत्थे मढ़ देता है''। यहाँ हिंदी की समानार्थक कहावत की बजाय शब्दानुवाद दे देना भी बुरा नहीं होगा- अनाड़ी कारीगर अपने औजारों को दोष देने लगता है।

कहने का अभिप्राय यह है कि मुहावरों और कहावतों का अनुवाद करने के सामान्यत: तीन नियम हैं :

1. सही अर्थ का संप्रेषण करने वाले समानांतर मुहावरे या कहावत का प्रयोग किया जा सकता है। किंतु यदि समानांतर मुहावरा या कहावत शिष्ट भाषा में प्रयोग करने योग्य नहीं है तो उसके स्थान पर ऐसी व्याख्यात्मक शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए जो मूल के सर्वाधिक निकट हो।
2. समानांतर मुहावरा या कहावत न मिलने पर हिंदी की प्रकृति के अनुसार उसकी व्याख्या प्रस्तुत करना ही उपयुक्त होता है।
3. यदि अंग्रेजी के मुहावरों का हिंदी में शब्दानुवाद प्रचलित हो गया है, जतो उसका मुक्त भाव से प्रयोग किया जा सकता है।

12.9 सफल अनुवाद की पहचान

सफल अनुवाद की सबसे पहली और अनिवार्य शर्त यह हौ कि उसमें मूल पाठ का यथार्थ बोध कराने की अर्थात् उसका सही-सही अर्थ व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए। यदि अनुवाद में अभिप्रेत अर्थ के विषय में किसी प्रकार की भाँति, विचलन या संदेह की संभावना रहती है, तो उसके अन्य सभी गुण निरर्थक हो जाते हैं। अनुवाद पढ़नेवाला हिंदी के माध्यम से मूल पाठ के अर्थ को यथावत ग्रहण करना चाहता है और इसमें यदि किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न हो जाती है तो अनुवाद का उद्देश्य ही विफल हो जाता है। अर्थ की शुद्धता के साथ-साथ भाषा की शुद्धता भी अनिवार्य है। अनुवाद की भाषा हिंदी की प्रकृति के अनुकूल और उसकी शब्द-योजना, वाक्य-रचना आदि व्याकरण सम्मत होनी चाहिए। इस प्रकार शब्द-शुद्धि और अर्थ-शुद्धि सफल अनुवाद की पहली आवश्यकता है।

दूसरा गुण है स्पष्टता। स्पष्टता से अभिप्राय है यह है कि अनुवाद की भाषा पारदर्शी होनी चाहिए जिससे पाठक को अर्थ-ग्रहण करने में कठिनाई न हो। पारिभाषिक शब्दों का अर्थबोध सहज नहीं होता और उसके प्रयोग से हिंदी अनुवाद भी सामन्यत: बोधगम्य नहीं हो पाता किंतु यह कठिनाई तो अंग्रेजी के विषय में भी है- पारिभाषिक शब्दों का अर्थ तो अंग्रेजी के पाठक को भी सहज-सुलभ नहीं होता।

सफल अनुवाद का तीसरा गुण है भाषिक स्वच्छता। भाषिक स्वच्छता का अर्थ यह है कि वाक्य-रचना में उलझाव,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

निबिड़ता तथा दूरान्वय दोष नहीं होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य अपने आप में पूर्ण तथा दूसरे वाक्य के साथ सहज रूप से संबद्ध होना चाहिए। लंबे वाक्य अंग्रेजी में भी वांछनीय नहीं होते, हिंदी की प्रकृति के साथ तो उनकी संगति और भी नहीं बैठती।

अनुवाद की भाषा सुवाच्य और प्रवाहमयी होनी चाहिए। सुवाच्यता और प्रवाह उत्तम भाषाके गुण तो हैं ही, अनुवाद की भाषा के लिए ये और भी आवश्यक हैं क्योंकि इनके बिना भाषा का रूप ही नहीं बनता।

सफल अनुवाद का अंतिम और विशिष्ट गुण यह है कि उसमें अनुवाद की गंध नहीं होनी चाहिए। इस कथन में कुछ विरोधाभास-सा प्रतीत होता है, किंतु उत्तम अनुवाद का यही गुण है। सिद्ध अनुवादक स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषओं पर अधिकार और निरंतर अभ्यास के बल पर इस गुण का यथक्रम विकास कर लेता है। उसके अनुवाद को पढ़कर पाठक को ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वह किसी अन्य पाठ का अनुवाद पढ़ रहा है।

12.10 सरांश

इस इकाई में आपने पढ़ा है कि-

साहित्य के दो भेद हैं- ज्ञान का साहित्य और ललित साहित्य। ज्ञान के साहित्य का अनुवाद अपेक्षाकृत सरल होता है।

अनुवादक के लिए चार विशेषताएँ अपेक्षित हैं - मूल भाषा अंग्रेजी का सम्यक ज्ञान, अनुवाद-भाषा हिंदी पर अधिकार, विषय का स्पष्ट ज्ञान, और अभ्यास।

अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद के साधन-उपकरण हैं- (1) मानक अंग्रेजी कोष-बेब्सटर, रेंडम हाउस आदि, (2) अंग्रेजी-हिंदी कोष - कामिल बुल्के, डॉ. बाहरी आदि द्वारा संपादित, (3) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित शब्दावली अंग्रेजी तथा हिंदी में उपलब्ध पारिभाषिक कोष।

अनुवाद-कार्य की प्रमुख समस्याएँ हैं- उपयुक्त पर्याय चयन, कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य का अनुवाद, मिश्र वाक्य का अनुवाद तथा मुहावरा-कहावत का अनुवाद।

सफल अनुवाद की पहचान के आधार गुण हैं - शुद्धता अर्थात् अर्थ तथा भाषा की शुद्धता , भाषिक स्वच्छता, प्रवाह और सुवाच्यता तथा अनुवाद की गंध से यथासंभव मुक्त होना।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई – 13 पाठ की अवधारणा और प्रकृति

संरचना

13.0 प्रस्तावना

13.1 उद्देश्य

13.2 अनुवाद के प्रकारों के वर्गीकरण के आधार

13.2.1 माध्यम के आधार पर

13.2.2 प्रक्रिया के आधार पर

13.2.3 पाठ के आधार पर

13.3 अनुवाद प्रकारों पर विस्तृत चर्चा

13.3.1 आशु अनुवाद

13.3.2 पूर्ण अनुवाद

13.3.3 आंशिक अनुवाद

13.3.4 शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद

13.3.5 शाब्दिक अनुवाद

13.3.6 भावानुवाद

13.3.7 छायानुवाद

13.4 सारांश

13.0 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप अनुवाद की प्रक्रिया के बारे में पढ़ चुके हैं। प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद के प्रकारों की चर्चा करेंगे। जब कभी अनुवाद सिद्धांत की चर्चा की जाएगी अनुवाद प्रकार उसी के अंग बनकर सामने आएँगे और हमें उनका भी अध्ययन करना होगा। कारण यह है कि अनूदित पाठों तथा अनुवाद प्रणाली में जो विविधता दिखाई देती है एक हद तक अलग-अलग प्रकार के अनुवादों के ही कारण होती है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो कह सकते हैं कि अनुवाद के प्रकार वास्तव में एक ओर तो अनुवाद प्रणालियों के प्रकार कहे जा सकते हैं तो दूसरी अनूदित पाठों के।

पिछली इकाइयों में आपको यह विस्तार से बताया जा चुका है कि अनुवाद एक प्रायोगिक विद्या है। किसी भी प्रायोगिक विद्या में प्राय: प्रयोग, प्रयोजन आदि सम्मिलित रहते हैं। इसी आधार पर अनुवाद भी अनेक प्रकार के हो जाते हैं। प्रस्तुत इकाई में आप अनुवाद के विभिन्न प्रकारों, उनके वर्गीकरण के आधारों तथा उनके परस्पर अंतरों का विस्तार से अध्ययन करने जा रहे हैं।

13.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद छात्र

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

अनुवाद के प्रकार किन आधारों पर किए जाने हैं, समझ सकेंगे।

अनुवाद के विभिन्न भेद-प्रभेदों के अंतर को स्पष्ट कर सकेंगे।

अनुवाद के प्रकारों के आधार पर अनुवाद की प्रकृति को स्पष्ट कर सकेंगे।

अनुवाद प्रक्रिया की प्रकृति तथा अनुवाद प्रकारों के संबंध को समझ सकेंगे।

13.2 अनुवाद के प्रकारों के वर्गीकरण के आधार

अनुवाद के प्रकारों का विभाजन मुख्यत: तीन आधारों पर किया जाता है-

1. माध्यम
2. प्रक्रिया, तथा
3. पाठ

इन तीनों के ही आधार पर अनुवाद के विभिन्न भेद-प्रभेद सामने आते हैं। आइए इनके विषय में जानकारी प्राप्त करें।

13.2.1 माध्यम के आधार पर - अनुवाद का 'माध्यम' क्या है इस आधार पर अनुवाद के अनेक भेद-प्रभेद हो जाते हैं। अनुवाद के स्वरूप की चर्चा करते समय यह स्पष्ट किया गया था कि 'अनुवाद' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे व्यापक तथा सीमित दोनों ही संदर्भों में देखा जा सकता है। व्यापक संदर्भ में अनुवाद को ''प्रतीक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में'' देखा जाता है और यह माना जाता है कि कथ्य का प्रतीकान्तरण ही अनुवाद है तथा सीमित संदर्भों में अनुवाद को भाषा सिद्धांत के संदर्भ में देखा जाता है और यह माना जाता है कि अनुवाद कथ्य का भाषान्तरण है। इन दोनों ही आधारों पर अनुवाद के अलग-अलग भेद हो जाते हैं। वस्तुत: इन दोनों का आधार इस बात को लेकर है कि अनुवाद में किस माध्यम पर बल दिया गया है। ''लेखन'' भी माध्यम का ही एक भेद है और अनुवाद में लेखन को भी आधार बनाया जाता है। कहने का तात्पर्य यही है कि माध्यम के आधारपर 'अनुवाद' के निम्नलिखित तीन भेद किए जा सकते हैं-

1. प्रतीक प्रकार
2. भाषा प्रकार
3. लेखन प्रकार

1. प्रतीक प्रकार - प्रतीक प्रकार के अन्तर्गत पुन: अनुवाद के तीन भेद हो जाते हैं। यदि एक अनुवाद क ही भाषा की किसी एक प्रतीक व्यवस्था से उसी भाषा की किसी अन्य प्रतीक व्यवस्था के बीच गया है तो वह अंत भाषिक अनुवाद का क्षेत्र है. यदि अनुवाद एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था से दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था के बीच होता है तो यह अंतरभाषिक अनुवाद का विषय बनता है। तीसरा नेत्र अंतर-प्रतीकात्मक व्यवस्था का है जहाँ एक भाषिक प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेत्तर व्यवस्था में अर्थ का अंतर किया गया है। इन तीनों ही आधारों पर प्रतीक प्रकार सम्बन्धी अनुवाद के तीन प्रमुख उपभेद हो जाते हैं-

(अ) अन्वयान्तर या अंत:भाषिक अनुवाद

(ब) भाषान्तर या अंतरभाषिक अनुवाद

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(स) प्रतीकान्तर या अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद

2. भाषा प्रकार – भाषा के विभिन्न रूपों जैसे मौखिक, लिखित गद्य, पद्य आदि में किया गया अनुवाद भाषा प्रकार के अंतर्गत आता है। वस्तुत: मौखिक और लिखित रूप तो भाषा के एक प्रकार से उपादान है तथा भाषा रूप के अंतर्गत काव्य तथा गद्य रूपों की चर्चा की जाती है। इस प्रकार 'भाषा प्रकार' के आधार पर अनुवाद के निम्नलिखित दो भेद हो जाते हैं–

अ) उपादान सापेक्ष, तथा

ब) रूप सापेक्ष

इन दोनों ही भेदों के अंतर्गत दो–दो प्रकार के अनुवाद हो सकते हैं– (क) उपादान सापेक्ष में वस्तुत: (पाठ अनुवाद) का आधार बनता है। यह अनुवाद उच्चरित भाषा तथा लिखित भाषा दोनों को ही उपादान के रूप में अनुवाद के लिए ग्रहण किया जा सकता है। लिखित भाषा तथा मौखिक/उच्चरित भाषा में किया गया अनुवाद "आशु अनुवाद" कहलाता है। (ख) रूप सापेक्ष में कथ्य रूप यानी गद्य तथा पद्य रूप अनुवाद के आधार बनते हैं। इसमें भी उच्चरित और लिखित, दोनों तरह के गद्य या पद्य का अनुवाद आता है। इस प्रकार उपादान तथा रूप सापेक्ष अनुवाद के पुन: दो–दो उपभेद हो जाते हैं:

क) उपादान सापेक्ष

(1) (पाठ) अनुवाद

(2) आशु अनुवाद

ख) रूप सापेक्ष

(1) पद्यानुवाद

(2) गद्यानुवाद

3. लेखन प्रकार– इसके अन्तर्गत अनुवाद वस्तुत: उच्चारण और लिपि अथवा दो लिपियों के बीच किया जाता है। लेखन प्रकार के अन्तर्गत दो भेद हो जाते हैं–

(अ) लिप्यंकन

(ब) लिप्यंतरण

स्रोत भाषा के पाठ को स्रोत भाषा के उच्चारण के आधर पर लिख देना लिप्यंकन रूप कहलाता है। जैसे टेप में रिकार्ड किए हुए पाठ को लिपिबद्ध करना, ऐसे लोगों की बातचीत को लिपिबद्ध करना जिनकी भाषा का लिखित रूप मौजूद नहीं है। स्रोत भाषा में प्रयुक्त लिपि चिन्हों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के लिपि चिन्हों का प्रतिस्थापन लिप्यंतरण का आधार है। जैसे जंगल को रोमन में Jungle लिखना।

13.2.2 प्रक्रिया के आधार पर– अनुवाद प्रक्रिया का निर्धारण स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के पाठों की प्रकृति की दृष्टि से भी किया जा सकता है तथा इस आधार पर भी कि मूल रचना का जो प्रभाव मूल भाषा के पाठक पर पड़ा है वही प्रभाव अनूदित पाठ के पाठकों पर भी पड़ना चाहिए। इन दोनों आधार पर अनुवाद के दो भेद सामने आते हैं–

1. पाठधर्मी अनुवाद

2. प्रभावधर्मी अनुवाद

13.2.3 पाठ के आधार पर– पाठ वस्तुत: कथ्य (अर्थ) और अभिव्यक्ति का समन्वित रूप होता है। कुछ अनुवादों

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

में पाठ के कथ्य या अर्थ पक्ष की प्रधानता रहती है तो कुछ अनुवादों में अभिव्यक्ति पक्ष की। इस दृष्टि से अनुवाद के दो भेद किए जा सकते हैं।

1. अभिव्यक्ति सापेक्ष अनुवाद
2. अर्थ सापेक्ष अनुवाद

1. अभिव्यक्ति सापेक्ष अनुवाद – अभिव्यक्ति का संबंध एक ओर पाठ की रचना के साथ होता है तो दूसरी ओर भाषा व्यवस्था के विभिन्न स्तरों के साथ। इस आधार पर अभिव्यक्ति सापेक्ष अनुवाद के अंतर्गत रचना सापेक्ष अनुवाद तथा व्यवस्था सापेक्ष अनुवाद दो उपभेद आते हैं। रचना सापेक्ष अनुवादों में कभी पाठ के प्रत्येक अंश का अनुवाद किया जा सकता है और कभी किसी एक अंश का अथवा पाठ के कुछ अंशों का। इस आधार पर रचना सापेक्ष अनुवाद के दो उपभेद सामने आते हैं–

1. पूर्ण अनुवाद
2. आंशिक अनुवाद

व्यवस्था सापेक्ष अनुवादों का आधार भाषिक तत्त्वों के विभिन्न स्तर होते हैं। यहाँ भी दो प्रकार की संभावनाएँ बनी रहती है। पाठ के सभी भाषिक स्तरों का अनुवाद किया जाए अथवा किसी एक या कुछ स्तरों का अनुवाद। इस दृष्टि से व्यवस्था सापेक्ष अनुवाद के भी निम्नलिखित दो उपभेद हो सकते हैं–

(क) समग्र अनुवाद
(ख) परिसीमित अनुवाद

2. अर्थ सापेक्ष अनुवाद : अर्थ सापेक्ष अनुवाद पाठ के आधार पर किए गए अनुवादों का दूसरा प्रकार है जिसके अंतर्गत निम्नलिखित चार प्रकार के अनुवाद आते हैं–

(1) शब्द प्रतिशब्द अनुवाद
(2) शाब्दिक अनुवाद
(3) भावानुवाद, तथा
(4) छायानुवाद

इकाई के अगले भाग में हम अनुवाद के सभी प्रकारों की विस्तृत चर्चा करेंगे।

बोध प्रश्न–1

1. निम्नलिखित कथनों पर सही (✓) अथवा (X) गलत का निशान लगाइए:
   (1) व्यापक संदर्भ में अनुवाद को प्रतीक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है।
   (2) माध्यम के आधार पर अनुवाद के भेद-प्रभेद इस आधार पर किए जाते हैं कि उनमें अनुवाद की कौन सी विधि का प्रयोग हुआ है।
   (3) माध्यम के आधार पर अनुवाद के तीन भेद हो जाते हैं– प्रतीक प्रकार, भाषा प्रकार तथा लेखन प्रकार।
   (4) अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच में किया जाता है।
   (5) लिखित भाषा में किया गया अनुवाद ''आशु अनुवाद'' कहलाता है।
   (6) लिप्यंकन तथा लिप्यंतरण दोनों एक ही प्रक्रिया के दो नाम है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. कोष्ठक से उपयुक्त इकाई चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) भाषा प्रकार के आधार पर अनुवाद के दो भेद किए जाते हैं – उपादान सापेक्ष तथा ..... ।

(रूप सापेक्ष, लेखन सापेक्ष, उच्चारण सापेक्ष)

(2) एक ही भाषा की किसी एक प्रतीक व्यवस्था से उसी भाषा की किसी अन्य प्रतीक व्यवस्था में किया गया अनुवाद ..... अनुवाद कहलाता है। (अंतरभाषिक, अंतरप्रतीकात्मक, अंत:भाषिक)

(3) आशु अनुवाद का आधार होती है ..... भाषा। (लिखित भाषा, मौखिक भाषा)

(4) स्रोत भाषा में प्रयुक्त लिपि चिह्नों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के लिपि चिह्नों द्वारा प्रतिस्थापन..... कहलाता है। (लिप्यंकन, लिप्यंतरण)

(5) पाठ ..... और अभिव्यक्ति का समन्वित रूप होता है। (भाषा, कथ्य, उच्चारण)

(6) पाठ के सभी भाषिक स्तरों का अनुवाद ..... अनुवाद कहलाता है। (पूर्ण, समग्र)

3. (1) अर्थ सापेक्ष अनुवाद के अंतर्गत आने वाले विभिन्न अनुवाद प्रकारों के नाम लिखिए।

(2) पाठ को आधार बनाकर अनुवाद के कौन-कौन से भेद-प्रभेद किए जा सकते हैं ? सभी के नाम लिखिए।

(3) प्रतीक प्रकार के अंतर्गत आने वाले अनुवाद के विभिन्न भेद-प्रभेदों का नामोल्लेख कीजिए।

13.3 अनुवाद प्रकारों पर विस्तृत चर्चा

13.3.1 आशु अनुवाद– जैसा कि ऊपर बताया गया 'आशु अनुवाद' का उपादान होता है उच्चरित या मौखिक भाषा। आजकल मौखिक अनुवाद या आशु अनुवाद के अवसर बढ़ते जा रहे हैं। जब विभिन्न भाषा-भाषी लोग एक साथ मिलते हैं विशेषकर विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि जब परस्पर मिलते हैं तो उनके बीच वार्तालाप आशु अनुवाद के माध्यम से ही संपन्न हो जाता है।

आशु अनुवाद में दुभाषिए या अनुवादक के लिए सबसे आवश्यक गुण होता है कि कम से कम समय में वह मूल वक्ता की बात को अनूदित Interpret करके प्रस्तुत कर दे। जहाँ अन्य अनुवादों में अनुवादक को सोचने-विचारने, कोश देखने आदि का अवसर मिल जाता है वहाँ आशु अनुवादक से यह अपेक्षा रहती है कि वह वक्ता के मुख से जैसे ही वाक्य निकले और इससे पहले कि वह अगला वाक्य आरंभ करें, संदेश को तुरंत तत्परता से संप्रेषित कर दे।

यही कारण है कि आशु अनुवाद (पाठ) अनुवाद की तुलना में व्याख्यात्मक हो जाता है क्योंकि मूल संप्रेष्य को तुरंत प्रेषित करना यहाँ उद्देश्य होता है। अत: आशु अनुवाद को एक अच्छा द्विभाषिक ही नहीं वरन् विषयवस्तु का अच्छा ज्ञाता भी होना चाहिए।

आशु अनुवाद का एक अच्छा उदाहरण फिल्मों की डबिंग में देखने को मिलता है। किसी एक भाषा में बनी फिल्म आज आवश्यकतानुसार विभिन्न भाषाओं में डब की जाती है।

13.3.2 पूर्ण अनुवाद – जिस अनुवाद में मूल रचना या पाठ के प्रत्येक अंश का अनुवाद किया जाता है वह पूर्ण अनुवाद कहलाता है। यहाँ मूल पाठ का कोई भी अंश छोड़ा नहीं जाता स्रोत भाषा-पाठ की प्रत्येक इकाई- शब्द, पद, पदबंध,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उपवाक्य, वाक्य आदि का लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापन पूर्ण अनुवाद कहलाता है। प्राय: प्रभावधर्मी अनुवाद इस कोटि के ही अनुवाद होते हैं।

13.3.3 आंशिक अनुवाद – जब अनुवाद करते समय मूलकृति के सभी अंशों का विभिन्न कारणों से अनुवाद करना संभव नहीं हो पाता तब मूल रचना के कुछ अंश बिना अनुवाद किए छोड़ दिए जाते हैं। सामान्यत: इन अंशों को लक्ष्य भाषा के अनूदित पाठ में यथावत रूप में रख दिया जाता है। सार्जनात्मक साहित्य में प्राय: इस प्रकार के शब्द तथा अभिव्यक्तियाँ आ जाती है जिनके लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य अभिव्यक्ति नहीं मिलती। ऐसी स्थिति में उस शब्द/अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा की लिपि में यथावत रूप में लिख दिया जाता है और पाद-टिप्पणी में उसको स्पष्ट कर दिया जाता है। ऐसे अनुवाद ''आंशिक अनुवाद'' कहलाते हैं। उदाहरण के लिए ''चिलम'', ''अँगीठी'', ''पतीला'', डोलची आदि अनेक शब्द हैं जिनका अनुवाद अंग्रेजी में करना कठिन है। इन शब्दों का अनुवाद न करके इन्हें अंग्रेजी में रोमन लिपि में लिखा जाना आंशिक अनुवाद कहलाएगा। प्राय: पाठधर्मी अनुवाद इस कोटि में आते हैं।

13.3.4 शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद- इसे 'शब्दश: अनुवाद' भी कहा जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में स्रोतभाषा पाठ का प्रत्येक 'शब्द' केन्द्र बिंदु होता है। अनुवाद करते समय वाक्य-रचना पर ध्यान न दिया जाकर वाक्य में प्रयुक्त शब्दों पर ध्यान दिया जाता है। इन शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में पर्याय तलाश किए जाते हैं और इन पर्यायों को अनूदित पाठ में उसी क्रम में लिखा जाता है जिस क्रम में वे मूल भाषा पाठ के वाक्यों में प्रयुक्त हुए हैं।

इस प्रकार के अनुवाद में वस्तुत: कोई भी शब्द छोड़ने की अनुमति नहीं होती और न ही अपनी ओर से कोई-ऐसा शब्द जोड़ा जाता है जो मूल पाठ में विद्यमान नहीं है। चूँकि भाषाओं की प्रकृति परस्पर भिन्न होती है अत: शब्दश: अनुवाद देखने में अटपटा लगता है और अर्थ के स्तर पर भी इसमें औचित्य स्थापित नहीं हो पाता।

चूंकि शब्दश: अनुवाद में शब्दों का क्रम वही रहता है जो मूल पाठ के वाक्यों का है अत: वैयाकरणों तथा भाषा विज्ञानिकों को संरचना तथा व्याकरण के अध्ययन-अध्यापन में बहुत सहायक सिद्ध होता है। इसके द्वारा मूल भाषा के शब्दक्रम को समझा-समझाया जा सकता है और शब्द में निहित आर्थी संरचना का तुलनात्मक विवेचन किया जा सकता है।

13.3.5 शाब्दिक अनुवाद (Literal Translation) - शाब्दिक-अनुवाद को ''शब्दानुवाद'' भी कहा जाता है। शाब्दिक अनुवाद में मूल पाठ में आए सभी शब्दों का अनुवाद किया जाता है। वस्तुत: शाब्दिक अनुवाद वाक्य के स्तर पर होने वाला अनुवाद है। अनुवाद में मूल पाठ के एक-एक शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य सभी का अनुवाद किया जाता है। प्राय: यहाँ यह माना जाता है कि अनुवाद करते समय अनुवादक मूलपाठ के किसी भी अंश को न तो छोड़े और न अपनी ओर से कोई नया शब्द जोड़े। प्राय: सूचना प्रधान साहित्य, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य तथ्यात्मक तथा प्रत्येक शब्द का विशिष्ट अर्थ होता है अत: शाब्दिक अनुवाद करने से एक लाभ यह होता है कि मूल कृति का प्रामाणिक अनुवाद संभव हो पाता है। हालाँकि इसमें भी हर शब्द का अनुवाद करना जरूरी नहीं होता, क्योंकि ऐसा करने से भाषा की स्वाभाविकता नष्ट हो जाने का खतरा रहता है। उदाहरण के लिए,

I request you to check your account in the bank.
मैं आपके बैंक में आपके खाते की जाँच का अनुरोध करता हूं।

लेकिन इसका उपयुक्त अनुवाद होगा-

मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि बैंक में अपने खाते की जाँच करें।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इसी तरह से हिंदी के निम्नलिखित वाक्य का अंग्रेजी शाब्दिक अनुवाद देखिए-

डॉक्टर ने मरीज की नब्ज देखी

The doctor saw the pulse of the patient.

उपयुक्त अनुवाद होगा

The doctor felt the pulse of the patient.

कहने का तात्पर्य यही है कि जहाँ शब्द-प्रति-शब्दानुवाद शब्द के स्तर पर किया जाता था वहाँ शाब्दिक अनुवाद पाठ को आधार बनाकर किया जाता है। इसमें मूल भाषा की संरचना तथा शैली की विशेषताओं की झलक स्पष्टत: देखी जा सकती है। यही कारण है कि इस प्रकार का अनुवाद थोड़ा अस्वाभाविक या कृत्रिम प्रतीत होता है। पर जहाँ तक मूल पाठ के अनुवाद का प्रश्न है यहाँ वह हो जाता है।

शाब्दिक अनुवाद प्रत्येक प्रकार की पाठ सामग्री का नहीं किया जा सकता। विशेषकर साहित्यिक-सांस्कृतिक पाठों, मुहावरे-लोकोक्तियों आदि के शाब्दिक अनुवाद मातृभाषा भाषियों को अटपटे प्रतीक होते हैं जैसे-

1. It is no use crying over split milk.
   फैले हुए दूध पर रोने से क्या लाभ।

2. वह खून का घूँट पीकर रह गया।
   He drank a draught of blood and remained.

जिन पाठों का उद्देश्य सूचना देना होता है (सूचना प्रधान साहित्य) वहाँ पर शाब्दिक अनुवाद उपयोगी सिद्ध होता है। चूँकि इस प्रकार के अनुवाद में मूल पाठ के किसी भी वाक्य या शब्द को नकारा नहीं जाता अत: तकनीकी एवं वैज्ञानिक साहित्य तथा तथ्यपरक साहित्य के अनुवाद में यह काफी हद तक प्रयोग में लाया जाता है। यह एक प्रकार से स्वयं में मूलकृति या प्रामाणिक अनुवाद होता है। क्योंकि यहाँ अनुवादक अपनी ओर से कुछ जोड़ने घटाने का कार्य नहीं करता। इसलिए शाब्दिक अनुवाद का उद्देश्य भिन्न होता है। विज्ञान, तकनीकी आदि विषयों के पाठों के शाब्दिक अनुवाद ही किए जाते हैं।

13.3.6 भावानुवाद- भावानुवाद वस्तुत: शाब्दिक अनुवाद की विपरीत विद्या है। शाब्दिक अनुवाद में अनुवादक से यह अपेक्षा रहती है कि वह मूल पाठ की प्रत्येक इकाई का अनुवाद करे तथा अपनी ओर से न कुछ जोड़े और न मूल का कुछ घटाए। इसके विपरीत भावानुवाद में मूल कृति की वाक्य रचनाओं पर ध्यान न दिया जाकर उसके मूल भाव को ग्रहण करने का प्रयास किया जाता है। अनुवाद करते समय मूल पाठ के भाव और अर्थ को अनुवाद में पूरी तरह से अभिव्यक्त करने की कोशिश की जाती है। अत: ध्यान रखिए कि शाब्दिक अनुवाद करते समय जहाँ अनुवादक अपना ध्यान मूल पाठ की भाषा पर केंद्रित करता हैं भावानुवाद में मूल पाठ के भाव पर ध्यान दिया जाता है। जिन पाठों में मूल पाठ के प्रत्येक शब्द का अनुवाद करना संभव नहीं होता जैसे साहित्यिक पाठ या मुहावरे लोकोक्तियाँ आदि वहां भावानुवाद किया जाता है। उदाहरण के लिए जिन लोकोक्ति/मुहावरों को हमने शाब्दिक अनुवाद के लिए लिया था उनके भावानुवाद इस प्रकार होंगें-

1. It is no use crying over split milk.
   अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. वह खून का घूँट पीकर रह गया।

He pocketed the insult.

ये दोनों ही भावानुवाद के उदाहरण है। यहाँ मूल पाठ की भाषिक संरचना तथा अनूदित पाठ की भाषिक संरचना से कोई समानता नहीं हैं पर अर्थ या भाव दोनों ही उक्तियों का समान है। इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण लें ''ऊँट के मुँह में जीरा''। हिंदी में जो अर्थ ऊँट के मुँह में जीरा लोकोक्ति का है, वही अर्थ अंग्रेजी में A drop in the Ocean का है।

अपने इसी गुण के कारण भावानुवाद को प्राय: साहित्यिक सांस्कृतिक पाठों के अनुवाद के लिए अपनाया जाता है। चूंकि भावानुवाद की संरचना का यथावत अनुसरण नहीं करता इसलिए इस प्रकार का अनुवाद बड़ा ही सहज और मौलिक रचना जैसा प्रतीत होता है। जिस प्रकार मूल लेखक के व्यक्तित्व की छाप हमें उसकी रचना में दिखाई देती है ठीक वैसे ही भावानुवाद में भी हमें अनुवादक के अपने व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। यहाँ अनुवादक सर्जक की भूमिका का निर्वाह भी करने लगता है। उदाहरण के लिए नीचे अज्ञेय की एक कविता का अनुवाद जो स्वयं अज्ञेय ने किया है प्रस्तुत किया जा रहा है। यद्यपि अंग्रेजी में अज्ञेय द्वारा किया गया यह अनुवाद एक नई रचना के रूप में हमारे सामने आता है।

मैंने देखा	I saw
एक बूंद सहसा	A drop suddenly
उछली सागर के झाग से	Fly from the scud of the sea
रंगी गई क्षण भर	Flare for a second
ढलते सूरज की आग से।	Fire from the mellowing sun Align.

इस स्थिति से एक दूसरी स्थिति जहाँ मूल लेखक और अनुवादक दो अलग व्यक्ति हों वहाँ भी भावानुवाद नई सर्जना के रूप में अनुवादक के अपने व्यक्तित्व की छाप लेकर सामने आता है जैसे बच्चन द्वारा फिट्जरेल्ड की अंग्रेजी रूबाइयों के अनुवाद में भावों को इतना महत्त्व दिया है कि कहीं-कहीं पूरी की पूरी पंक्तियाँ अपनी ओर से जोड़ दी गई है। देखिए उदाहरण-

मूल पाठ

One Moment in Annihilation's waste
One moment of the well of life to taste
The stars are setting and the caravan
Stars for the Dawn of Nothing-oh, Make haste

बच्चन जी द्वारा किया गया अनुवाद-

अरे, यह विस्मृति का मरू देश
एक विस्तृत है, जिसके बीच
खिंची लघु जीवन-जल की रेख
मुसाफिर ने होठों को खींच
एक क्षण, जल्दी कर, ले देख
बुझे नभ-दीप, किधर पर भोर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कारवां मानक का कर कूच

बढ़ गया शब्द उषा की ओर

13.3.7 छायानुवाद – जिस अनुवाद में मूल पाठ की छाया मात्र हो वह अनुवाद ''छायानुवाद'' कहलाता है। ''छायानुवाद'' में मूल पाठ का भाव ग्रहण कर लिया जाता है और उसी भाव को लेकर अनूदित पाठ को अभिव्यक्ति दी जाती है। इस प्रकार ''छायानुवाद'' में अनुवादक के मन पर मूल पाठ को जो प्रभाव पड़ा है यही प्रधान हो जाता है। एक प्रकार से वह उसी प्रभाव को अनूदित पाठ में अंतरित करने का प्रयास करता है। ''छायानुवाद'' में कथ्य तो वही रहता है केवल सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश बदल जाता है। वस्तुत: अनुवादक लक्ष्य भाषा के इसी सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के अनुकूल ही मूल पाठ के कथ्य को प्रस्तुत करता है। वहाँ प्राय: मूल पाठ में आए पात्रों के नाम, स्थानों के नाम, परिस्थितियाँ परिवेश आदि सभी को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप बदल दिया जाता है।

उदाहरण के लिए शेक्सपियर के ''मर्चेंट ऑफ वेनिस'' नाटक का अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'दुर्लभ बंधु' के नाम से किया है। यह वस्तुत: छायानुवाद ही कहा जायेगा जहाँ भारतेन्दु ने मर्चेंट ऑफ वेनिस के भारतीयकरण का दिया है। इसके साथ-साथ इसमें भारतेन्दु की अपनी शैली की मौलिकता भी स्पष्टत: परिलक्षित होती है।

बोध प्रश्न -2

1. निम्नलिखित के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए :

   1. (पाठ) अनुवाद तथा आशु अनुवाद

      .....

      .....

   2. शब्दश: अनुवाद एवं शाब्दिक अनुवाद

      .....

      .....

   3. पाठ धर्मी अनुवाद तथा प्रभावधर्मी अनुवाद

      .....

      .....

   4. पूर्ण अनुवाद एवं समग्र अनुवाद

      .....

      .....

   5. भावानुवाद एवं छायानुवाद

      .....

      .....

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

जैन विश्वभारती संस्थान

(मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान)

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

स्नातकोत्तर (एम.ए.) उत्तरार्द्ध

विषय - हिन्दी

नवम् पत्र : अनुवाद विज्ञान

विशेषज्ञ समिति

1. **प्रो. नन्दलाल कल्ला**
   पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग
   जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

2. **प्रो. वेदप्रकाश शर्मा**
   पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग
   महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राज)

3. **प्रो. जगमालसिंह**
   पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग
   मेघालय विश्वविद्यालय, मेघालय (आसाम)

4. **डॉ. ममता खाण्डल**
   सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग
   राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय, किशनगढ़ (राज.)

5. **प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी**
   निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
   जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (राज.)

6. **प्रो. सगणी ऋजुप्रज्ञा**
   आचार्या, जैन विश्वभारती संस्थान,
   लाडनूँ (राज.)

लेखक

डॉ. ममता खाण्डल

संपादक

डॉ. शंकरलाल पुरोहित

कापीराइट

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

नवीन संस्करण : 2017

मुद्रित प्रतियां : 500

प्रकाशक

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं–341 306 (राज.)

Printed at

M/s Nalanda Offset,
G1/232, RIICO Industrial Area, Heerawala Ext., Konota, Jaipur (Raj.)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अनुक्रमणिका

इकाई- 1	अनुवाद : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं सीमाएं	1—15
इकाई- 2	अनुवाद विज्ञान है अथवा कला अथवा शिल्प	16—26
इकाई - 3	अनुवाद की इकाई : शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ	27—44
इकाई - 4	अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि	45—57
इकाई - 5	अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त	58—69
इकाई - 6	अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार	69—94
इकाई - 7	अनुवाद की समस्याएं	95—119
इकाई - 8	अनुवाद के उपकरण	120—137
इकाई - 9	अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन	138—151
इकाई- 10	मशीनी अनुवाद	152—166
इकाई- 11	अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगकिता एवं व्यावसायिक परिदृश्य	167—177
इकाई -12	अनुवाद के गुण	178—184
इकाई -13	पाठ की अवधारणा और प्रकृति	185—193

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun